पॉल ब्रन्टन

बीसवीं शताब्दी के प्रसिद्ध आध्यात्मिक जिज्ञासु

गुप्त भारत की खोज

गुरु की तलाश पर आधारित एक असाधारण कृति



लेखक के विषय में

1898 में जन्मे पॉल ब्रन्टन ने व्यापक ढंग से पूर्वी देशों में भ्रमण किया और 1935 से 1952 के बीच उनकी लिखी तेरह पुस्तकें प्रकाशित हुईं। उन्हें योग एवं ध्यान का पश्चिमी जगत से परिचय करवाने तथा वहाँ की दार्शनिक पृष्ठभूमि को ग़ैर-तकनीकी भाषा में प्रस्तुत करने के लिए जाना जाता है। पॉल ब्रन्टन की मृत्यु 1981 में स्विट्ज़रलैंड में हुई जहाँ उन्होंने 20 वर्ष बिताए थे।

पॉल ब्रन्टन की प्रशंसा में

‘पॉल ब्रन्टन निश्चित रूप से हमारी धर्मनिरपेक्ष सभ्यता की बंजर भूमि पर उगने वाले कुछ बेहतरीन आध्यात्मिक पुष्पों में से एक थे। उन्होंने जो कुछ कहा, वह हम सबके लिए महत्त्वपूर्ण है।’

—जॉर्ज फ़्यूरस्टेन

‘उन पश्चिमवासियों के लिए शानदार उपहार, जिन्हें अध्यात्म की खोज है।’

—चार्ल्स टी. टार्ट

‘असामान्य बुद्धिमत्ता... पूरी तरह जीवंत तथा सबसे महत्त्वपूर्ण, “पवित्रा” की दृष्टि से एक पूर्ण व्यक्ति।’

—योगा जर्नल

‘पॉल ब्रन्टन ज़बर्दस्त मौलिक व्यक्ति थे और उन्होंने व्यक्तिगत उत्थान का ऐसा स्थान प्राप्त किया जो भावी मानवता के मार्ग को प्रकाशमान करता है।’

—जीन ह्यूस्टन

‘एक सरल और स्पष्ट पुस्तक, जो बताती है किस प्रकार पूर्व और पश्चिम के ज्ञान से जीवन में सौंदर्य, आनंद तथा अर्थ पैदा किया जा सकता है... पॉल ब्रन्टन का मूल सिद्धांत, संतुलन है तथा उनके द्वारा दिए प्रेरणादायक संदेश में मानवीय अनुभव के समस्त चरण समाहित हैं।’

—ईस्ट वेस्ट जर्नल

'... तर्कसंगत और दमदार। पॉल ब्रन्टन का यह कार्य मर्टन, हक्सले, सुज़ुकी, वाट्स और राधाकृष्णन जैसे पूर्व-पश्चिम सेतुओं के समान है। यह पुस्तक अध्यात्म से संबंधित विषयों में निजी एवं शैक्षिक कारणों से जुड़े किसी भी व्यक्ति को आकर्षित करेगी।'

—चॉइस

'आध्यात्मिक विचारों की खोज में लगे किसी भी गंभीर प्रवृत्ति के पुरुष अथवा स्त्री को पॉल ब्रन्टन की पुस्तकों में आश्चर्यजनक चुनौती और प्रेरणा का प्रामाणिक स्रोत तथा बौद्धिक पोषण मिलेगा।'

—जैकब नीडलमैन

'मैं अपनी आरंभिक शिक्षा के लिए ब्रन्टन, विवेकानंद और ए. ई. बर्ट जैसे विद्वानों का आभारी हूँ।'

—स्टीवन लवाइन

गुप्त
भारत
की खोज

गुप्त भारत की खोज

पॉल ब्रन्टन

अनुवाद: आशुतोष गर्ग



मंजुल पब्लिशिंग हाउस



मंजुल पब्लिशिंग हाउस
कॉरपोरेट एवं संपादकीय कार्यालय
द्वितीय तल, उषा प्रीत कॉम्प्लेक्स, 42 मालवीय नगर, भोपाल-462 003
विक्रय एवं विपणन कार्यालय
7/32, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-110 002
वेबसाइट: www.manjulindia.com
वितरण केन्द्र
अहमदाबाद, बेंगलुरू, भोपाल, कोलकाता, चेन्नई,
हैदराबाद, मुम्बई, नई दिल्ली, पुणे

पॉल ब्रन्टन द्वारा लिखित मूल अंग्रेजी पुस्तक
अ सर्च इन सीक्रेट इंडिया का हिन्दी अनुवाद

सर्वप्रथम ईबरी पब्लिशिंग के प्रकाशन राइडर बुक्स द्वारा प्रकाशित।
रैन्डम हाउस ग्रुप कम्पनी का प्रभाग।

यह हिन्दी संस्करण 2018 में पहली बार प्रकाशित

ISBN 978-93-81506-70-7

हिन्दी अनुवाद: आशुतोष गर्ग

अनुक्रम

नव-संस्करण की भूमिका

बीसवीं शताब्दी के प्रारंभिक दिनों से, पॉल ब्रन्टन ने परंपरा से परे, उच्च आध्यात्मिक उपलब्धि-प्राप्त लोगों की तलाश में प्रमुख महाद्वीपों की यात्रा की। उन्होंने नौका से, घोड़े या गधे अथवा ऊँट से और पैदल यात्राएँ भी कीं, भार उठाने वाले पशुओं के सहारे भारी संदूक खींचे - उन्होंने यह सब उन सुविधाओं, खाने-रहने की जगहों तथा संचार-माध्यमों के बिना किया, जिनकी सहायता से आज विदेश की यात्रा करना काफ़ी सरल हो गया है।

अपने पूर्ववर्ती भूगोलवेत्ताओं की तरह, पॉल ब्रन्टन ने विश्व का नवीन और अत्यंत महत्त्वपूर्ण मानचित्र - आत्मा का, बड़ी एवं छोटी परंपराओं का तथा उनके अधिनायकों का मानचित्र बनाने में योगदान दिया। अब जब हम कर्नाक, दिल्ली या धर्मशाला के लिए यात्रा आरंभ करते हैं तो हमें पहले से जानकारी होती है कि हमें वहाँ क्या मिलेगा और ऐसी यात्राओं के द्वारा किस चीज़ से हार्दिक संबंध बना पाएँगे।

अपनी यात्राओं के दौरान, पॉल ब्रन्टन (अपने मित्रों के लिए 'पी.बी.') की भेंट औपचारिक एवं अनौपचारिक परंपराओं से जुड़े अनेक लोगों से हुई। कुछ ईमानदार तो कुछ व्यवसायिक थे; कुछ पूरी तरह ढोंगी थे तो कुछ के पास प्रामाणिक उपलब्धियाँ थीं। व्यक्ति इनका अंतर कैसे पहचानेगा? यदि कोई सच्चा आध्यात्मिक ज्ञानी मिल भी जाए तो यह कैसे पता लगेगा कि उसी व्यक्ति को अपना गुरु बनाना चाहिए? आध्यात्मिक यात्रा के दौरान ये प्रश्न बार-बार मनुष्य के मन में उठते हैं। कभी हमें लगता है कि हमें इन प्रश्नों का स्थाई उत्तर मिल गया है और कभी ऐसा लगता है कि इन प्रश्नों का उत्तर कभी नहीं मिल सकता। अधिकतर खोजियों के लिए सच्चाई, इन दोनों के बीच कहीं स्थित होती है।

इस पुस्तक में पॉल ब्रन्टन ने दो कार्य एक साथ पूरे कर दिए हैं। पहला, उन्होंने अपनी आध्यात्मिक यात्रा का कुछ अंश लिपिबद्धि कर दिया है; दूसरा, उन्होंने इस पुस्तक में अपनी मुलाक़ातों को इस तरह व्यवस्थित किया है कि वे उपरोक्त प्रश्नों के उत्तर देने हेतु प्रामाणिक उदाहरण बन गई हैं।

पॉल ब्रन्टन की यात्रा की बात करें तो वे अपनी किशोरावस्था में ही ज्ञान के आंतरिक मार्ग पर चल पड़े थे। इस पुस्तक में अपनी यात्राओं को लिखने तक (1931) पॉल ब्रन्टन एक निपुण ध्यान-साधक तथा पूर्वी जगत के आकर्षक विचारों के अध्येता बन चुके थे। हालाँकि उस समय भी सीखने के लिए बहुत कुछ शेष था, किंतु उन्हें कम से कम यह पता था कि उन्हें किस चीज़ की तलाश है और यह कि उसे खोजना आवश्यक है। उन्हें जो प्राप्त हुआ, उसने उनका जीवन बदल दिया और साथ ही, भारत का पश्चिमी जगत से परिचय करवाया। 1934 में प्रकाशन के कुछ ही वर्षों के भीतर, इस पुस्तक की लगभग ढाई लाख प्रतियाँ बिक गईं और इसी के साथ रमण महर्षि और शंकराचार्य के नाम वैश्विक आध्यात्मिक समुदाय में विख्यात हो गए।

यह पुस्तक, यूँ ही पढ़ने पर बहुत रोचक लगती है। इसमें विश्व युद्ध से पहले के भारत को दर्शाया गया है और ब्रन्टन की अपनी यात्रा का भी थोड़ा विवरण है। परंतु यह इससे कहीं अधिक है। पॉल ब्रन्टन बताते हैं कि गुरु की खोज कैसे की जाए और उन्हें प्राप्त कैसे किया जाए; वे धार्मिक, जादुई और आध्यात्मिक बातों के बीच का अंतर स्पष्ट करते हैं। अंत में, वे यह रहस्य भी प्रकट करते हैं कि अपने आध्यात्मिक गुरु को कैसे पहचाना जाए और वह गुरु भी आपको किस तरह पहचाने। यही इस पुस्तक का असली रहस्य है। यह आज भी उतना ही उपयोगी है, जितना अनेक वर्ष पूर्व तब था जब पॉल ब्रन्टन ने पहली बार काग़ज़ पर क़लम चलाई थी।

हमें आशा है कि आप इस पुस्तक के अध्ययन से प्रेरणा एवं सहायता प्राप्त करेंगे तथा पॉल ब्रन्टन की भाँति, हम इस संस्करण को भारत में बीसवीं शाताब्दी के महान पथ-प्रदर्शकों: रमण महर्षि और कांचीपुरम के शंकराचार्य को समर्पित करने की इच्छा रखते हैं।

टीमोथी स्मिथ
पॉल ब्रन्टन फ़िलोसोफ़िक फ़ाउंडेशन

प्रस्तावना

"पवित्र भारत," इस पुस्तक का उपयुक्त शीर्षक होता। ऐसा इसलिए कि यह ऐसे भारत की खोज पर आधारित है जो सिर्फ़ अत्यंत पवित्र होने के कारण ही रहस्यमय है। जीवन की पवित्र बातों को सार्वजनिक रूप से कहने की आवश्यकता नहीं होती। मनुष्य की सहज प्रवृत्ति उन बातों को अंतरमन में छिपाकर रखने की पक्षधर है जहाँ उन्हें कोई न जान सके। वे बातें केवल ऐसे लोगों से साझा की जा सकती हैं जिन्हें आध्यात्मिक विषयों की समझ होती है।

उन्हें ऐसे लोगों के अतिरिक्त ऐसे देशों से भी साझा किया जा सकता है। कोई भी देश अपनी सबसे पावन चीज़ों को गुप्त रखता है। इंग्लैंड के रहस्यों को जानना किसी व्यक्ति के लिए सहज कार्य नहीं है। यही बात भारत के साथ भी सत्य है। भारत का सबसे पावन भाग सबसे गोपनीय है।

गोपनीय बातों को जानने के लिए बहुत शोध करना पड़ता है; परंतु जो खोजता है, उसे अवश्य सफलता मिलती है। जो पूरे मन और सच्ची लगन से खोजेंगे, उन्हें वह रहस्य अवश्य प्राप्त हो जाएगा।

श्री ब्रन्टन में वह लगन थी और उन्हें आख़िर में, सफलता मिल गई। इसमें समस्याएँ भी बहुत थीं क्योंकि भारत में, अन्य किसी भी जगह की तरह, झूठी आध्यात्मिकता बहुत है जिसे भेदने के बाद ही व्यक्ति को सत्य की प्राप्ति हो पाती है। यहाँ दिमाग़ी कलाबाजों और ढोंग करने वालों की भारी भीड़ है जिन्हें दूर धकेलकर ही विशुद्ध आध्यात्मिकता का खोजी आगे बढ़ सकता है। इन लोगों ने अपनी मानसिक और शारीरिक मांसपेशियों को प्रशिक्षित करके असाधारण ढंग से कार्यकुशल बना लिया है। उन्होंने एकाग्रता के गहन अभ्यास द्वारा अपनी मानसिक क्रियाओं पर पूर्ण नियंत्रण प्राप्त कर लिया है। इनमें से बहुत-से लोगों ने तंत्र-मंत्र की शक्तियाँ भी अर्जित कर ली हैं।

वे सब भी अपने आप में रोचक हैं तथा मनोवैज्ञानिक गतिविधियों में रुचि रखने वाले

विज्ञानवेत्ताओं द्वारा इन पर भी शोध किया जा सकता है। परंतु यह असली चीज़ नहीं है। यह वो जलधारा नहीं है जिसमें से आध्यात्मिकता फूटकर निकलती है।

ये उस पवित्र और गोपनीय भारत का अंश नहीं हैं जिसकी खोज श्री ब्रन्टन को थी। उन्होंने इन चीज़ों को देखा। उन्हें दर्ज किया। उनका वर्णन किया। परंतु फिर वे इन सबके पार निकल गए। उन्हें उत्कृष्ट एवं विशुद्ध आध्यात्मिकता की तलाश थी और उन्होंने अंत में उसे पा लिया।

मनुष्यों के बसेरों से दूर, गहन जंगलों के भीतर अथवा हिमालय पर, जहाँ सदा भारत के धर्मात्मा लौटकर आ जाते हैं, श्री ब्रन्टन ने भारत के सर्वाधिक पवित्र तथ्यों के मूर्त रूप के दर्शन किए। महर्षि ने श्री ब्रन्टन को सबसे अधिक प्रभावित किया। वे अपने आप में अकेले नहीं हैं। भारत में अन्य कई स्थानों पर, ऐसे महर्षि -अधिक तो नहीं, किंतु कुछ- मिल सकते हैं। ये लोग भारत के सच्चे ज्ञान को दर्शाते हैं और इन्हीं के माध्यम से ब्रह्मांड का शक्तिशाली व निपुण परमात्मा, स्वयं को अनूठे ढंग से व्यक्त करता है।

इसी कारण, पृथ्वी पर अन्य चीज़ों के साथ-साथ, ये लोग तलाश करने योग्य होते हैं। इस पुस्तक में हमें ऐसी ही एक तलाश के परिणाम देखने को मिलते हैं।

—सर फ़्रांसिस यंगहस्बैंड,
के.सी.आई.ई., के.सी.एस.आई., सी.आई.ई.

अध्याय 1

पाठक को नमन

भारतीय जीवन से जुड़ी प्राचीन पुस्तक में एक गूढ़ अंश है जिसे मैंने पश्चिमी पाठकों की सुविधा के लिए स्पष्ट करने का प्रयास किया है। यूरोप के आरंभिक यात्री भारत के फ़क़ीरों की विचित्र कहानियों के साथ अपने देश लौटते थे और यहाँ तक कि आधुनिक यात्री भी ऐसी ही कथाएँ सुनाते हैं।

ऐसे रहस्यमय लोगों की, जिन्हें कुछ लोग योगी तो कुछ फ़क़ीर कहते हैं, यदा-कदा सुनाई पड़ने वाली कहानियों के पीछे का सत्य क्या है? हम तक पहुँचने वाले उन अनियमित संकेतों के पीछे का सत्य क्या है जो हमें यह बतलाते हैं कि भारत में ऐसा प्राचीन ज्ञान भी उपलब्ध है जिसके द्वारा वे लोग, जो इसका अभ्यास करते हैं, अपनी मानसिक शक्तियों को असाधारण रूप से विकसित कर सकते हैं? मैंने इसे खोजने के लिए लंबी यात्रा की और आगामी पृष्ठों में मेरी रिपोर्ट संक्षिप्त रूप में दी गई है।

मैंने "संक्षिप्त" इसलिए कहा क्योंकि स्थान और समय की कठोर सीमा के कारण मैं केवल एक योगी के विषय में लिख पाया हूँ जबकि मेरी भेंट औरों से भी हुई थी। इसलिए मैंने कुछ को ही चुना है जो मुझे अधिक रोचक लगे और जिनमें पश्चिमी जगत को भी रुचि होने की संभावना है। व्यक्ति ऐसे तथाकथित धर्मात्माओं के विषय में काफ़ी सुनता है, जिन्होंने गूढ़ ज्ञान और विचित्र शक्तियाँ अर्जित कर ली हैं; और तब वह झुलसाने वाले अनेक गर्म दिनों तथा बिना सोए कई रातों तक उन्हें खोजने के लिए यात्रा करता है लेकिन इन सबकी जगह, उसकी मुलाक़ात सदाशयी मूर्खों, धर्मग्रंथों के ग़ुलामों, तथ्यों से अनजान वृद्धों, लालची जादूगरों, हाथ की सफ़ाई दिखाने वाले बाज़ीगरों और धर्मपरायण ढोंगियों से होती है। ऐसे

लोगों के विषय में लिखकर पन्ने भरना, पाठक के लिए बेकार है और यह मुझे भी नापसंद है। इसलिए मैं ऐसे लोगों पर बर्बाद किए समय की कथा को इस पुस्तक में से छोड़ रहा हूँ।

मैं अत्यंत विनम्रता के साथ महसूस करता हूँ कि मुझे भारत के ऐसे सुदूर स्वरूप को देखने का सौभाग्य मिला है जिसे साधारण यात्रियों ने कभी-कभार देखा और बहुत कम जाना-समझा है। इंग्लैंड की विशाल भूमि पर रहने वाले लोगों में से बहुत कम ने इस स्वरूप के अध्ययन पर ध्यान दिया है, और उनमें से भी बहुत कम लोग इसका अधिक गहराई से विश्लेषण करके अपने विचार व्यक्त करने के लिए स्वतंत्र थे क्योंकि आधिकारिक गरिमा का सम्मान करना भी ज़रूरी था। इसलिए ऐसे अंग्रेज़ी लेखक, जिन्होंने इस विषय को छुआ है, जल्द ही अविश्वास से घिर जाते हैं क्योंकि उन्हें इससे जुड़े सहज ज्ञान के स्रोत उपलब्ध नहीं होते और ऐसे भारतीय लोग, जिन्हें इस विषय की गहराई से समझ है, इस पर चर्चा करने से बचते हैं। ज़्यादातर मामलों में, अंग्रेज़ व्यक्ति यदि योगियों को जानता है तो उनके साथ आधा-अधूरा परिचय बना लेता है। वह निश्चित रूप से किसी श्रेष्ठ योगी के साथ मेल-जोल नहीं बना पाता। ये योगी अब स्वयं अपने ही देश में गिने-चुने रह गए हैं। ये अत्यंत दुर्लभ हैं और जन-सामान्य से अपनी असली उपलब्धि को छिपाकर अज्ञानी बने रहते हैं। भारत, चीन और तिब्बत के योगी किसी पश्चिमी यात्री के सामने, जो भूल से उनके एकांत में घुस जाता है, जानबूझकर निरर्थकता और अज्ञानता का दिखावा करके उससे पीछा छुड़ा लेते हैं। उन्हें शायद एमर्सन का यह कथन सार्थक लगता हो: 'महान व्यक्ति को ग़लत समझा जाता है;' मैं नहीं जानता। जो भी हो, वे लोग एकांतप्रिय होते हैं और वे लोगों के साथ मिलने-जुलने की परवाह नहीं करते। यदि उनकी किसी से मुलाक़ात हो जाए तो भी वे जान-पहचान होने के कुछ समय बाद ही संकोच छोड़ पाते हैं। इस कारण इन योगियों की विचित्र जीवन-शैली के बारे में पश्चिमी महाद्वीपों में बहुत कम लिखा जा सका है और जो थोड़ा-बहुत है, वह भी अस्पष्ट है।

भारतीय लेखकों के विवरण अवश्य उपलब्ध हैं, किंतु उन्हें बहुत ध्यान से पढ़ा जाना चाहिए। यह दुर्भाग्य की बात है कि हिंदू लोग इन विषयों की समालोचना नहीं करते और वे बिना सोचे-विचारे तथ्यों को अफ़वाहों के साथ मिला देते हैं। इससे उनके विवरणों की प्रामाणिकता एवं सत्यता घट जाती है। मैंने जब पूर्वी लोगों की आँखों पर सहज विश्वास की भावना का जाला देखा तो मैंने पश्चिम में प्राप्त अपने वैज्ञानिक प्रशिक्षण तथा पत्रकारिता द्वारा अर्जित सामान्य ज्ञान के लिए ईश्वर को धन्यवाद दिया। मैंने पाया कि पूर्वी देशों में इच्छा, न केवल विचार की जननी है, अपितु वह ऐसी कई और घटनाओं की भी जन्मदात्री है जो वास्तव में कभी घटी ही नहीं थीं। मैं जहाँ भी गया, मैंने वहाँ की चीज़ों को विरोधी दृष्टि से नहीं, बल्कि समालोचना की नज़र से देखा है। जिन लोगों को यह आभास हुआ कि मेरी रुचि दार्शनिक विषयों के अतिरिक्त, गूढ़ एवं चमत्कारी चीज़ों में भी थी, उन्होंने अपनी सीमित

जानकारी पर भरपूर मुलम्मा चढ़ाया और उसे सुंदर ढंग से सजाकर पेश किया। वे अत्यंत सहजता से अपनी बातों को हैरतअंगेज ढंग से बढ़ा-चढ़ाकर सुनाते थे। मैं अपना समय लगाकर, उन्हें यह समझा सकता था कि सत्य बहुत शक्तिशाली होता है और उसे किसी सहारे की आवश्यकता नहीं होती, किंतु मेरे पास करने को और बहुत कार्य थे। हालाँकि मुझे इस बात की बेहद ख़ुशी है कि मैंने जिस प्रकार यीशु के दिए ज्ञान को टीकाकारों की अपेक्षा ख़ुद पढ़ना पसंद किया, उसी तरह मैंने पूर्व के आश्चर्यों को भी अपनी आँखों से देखकर उस ज्ञान को अर्जित किया है। मैंने मूर्खतापूर्ण अंधविश्वासों, अविश्वसनीय पाखंडों तथा प्राचीन व झूठे दावों के घालमेल में से उन बातों को खोजा, जो सत्य हैं और जो भरपूर जाँच-पड़ताल की अग्नि परीक्षा में सफल सिद्ध हो पाएँगी। मैं इस बात के लिए अपनी प्रशंसा करता हूँ कि मैं इस कार्य को कभी न कर पाता यदि मेरे पेचीदा स्वभाव में वैज्ञानिक संशय तथा आध्यात्मिक संवेदनशीलता के दो तत्त्व शामिल न होते। ये दो ऐसे तत्त्व हैं जिनका प्रायः साफ़ तौर पर परस्पर विरोध रहता है।

मैंने इस पुस्तक को SECRET INDIA (सीक्रेट इंडिया) शीर्षक इसलिए दिया है क्योंकि यह हमें ऐसे भारत के विषय में बताती है, जिसने स्वयं को हज़ारों वर्षों से जिज्ञासु नज़रों से छिपाए रखा है, और जिसने ख़ुद को इतना विशिष्ट बना लिया कि आज इसके केवल कुछ अवशेष बाक़ी हैं और वे भी बहुत तेज़ी से लुप्त हो रहे हैं। योगियों ने जिस तरह अपने ज्ञान को गूढ़ बनाकर रखा, वह हमें आज के लोकतांत्रिक दिनों में स्वार्थ प्रतीत हो सकता है, परंतु वह प्रत्यक्ष इतिहास में से उनके धीरे-धीरे लुप्त होने के कारण को जानने में सहायता करता है। भारत में हज़ारों अंग्रेज़ रहते हैं और हर साल सैकड़ों लोग भारत-भ्रमण पर आते हैं। तथापि इनमें से कोई उस तथ्य को नहीं जानता जो एक दिन संसार के लिए भारत से जहाज में लाए जाने वाले बहुमूल्य मोतियों एवं महँगे रत्नों से भी अधिक उपयोगी सिद्ध होगा। इसके बाद भी, बहुत कम लोगों ने लीक से हटकर योगियों को खोजने का प्रयास किया है, और एक भी अंग्रेज़, किसी सुनसान गुफा अथवा शिष्यों से भरे कमरे में, एक साँवले रंग के अर्द्ध-नग्न मनुष्य के सामने नतमस्तक होने को तैयार नहीं होता। वर्ण-व्यवस्था द्वारा थोपी गई यह बाधा इतनी विचित्र है कि यदि एक कुलीन एवं बुद्धिमान व्यक्ति को भी अचानक उसके अंग्रेज़ी आवास से निकालकर किसी गुफा में भेज दिया जाए, तो उसे भी एक योगी की न तो संगति पसंद आएगी और न ही उसकी बातें समझ में आएँगी।

तथापि भारत में रहने वाले किसी भी अंग्रेज़ को, चाहे वह सैनिक हो या जनसेवक अथवा व्यापारी हो या यात्री, दोष देना बेकार है क्योंकि वह योगी के सामने चटाई पर पालथी मारकर बैठने में शर्म महसूस करता है। उस अंग्रेज़ का जिस तरह के धार्मिक व्यक्ति से सामना होता है, उससे मिलने के बाद अपनी अंग्रेज़ी प्रतिष्ठा क़ायम रखने, जो उसके लिए महत्त्वपूर्ण और आवश्यक रीति है, के अलावा वह उस धार्मिक व्यक्ति की ओर आकर्षित न

होकर उससे दूर हट जाता है। ऐसे व्यक्ति से दूर रहने में निश्चित रूप से, कोई हानि नहीं है। तथापि, यह दु:ख की बात है कि इतने वर्षों की यात्रा करने के बाद, अंग्रेज़ निवासी अपने मन में निर्दोष भाव से बिना यह ज्ञान लिए ही लौट जाता है कि एक भारतीय साधु के सामने-से दिखने वाले मस्तिष्क के पीछे क्या छिपा है।

मुझे तिरुचिरापल्ली के विशालकाय किले की छाया में लंदन के एक निवासी से लिया साक्षात्कार याद आता है। वह बीस वर्षों तक भारतीय रेल के एक ज़िम्मेदार पद पर कार्य कर चुका था। मेरे लिए उससे उस अत्यंत गर्म प्रदेश में बिताए जीवन के विषय में कुछ प्रश्न करना ज़रूरी था। आख़िर, मैंने उससे अपना मनपसंद प्रश्न पूछ लिया, 'क्या आप किसी योगी से मिले हैं?'

उसने मेरी ओर उदास भाव से देखा और फिर उत्तर दिया:

'योगी? वे कौन होते हैं? क्या वे कोई पशु हैं?'

यदि वह अपने देश में चर्च की घंटियों की आवाज़ के बीच होता तो उसकी यह अज्ञानता क्षम्य थी; अब, इस देश में छब्बीस वर्ष रहने के बाद, यह पूरी तरह सुखद स्थिति थी। मैंने उसे और नहीं छेड़ा।

हिंदुस्तान में रहने वाले लोगों के बीच घूमते समय, चूँकि मैंने अपने स्वाभिमान को अपने पैरों तले दबाकर रखा; चूँकि मैंने उन्हें सहज बोध और बौद्धिक सहानुभूति, तुनकमिजाज पूर्वाग्रह से मुक्ति तथा वर्ण के बावजूद सम्मान प्रदान किया; और चूँकि मैंने सारा जीवन सत्य की तलाश की है तथा मैं सत्य के साथ मिलने वाली हर चीज़ को स्वीकार करने के लिए तैयार रहा हूँ, यही कारण है कि मैं यह सब दर्ज कर पाया हूँ। मैं अंधविश्वासी मूर्खों और झूठे फ़क़ीरों की भीड़ से निकला हूँ ताकि सच्चे संन्यासियों के चरणों में बैठ सकूँ और भारतीय योग की शिक्षा को उनसे सीधे प्राप्त कर सकूँ। मैंने एकांत आश्रमों में साँवले चेहरों के सामने ज़मीन पर बैठकर विचित्र भाषण सुने। मैंने ऐसे संकोची और एकांतप्रिय श्रेष्ठ योगियों को खोजकर बड़ी विनम्रता से उनके रहस्यमय निर्देशों को सुना। मैंने घंटों बनारस के ब्राह्मणों से वार्ता की है तथा उनके साथ दर्शन से जुड़े ऐसे मतों व प्रश्नों पर विमर्श किया, जो मनुष्य के दिल और दिमाग़ को उस समय से परेशान और व्यथित करते आए हैं जबसे उसने सोचना शुरू किया। फिर मैं रुक गया और मैंने कुछ समय जादूगरों और कलंदरों के साथ बिताया। तब मेरे साथ विचित्र घटनाएँ घटती थीं।

मैं प्रत्यक्ष जाँच-पड़ताल का तरीक़ा अपनाकर आजकल के योगियों से जुड़े तथ्य एकत्रित करना चाहता था। मुझे इस बात पर गर्व था कि मैं पत्रकारिता के अनुभव द्वारा बिना अधिक समय लगाए वांछित सूचना प्राप्त कर लेता था; मैंने संपादक की कुर्सी पर बैठकर नीली पेंसिल द्वारा निर्दयता से काट-छाँट करना सीखा जिससे मैं काम की चीज़ें छाँट सकता था; मैंने अपने व्यवसाय के दौरान फटीचर भिखारियों से लेकर हृष्टपुष्ट धनवान लोगों तक हर

स्तर के लोगों से मुलाक़ात की। इससे मैं भारत में बिखरे विभिन्न तरह के लोगों की भीड़ में से उन विचित्र योगियों को खोज पाया। दूसरी ओर, मैंने अपनी बाहरी परिस्थितियों से पूरी तरह विरक्त होकर आंतरिक जीवन व्यतीत किया था। मैं अपना अधिकांश समय गूढ़ पुस्तकों को पढ़ने तथा मनोवैज्ञानिक प्रयोग के अज्ञात रास्तों पर चलकर बिताता था। मैं उन विषयों का अध्ययन करता था जिन्हें सदा अंधकारपूर्ण रहस्यों में छिपाकर रखा गया है। इन बातों में पूर्वी तथ्यों के प्रति जन्मजात आकर्षण को भी शामिल करना चाहिए। मेरी प्रथम यात्रा से भी पहले, पूर्व ने मेरी आत्मा को मज़बूती से जकड़ लिया था। आख़िर उस जकड़न ने मुझे एशियाई पुस्तकें, पंडितों द्वारा लिखी टीकाएँ तथा संन्यासियों द्वारा चिह्नित विचारों के अंग्रेज़ी अनुवादों को पढ़ने के लिए विवश कर दिया।

यह दोहरा अनुभव बड़ा उपयोगी सिद्ध हुआ। इसने मुझे यह सिखाया कि जीवन के रहस्यों की जाँच-पड़ताल की पूर्वी पद्धतियों से सहानुभूति नहीं रखनी चाहिए तथा तथ्यों को आलोचनात्मक एवं तटस्थ रूप से जानने की अपनी इच्छा को दबाना नहीं चाहिए। उस सहानुभूति की भावना के बिना मेरी उन जगहों और लोगों से मुलाक़ात नहीं हो पाती जहाँ भारत में रहने वाला एक आम अंग्रेज़ जाने से कतराएगा। अपने कड़े वैज्ञानिक दृष्टिकोण के बिना, मैं अंधविश्वास के बीहड़ में भटक जाता जहाँ पहले भी कई भारतीय भटक चुके हैं। परस्पर विरोधी लगने वाली बातों को जोड़ना सरल नहीं है, किंतु मैंने उन्हें संतुलित रखने का सच्चा प्रयास किया है।



मैं ये तो नहीं कहता कि पश्चिम के पास आधुनिक भारत से सीखने को अधिक नहीं है, किंतु मुझे यह कहने में कोई संकोच नहीं है कि हम प्राचीन और आज भी जीवित कुछ भारतीय मनीषियों से बहुत कुछ सीख सकते हैं। उस विदेशी पर्यटक द्वारा, जो प्रमुख शहरों और ऐतिहासिक स्थानों का “अध्ययन” करता है और फिर भारत की पिछड़ी सभ्यता से खिन्न होकर लौट जाता है, नफ़रत के साथ इसका अवमूल्यन करना निस्संदेह उचित नहीं है। तथापि, एक दिन कोई अधिक समझदार पर्यटक अवश्य आएगा, जो जर्जर होते मंदिरों के अवशेष अथवा बहुत पहले मर चुके राजाओं के संगमरमर के महल नहीं खोजेगा, बल्कि वह उन जीवित योगियों की तलाश करेगा जो ऐसा ज्ञान देने में सक्षम हैं, जिसे विश्वविद्यालयों में नहीं पढ़ाया जाता।

क्या ये भारतवासी चिलचिलाती धूप में यूँ ही घूमने वाले लोग हैं? क्या इन्होंने कुछ नहीं किया, ऐसा कुछ नहीं सोचा जो शेष जगत के लिए उपयोगी हो? ऐसा यात्री जो केवल यहाँ के भौतिक क्षय और मानसिक ढीलेपन को देखता है, उसे दूरदर्शी नहीं कहा जा सकता। उसे इस अवहेलना पर मनन करना तथा बंद होंठ और छिपे हुए द्वार खोलने का प्रयास करना

चाहिए।

यह माना कि भारत शताब्दियों तक सिर हिलाता और गहरी नींद में सोता रहा है; माना कि आज भी यहाँ ऐसे लाखों किसान हैं जो उसी चौदहवीं शताब्दी में रहने वाले अंग्रेज़ किसानों जैसी अशिक्षा के शिकार हैं, उसी तुच्छ अंधविश्वास और बचकाने धर्म के सम्मिश्रण से ग्रस्त हैं। यह भी माना कि अध्ययन के अपने केंद्रों में रहने वाले ब्राह्मण पंडित, पुरोहित बाल की खाल निकालकर और अपने ही मध्यकालीन पंडितों की तरह गूढ़ तत्त्व को मथकर अपना मूल्यवान समय बर्बाद करते हैं। इसके बावजूद योग नाम के जातिगत शब्द के अंतर्गत संस्कृति का क्षुद्र किंतु मूल्यवान अवशेष रह जाता है, जो मानवता के लिए उसी तरह का लाभ प्रदान करता है जो किसी भी पाश्चात्य विज्ञान की शाखा से मिलता है।

यह हमारे शरीर को स्वस्थ दशा के निकट ले आता है जो मूल रूप से प्रकृति का उद्देश्य था; यह आधुनिक सभ्यता की सबसे आवश्यक ज़रूरत यानी मस्तिष्क की दोषरहित शांति भी प्रदान कर सकता है और यह उन लोगों के लिए आत्मा के उस ख़ज़ाने का द्वार खोल हो सकता है जो इसके लिए मेहनत करते हैं। मैं यह स्वीकार करता हूँ कि यह शानदार ज्ञान भारत के वर्तमान से न होकर उसके अतीत से संबंधित है। यह कि योग का यह सुरक्षित ज्ञान आधुनिक समय में पनप नहीं सका जबकि किसी समय में इसके बहुत योग्य शिक्षक और बहुत निष्ठावान शिष्य रहे होंगे। यह भी संभव है कि इसे जिस गोपनीयता में बहुत ध्यान से लपेट कर रखा गया था, उसके कारण इस प्राचीन ज्ञान का विस्तार नहीं हो पाया; मैं नहीं कह सकता।

ऐसी स्थिति में यदि कोई व्यक्ति अपने पाश्चात्य जगत के साथियों को किसी नए मत हेतु नहीं, बल्कि अपने अर्जित संग्रह के ढेर पर ज्ञान के कुछ और कण रखने के उद्देश्य से पूर्व दिशा की ओर देखने को कहे तो इसमें कुछ भी अनुचित नहीं होगा। ब्यूर्नुफ़, कोलब्रुक और मैक्स मूलर जैसे पूर्ववादी जब शिक्षा के क्षेत्र में आगे आए और उन्होंने भारत के साहित्यिक ख़ज़ाने को हमारे सामने प्रस्तुत किया, तब यूरोप के विद्वान इस बात को समझने लगे कि इस देश में रहने वाले मूर्तिपूजक उतने भी मूर्ख नहीं थे जितना हमने अपने अज्ञान के चलते उन्हें समझा था। वे लोग जो एशियाई ज्ञान को पाश्चात्य जगत के लिए अनुपयोगी और खोखला बताते हैं, ऐसा करके यह सिद्ध करते हैं कि वे स्वयं खोखले हैं।

जिन व्यवहारिक लोगों ने इस अध्ययन को “मूर्खतापूर्ण” कहा, उन्होंने स्वयं को संकीर्ण विचारधारा का सिद्ध किया है। यदि जीवन के विषय में हमारे विचार सिर्फ़ स्थान के एक संयोग द्वारा निर्धारित किए जाने हैं, कि हम मुंबई की जगह ब्रिस्टल में पैदा हो गए, तो हम सभ्य कहलाए जाने योग्य ही नहीं हैं। जो लोग अपने दिमाग़ में किसी भी पूर्वी विचार को प्रविष्ट नहीं होने देते, वे सूक्ष्म विचारों, गहरे तथ्यों और लाभकारी मनोवैज्ञानिक बोध से भी वंचित रह जाते हैं। जो कोई व्यक्ति पूर्व जगत के विचित्र तथ्यों और अत्यंत विचित्र ज्ञान प्राप्त

करने की आशा में इस प्राचीन विद्या को टटोलने की कोशिश करेगा, उसकी तलाश विफल नहीं जाएगी।



मैंने योगियों और उनके गुप्त ज्ञान की खोज में पूर्व की यात्रा की। मैंने आध्यात्मिक प्रकाश और दिव्य जीवन को पाने का विचार भी किया, हालाँकि यह मेरा मुख्य उद्देश्य नहीं था। मैं इसी खोज में भारत की पवित्र नदियों - शांत एवं धूसर-हरित गंगा, चौड़ी यमुना तथा अनुपम गोदावरी - के तटों पर घूमा हूँ। मैंने देश का भ्रमण किया है। मैंने भारत का हृदय देखा तथा यहाँ लुप्त हो रहे साधुओं ने अपरिचित पश्चिमी व्यक्ति के लिए बहुत-से द्वार खोल दिए।

मैं केवल इतना ही कह सकता हूँ कि भारत में आकर मेरा विश्वास फिर से बन गया। कुछ ही समय पहले, मैं ऐसे लोगों के बीच था जो ईश्वर को मनुष्य की कल्पना मानते हैं, आध्यात्मिक सत्य को केवल निहारिका समझते हैं और दैवी न्याय को बचकाने आदर्शवादी की मिठाई कहते हैं। मैं भी कुछ हद तक उन लोगों को लेकर अधीर था जो आध्यात्मिक आनंदलोक निर्मित करते और फिर ख़ुद को ईश्वर के संपदा एजेंट के रूप में प्रस्तुत करते हैं। मेरे मन में अविवेकी सिद्धांतवादियों के व्यर्थ और कट्टर प्रयासों के प्रति तिरस्कार के सिवाय कुछ नहीं था।

इस कारण मैंने यदि इन विषयों के बारे में थोड़ा अलग ढंग से सोचना शुरू कर दिया है तो विश्वास कीजिए कि मेरे पास ऐसा करने के पीछे ठोस वजह है। तथापि मैंने किसी पूर्वी मत के प्रति निष्ठा व्यक्त नहीं की है; जिन विषयों का वास्तव में महत्त्व है, मैंने बौद्धिक रूप से बहुत पहले उनका अध्ययन कर लिया था। मुझे ईश्वर पर विश्वास हो गया है। यह बहुत तुच्छ और निजी बात लगती होगी किंतु ठोस तथ्यों एवं विशुद्ध तर्क पर भरोसा करने वाली आधुनिक पीढ़ी का व्यक्ति होने के नाते मैं इसे बड़ी उपलब्धि मानता हूँ।

यह विश्वास किसी नास्तिक के मन में तर्क द्वारा नहीं, बल्कि किसी ज़बर्दस्त अनुभव से ही पैदा हो सकता है और यह मेरे मन में भी इसी तरह पैदा हुआ था। वह एक वन में रहने वाला संकोची ऋषि था, जिसने छह वर्ष किसी पर्वत की गुफा में बिताए थे। उसने मेरी सोच में यह महत्त्वपूर्ण बदलाव उत्पन्न किया। यह संभव है कि उसने अपनी मैट्रिक परीक्षा भी उत्तीर्ण न की हो, किंतु मुझे इस पुस्तक के अंतिम अध्यायों में उस व्यक्ति के प्रति अपनी कृतज्ञता दर्ज करने में ज़रा भी शर्म महसूस नहीं हुई। ऐसे ऋषियों की खोज, पश्चिमी विद्वानों का ध्यान भारत की ओर आकर्षित करने के लिए पर्याप्त है। राजनीतिक हलचल भरे उपद्रवों के बावजूद रहस्यपूर्ण भारत में आध्यात्मिक जीवन मौजूद है। मैंने एक से अधिक ऐसे गुणी लोगों का प्रामाणिक विवरण प्रस्तुत किए हैं, जिन्होंने सामान्य मनुष्यों के लिए दुर्लभ, शक्ति

और शांति प्राप्त की है।

मैंने इस पुस्तक में अन्य कई शानदार और विचित्र चीज़ों के साक्ष्य भी दिए हैं। जब मैं इंग्लैंड के ग्रामीण माहौल में बैठा अपने विवरणों को टाइप कर रहा था तो ये सब मुझे अविश्वसनीय प्रतीत हो रहे थे। वास्तव में, मुझे यह अपना दुस्साहस लग रहा है कि मैं इन बातों को नास्तिक जगत के लोगों के लिए लिख रहा हूँ। परंतु मुझे नहीं लगता कि वर्तमान भौतिक-प्रधान विचार जो आज संसार पर हावी हैं, सदा यूँ ही रहेंगे; अभी से विचारधारा में हो रहे परिवर्तनां के राजकीय संकेत मिलने लगे हैं। तथापि मैं स्पष्ट रूप से कहता हूँ कि मैं चमत्कारों में विश्वास नहीं करता। मेरी पीढ़ी के अधिकतर लोग नहीं करते। परंतु मैं यह अवश्य मानता हूँ कि प्रकृति के नियमों के विषय में हमारा ज्ञान अधूरा है और यह कि वैज्ञानिकों का अग्र-दल, जो इस अज्ञात क्षेत्र में तेज़ी से आगे बढ़ रहा है, इनमें से कुछ और नियमों को जान लेगा तो हम ऐसे कार्य कर सकेंगे जो चमत्कार के समतुल्य हैं।

अध्याय 2

खोज से पहले की भूमिका

भूगोल का अध्यापक एक लंबी नुकीली छड़ी को विशाल, वार्निश किए हुए कपड़े के मानचित्र पर घुमाता है। उसके सामने कक्षा में बच्चे बेमन से बैठे हैं। वह एक त्रिभुजीय लाल निशान की ओर संकेत करता है जो भूमध्य रेखा से नीचे निकला हुआ है और फिर अपने शिष्यों की खोई रुचि को जगाने का प्रयास करता है। वह पतली आवाज में, गुनगुनाते हुए ढंग से ऐसे बोलता है मानो कोई बहुत बड़ी सार्थक आकाशवाणी करने वाला है: 'भारत को ब्रिटिश मुकुट का सबसे चमकदार रत्न कहा गया है...'

उसी समय एक तुनकमिजाज लड़का, जिसका ध्यान कहीं और है, अचानक होश में आता है और उस भावशून्य इमारत की कल्पना करने लगता है, जिसमें उसका विद्यालय स्थित है। उसे कानों में ज्यों ही भारत शब्द सुनाई पड़ता है, अथवा पुस्तक के पन्ने पर उसे भारत का चित्र दिखाई देता है तो उसे उसमें किसी अज्ञात स्थान के रोमांचक व रहस्यमय संकेत दिखाई देते हैं। विचारों की एक अवर्णनीय धारा बार-बार उसके सामने इसे ले आती है।

गणित का शिक्षक जब यह सोचता है कि उसका छात्र बीजगणितीय प्रश्न को हल कर रहा है, तो उसे इस बात का अंदाज़ भी नहीं होता कि वह शैतान छात्र स्कूल की मेज़ का प्रयोग किसी गुप्त अभिप्राय के लिए कर रहा है। कुशलता से मेज़ पर फैलाई पुस्तकों के नीचे, वह पगड़ीदार सिरों, साँवले चेहरों तथा मसालों से भरे जहाजों के चित्र बना रहा होता है।

युवाकाल बीत जाता है किंतु हिंदुस्तान में उसकी यह रुचि कम नहीं होती। बल्कि, यह

फैलकर संपूर्ण एशिया को अपनी उत्सुकता के शिकंजे में घेर लेती है। वह यदा-कदा वहाँ जाने की योजना भी बनाता है। उसका मन समुद्र की ओर भागने का करता है। इसके बाद भारत की एक झलक पाने के लिए थोड़े-से उद्यम की आवश्यकता होगी? यदि ये योजनाएँ भी सफल नहीं होतीं, तो वह अपने विद्यालय के साथियों से बढ़-चढ़कर बातें करता है और कोई न कोई साथी आसानी से उसके बचकाने उत्साह का शिकार हो जाता है।

इसके बाद, वे चुपचाप योजना बनाते हैं तथा गुप्त रूप से मिलते-जुलते हैं। वे यूरोप में पैदल-यात्रा की योजना बनाते हैं; उस यात्रा को फिर एशिया माइनर और अरब होते हुए अदन बंदरगाह तक जाना है। इस लंबी पैदल यात्रा के विषय में सोचकर पाठक मुस्कराएगा। वे सोचते हैं कि अदन पर किसी परिचित जहाज के कप्तान से मदद मिल जाएगी। वह निश्चय ही दयालु और सहानुभूतिपूर्ण रवैया दिखाएगा। वह उन्हें अपने जहाज में बैठाकर विदेश ले जाएगा और एक सप्ताह बाद वे लोग भारत-भ्रमण आरंभ कर देंगे।

इस लंबी यात्रा की तैयारियाँ तेज़ी से शुरू हो जाती हैं। पैसा जोड़ा जाता है और वे गुप्त रूप से एक पोशाक ख़रीदते हैं जैसी उनके अनुसार खोजी लोग पहनते हैं। नक़्शों और मार्गदर्शक पुस्तिकाओं का बड़े ध्यान से अध्ययन किया जाता है। उनके रंगीन पन्ने और आकर्षक चित्र भ्रमण-लालसा को तीव्रता प्रदान करते हैं। आख़िर, एक दिन वे भ्रमण के लिए निकलने और देश छोड़ने की तिथि तय कर लेते हैं। कौन जानता है आगे क्या होगा?

वे अपनी युवा ऊर्जा और आशावादिता को छिपा नहीं पाते। दुर्भाग्य से एक दिन, एक लड़के के माता-पिता को उन तैयारियों का पता लग जाता है। वे उस लड़के से पूरा विवरण पूछ लेते हैं और यात्रा के लिए कड़ाई से मना कर देते हैं। इसका नतीजा बताने योग्य नहीं है! उस संपूर्ण प्रयास को अनिच्छा से बीच में छोड़ दिया जाता है।

उस दुर्भाग्यपूर्ण अभियान के मन से भारत को जानने की इच्छा निकल नहीं पाती। हालाँकि युवा होने के साथ अन्य विषयों में उसकी रुचि बढ़ती है और वह अपने दायित्वों की बेड़ियों से बँध जाता है। उसे खेदपूर्वक अपनी इच्छा को दबा देना पड़ता है।

ऐसे ही अनेक वर्ष बीत जाते हैं और फिर एक दिन, उसकी भेंट एक व्यक्ति से होती है जो उसकी पुरानी आकांक्षा को अस्थाई रूप से सजीव कर देता है। ऐसा इसलिए होता है क्योंकि वह साँवले रंग का है, सिर पर पगड़ी पहनता है और हिंदुस्तान के चिलचिलाते गर्म देश से आया है।



मेरे जीवन में उसके आने के बाद मैं अतीत के कुछ चित्रें को देखकर पुरानी यादों का ताना-बाना बुन लेता हूँ। पतझड़ समाप्त होने वाला है। हवा में धुंध छाने लगी है और मेरे कपड़ों में

तीखा ठंडापन महसूस होता है। अवसाद की चिपचिपी अँगुलियाँ मेरे दुर्बल मन को जकड़ने की कोशिश करती हैं।

मैं एक प्रकाशमान कैफ़े में प्रवेश करता हूँ और वहाँ की गर्माहट को कुछ देर के लिए उधार ले लेता हूँ। एक कप गर्म चाय - जो अन्य मौक़ों पर बहुत असरदार लगती है - मुझे शांति प्रदान नहीं कर पाती। मैं अपने आस-पास के वातावरण में भारीपन को दूर नहीं कर पाता। अवसाद ने मुझे घेर लेने का निश्चय कर लिया है मानो मेरे हृदय-द्वार पर काले पर्दे पड़े हैं।

यह बेचैनी मुझसे सहन नहीं होती और मैं इससे बचने के लिए कैफ़े से निकलकर बाहर खुली सड़क पर आ जाता हूँ। मैं निरुद्देश्य पुराने रास्तों पर चलता रहता हूँ। मैं कुछ देर में क़िताबों की एक चिर-परिचित छोटी-सी दुकान पर पहुँच जाता हूँ। वह एक प्राचीन इमारत है और इसमें उतनी ही प्राचीन क़िताबें मिलती हैं। उसका मालिक अनूठा व्यक्ति है।* वह पिछली शताब्दी का कोई जीवित अवशेष प्रतीत होता है। यह भीड़-भाड़ का युग उसके लिए व्यर्थ है और वह भी इस युग के लिए व्यर्थ ही है। उसके पास केवल दुर्लभ क़िताबें और आरंभिक संस्करण उपलब्ध हैं तथा वह अनूठी एवं गूढ़ विषयों से संबंधित सामग्री रखता है। उसके पास परोक्ष तथा असामान्य क़िताबी ज्ञान का ज़बर्दस्त भंडार है। मुझे समय-समय पर, उसकी दुकान पर जाना और इन विषयों पर उसके साथ चर्चा करना अच्छा लगता है।

मैं दुकान में जाकर उसका अभिवादन करता हूँ। मैं कुछ देर तक जिल्द-बँधी क़िताबों के पीले धुँधले पन्नों को नज़दीक से देखता हूँ। मेरा ध्यान एक पुरानी क़िताब पर जाता है; वह मुझे रोचक लगती है और मैं थोड़े और ध्यान से उसे देखने लगता हूँ। चश्माधारी दुकानदार मेरी रुचि को भाँप जाता है और अपनी आदतानुसार, क़िताब के विषय - पुनर्जन्म पर तर्क करना आरंभ कर देता है।

वह वृद्ध दुकानदार, आदत से मजबूर, उस चर्चा को अपने पक्ष में रखता है। वह उस विचित्र सिद्धांत के बारे में विस्तार से बोलता है मानो उसे विषय के पक्ष और विपक्ष में पुस्तक के लेखक से भी अधिक जानकारी हो। उसे उस विषय के कालजयी विशेषज्ञों के विचार भी अँगुलियों पर रटे हुए हैं। इस तरह, मुझे बहुत-सी अद्भुत जानकारी प्राप्त हो जाती है।

अचानक मुझे दुकान के एक कोने में कुछ हलचल दिखाई पड़ती है। मैं मुड़कर देखता हूँ तो एक ऊँचे क़द का व्यक्ति दुकान के छोटे-से भीतरी हिस्से में खड़ा है जहाँ क़ीमती क़िताबें रहती हैं।

वह अजनबी भारतीय है। वह रौबदार चाल से हमारी ओर बढ़ता है और दुकानदार के सामने आकर खड़ा हो जाता है।

'मित्र,' वह धीरे-से कहता है, 'हस्तक्षेप के लिए क्षमा चाहता हूँ। आप जिस विषय पर बात कर रहे थे, मैं उसे सुन रहा था क्योंकि मुझे उसमें बहुत रुचि है।

आप मुझे उन लेखकों के बारे में बताइए जिन्होंने पृथ्वी पर मनुष्य के निरंतर पुनर्जन्म के विचार सबसे पहले अपना मत व्यक्त किया था। मैं मानता हूँ कि यूनानी दार्शनिक, अफ़्रीकी विद्वान तथा आरंभिक ईसाई पादरी इस सिद्धांत को भलीभाँति समझते थे। परंतु आपको क्या लगता है, यह सचमुच कहाँ से आरंभ हुआ होगा?'

वह एक क्षण के लिए रुकता, किंतु उत्तर के लिए समय नहीं देता।

'मुझे आज्ञा दीजिए तो मैं बताता हूँ,' वह मुस्कराते हुए कहता है। 'आपको पुनर्जन्म की प्रथम स्वीकृति के लिए भारत का रुख़ करना होगा। यह पुरातन काल में भी, मेरे देश के लोगों में एक प्रमुख सिद्धांत था।'

उस वक्ता का चेहरा मुझे आकर्षित करता है। वह सामान्य नहीं है; उसे सैकड़ों भारतीय चेहरों में अलग पहचाना जा सकता है। मैं उसके चरित्र के विषय में कह सकता हूँ कि उसने भीतर शक्ति का संचय किया हुआ है। उसकी पैनी दृष्टि, मज़बूत जबड़े और उच्च मस्तक से उसकी मुखाकृति की जानकारी मिलती है। उसकी त्वचा का रंग औसत हिंदू के रंग से अधिक गहरा है। उसके सिर पर शानदार पगड़ी है जिसके सामने के भाग में चमकता रत्न जड़ा हुआ है। उसके वस्त्र यूरोपीय हैं तथा बहुत बढ़िया ढंग से सिले गए हैं।

उसका नीतिपरक वक्तव्य दुकानदार को रास नहीं आता और वह उसका खुलकर विरोध करता है।

'ऐसा कैसे हो सकता है,' दुकानदार संशयी तरीक़े से कहता है, 'जबकि पूर्वी भूमध्यसागरीय शहर, ईसा-पूर्व काल में संस्कृति एवं सभ्यता के समृद्धि केंद्र हुआ करते थे? क्या उस प्राचीन समय के महानतम विद्वान एथेन्स और एलेक्जेंड्रिया वाले क्षेत्रें में नहीं रहते थे? तो, इस तरह उनके विचार दक्षिणी एवं पूर्वी दिशा में बढ़ते हुए भारत पहुँचे होंगे?'

भारतीय सहिष्णु ढंग से मुस्कराता है।

'बिलकुल नहीं,' वह तत्काल उत्तर देता है। 'आप जो कह रहे हैं, वास्तव में ठीक उसका विपरीत हुआ था।'

'अच्छा! आप कहना चाहते हैं कि प्रगतिशील पाश्चात्य जगत ने मंथर गति वाले पूर्व जगत से उसका दर्शन प्राप्त किया है? नहीं, जनाब!' दुकानदार प्रतिवाद करता है।

'क्यों नहीं? मित्र, आप अपने एप्यूलियस को दोबारा पढ़िए और यह जानिए कि पायथागोरस किस प्रकार भारत आया था जहाँ उसने ब्राह्मणों से शिक्षा प्राप्त की। फिर आप देखिए कि उसने किस तरह यूरोप लौटकर पुनर्जन्म के सिद्धांत को पढ़ाना शुरू किया। यह तो एक उदाहरण है। मैं और बता सकता हूँ। आपके द्वारा पूर्वी जगत को मंथर कहने पर मुझे हँसी आ गई। हज़ारों वर्ष पहले जिस समय हमारे ऋषि-मुनि जीवन की गहनतम समस्याओं पर चिंतन कर रहे थे, तब आपके यहाँ के देशवासियों को उन समस्याओं के विषय में पता भी

नहीं था।’

वह अचानक रुककर हमें देखता है और अपने शब्दों को हमारे दिमाग़ में उतर जाने की प्रतीक्षा करता है। मैं देखता हूँ कि दुकानदार दुविधा में है। मैंने इससे पहले उसे कभी इस तरह शांत होते या किसी अन्य व्यक्ति के ज्ञान से प्रभावित होते नहीं देखा।

मैंने उस दूसरे ख़रीदार के शब्द ध्यान से सुने और उन पर कोई टिप्पणी करने का प्रयास नहीं किया। इसके बाद वार्तालाप में चुप्पी आ जाती है जिसे हम सब महसूस करते हैं और उसका आदर करते हैं। शीघ्र ही, वह भारतीय सहसा मुड़ता है और भीतरी कमरे में चला जाता है और फिर कुछ ही देर में अलमारी से एक महँगी क़िताब उठाकर लाता है। वह क़िताब की क़ीमत चुकाता है और बाहर जाने लगता है। वह दरवाज़े तक पहुँच जाता है और मैं उसे जाते हुए देखता रहता हूँ।

अचानक, वह फिर पीछे मुड़ता है और मेरे पास आता है। वह अपनी जेब में से अपना बटुआ निकालकर उसमें से एक परिचय-कार्ड छाँटता है।

‘क्या आप मेरे साथ इस वार्ता को आगे बढ़ाना चाहेंगे?’ वह हल्के-से मुस्कराते हुए मुझसे पूछता है। मुझे आश्चर्य होता है किंतु मैं उसका प्रस्ताव सहर्ष स्वीकार कर लेता हूँ। वह अपना परिचय कार्ड मुझे देता है और साथ ही, रात्रि-भोज पर भी आमंत्रित करता है।



मैं शाम होने पर उस अजनबी के घर की तलाश में निकल पड़ता हूँ। ऐसा करना थोड़ा मुश्किल लगता है क्योंकि बाहर मेरे साथ सड़कों पर काफ़ी घनी धुंध भी है। मेरा ख़याल है कि किसी कलाकार के लिए, जो कभी-कभी शहर में मौजूद रहते हैं, ऐसी धुंध अत्यंत रूमानी होती होगी। हालाँकि मेरा मन, आगामी भेंट के लिए इतना इच्छुक है कि मुझे न तो सौंदर्य दिखाई दे रहा है और न ही आस-पास के वातावरण से कोई कठिनाई हो रही है।

मेरी यात्रा एक विशाल गेट के सामने रुक जाती है, जो अचानक मेरे सामने आ खड़ा होता है। लोहे के ब्रैकेट पर दो बड़े लैंप जल रहे घर में प्रवेश करते ही मुझे बहुत सुखद आश्चर्य होता है। उस भारतीय पुरुष ने ऐसी अनूठी सजावट का कोई संकेत नहीं दिया था, किंतु उसने उस सुंदर सजावट पर काफ़ी पैसा ख़र्च किया है।

इतना कहना ही पर्याप्त होगा कि मैं स्वयं को एक शानदार कक्ष में पाता हूँ, जो किसी एशियाई महल का अंश प्रतीत होता है क्योंकि जहाँ तक मुझे पता है उसमें अत्यंत शानदार फ़र्नीचर और बहुत रंगीन एवं सुंदर सजावट दिखाई पड़ती है। बाहरी दरवाज़े के बंद होने के बाद, मैं धूसर रंग के उदासीन पाश्चात्य जगत को पीछे छोड़ आया हूँ। उस कमरे को पुराकाल की भारतीय एवं चीनी शैली से मिलाकर सजाया गया है। उसमें लाल, काला और स्वर्णिम रंग

प्रमुख हैं। दीवारों पर चमकदार कपड़ों पर विशाल चीनी ड्रैगन बने हैं। चारों ओर से हरे रंग के ड्रैगन के सिर नज़र आते हैं। उन पर ब्रैकेट टिके हैं जिनमें हस्तशिल्प की महँगी कलाकृतियाँ रखी हैं। दरवाज़े के दोनों ओर नारंगी रंग के दो रेशमी कोट हैं। लकड़ी के तख़्त से बने फ़र्श पर भारतीय शैली के पैटर्न वाले कालीन बिछे हैं और चलते समय उन कालीनों की मोटी पर्त में जूते धँस जाते हैं। सिगड़ी के सामने विशालकाय बाघ की खाल सजी हुई है।

मेरी नज़र कोने में रखे रोगन किए हुए मेज़ पर जाती है। उस पर काले आबनूस का बना एक मंदिर रखा है जिसके दरवाज़ों पर सोने का पानी चढ़ा हुआ है। उसके खाँचे में से एक भारतीय देवता की मूर्ति दिखाई दे रही है। वह शायद बुद्ध की मूर्ति है क्योंकि उनका चेहरा शांत एवं रहस्यमय लग रहा है और वे अपलक अपनी नाक की ओर देख रहे हैं।

मेरे मेजबान ने शिष्टाचार के साथ मेरा अभिवादन किया। उसने काले रंग का स्वच्छ रात्रि-भोज सूट पहना है। मेरा मानना है कि ऐसा व्यक्ति संसार के कितने भी लोगों में अलग नज़र आ जाएगा। कुछ देर बाद हम दोनों भोजन के लिए बैठ जाते हैं। भोजन की मेज़ पर कई स्वादिष्ट व्यंजन पेश किए जाते हैं और यहीं मुझे पहली बार कढ़ी का आनंद प्राप्त हुआ, जिसका स्वाद मैं भूल नहीं सका हूँ। वह सेवक, जो हमारी देखभाल कर रहा है, अनूठा दिखाई पड़ रहा है। उसने सफ़ेद रंग की जैकेट और पैंट पहनी है, स्वर्णिम कमरबंद बाँधा है और एक उजली पगड़ी पहनी हुई है।

भोजन करते समय, हमारी बातचीत ऊपरी तथा सामान्य तरह की होती है, तथापि मेरा मेजबान जो कुछ कहता है, वह जिस भी विषय को छूता है, उसके शब्दों में हमेशा निश्चयात्मकता होती है। उसके वक्तव्य इस तरह कहे जाते हैं कि उनमें किसी तरह की तर्क की गुंजाइश नहीं रहती; उसका उच्चारण इतना निश्चित होता है कि उसकी बात किसी भी विषय पर निर्णायक होती है। मैं उसके शांत आश्वासन से प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकता।

कॉफ़ी पीते समय वह मुझे अपने विषय में थोड़ा बताता है। वह काफ़ी घूम चुका है और उसके पास कुछ संसाधन हैं। वह मुझे चीन में बिताए एक वर्ष का, जापान के जीवन का, जहाँ के शानदार भविष्य की वह पुष्टि करता है, अमेरिका में, यूरोप में तथा सबसे आश्चर्यजनक, सीरिया के एक मठ में बिताए निवृत्ति काल का अत्यंत सजीव वर्णन करता है।

सिगरेट सुलगाते समय, वह उस विषय की बात छेड़ता है जिसके बारे में क़िताबों की दुकान पर चर्चा हुई थी। परंतु स्पष्ट है कि अन्य बातों में उसकी अधिक रुचि है क्योंकि वह जल्द ही बड़े मुद्दों पर आ जाता है तथा भारत के प्राचीन ज्ञान की बात करता है।

'हमारे ऋषियों के कुछ मत पहले ही पश्चिम तक पहुँच चुके हैं,' वह गर्व से कहता है, 'परंतु अधिकतर मामलों में असली ज्ञान को ग़लत ढंग से समझा गया है; कुछ मामलों को तो झूठा भी ठहरा दिया गया है। हालाँकि मुझे इससे कोई शिकायत नहीं है। आज भारत क्या है? वह अब अपने स्वर्णिम अतीत का प्रतिनिधित्व नहीं करता। उसकी महानता नष्ट हो गई

है। यह दुखद, बहुत ही दुखद है। लोग धर्म की झूठी बेड़ियों तथा अविवेकी प्रथाओं के दिखावटी जंजाल में फँसकर कुछ पुराने आदर्शों को पकड़े बैठे हैं।'

'इस गिरावट का कारण क्या है?' मैंने उससे पूछा।

वह चुप है। यूँ ही चुपचाप एक मिनट बीत जाता है। मैं देखता हूँ कि उसकी आँखें बंद होने लगती हैं और फिर आधी मुँद जाती हैं। फिर वह धीरे-से बोलना आरंभ करता है।

'आह, मित्र! कभी मेरे देश की धरती पर महान ऋषि रहते थे, जिन्होंने जीवन के रहस्यों को खोज लिया था। राजा और सामान्य लोग सभी उनसे सलाह लेते थे। उनकी प्रेरणा से भारतीय सभ्यता अपने चरमोत्कर्ष पर पहुँच गई थी। आज, वे लोग कहाँ पाए जाते हैं? अनजान, अलिखित और आधुनिक जीवन की मुख्य धारा से दूर, अब केवल दो-तीन ही शेष होंगे। उन महान ऋषियों ने जब समाज से दूरी बना ली, तो उसी के साथ हमारा पतन भी शुरू हो गया।'

उसका सिर झुक जाता है और उसकी ठुड्डी, उसकी छाती पर टिक जाती है। अंतिम वाक्य के साथ उसका स्वर दुखी हो जाता है। कुछ पल के लिए वह मुझसे भी कट जाता है, मानो उसकी आत्मा, दुख-भरे ध्यान में लिपट गई हो।

उसका अत्यंत रोचक और आकर्षक व्यक्तित्व मुझे फिर से प्रभावित करता है। उसकी काली, चमकदार आँखों से उसकी उत्सुक मानसिकता तथा मधुर व सहानुभूतिपूर्ण स्वर से सौम्य हृदय का पता लगता है। मुझे फिर से लगता है कि वह मुझे पसंद है।

सेवक शोरगुल करता हुआ कमरे में प्रवेश करता है और रोगन की हुई मेज़ की ओर बढ़ता है। वह अगरबत्ती जलाता है जिसका धुआँ कमरे की छत तक पहुँच जाता है। पूर्वी धूपबत्ती की विचित्र सुगंध कमरे में चारों ओर फैल जाती है। वह अप्रिय नहीं लगती।

अचानक मेरा मेजबान अपना सिर उठाकर मेरी ओर देखता है।

'क्या मैंने आपको बताया कि अभी दो-तीन शेष हैं?' वह अजीब ढंग से पूछता है। 'अरे हाँ! मैंने कहा था। एक बार मेरी भेंट एक महान ऋषि से हुई थी। वह मेरा सौभाग्य था जिसके विषय में अब मैं बहुत कम लोगों से बात करता हूँ। वे मेरे पिता, मार्गदर्शक, गुरु और मित्र थे। उनके पास दिव्य ज्ञान था। मैं उनसे इतना स्नेह करता था मानो मैं सचमुच उनका पुत्र हूँ। मैं जब कभी किसी अवसर पर उनके साथ ठहरता था तो मुझे लगता था कि मूल रूप से जीवन बहुत अच्छा है। उनकी दिव्य उपस्थिति का ऐसा शानदार प्रभाव होता था। कला मेरा शौक़ और सौंदर्य मेरा आदर्श है। मैंने उन्हीं से कुष्ठ रोगियों, बेसहारा और अपंग लोगों में, जिनसे मैं पहले भय के कारण दूर रहता था, दिव्य सौंदर्य के दर्शन करना सीखा। वह शहरों से दूर जंगल में एक आश्रम में रहते थे। एक बार अचानक मेरी उनसे मुलाक़ात हो गई। उस दिन के बाद मैं उनसे अनेक बार मिला और उनके साथ जितना संभव हो, रहने का प्रयास किया। उन्होंने मुझे बहुत कुछ सिखाया। हाँ - ऐसा व्यक्ति किसी भी देश को महान बना सकता है।'

‘तो फिर उन्होंने सार्वजनिक जीवन में आकर भारत की सेवा क्यों नहीं की?’ मेरा प्रश्न स्पष्ट था।

भारतीय व्यक्ति ने अपना सिर हिलाया।

‘हम ऐसे असामान्य व्यक्ति के उद्देश्यों को समझ नहीं सकते। आपके जैसे पश्चिमी जगत के व्यक्ति के लिए तो यह और भी अधिक कठिन है। उनका उत्तर शायद यह होता कि मस्तिष्क की दूरसंवेदी शक्तियों के प्रयोग द्वारा भी गुप्त रूप से सेवा की जा सकती है; उसके प्रभाव को दूर से संप्रेषित किया जा सकता है, जो दिखाई न देने पर भी उतना ही शक्तिशाली होता है। वह यह भी कह सकते हैं कि पतनशील समाज को उसके भाग्य के भरोसे छोड़ देना चाहिए ताकि नियत समय पर उसका उद्धार हो सके।’

मैं स्वीकार करता हूँ कि मैं यह उत्तर सुनकर दुविधा में पड़ गया।

‘बिलकुल सही, मेरे दोस्त! मैंने यही उम्मीद की थी,’ सामने वाले व्यक्ति ने मेरे मनोभावों को पढ़ते हुए कहा।



उस यादगार शाम के बाद, मैं उस भारतीय के असामान्य ज्ञान और उसके आकर्षक व्यक्तित्व से प्रभावित होकर अनेक बार उसके घर जाता हूँ। वह मेरी दबी हुई आकांक्षाओं को स्पर्श करता है और मेरे भीतर जीवन की सार्थकता को जानने की उत्सुकता को तीव्र कर देता है। वह मुझे मेरी बौद्धिक उत्सुकता को शांत करने के लिए कम, बल्कि मेरे लाभकारी आनंद के लिए अधिक उत्तेजित करता है।

एक शाम, हमारी वार्ता में मोड़ आता है जिसका मेरे लिए महत्त्वपूर्ण परिणाम होना पूर्व निर्धारित है। वह कभी अपने देशवासियों की विचित्र प्रथाओं एवं अनूठी परंपराओं के विषय में, तो कभी, अपने यहाँ के विचित्र लोगों के बारे में बताता है। उस शाम, वह अनूठे तरह के लोग, यानी योगियों का उल्लेख करता है। मुझे उस शब्द के अर्थ की हल्की-सी अस्पष्ट जानकारी है। मैंने कई बार यह शब्द पढ़ा है परंतु हर बार, संदर्भ के अनुसार इस शब्द का अर्थ पिछली बार से इतना भिन्न होता है कि इसे लेकर भ्रांति होना स्वाभाविक है। इसलिए, अपने मित्र द्वारा उस शब्द का उल्लेख किए जाने पर मैं उससे रुककर उस शब्द के विषय में अधिक जानकारी देने का अनुरोध करता हूँ।

‘मुझे यह करने में बहुत ख़ुशी होगी,’ उसने उत्तर दिया, ‘किंतु मैं सिर्फ़ एक परिभाषा द्वारा योगी के बारे में संपूर्ण जानकारी नहीं दे सकता। इसमें कोई संदेह नहीं कि मेरे यहाँ के दर्जनों लोग इस शब्द को दर्जनों ढंग से परिभाषित करेंगे। उदाहरण के लिए, ऐसे हज़ारों भिखारी हैं जो इस शब्द का प्रयोग करके लोगों को मूर्ख बनाते हैं। वे गाँवों में घूमते हैं तथा

झुंड बनाकर समय-समय पर होने वाले धार्मिक मेलों में भाग लेते हैं। कुछ केवल आलसी घुमक्कड़ होते हैं, तो कुछ भ्रष्ट, जबकि अधिकतर पूरी तरह अशिक्षित हैं और उन्हें योग के, जिसकी शरण में वे घूमते हैं, इतिहास और सिद्धांतों की कोई जानकारी नहीं है।'

वह एक पल रुककर, अपनी जलती सिगरेट की राख को झटका देकर गिरा देता है।

'आप ऋषिकेश जैसे किसी स्थान पर जाइए, जिसकी रक्षा स्वयं हिमालय पर्वत करता है। वहाँ आपको बिलकुल अलग तरह के लोग मिलेंगे। वे छोटी-सी कुटिया बनाकर रहते हैं, बहुत कम खाते हैं और हमेशा भगवान की भक्ति करते रहते हैं। धर्म उनकी श्वास है; उन्हें रात-दिन मन में उसी का ध्यान रहता है। वे लोग अधिकतर सज्जन पुरुष हैं जो धार्मिक ग्रंथों का अध्ययन करते एवं मंत्रदि जपते रहते हैं। उन्हें भी योगी कहा जाता है। परंतु इनमें और उन भिखारियों में, जो अनजान जनता को मूर्ख बनाते हैं, क्या समानता है? देखा आपने, यह शब्द कितना लचीला है! इन दोनों वर्गां के बीच कुछ ऐसे लोग भी हैं जिनमें दोनों के गुण विद्यमान हैं।'

'और इस सबके बावजूद, योगियों की रहस्यमय शक्तियों के विषय में इतना कुछ कहा जाता है,' मैंने कहा।

'आह! अब आपको एक और परिभाषा सुननी चाहिए,' वह मुझ पर हँसा। 'बड़े शहरों से दूर एकांत स्थानों, गहन जंगलों और निर्जन गुफाओं में बहुत विचित्र लोग रहते हैं जो अपना समस्त जीवन ऐसी क्रियाओं का अभ्यास करते निकाल देते हैं जिनसे लगता है कि उन्हें शानदार शक्तियाँ अर्जित हो जाएँगी। इनमें से कुछ धर्म के नाम से ही दूर रहते हैं और कुछ बहुत धार्मिक होते हैं, किंतु अदृश्य एवं अस्पृश्य शक्तियों को अर्जित करने के लिए प्रकृति से जूझने हेतु ये सब मिलकर एक हो जाते हैं। भारत में हमेशा से रहस्यमय और गूढ़ परंपराएँ रही हैं और यहाँ ऐसे लोगों की अनेक कथाएँ मिलती हैं जो आश्चर्यजनक कारनामे करने में माहिर थे। ऐसे लोगों को भी योगी कहते हैं।'

'क्या आप ऐसे लोगों से मिले हैं? क्या आपका इन परंपराओं में विश्वास है?' मैं भोलेपन से पूछता हूँ।

वह चुप है। वह इस बात पर विचार कर रहा है कि मुझे किस रूप में उत्तर देना चाहिए।

मेरा ध्यान रोगन वाली मेज़ पर रखे मंदिर की ओर चला जाता है। मैं उस कमरे के मंद प्रकाश में देख सकता हूँ कि मंदिर के भीतर से स्वर्णिम काष्ठ के बने पद्मासन पर बैठे भगवान बुद्ध मुझे देखकर सादगी से मुस्करा रहे हैं। मैं एक पल के लिए यह मान सकता हूँ कि यहाँ के वातावरण में कुछ अलौकिक बात है और फिर सहसा उस भारतीय का स्पष्ट स्वर मेरे विचारों में विघ्न डालकर मेरी कल्पना को विचरण करने से रोक लेता है।

'देखो!' वह अपने कॉलर के नीचे से कुछ ढीला करके मुझे दिखाता है। 'मैं ब्राह्मण हूँ। यह पवित्र जनेऊ है। हज़ारों वर्षों के कड़े अलगाव के कारण कुछ चारित्रिक गुण मेरी जाति

में जन्मजात पाए जाते हैं। पाश्चात्य शिक्षा और पश्चिमी जगत का भ्रमण उन गुणों को मुझसे दूर नहीं कर सकते। उच्च शक्ति में आस्था होना, अलौकिक शक्तियों में विश्वास करना तथा मनुष्यों में आध्यात्मिक उत्थान - ये बातें मुझे ब्राह्मण जाति में जन्म के साथ मिली हैं। मैं चाहकर भी इन्हें नष्ट नहीं कर सकता और विवाद होने की स्थिति में ये गुण, तर्क पर भारी पड़ते हैं। इसलिए, मुझे हालाँकि आपके आधुनिक विज्ञान के सिद्धांतों एवं प्रक्रियाओं से सहानुभूति है, मैं आपको इसके अतिरिक्त और क्या उत्तर दे सकता हूँ - मेरा इनमें विश्वास है!'

वह मेरी ओर कुछ पल ध्यान से देखता है। वह फिर आगे कहता है:

'हाँ, मैं ऐसे लोगों से मिल चुका हूँ। एक बार, दो बार, तीन बार। उनसे मिलना कठिन है। मेरा मानना है कि किसी समय पर उन्हें खोजना सरल रहा होगा किंतु आज वे लगभग लुप्त हो गए हैं।'

'शायद वे अब भी होंगे?'

'उम्मीद तो है, मित्र! वे मिल जाएँगे, ये अलग बात है। उसके लिए लंबी खोज करनी पड़ेगी।'

'आपके गुरु - क्या वे उनमें से एक थे?'

'नहीं, वे उनसे भी श्रेष्ठ थे। क्या मैंने आपको नहीं बताया कि वे एक ऋषि थे?'

मेरे लिए इस शब्द को और अधिक समझने की आवश्यकता है। मैं यह बात उसे बता देता हूँ।

'ऋषि, योगियों से भी अधिक श्रेष्ठ होते हैं,' उसने उत्तर दिया। 'डार्विन के सिद्धांत को मानवीय चरित्र पर लागू कर दीजिए; ब्राह्मण शिक्षा को स्वीकार कीजिए कि भौतिक विकास के समानांतर आध्यात्मिक उत्थान भी होता है; यह मानिए कि ऋषियों ने इस उर्ध्वगामी पथ के शिखर को पाया है; तब जाकर आपको इस महानता का थोड़ा-सा अनुमान होगा।'

'क्या ऋषि भी वो सब चमत्कार करता है, जिनके विषय में हम लोग सुनते हैं?'

'हाँ, वह करता है, किंतु वह चमत्कार करने मात्र के लिए चमत्कार नहीं करता जबकि बहुत-से योगी ऐसा करते हैं। वे शक्तियाँ उसकी आंतरिक दृढ़ता एवं ज़बर्दस्त मानसिक एकाग्रता के साथ स्वतः विकसित हो जाती हैं। उसे उन शक्तियों से अधिक मतलब नहीं होता; वह उन शक्तियों की उपेक्षा तक कर देता है और उनका प्रयोग भी नहीं करता। देखिए, उसका मुख्य लक्ष्य, अपने आंतरिक विकास द्वारा, पूर्व में बुद्ध और पश्चिम में यीशु, जैसे दिव्य लोगों के समान बनना है।'

'किंतु यीशु तो चमत्कार करते थे!'

'हाँ, करते थे। लेकिन क्या आपको लगता है कि वे उन चमत्कारों को अपनी झूठी प्रशंसा

के लिए करते थे? ऐसा नहीं है; वे दरअसल, सामान्य लोगों के विश्वास को जीतकर उनकी आत्मा की सहायता करने का प्रयास करते थे।'

'सही बात है; यदि ऋषियों जैसे लोग भारत में होते, तो भारी भीड़ उनके पीछे लग जाती?' मैंने अनुमान लगाया।

'निश्चित रूप से, यह सही बात है। परंतु उसके लिए उन्हें पहले जनता के सामने आकर यह बताना होता था कि वह क्या करने वाले हैं। ऋषियों ने अत्यंत असामान्य स्थितियों में ही ऐसा किया है। वे लोग सामान्य जगत से दूर रहना पसंद करते हैं। जिन लोगों को सामाजिक कार्य करने की इच्छा होती है, वे बहुत कम समय के लिए सामने आते हैं और फिर दोबारा ग़ायब हो जाते हैं।'

'मैं ऐसा नहीं मानता कि यदि वह स्वयं को अगम्य स्थानों पर छुपा कर रखते हैं, तो वे अपने साथियों की कोई सहायता कर सकते हैं।'

भारतीय व्यक्ति सहिष्णुतापूर्ण ढंग से मुस्कराता है।

'यह ऐसा मुद्दा है जो आपकी पाश्चात्य जगत की एक कहावत के दायरे में आता है कि, "हर चमकने वाली वस्तु सोना नहीं होती।" क्षमा करें, किंतु ऐसे लोगों के विषय में पूर्ण जानकारी के अभाव में, लोग सटीक ढंग से उनका विश्लेषण नहीं कर सकते। मैं ऐसा पहले कह चुका हूँ कि कभी-कभी ऋषिगण शहरों में और समाज के बीच रहते हैं। पुराने समय में जब इस बात का प्रचलन थोड़ा अधिक था, तो उनका ज्ञान, उनकी शक्ति एवं उपलब्धियाँ जनता के सामने प्रकट हो जाती थीं; तब उनका प्रभाव खुले तौर पर स्वीकार किया जाता था। यहाँ तक कि राजा-महाराजा भी इन महान ऋषियों को सम्मान देने से हिचकिचाते नहीं थे और अपनी नीतियों के संबंध में उनसे परामर्श लेते रहते थे। परंतु वास्तविकता यही है कि ऋषि लोग अपने प्रभाव को मूक एवं अनजान ढंग से स्पष्ट करना ही पसंद करते हैं।'

'मैं ऐसे लोगों से मिलना चाहूँगा,' मैंने धीरे-से स्वयं से कहा, 'और मैं निश्चित रूप से कुछ सच्चे योगियों से भेंट करना चाहता हूँ।'

'निस्संदेह, आपको एक दिन यह अवसर मिलेगा,' उसने मुझे आश्वासन दिया।

'आपको यह बात कैसे पता?' मैंने आश्चर्य से पूछा।

'मुझे यह उस दिन से पता है जब हम पहली बार मिले थे,' उसने हैरानी भरा उत्तर दिया। 'मुझे इस बात की अंतर्प्रेरणा हुई थी - आप इसे क्या कहते हैं? एक ऐसा संदेश जो आपको अपने भीतर सिर्फ़ महसूस होता है परंतु उसे किसी बाहरी प्रमाण द्वारा वर्णित नहीं किया जा सकता। मेरे गुरु ने मुझे सिखाया था कि इस भाव को किस प्रकार महसूस एवं विकसित किया जा सकता है। मैंने अब इस पर पूर्ण विश्वास करना सीख लिया है।'

'अपने दैत्य द्वारा मार्गदर्शित आधुनिक सुकरात!' मैंने मज़ाक़िया लहजे में कहा। 'लेकिन

मुझे बताइए आपको क्या लगता है कि आपकी भविष्यवाणी कब सत्य होगी?'

वह कंधे उचका देता है।

'मैं कोई देवदूत नहीं हूँ, इसलिए मुझे दुःख है कि मैं आपको किसी ऐसी घटना की तिथि नहीं बता सकता।' हालाँकि मुझे लगा कि वह इस विषय में और भी कुछ कह सकता था परंतु मैं उस पर ज़ोर नहीं देता। उस मामले पर कुछ विचार करने के बाद मैं एक सुझाव देता हूँ।

'मेरे विचार से आप अंत में अपने देश लौट जाएँगे। यदि मैं उस समय तैयार हूँ, तो क्या हम साथ में नहीं जा सकते? क्या आप ऐसे कुछ लोगों को खोजने में मेरी मदद नहीं करेंगे, जिनके विषय में हमने चर्चा की है?'

'नहीं, मित्र। आप अकेले जाइए। यही बेहतर होगा कि आप यह खोज स्वयं करें।'

'किसी अजनबी के लिए ऐसा करना बहुत कठिन होगा,' मैंने शिकायत भरे लहजे में कहा।

'हाँ, यह बहुत कठिन है। परंतु आप अकेले जाइए। एक दिन आप पाएँगे कि मेरी बात सही है।'



उस दिन से मुझे इस बात का पूरा भरोसा है कि किसी दिन मैं स्वयं को गौरवशाली पूर्वी जगत में पाऊँगा। मैं सोचता हूँ कि यदि प्राचीन काल में भारत ने ऋषियों जैसे महान लोगों को आश्रय दिया है और यदि, जैसा कि मेरे मित्र का मानना है, उनमें से कुछ अब भी मौजूद हैं, तो उन्हें खोजने में होने वाली कठिनाई, उनसे मिलने वाले ज्ञान रूपी पुरस्कार से संतुलित हो जाएगी। ऐसा हुआ तो संयोग से मुझे उस बोध और ज्ञान की प्राप्ति हो सकती है जिससे मैं जीवन में सदा वंचित रहा हूँ। यदि मैं इस खोज में असफल रहा तो भी यह यात्रा व्यर्थ नहीं जाएगी, क्योंकि उन अनूठे लोगों, योगियों, उनके जादू, उनकी रहस्यमय पद्धतियों तथा उनकी विचित्र जीवन-शैली ने सदा मुझे उत्सुक किया है और उनमें मेरी रुचि सदा से रही है। पत्रकारिता की कसौटी ने असामान्य चीज़ों के लिए मेरी उत्सुकता में सदा ही असाधारण रूप से पैनापन भरा है। मैं ऐसी अनजान चीज़ों को खोजने के विचार से सदा रोमांचित रहता हूँ। मैं अपनी इस कल्पना को सच में बदलने और पहला अवसर मिलते ही भारत के लिए प्रस्थान करने का निश्चय कर लेता हूँ।

मेरा भारतीय मित्र, जिसने पूर्व दिशा में जाने के मेरे निश्चय को पक्का कर दिया था, अनेक महीनों तक अपने घर पर मेरा स्वागत-सत्कार करता है। वह जीवन के उफान भरे समुद्र में आगे बढ़ने में मेरी सहायता तो करता है किंतु वह मेरे सामने आने वाली अज्ञात

स्थितियों में मेरा पायलट बनने के लिए तैयार नहीं होता। अपनी परिस्थिति को समझना, छिपी हुई संभावनाओं से अवगत होना और धुंधले विचारों में स्पष्टता लाना किसी भी युवा व्यक्ति के लिए अत्यंत महत्त्वपूर्ण होता है। इसलिए मैं यदि जीवन के उस आरंभिक सहयोगी के प्रति अपना आभार व्यक्त करूँ तो इसमें कुछ ग़लत नहीं होगा। एक दिन नियति चक्र फिर से घूमता है और हम दोनों अलग हो जाते हैं। उसके कुछ ही वर्षों के भीतर अचानक, मुझे उसकी मृत्यु का समाचार मिलता है।

मेरी यात्रा के लिए समय और हालात अनुकूल नहीं है। मनुष्य को उसकी महत्त्वाकांक्षा और इच्छा ऐसी ज़िम्मेदारियों में उलझा देती है जिनमें से स्वयं को निकाल पाना उसके लिए मुश्किल होता है। मैं जीवन की ऐसी परिस्थिति में हार मानने तथा समय की प्रतीक्षा करने से अधिक कुछ नहीं कर सकता।

उस भारतीय की भविष्यवाणी में मेरा विश्वास बना हुआ है। एक दिन किसी अप्रत्याशित पुष्टि से वह प्रबल हो जाती है।

व्यवसायिक कार्य मुझे कई महीनों के लिए एक ऐसे व्यक्ति के संपर्क में लाकर छोड़ देता है जिसके प्रति मेरे मन में अत्यधिक सम्मान और मैत्री का भाव है। वह अत्यंत कुशाग्र बुद्ध है और मनुष्य के स्वभाव को बहुत गहराई से समझता है। वह अनेक वर्ष पूर्व हमारे एक विश्वविद्यालय में मनोविज्ञान का प्रोफ़ेसर था किंतु उसे शैक्षिक जीवन पसंद नहीं आया। उसने अपने हैरतअंगेज ज्ञान को बेहतर व्यवहारिक प्रयोग में लाने के लिए, वह पद छोड़ दिया। वह कुछ समय व्यवसायिक जगत के दिग्गजों का परामर्शदाता भी रह चुका है। वह कितनी ही बार, बड़ी-बड़ी कंपनियों के प्रमुखों से ज़बरदस्त और मोटी रक़म हासिल करने का दम भर चुका है!

उसमें लोगों को श्रेष्ठ प्रदर्शन के लिए प्रेरणा देने की शानदार प्रतिभा जन्मजात रूप से मौजूद है। कार्यालय के चपरासी से लेकर अरबपति व्यवसायी तक, जो भी व्यक्ति उससे मिलता है, उसे व्यवहारिक सहयोग और एक नया जोश प्राप्त होता है। कभी-कभी उन्हें बेशक़ीमती सलाह भी मिलती है। मैं उसके प्रत्येक परामर्श को ध्यान से सुनता हूँ क्योंकि उसके अनुमान और उसकी समझ से मुझे व्यवसायिक एवं व्यक्तिगत दोनों ही मामलों में ज़बरदस्त सहायता मिलती है। मुझे उसका साथ पसंद है क्योंकि वह मेरे स्वभाव में आत्म-मंथन और बहिर्मंथन के तत्वों का समावेश करने में सफल रहा है। इसका परिणाम यह होता है कि वह गंभीर दर्शन पर बात करते-करते, अगले ही मिनट किसी व्यवसायिक रिपोर्ट पर चर्चा करने लगता है। इसके अतिरिक्त वह कभी सुस्त नहीं पड़ता, सदा हाज़िरजवाब होता है और हँसी-मज़ाक़ करता रहता है।

वह मुझे अपनी अंतरंग मित्रता के घेरे में शामिल कर लेता है और हम कभी-कभी अनेक घंटों तक काम और आमोद-प्रमोद का समय साथ गुज़ारते हैं। मैं उसकी बातें सुनते कभी

नहीं थकता क्योंकि मैं उसके विस्तृत ज्ञान से मंत्रमुग्ध हो जाता हूँ। मुझे बहुत आश्चर्य होता है कि छोटे-से सिर में इतना ज्ञान कैसे समा सकता है!

एक रात हम दोनों एक छोटे-से बोहेमियाई रेस्तरां में खाना खाने जाते हैं। वहाँ सुखद प्रकाश के साथ स्वादिष्ट भोजन भी उपलब्ध है। भोजन के बाद हम बाहर निकलते हैं तो आकाश में पूर्ण चंद्रमा का प्रकाश झिलमिलाता दिखाई देता है। उसके काव्यात्मक प्रकाश के जादू से प्रेरित होकर हम लोग पैदल ही घर वापस जाने का निर्णय लेते हैं।

उस दिन, हम दिन-भर हल्के विषयों पर बातचीत करते रहे, किंतु शहर की शांत गलियों से गुज़रते हुए हमारी वार्ता दार्शनिक विचारों की ओर मुड़ गई। रात्रि में सफ़र ख़त्म होने तक हमारे विषय इतने अधिक गहन और जटिल हो गए कि मेरे मित्र के कुछ साथी तो बहुत-से नाम सुनकर ही डर जाते। अब हम उसके घर के बाहर पहुँचे तो उसने हाथ मिलाकर मुझे विदा किया। मेरा हाथ पकड़े हुए उसने अचानक मुझे संबोधित किया और गंभीर स्वर में धीरे-से बोलना शुरू किया:

'तुम्हें इस व्यवसाय में नहीं होना चाहिए था। तुम सचमुच एक दार्शनिक हो जो लेखन के व्यवसाय में स्याही घिसने के चक्कर में फँस गए हो। तुम किसी विश्वविद्यालय के प्रमुख क्यों नहीं बने और तुमने अपना जीवन एकांत शोध और अध्ययन में क्यों नहीं बताया? ऐसा इसलिए कि तुम्हें सादा जीवन जीते हुए अपने मस्तिष्क के भीतर हलचल पैदा करना पसंद है। तुम मन के असली स्रोत तक पहुँचने का प्रयास कर रहे हो। एक दिन तुम भारत के योगियों, तिब्बत के लामाओं तथा जापान के जेन भिक्षुओं तक पहुँच जाओगे। तब तुम कुछ सचमुच अनूठे दस्तावेज़ लिखोगे। शुभ रात्रि!'

'आप इन योगियों के विषय में क्या सोचते हैं?'

वह अपना सिर मेरी ओर झुकाता है और मेरे कान में धीरे-से कहता है, 'मित्र, उन्हें पता है कि वे ज्ञानी हैं!'

मैं वहाँ से दुविधाग्रस्त स्थिति में वापस लौटता हूँ। मुझे पता है कि पूर्वी जगत की ओर मेरी यात्रा जल्दी होने वाली नहीं है। मैं अनेक प्रकार की गतिविधियों में डूबता जा रहा हूँ जहाँ से निकल पाना मुझे मुश्किल लगता है। कुछ समय के लिए निराशा मुझे घेर लेती है। क्या नियति ने मुझे इन व्यक्तिगत बंधनों और निजी महत्त्वाकांक्षाओं की भूलभुलैया में क़ैद करके बर्बाद नहीं कर दिया है?

इस अदृश्य आदेश के विषय में मेरा अनुमान ग़लत साबित होता है। नियति प्रतिदिन नए आदेश जारी करती है और हालाँकि हम लोग इतने योग्य नहीं हैं उन्हें समझ सकें, फिर भी हम अचेतन रूप से उनका पालन करने के लिए निकल पड़ते हैं! मैं बारह महीने से भी कम समय में, स्वयं को मुंबई के एलेक्जेंड्रा बंदरगाह पर पाता हूँ। मैं वहाँ पूर्वी संसार के उस शहर के बहुरंगी जीवन में घुल-मिल रहा हूँ तथा वहाँ की शोरगुल-भरी एशियाई भाषा के विचित्र

मिश्रण को सुन रहा हूँ!

---

* आह! वह अब जीवित नहीं है और उसके साथ उसकी दुकान भी ग़ायब हो गई है!

अध्याय 3

मिस्र का जादूगर

यही एकमात्र और शायद सबसे महत्त्वपूर्ण सच है कि इससे पहले कि मैं इस अनूठी खोज के लिए अपना भाग्य आज़माने का प्रयास करूँ, नियति स्वयं मेरी खोज में आ जाती है। मैंने यहाँ तक कि अभी मुंबई के पर्यटक स्थलों को देखने के लिए पर्यटकाधिकार भी प्राप्त नहीं किया है। मैं इस शहर के बारे में जितना जानता हूँ उसे आसानी से एक पोस्टकार्ड पर लिखा जा सकता है। मेरे एक जोड़ी कपड़े आराम से अभी तक बंद पड़े हैं। मेरी एकमात्र गतिविधि यही है कि मैं होटल मैजेस्टिक के वातावरण से परिचित हो सकूँ। जहाज पर किसी परिचित ने मुझे बताया था कि यह शहर के सबसे सुविधाजनक होटलों में से एक है। इसी गतिविधि के दौरान मुझे एक आश्चर्यजनक तथ्य का पता लगता है। होटल में अतिथि के तौर पर रहते हुए मेरी भेंट जादूगर समुदाय के एक सदस्य से होती है जो स्वयं एक ज़बरदस्त जादूगर है!

ध्यान रहे, वह कोई आम जादूगर नहीं है, जो थके हुए दर्शकों को शानदार जादू दिखा कर अपना और रंगमंच का भाग्य जगाता है। वह कोई ऐसा चालाक व्यक्ति भी नहीं है जो मैस्कीलिन और देवांत जैसे बड़े जादूगरों के कारनामों की बराबरी करने अथवा रिजेन्ट स्ट्रीट से किसी कम दर्जे के जादू दिखाने का प्रयास करता है। नहीं! यह व्यक्ति मध्यकालीन समय का कोई जादूगर है। वह प्रतिदिन रहस्यमय लोगों के साथ संवाद करता है, जो आम लोगों को दिखाई नहीं देते परंतु यह उसके लिए सामान्य बात है! कम से कम, यही उसकी विशिष्ट पहचान है जो उसने वहाँ बनाई है। होटल के लोग उसे भय की दृष्टि से देखते हैं और उसके साथ दबे सुर में बात करते हैं। वह जब भी किसी के पास से गुज़रता है तो लोग अपनी

बातचीत रोककर दुविधा-भरी नज़रों से उसे देखते हैं और उनकी आँखों में अनेक तरह के प्रश्न उभर आते हैं। वह उन लोगों की ओर ध्यान नहीं देता और सामान्य रूप से अकेले भोजन करना पसंद करता है।

हमारी नज़र में उसे जो बात अधिक विचित्र बनाती है, वह यह है कि उसके पास न यूरोप की और न ही भारत की नागरिकता है। वह नील नदी के देश से आया हुआ एक यात्री है। सच कहूँ तो वह मिस्र से आया एक जादूगर है!

मेरे लिए महमूद बेग के व्यक्तित्व का वर्णन करना सरल नहीं है। उसके पास बहुत-सी अनोखी एवं मायावी शक्तियाँ हैं। मेरी कल्पना से परे उसका चेहरा कठोर और काया दुबली नहीं है, बल्कि वह एक आकर्षक और हँसमुख चेहरे वाला बलिष्ठ व्यक्ति है। उसके चौड़े कंधे हैं और वह तेज़ चलता है। वह जादूगरों जैसे श्वेत वस्त्र या कोई भारी-भरकम लबादा नहीं पहनता, बल्कि बढ़िया सिले हुए आधुनिक वस्त्र पहनता है। वह किसी आकर्षक फ़्रांसीसी युवक की तरह दिखता है, जिस तरह के लोग हमें पेरिस के अच्छे रेस्तरां में शाम को देखने को मिलते हैं।

मैं दिन भर इस मामले पर विचार करता हूँ। मैं अगले दिन सुबह स्पष्ट निर्णय लेता हूँ। महमूद बेग का इंटरव्यू लिया जाना चाहिए। पत्रकारिता जगत के साथियों की भाषा में कहूँ तो मैं उसकी "कहानी" जानूँगा। मैं अपने विजिटिंग कार्ड के पीछे अपनी इच्छा लिखता हूँ और फिर उस कार्ड के दाएँ कोने पर एक विशिष्ट चिह्न बनाता हूँ जिससे उसे यह स्पष्ट हो जाएगा कि मैं उसकी रहस्यमय कला के परंपरागत पक्ष से अपरिचित नहीं हूँ, जिसकी वजह से, मुझे उम्मीद है कि वह मुझे इंटरव्यू देने के लिए तैयार हो जाएगा। मैं अपना वह कार्ड एक समझदार अनुचर के हाथ में देकर, उसे चाँदी का एक रुपया भी देता हूँ। फिर उसे सीधा जादूगर के कमरे में भेज देता हूँ।

पाँच ही मिनट के बाद उसका उत्तर आता है: 'महोदय, महमूद बेग आपसे मिलना चाहते हैं। वे नाश्ता करने वाले हैं और उन्होंने आपको भी नाश्ते पर आमंत्रित किया है!'

मुझे अपनी पहली सफलता से प्रेरणा मिलती है। वह अनुचर मुझे सीढ़ियों के रास्ते ऊपर ले जाता है। मैं देखता हूँ कि महमूद बेग एक मेज़ पर बैठा है। उसके सामने चाय के साथ टोस्ट और जैम भी रखा है। वह मेरे अभिवादन के लिए अपनी कुर्सी से नहीं उठता, बल्कि वह अपने सामने रखी एक कुर्सी की ओर इशारा करके मुझे अपनी दृढ़ आवाज़ में कहता है:

'कृपया बैठ जाइए। मैं क्षमा चाहता हूँ, किंतु मैं किसी से हाथ नहीं मिलाता।'

उसने एक ढीला-सा गाउन पहन रखा है। उसके सिर पर भूरे रंग की सिंह जैसी आयाल है। एक घुंघराली लट उसके माथे पर लटकी हुई है। वह आकर्षक मुस्कान के साथ अपने चमचमाते दाँत दिखाते हुए पूछता है:

'क्या आप मेरे साथ नाश्ता करना चाहेंगे?'

मैं उसे धन्यवाद देता हूँ। मैं चाय पीते हुए उसे बताता हूँ कि वह होटल में कितना विख्यात है। मैं उसे यह भी कहता हूँ कि उसके पास जाने की हिम्मत जुटाने से पहले मैंने बहुत देर ध्यान में बिताया था। वह ज़ोर से हँसता है और अपना हाथ हवा में थोड़ा-सा उठाकर असहाय होने की मुद्रा बनाता है, लेकिन वह बोलता कुछ नहीं है।

कुछ पल रुकने के बाद, वह पूछता है: 'क्या आप किसी अख़बार के प्रतिनिधि हैं?'

'नहीं! मैं एक निजी कार्य से भारत आया हूँ - कुछ असामान्य बातों का अध्ययन करना चाहता हूँ और अपनी एक क़िताब के लिए कुछ नोट्स बनाना चाहता हूँ।'

'क्या आप यहाँ अधिक समय रुकेंगे?'

'यह परिस्थितियों पर निर्भर करता है। मैंने अवधि नहीं सोची है।' उसकी बातों का उत्तर देते समय अजीब-सा महसूस कर रहा हूँ क्योंकि यहाँ इंटरव्यू लेने वाले का ही इंटरव्यू लिया जा रहा है। परंतु उसके अगले शब्द मुझे कुछ राहत देते हैं:

'मेरी रुकने की अवधि भी बढ़ गई है। शायद एक साल, शायद दो साल। इसके बाद, मैं यहाँ से आगे पूर्व दिशा में निकल जाऊँगा। मैं दुनिया देखना चाहता हूँ और फिर, यदि अल्लाह ने इज़ाज़त दी, तो अपने घर मिस्र लौट जाऊँगा।'

भोजन समाप्त होने के बाद अनुचर कमरे में आता है और वह मेज़ साफ़ कर देता है। मुझे महसूस हो रहा है कि अब कुछ अधिक गहन चर्चा करने का समय आ गया है।

'क्या यह सच है कि आपके पास जादुई शक्तियाँ हैं?' मैं उसे स्पष्ट प्रश्न करता हूँ।

वह शांत भाव और आत्म-विश्वास के साथ उत्तर देता है, 'हाँ, सर्वशक्तिमान अल्लाह ने मुझे यह शक्तियाँ प्रदान की हैं।'

मैं झिझकता हूँ। उसकी काली गहरी आँखें मुझे ग़ौर से देख रही हैं।

'क्या आप अपनी शक्तियों का प्रदर्शन मेरे सामने करना चाहेंगे?' मैं अचानक उसे पूछ बैठता हूँ।

उसने मेरी इच्छा को ठीक से भाँप लिया है। वह हामी भर देता है।

'बहुत ख़ूब! क्या मुझे एक पेंसिल और काग़ज़ मिलेगा?'

मैं जल्दी-से अपनी जेब से अपनी नोटबुक निकालता हूँ और उसमें से एक पन्ना फाड़ता हूँ और एक पेंसिल उसके सामने रख देता हूँ।

'बढ़िया,' वह कहता है, 'अब इस काग़ज़ पर एक प्रश्न लिखिए।' ऐसा कहकर वह उठ जाता है और खिड़की के पास रखी एक छोटी-सी मेज़ पर बैठ जाता है और नीचे गली में झाँकने लगता है। अब हमारे बीच कई फ़ीट की दूरी है।

'किस तरह का प्रश्न?' मैं पूछता हूँ।

'कुछ भी, जो आप चाहें!' वह तुरंत उत्तर देता है।

मेरे दिमाग़ में विचार चलने लगते हैं। कुछ देर बाद मैं एक छोटा-सा प्रश्न लिखता हूँ, "मैं चार साल पहले कहाँ रहता था?"

'अब इस काग़ज़ को मोड़कर बहुत छोटा कर लीजिए,' वह मुझे बोलता है, 'जितना छोटा संभव हो सके।'

मैं ऐसा ही करता हूँ। उसके बाद वह फिर से मेरे सामने वाली कुर्सी खींचकर बैठ जाता है और मुझे देखने लगता है।

'कृपया उस काग़ज़ के टुकड़े को पेंसिल के साथ अपने दाएँ हाथ में कसकर पकड़ लें।'

मैं दोनों चीज़ों को अपने दाएँ हाथ में कसकर पकड़ लेता हूँ। जादूगर अपनी आँखें बंद कर लेता है। ऐसा प्रतीत होता है मानो वह गहन ध्यान में डूब गया है। उसके बाद उसकी भारी पलकें एक बार फिर खुलती हैं और वह मेरी ओर देखने लगता है। वह फिर धीरे से कहता है:

'आपने जो प्रश्न पूछा है, क्या वह यही है कि मैं चार साल पहले कहाँ रहता था?"

'बिलकुल सही,' मैं हैरानी से जवाब देता हूँ। 'यह तो दिमाग़ पढ़ने का बहुत शानदार उदाहरण है!'

'अब कृपया उस काग़ज़ के टुकड़े को खोलिए,' वह बोलता है।

मैं काग़ज़ को मेज़ पर रखता हूँ और धीरे-धीरे उसके मोड़ खोलना शुरू करता हूँ। काग़ज़ पूरा खुल जाता है और अपने वास्तविक आकार में लौट आता है।

'इसे पढ़िए!' जादूगर मुझे आदेश देता है।

मैं काग़ज़ को पढ़ता हूँ तो हैरत में पड़ जाता हूँ। किसी अज्ञात हाथ ने पेंसिल से उस शहर का नाम उस काग़ज़ पर लिख दिया था जहाँ मैं चार साल पहले रहता था। वह उत्तर मेरे लिखे प्रश्न के ठीक नीचे लिखा हुआ था।

महमूद बेग अपनी सफलता पर मुस्कराता है।

'यही उत्तर है। क्या यह सही है?' वह पूछता है।

मैं आश्चर्यजनक ढंग से हामी भरता हूँ। मैं बहुत हैरान हूँ। यह कारनामा अविश्वसनीय लगता है। उसकी जाँच करने के लिए मैं उसे वही कारनामा फिर से दोहराने के लिए कहता हूँ। वह तुरंत मान जाता है और फिर से खिड़की के पास चला जाता है। इस बीच, मैं एक और प्रश्न लिखता हूँ। मुझसे दूर जाकर वह इस बात की संभावना को समाप्त कर देता है कि उसने मेरे लिखे को पढ़ लिया है। मैं उसे ध्यान से देखने पर पाता हूँ कि उसकी आँखें नीचे गली के चहल-पहल-भरे दृश्य पर टिकी हुई हैं।

मैं एक बार फिर से काग़ज़ को मोड़कर और पेंसिल को अपने हाथ में पकड़ लेता हूँ। वह लौटकर मेरे पास आता है और फिर ध्यान में डूब जाता है।

कुछ पल बाद, वह कहता है, 'आपका दूसरा प्रश्न यह है कि मैं दो साल पहले किस पत्रिका का संपादन करता था?'

उसने मेरे लिखे प्रश्न को सटीकता से जान लिया है। वह विचारों को पढ़ लेता है। वह एक बार फिर से मुझसे उस काग़ज़ को खोलने के लिए कहता है। मैं काग़ज़ को मेज़ पर रखता हूँ और मैं आश्चर्य से देखता हूँ कि काग़ज़ पर पेंसिल से उसी पत्रिका का नाम लिखा है, जिसे मैं संपादित करता था!

हाथ की सफ़ाई? मैं इस बात को अनर्गल समझकर नज़रअंदाज़ कर देता हूँ। वह काग़ज़ और पेंसिल मैंने अपनी जेब से निकाले थे, उन प्रश्नों को भी मैंने पहले-से सोचा नहीं था और महमूद बेग तथा मेरे बीच में कई फ़ीट की दूरी थी। इसके अतिरिक्त, यह पूरा कारनामा सुबह की रोशनी के दौरान किया गया था।

सम्मोहन? मैंने इस विषय का अध्ययन किया है और यदि ऐसा कोई अनुचित तरीक़े से मुझे प्रभावित करने का प्रयास करता है तो मुझे पता लग जाता है। मुझे उससे स्वयं को बचाना भी आता है। सबसे बड़ी बात, उस काग़ज़ पर अज्ञात हाथ द्वारा लिखे गए शब्द बहुत बड़ा रहस्य पैदा करते हैं।*

मैं फिर से हैरत में हूँ। मैं तीसरी बार मिस्र के जादूगर से वही प्रयोग दोहराने का अनुरोध करता हूँ और वह अंतिम परीक्षा के लिए फिर से तैयार हो जाता है। इसमें भी वह पूरी तरह सफल हो जाता है।

इन तथ्यों को झुठलाया नहीं जा सकता। उसने मेरा दिमाग़ पढ़ लिया है द्धऐसा मैं मानता हूँ; उसने किसी अवर्णनीय जादू से किसी अदृश्य हाथ की मदद लेकर मेरी मुट्ठी में बंद काग़ज़ के टुकड़े पर कुछ शब्द लिखवा दिए; और अंतिम बात यह कि वे शब्द मेरे पूछे गए प्रश्नों के बिलकुल सटीक उत्तर हैं।

वह किस तरह की विचित्र प्रक्रिया का प्रयोग करता है?

मैं इस विषय पर विचार करता हूँ तो मुझे कुछ असहज शक्ति की मौजूदगी का एहसास होता है। किसी भी सामान्य मस्तिष्क के लिए यह बात अविश्वसनीय है। कुछ ऐसा, जो बाहरी है, जो सामान्य समझ से परे है। मेरे हृदय की धड़कन भय से मानो थम जाती है।

'क्या इंग्लैंड में ऐसे लोग हैं जो यह कर सकते हैं?' वह कुछ अभिमान के साथ पूछता है।

मैं यह स्वीकार करने पर विवश हूँ कि मैं ऐसे किसी व्यक्ति को नहीं जानता जो इस प्रकार की परीक्षण परिस्थितियों में ऐसा कोई कारनामा कर सकता है। हालाँकि ऐसे कई व्यवसायिक जादूगर होंगे जो निश्चित रूप से ऐसा कर सकते हैं, यदि उन्हें अपना साजो-

सामान इस्तेमाल करने की अनुमति दी जाए।

‘क्या आप मुझे अपनी पद्धति बता सकते हैं?’ मैं उससे दबी आवाज़ में पूछता हूँ, मानो उसके रहस्य पूछकर मैंने उससे चाँद माँग लिया हो।

वह अपने चौड़े कंधे उचकाता है।

‘मुझे कई लोगों ने बहुत-से धन के बदले अपने रहस्य बताने के लिए कहा, लेकिन मेरा फ़िलहाल ऐसा कोई इरादा नहीं है।’

‘क्या आप जानते हैं कि मैं इस तरह के कारनामों के मनोवैज्ञानिक पक्ष से पूरी तरह अनजान नहीं हूँ?’ मैंने प्रयास करते हुए कहा।

‘निश्चित रूप से, मैं जानता हूँ। यदि मैं कभी यूरोप आया, जिसकी काफ़ी संभावना है, तो आप निस्संदेह मेरी मदद कर सकेंगे। उस स्थिति में, मैं वचन देता हूँ कि आपको अपने तरीक़ों का प्रशिक्षण दूँगा, ताकि आप भी अपनी इच्छानुसार, इस तरह के कारनामे कर सकें।’

‘इसके प्रशिक्षण में कितना समय लगता है?’

‘यह व्यक्ति पर निर्भर करता है। यदि आप मेहनत करें और अपना सारा समय इसे दें तो इन प्रक्रियाओं को समझने के लिए तीन महीने पर्याप्त होंगे, परंतु उसके बाद इसके अभ्यास में कई वर्ष लग सकते हैं।’

‘क्या आप मुझे अपने कारनामों के रहस्य न बताकर, मोटे तौर पर उनका आधार अथवा उनका सै)ांतिक पक्ष बता सकते हैं?’ मैंने ज़ोर देते हुए कहा।

महमूद बेग मेरे प्रश्न पर कुछ देर विचार करता है।

‘हाँ, मैं आपके लिए ऐसा कर सकता हूँ।’ उसने धीमे-से उत्तर दिया।

मैं अपनी नोटबुक और नोट्स निकालकर, नोट्स लेने के लिए तैयार हो जाता हूँ।

‘कृपया, आज नहीं।’ वह मुस्कराते हुए विरोध करता है। ‘मैं अभी व्यस्त हूँ। कृपया मुझे क्षमा करें। आप कल यहीं सुबह ग्यारह बजे आ जाइए, तब हम आगे इस पर बात करेंगे।’



मैं नियत समय पर अगले दिन फिर से महमूद बेग के कमरे में बैठा हूँ। वह मिस्र की सिगरेट का एक डिब्बा मेरी ओर बढ़ाता है। मैं उसमें से एक सिगरेट निकालता हूँ और वह मेरी सिगरेट जलाते हुए कहता है:

‘यह मेरे देश की सिगरेट है। यह बहुत अच्छी है।’

हम कुर्सी पर आराम से बैठ जाते हैं और सिगरेट के कश लेते हैं। उस सिगरेट का धुआँ

भी सुगंधित है। निश्चित रूप से यह सिगरेट बहुत अच्छी है।

'तो अब मैं आपको अपने सिद्धांतों के विषय में, जैसा कि आपके अंग्रेज़ी मित्र कहते हैं, बताता हूँ। हालाँकि मेरे लिए तो ये तथ्य हैं।' महमूद बेग बहुत अच्छे ढंग से हँसता है।

'आपको शायद यह सुनकर बहुत आश्चर्य होगा कि मैं वैज्ञानिक कृषि का विशेषज्ञ हूँ और मेरे पास इस विषय का डिप्लोमा भी है।'

मैं अपने नोट्स लिखना शुरू कर देता हूँ।

'मैं जानता हूँ कि यह मेरी जादू में रुचि के साथ मेल नहीं खाता,' वह आगे कहता है। मैं उसकी ओर देखता हूँ तो वह मुस्कराता है और पलटकर मेरी ओर देखता है। मुझे विश्वास है कि इस व्यक्ति के अंदर एक बहुत बढ़िया "कहानी" छिपी हुई है।

'परंतु आप एक पत्रकार हैं। शायद आप यह जानना चाहेंगे कि मैं जादूगर कैसे बन गया?' वह पूछता है।

मैं उत्सुकता से हामी भरता हूँ।

'बढ़िया! मैं एक अंदरूनी इलाक़े में पैदा हुआ लेकिन मेरा पालन-पोषण काहिरा में हुआ। मैं आपको बताना चाहूँगा कि मैं स्कूल के सामान्य लड़कों के जैसे ही शौक़ रखता था। मैं कृषि को अपना व्यवसाय बनाना चाहता था। मैंने इसी उद्देश्य से सरकारी कृषि कॉलेज में पढ़ाई शुरू की। मैंने पढ़ाई में बड़ी मेहनत की और मैं पूरे उत्साह के साथ आगे बढ़ता गया।'

'मैं जिस घर में रहता था, वहाँ का अपार्टमेंट एक वृद्ध व्यक्ति ने ले लिया। वह यहूदी था। उसकी भवें बहुत घनी थीं तथा लंबी सफ़ेद दाढ़ी थी। उसका चेहरा हमेशा गंभीर रहता था। ऐसा लगता था मानो वह पिछली शताब्दी का वासी है क्योंकि वह बहुत पुराने फ़ैशन के कपड़े पहनता था। वह स्वभाव से इतना संकोची था कि घर के अन्य सदस्य भी उससे दूर रहते थे। आश्चर्य की बात यह थी कि मुझ पर उसका ऐसा कोई प्रभाव नहीं हुआ, बल्कि उस रहस्यमय संकोची व्यक्ति में, मेरी रुचि पैदा हो गई। युवा, फुर्तीला और मिलनसार होने के नाते, मैंने उसके साथ जान-पहचान बनाने के अनेक प्रयास किए।'

'शुरू में तो उसने मुझे नज़रअंदाज़ किया, परंतु इससे मेरी उत्सुकता उसके प्रति और बढ़ गई। आख़िर, मैं अपने मेरे निरंतर प्रयासों से उससे बातचीत करने में सफल हो गया। वह धीरे-धीरे मुझसे खुल गया और उसने मुझे अपने जीवन में झाँकने की अनुमति दे दी। तब मुझे पता लगा कि वह अपना अधिकतर समय अध्ययन और अनूठी प्रक्रियाएँ करते बिताता था। संक्षेप में, उसने मुझे बताया कि वह अलौकिक तथ्यों पर शोध कर रहा था।'

'कल्पना कीजिए! इससे पहले मेरा जीवन युवा अध्ययन और स्वस्थ खेलकूद की पटरियों पर तेज़ी से दौड़ रहा था और अब मेरा सामना भिन्न प्रकार के अस्तित्व से हो रहा था। यह मुझे पसंद भी आने लगा था। मुझे अलौकिक बातों के विचार से भय नहीं लगता था,

जैसा कि निस्संदेह मेरी आयु के अन्य लड़कों को लगता होगा। मुझे सचमुच उस विषय में बहुत आनंद आता था क्योंकि मुझे उसके माध्यम से अनेक शानदार अनुभव होने की संभावनाएँ दिखाई पड़ती थीं। मैंने उस वृद्ध यहूदी व्यक्ति से अनुरोध किया कि वह मुझे उस विषय पर कुछ सिखाए और उसने मेरी इच्छा मान ली। इस प्रकार मेरी अभिरुचियों और मित्रें का एक नया समूह बन गया। वह यहूदी व्यक्ति मुझे अपने साथ काहिरा के एक समुदाय में ले गया जो जादू-टोने, अध्यात्म, दर्शन और गूढ़ विषयों पर व्यवहारिक शोध और अन्वेषण करता था। वह यहूदी उन्हें ऐसे विषयों पर आख्यान भी सुनाता था। उस समूह में अनेक समुदाय के लोग, विद्वानजन, सरकारी अधिकारीगण तथा अच्छी समझ-बूझ वाले अन्य कई लोग शामिल थे।'

'हालाँकि मैं युवावस्था तक ही पहुँचा था परंतु मुझे उस समुदाय की प्रत्येक बैठक में यहूदी व्यक्ति के साथ जाने की अनुमति मिल गई थी। मैं प्रत्येक अवसर पर उसे बहुत ध्यान से सुनता था। मेरे कान अपने आस-पास होने वाली वार्ताओं के प्रत्येक शब्द को बहुत ध्यान से सुनते थे और मेरी आँखें वहाँ हो रहे विचित्र प्रयोगों को बड़े आनंद से देखती थीं। इससे निश्चय ही कृषि के क्षेत्र में चल रही मेरी तकनीकी पढ़ाई की उपेक्षा होने लगी क्योंकि मैं अपना अधिकांश समय इन अलौकिक विषयों पर होने वाले शोध पर लगाता था। परंतु कृषि विज्ञान के क्षेत्र में मेरे सहज और स्वाभाविक ज्ञान के कारण मैं उन परीक्षाओं में आसानी से उत्तीर्ण हो गया।'

'मैं उस यहूदी द्वारा दी गई पुरानी क़िताबों को पढ़ता था और उन जादुई अनुष्ठानों एवं प्रक्रियाओं का अभ्यास करता था जो वह व्यक्ति मुझे सिखाता था। मैंने इस क्षेत्र में इतनी प्रगति कर ली कि मैंने उन चीज़ों को भी खोज लिया जो वह यहूदी स्वयं नहीं जानता था। मैं जल्दी ही इस कला में पारंगत समझा जाने लगा। मैंने काहिरा सोसाइटी में अनेक आख्यान दिए और प्रदर्शन दिखाए। उसके कुछ समय बाद उन लोगों ने मुझे सोसाइटी का अध्यक्ष नियुक्त कर दिया। मैंने बारह वर्ष तक सोसाइटी की अगुवाई की। उसके बाद मैंने त्याग पत्र दे दिया क्योंकि मैं मिस्र छोड़कर दूसरे देशों की यात्रा करना चाहता था और अपना भाग्य बनाना चाहता था!'

महमूद बेग बोलते हुए रुक जाता है। वह अपनी साफ़-सुथरी अँगुलियों से, जिन्हें मैंने ही पहले ध्यान से देख लिया था, अपनी सिगरेट की राख को झटक कर गिरा देता है।

'यह बहुत मुश्किल काम है!'

वह मुस्कराता है। 'मेरे लिए यह आसान होगा। मुझे कुछ ऐसे धनाढ्य लोग चाहिए जो मेरी जादुई शक्तियों का उपयोग करना चाहते हैं। वैसे मुझे कुछ धनाढ्य पारसी और हिंदू जानते हैं। वे लोग अपनी समस्याओं पर चर्चा करने और उनका समाधान खोजने के लिए मेरे पास आते हैं, अथवा वे उन बातों को जानना चाहते हैं जो उन्हें समझ में नहीं आतीं या फिर

वे कोई ऐसी जानकारी प्राप्त करना चाहते हैं, जिसे केवल तंत्र-मंत्र की सहायता से ही जाना जा सकता है। मैं उनसे, निश्चित रूप से, मोटी फ़ीस लेता हूँ। मेरी फ़ीस कम से कम एक सौ रुपये है। सच कहूँ तो मैं बहुत पैसे कमाना चाहता हूँ और फिर अपनी धन-दौलत को बढ़ाकर मिस्र के किसी शांत अंदरूनी क्षेत्र में जाकर रहना चाहता हूँ। मैं वहाँ पर संतरों के बागान ख़रीदकर, फिर से कृषि-संबंधी कार्य करना चाहता हूँ।'

'क्या आप मिस्र से सीधे यहाँ आए हैं?'

'नहीं। मैंने काहिरा छोड़ने के बाद कुछ समय सीरिया और फ़लस्तीन में बिताया था। सीरिया के पुलिस अधिकारियों ने मेरी शक्तियों के बारे में सुन रखा था और वे लोग कभी-कभी मेरे पास मदद के लिए आते थे। उन्हें जब किसी अपराध को सुलझाने में बहुत मुश्किल होती थी तो वे अंत में मेरी सेवाएँ लिया करते थे। मैं अधिकतर मामलों में उनके अपराध सुलझाने में सफल हो जाता था।'

'यह आप कैसे कर लेते थे?'

'मेरी सहायक आत्माएँ अपराध के छिपे हुए रहस्यों के बारे में मुझे बताती थीं और वे मेरी आँखों के सामने उस अपराध के दृश्य को उत्पन्न कर देती थीं।'

महमूद बेग एक पल के लिए पुरानी यादों में खो जाता है। मैं धैर्यपूर्वक उसके आगे बोलने की प्रतीक्षा करता हूँ। 'हाँ, आप शायद मुझे एक क़िस्म से अध्यात्मवादी कह सकते हैं क्योंकि मैं आत्माओं की सहायता लेता हूँ,' वह आगे बोलता है। 'लेकिन मैं वास्तव में वह हूँ, जिसे आप जादूगर और साथ ही विचार पढ़ने वाला कहते हैं। लेकिन मैं टोना-टोटका नहीं करता। मैं इससे अधिक कुछ होने का दावा नहीं करता।'

उसका यह दावा इतना आश्चर्यजनक है कि उसके आगे कुछ और कहने की आवश्यकता नहीं है!

'कृपया मुझे अपने उन अदृश्य सहायकों के विषय में बताइए,' मैं उससे पूछता हूँ।

'आत्माएँ? मैं तीन वर्ष के कठिन अभ्यास के बाद आत्माओं पर नियंत्रण करना सीख पाया। देखिए, हमारी भौतिक इंद्रियों से परे जो दुनिया मौजूद है, उसमें अच्छी और बुरी दोनों तरह की आत्माएँ मौजूद हैं। मैं केवल अच्छी आत्माओं की सहायता लेने का प्रयास करता हूँ। इनमें से कुछ लोग उस अवस्था को पार कर चुके हैं जिसे संसार, मृत्यु कहता है। परंतु मेरे अधिकतर सहायक "जिन्न" हैं, जो अध्यात्म जगत के ऐसे निवासी हैं जिन्होंने कभी मनुष्य शरीर धारण नहीं किया। उनमें से कुछ बिलकुल पशु के समान हैं और शेष मनुष्य के तरह दिखते हैं। इनमें कुछ बुरे जिन्न भी हैं। हम इन्हें मिस्र में जिन्न कहते हैं। मुझे उनके लिए कोई उपयुक्त अंग्रेज़ी शब्द नहीं पता। कुछ तुच्छ श्रेणी के जादू-टोनागर, विशेषकर अफ़्रीका के पिशाच चिकित्सक इन जिन्नों का उपयोग करते हैं। मेरा इनसे कोई संबंध नहीं है। ये ख़तरनाक दास होते हैं और कभी-कभी वे उनका उपयोग करने वाले लोगों के विरुद्ध होकर

उन्हें मार भी डालते हैं।'

'आप जिन मानवीय आत्माओं की सहायता लेते हैं, वे कौन लोग हैं?'

'मैं आपको बता सकता हूँ कि उनमें से एक मेरा अपना भाई है। कुछ वर्ष पूर्व उसकी "मृत्यु" हो गई थी। परंतु याद रखिए कि मैं कोई आत्मा का माध्यम नहीं हूँ क्योंकि कोई आत्मा मेरे शरीर में प्रवेश नहीं करती और न ही किसी को मुझ पर नियंत्रण करने का अधिकार है। मेरा भाई विचारों के माध्यम से मुझसे संपर्क करता है या फिर वह कभी-कभी मेरे मन की आँखों के सामने दृश्य पैदा करता है। मैंने इसी पद्धति का प्रयोग करके कल आपके लिखे प्रश्नों को जान लिया था।'

'और वे जिन्न कौन हैं?'

'मेरे नियंत्रण में लगभग तीस जिन्न हैं। उन्हें पूर्ण रूप से नियंत्रित करने के बावजूद, मुझे अपनी आज्ञा मनवाने के लिए उन्हें प्रशिक्षण देना पड़ता है, जिस तरह आप बच्चों को नृत्य का प्रशिक्षण देते हैं। मुझे उन सबके नाम याद रखने पड़ते हैं, क्योंकि आप बिना उनका नाम जाने उनसे काम नहीं ले सकते। इनमें से कुछ नाम मैंने उन पुरानी क़िताबों में पढ़े थे जो मुझे उस वृद्ध यहूदी ने दी थीं।'

महमूद बेग मेरी ओर फिर से सिगरेट की डिब्बी खिसकाता है। वह फिर आगे बोलना शुरू करता है: 'मैंने प्रत्येक आत्मा को एक निश्चित कार्य दिया है। सबको एक अलग काम पूरा करने का प्रशिक्षण दिया गया है। इसलिए जिस जिन्न ने आपके उस काग़ज़ के टुकड़े पर पेंसिल से वे शब्द लिखे थे, वह आपके प्रश्नों के विषय में कोई जानकारी नहीं दे सकता।'

'आप आत्माओं से संपर्क किस तरह करते हैं?' मैं अगला प्रश्न करता हूँ।

'मैं उनका ध्यान करके उन्हें आसानी से अपने पास बुला सकता हूँ। मैं अरबी भाषा में किसी भी आत्मा का नाम लिखकर उसे बुला लेता हूँ। वे इतना करने से ही तुरंत मेरे पास आ जाते हैं।'

मिस्र का जादूगर घड़ी की ओर देखता है। वह फिर उठता है और कहता है: 'मित्र, मुझे अफ़सोस है कि मैं अपनी इन प्रक्रियाओं के विषय में आपको और अधिक जानकारी नहीं दे सकता। आप शायद अब समझ गए होंगे कि मुझे इन्हें गुप्त क्यों रखना पड़ता है। यदि अल्लाह ने चाहा, तो हम फिर किसी दिन मिलेंगे। अलविदा!'

वह मुस्कराकर झुकते हुए मेरा अभिवादन करता है। इंटरव्यू ख़त्म हुआ।



मुंबई की रात है। मैं बिस्तर में देर से जाता हूँ लेकिन मुझे नींद नहीं आती। मेरे आस-पास की हवा इतनी भारी है कि उससे घुटन होती है। ऐसा लगता है मानो हवा में प्राणवायु नहीं है और

गर्मी भी असहनीय है। छत पर लटका पंखा भी राहत नहीं दे पाता, बल्कि वह इतनी हवा भी नहीं दे पा रहा कि मेरी थकी हुई आँखें बंद हो सकें। मुझे साँस लेने के लिए मेहनत करनी पड़ रही है। हवा इतनी गरम है कि भीतर जाती प्रत्येक श्वास के साथ फेफड़ों को तकलीफ़ होती है। मेरा थका हुआ शरीर ढीला पड़ गया है और पसीना लगातार बह रहा है जिसे मेरे पायजामे ने सोख लिया है। उससे भी बुरा यह है कि मेरा परेशान मस्तिष्क बहुत बेचैन है। अनिद्रा का राक्षस मानो मेरे जीवन में प्रवेश कर गया है और वह उस दिन तक मुझे परेशान करेगा जब तक भारत की मिट्टी में मेरा अंत नहीं हो जाएगा। मैंने इस उष्णकटिबंधीय जगत से परिचित होने की क़ीमत चुकानी आरंभ कर दी है।

मेरे बिस्तर के चारों ओर एक मच्छरदानी लटकी है जो सफ़ेद कफ़न की तरह लगती है। बरामदे की बालकनी में खुलने वाली लंबी खिड़की से चंद्रमा की रोशनी भीतर आ रही है, जिससे छत पर भयानक परछाइयाँ बन रही हैं।

महमूद बेग से उस दिन सुबह हुई बातचीत और उससे पहले वाले दिन हुए आश्चर्यजनक कारनामे के बारे में विचार करते हुए कुछ और बातें समझना चाहता हूँ, जो महमूद ने मुझे नहीं बताईं। परंतु मुझे उनका उत्तर नहीं मिलता। यदि वे तीस या अधिक रहस्यमय आत्माएँ सचमुच मौजूद हैं, फिर तो मनुष्य वापस मध्यकालीन युग में पहुँच गया है जब -मान लें कि कहावतें हमेशा झूठ नहीं होतीं- तो उस समय यूरोप के प्रत्येक शहर में जादूगर भरे पड़े थे, हालाँकि चर्च और सरकार उनके काम में बाधा बने रहते थे। मैं जितना अधिक स्पष्टीकरण खोजने का प्रयास करता हूँ मेरी दुविधा उतनी ही बढ़ती जाती है। महमूद बेग ने मुझे एक ही हाथ में पेंसिल और काग़ज़ का टुकड़ा पकड़ने के लिए क्यों कहा था? क्या उसकी आत्मा ने पेंसिल के सीसे के घटक अणुओं की सहायता से काग़ज़ के टुकड़े पर प्रश्नों के उत्तर लिखे होंगे?

मैं अतीत में हुए ऐसे ही कुछ कारनामों के विषय में सोचने लगता हूँ। क्या वेनिस के विख्यात यात्री मार्को पोलो ने भी अपनी क़िताब में यह नहीं लिखा था कि वह कैसे चीन, तातार और तिब्बत के कुछ जादूगरों के संपर्क में आया था, जिन्होंने बिना छुए इसी तरह पेंसिल से लिखने के करतब दिखाए थे? क्या उन लोगों ने मार्को पोलो को यह नहीं बताया कि वहाँ के लोग शताब्दियों पूर्व उस विचित्र कला को जानते थे, उसका अभ्यास करते थे?

मैं यह भी याद करता हूँ कि थियोसोफ़िकल सोसाइटी की संस्थापक रूस की एक महिला हेलेना पेत्रेव्ना ब्लावात्स्की ने, लगभग 50 वर्ष पूर्व कुछ ऐसे ही कारनामे दिखाए थे। उसकी सोसाइटी के चुनिंदा सदस्यों ने उनकी एजेंसी के माध्यम से कुछ लंबे संदेश प्राप्त किए थे। उन्होंने काग़ज़ पर दर्शन संबंधी कुछ प्रश्न लिखे थे और उन्हीं काग़ज़ों पर उनके उत्तर उभर आए थे। यह बड़ी विचित्र बात है कि मैडम ब्लावात्स्की, तातार और तिब्बत दोनों से नज़दीकी से परिचित थीं और इन दोनों जगहों पर मार्को पोलो के साथ समान घटनाएँ

घटीं। इसके बावजूद मैडम ब्लावात्स्की ने, महमूद बेग की तरह, यह दावा नहीं किया कि उन्होंने रहस्यमय आत्माओं को नियंत्रण में किया हुआ है। उनका कहना था कि वह रहस्यमय लिखावट उनके तिब्बती गुरुओं द्वारा उत्पन्न की गई थी, जो सचमुच वहाँ मौजूद थे और सोसाइटी के प्रेरकों के रूप में वहाँ अदृश्य रूप में मौजूद रहते थे। ऐसा लगता है, वे इस तरह के कारनामे करने में मिस्र के जादूगर से अधिक सिद्धहस्त थे, क्योंकि उन्होंने वह लिखावट सैकड़ां मील दूर तिब्बत में बैठकर प्रकट की थी। उस समय इस बात को लेकर काफ़ी विवाद रहा कि क्या उस रूसी महिला के कारनामे सचमुच सच्चे थे और क्या उसके तिब्बती गुरु सचमुच मौजूद थे। हालाँकि मेरा उससे कोई संबंध नहीं है क्योंकि वह शानदार महिला बहुत पहले ही इस संसार को छोड़कर दूसरे लोक में जा चुकी है जहाँ वह यहाँ से अधिक आराम से रह रही होगी। मैं केवल अपने अनुभव को जानता हूँ, जो कि मैंने स्वयं अपनी आँखों से देखा है। मुझे उस कारनामे की सच्चाई को स्वीकार करना चाहिए, बेशक मुझे उसका कोई स्पष्टीकरण ना मिल पाया हो।

हाँ, महमूद बेग जादूगर है - बीसवीं शताब्दी का शानदार जादूगर है! भारत पहुँचने के बाद इतनी जल्दी, महमूद बेग से हुई मुलाक़ात आगे की अधिक अनूठी खोजों के लिए अग्र-दूत थी। वह भेंट बड़ी उपयुक्त और पूर्वकथित घटना जैसी लगती है। ऐसा लगता है, मैंने भारत में अपने अनुभव की सीढ़ी पर पर पहला क़दम रख दिया है। मैंने अपनी नोटबुक के कोरे सफ़ेद पन्नों पर सचमुच पहला शब्द लिख दिया है।

---

* वह काग़ज़ का टुकड़ा कई महीनों तक मेरे पास रखा रहा और उस पर लिखे उत्तर उस दौरान नहीं मिटे। मैंने उस लिखाई को दो तीन लोगों को भी दिखाया और उन्होंने उन उत्तरों को आसानी से पढ़ लिया। इससे यह स्पष्ट है कि मेरा वह अनुभव किसी तरह का दृष्टि भ्रम नहीं था।

अध्याय 4

मसीहा से भेंट

'मुझे आपसे मिलकर ख़ुशी हुई!' इसी परंपरागत अभिवादन के साथ मेहर बाबा ने मेरा स्वागत किया। मुझे पता नहीं था कि उनका आगमन पाश्चात्य आकाश में उल्कापिंड की तरह होगा और वे यूरोप तथा अमेरिका के लाखों लोगों की उत्सुकता को जाग्रत कर देंगे और फिर उल्कापिंड की ही भाँति धरती पर असम्मानजनक ढंग से गिरेंगे। मैं उनका इंटरव्यू करने वाला पहला पश्चिमी पत्रकार हूँ क्योंकि मैंने उन्हें उनके भारतीय आवास पर खोजा है, जहाँ उन्हें स्थानीय लोग भी ठीक से नहीं जानते।

मैं उनके प्रमुख शिष्यों में से एक से परिचित हूँ और उनके साथ बातचीत के बाद इस सोच में पड़ जाता हूँ कि मानव जाति के स्वघोषित मसीहाओं की श्रेणी में यह किस प्रकार का व्यक्ति आकर मिल गया है। उनके दो पारसी शिष्य मुझे साथ ले जाने मुंबई आते हैं। वे शहर छोड़ने से पहले मुझे बताते हैं कि उनके गुरु को उनके मनपसंद फूल और फल देना ज़रूरी है। इसलिए हम पहले बाज़ार जाते हैं और वहाँ से मेरे ख़र्चे पर फल-फूल का बड़ा-सा टोकरा ख़रीदते हैं।

हमारी ट्रेन रात-भर सफ़र करके अगले दिन सुबह अहमदनगर पहुँचती है। इस ऐतिहासिक स्थान की पहचान औरंगजेब नाम के क्रूर बादशाह से है, जिसे आस्था का संरक्षक और मुगल सल्तनत का हीरा समझा जाता था। उसने इसी स्थान पर एक तंबू में अंतिम साँस ली थी।

एक पुरानी युद्धकालीन खटारा फ़ोर्ड गाड़ी, जो मेहर बाबा को लाने-ले जाने का काम करती है, स्टेशन पर हमारी प्रतीक्षा में खड़ी है। वहाँ से सात मील का रास्ता तय करने के बाद

हम भीतरी क्षेत्र में प्रवेश करते हैं। सड़क के दोनों ओर नीम के पेड़ लगे हैं। हम एक गाँव से गुज़रते हैं, जहाँ के घरों की छतें स्थानीय मंदिर के शिखर से ऊँची निकलती दिखाई देती हैं। इसके बाद, मुझे एक जलधारा नज़र आती है जिसके दोनों किनारों पर गुलाबी और पीले रंग के फूल हैं। उसके मटमैले पानी में भैंसें मज़े से आराम कर रही हैं।

हम मेहर बाबा के इलाक़े में पहुँचते हैं जो बड़े हिस्से में फैला हुआ है। वहाँ कुछ अजीब-से पत्थर के ढाँचे खड़े हैं, जिनके बारे में मुझे बाद में बताया जाता है कि वे सैन्य शिविर के अवशेष हैं जो अब तक वहाँ मौजूद हैं। पास ही, साधारण लकड़ी के तीन बंगले, एक साथ बने है। वहाँ से एक-चौथाई मील की दूरी पर एक छोटा-सा गाँव है जिसका नाम अरनगाँव है। वह जगह देखने में अच्छी नहीं है और उसका आधे से ज़्यादा हिस्सा निर्जन लगता है। मेरे पारसी साथी मुझे बताते हैं कि यह उनके गुरु का मुख्यालय है और यह कि उनका मुख्य केंद्र, नासिक शहर के पास है जहाँ उनके अधिकांश प्रमुख शिष्य रहते हैं। बाबा, सामान्य तौर पर, वहीं अपने अभ्यागतों से मिलते हैं।

हम जब वहाँ से गुज़रते हैं तो उनमें से एक बंगले में से कुछ लोग बाहर निकलते हैं। वे बरामदे में आकर मुस्कराते हैं, कुछ संकेत करते हैं और अपने बीच एक यूरोपीय व्यक्ति के आगमन से प्रसन्न नज़र आते हैं। हम एक मैदान को पार करके विचित्र-से ढाँचे के पास पहुँचते हैं, जो किसी कृत्रिम गुफा से कम नहीं है। यह पत्थर और मलबे को सीमेंट द्वारा जोड़कर बनाया गया ढाँचा है, जो लगभग आठ फ़ीट गहरा है। इसका मुँह दक्षिण की ओर खुलता है। उस गुफा के भीतर सुबह की खिली हुई धूप पहुँच रही है। मुझे आस-पास खुले मैदान नज़र आते हैं, दूर एक पर्वत शृंखला है जो पूर्व दिशा में क्षितिज से मिलती है। वही कुछ दूरी पर वृक्षों की छाँव में एक गाँव बसा हुआ है। यह पारसी व्यक्ति निस्संदेह प्रकृति से बहुत प्रेम करता है क्योंकि उसने अपना आवास, एकांत और शांतिपूर्ण स्थान पर बनाया है। मुझे भी मुंबई के शोरगुल से दूर, शांत वातावरण में आकर यहाँ बहुत अच्छा महसूस हो रहा है।

दो व्यक्ति उस गुफा के द्वार पर संतरियों की तरह खड़े हैं। हमारे वहाँ पहुँचने पर वे दोनों भीतर जाकर अपने गुरु से परामर्श करते हैं। उनमें से एक, मुझे धीरे से कहता है, 'अपनी सिगरेट बुझाओ। बाबा को धूम्रपान पसंद नहीं है।' मैं तुरंत सिगरेट फेंक देता हूँ। एक मिनट बाद, मुझे तथाकथित 'नए मसीहा' की पावन उपस्थिति में प्रस्तुत किया जाता है।

वे गुफा के दूसरे सिरे पर बैठे हैं और पूरे फ़र्श पर बहुत सुंदर आकृति वाला ईरानी कालीन बिछा है। मैंने जिस तरह के व्यक्ति की कल्पना की थी, यह उससे बिलकुल भिन्न है। उनकी आँखें मुझे भेद नहीं रही हैं। उनके हाव-भाव में शक्ति का अभाव है। हालाँकि, मैं वहाँ के वातावरण में मौजूद आध्यात्मिकता, अलौकिकता और सौम्यता को महसूस कर सकता हूँ, मैं समझ नहीं पा रहा कि मुझे कोई विशेष उत्तेजना क्यों नहीं हो रही है, जैसा कि प्रायः

ऐसे व्यक्ति से मिलकर होनी चाहिए जो लाखों लोगों की आस्था को जीतने का दावा करता हो।

उन्होंने लंबा, निर्मल, सफ़ेद लबादा पहना है, जो किसी पुराने फ़ैशन वाले अंग्रेज़ी कमीज़ जैसा है! उनका चेहरा मिलनसार और दयालु है। उनके रंगे हुए लंबे बाल गर्दन पर बिखरे हैं। मैं उनके स्त्रियों जैसे मुलायम व रेशमी बाल देखकर हैरान हूँ। उनकी नाक, ऊँची उठकर फिर तीखापन लिए नीचे की ओर झुकी है। उनकी आँखें काली, मध्यमाकार और साफ़ हैं, लेकिन मैं उनसे प्रभावित नहीं हूँ। उनके ऊपरी होंठ पर भूरे रंग की मोटी मूँछ है। उनकी जैतूनी त्वचा, उनके ईरानी उद्भव से मेल नहीं खाती क्योंकि उनके पिता शाहों के इलाक़े से थे। जो भी हो, वे युवा हैं और उनकी आयु तीस वर्ष के क़रीब है। एक अंतिम बात, जो मुझे उनके विषय में याद है, उनका मस्तक है। वह इतना नीचा है कि वह औसत आकार का भी नहीं है। उसकी निचाई देखकर मुझे हैरानी हो रही है। क्या मस्तिष्क के हिस्सों का गुणात्मक महत्त्व होता है? क्या व्यक्ति के मस्तक से उसके विचारों के सामर्थ्य का पता लगता है? संभवतः एक मसीहा, ऐसी शारीरिक सीमाओं से परे होता है!

‘मुझे आपको देख कर ख़ुशी हुई,’ वे कहते हैं। लेकिन उनका बोलने का तरीक़ा सामान्य मनुष्यों जैसा नहीं है। उन्होंने अपनी गोद में एक वर्णमाला बोर्ड रखा हुआ है और वह तेज़ गति से तर्जनी अँगुली से एक के बाद एक अक्षर पर अँगुली रखकर अपनी बात कहते हैं। वे शब्दों को इसी तरह मौन अभिनय द्वारा बोलते हैं। उनका सचिव मेरे समझने के लिए ज़ोर से पढ़कर सुनाता है। इस मनुष्य ने 10 जुलाई 1925 के बाद से एक शब्द भी नहीं बोला है। उनके छोटे भाई ने मुझे बताया कि यह नया मसीहा जब भी कुछ बोलेगा, तो इनका संदेश समूचे संसार को चकित कर देगा! इस बीच, वे मौन की मुद्रा धारण कर लेते हैं।

मेहर बाबा की अँगुलियाँ अब भी बोर्ड पर हैं। वे मेरा हालचाल पूछते हैं। मेरे जीवन के विषय में प्रश्न करते हैं। वह भारत में मेरी रुचि पर संतोष भी व्यक्त करते हैं। उन्हें अंग्रेज़ी का बहुत अच्छा ज्ञान है, इसलिए मेरी बात का अनुवाद करने की आवश्यकता नहीं होती। उनसे इंटरव्यू का अनुरोध करने पर वे उसे दोपहर बाद के लिए टाल देते हैं। ‘आपको भोजन और आराम की आवश्यकता है,’ वे कहते हैं, या कहिए कि संकेत से बताते हैं।

मैं पत्थर के एक ढाँचे के पास आ जाता हूँ। उस कमरे का भीतरी भाग अवसादपूर्ण है। अंदर बिना गद्दे वाला, एक पुराना बिस्तर है, वहीं एक जर्जर मेज़ और कुर्सी है, जो शायद भारतीय सैन्य-विद्रोह के दौरान काम में ली जाती रही होगी। मुझे यहाँ लगभग एक सप्ताह रहना है। मैं उस कमरे की बिना शीशे वाली खिड़की से बाहर देखता हूँ तो मुझे विशाल मैदान नज़र आते हैं, जो दूर तक फैले हैं और जिनमें छोटी-छोटी झाड़ियाँ और कैक्टस के बहुत-से पौधे लगे हैं।

चार घंटे का समय धीरे-धीरे बीत जाता है। मैं फिर एक बार ईरानी कालीन पर मेहर बाबा

के सामने बैठा हूँ। उनका यह दावा है कि उन्हें संपूर्ण मानव जाति को आध्यात्मिक प्रकाश और व्यवहारिक दिशा देने के लिए चुना गया है। मुझे अभी इस दावे की पड़ताल करनी है। बाबा अपने इस दावे को अपने पहले ही वाक्य में अपने बोर्ड पर लिखकर बताते हैं।

'मैं संपूर्ण संसार के इतिहास को बदल दूँगा!'

परंतु वह मेरे नोट्स लिखने से परेशान हैं।

'क्या आप मुझसे मिलकर जाने के बाद नोट्स नहीं लिख सकते?'

मैं हामी भर देता हूँ और फिर मेहर बाबा के शब्दों को स्मृति-पटल पर अंकित करने का प्रयास करता हूँ।

'भौतिकता वाले युग में जिस प्रकार यीशु ने आध्यात्मिकता का ज्ञान दिया था, उसी प्रकार मैं आज की मानव जाति को आध्यात्मिक दिशा प्रदान करने आया हूँ। इस तरह के दिव्य प्रयोजनों के लिए एक समय निश्चित होता है। वह समय जब आ जाएगा तो मैं पूरे संसार को अपनी असली पहचान बता दूँगा। यीशु, बुद्धि, मोहम्मद और ज़रथ्रुष्ट जैसे सभी महान पैगंबरों के मूलभूत सिद्धांतों में कोई अंतर नहीं है। इन सबका उद्गम ईश्वर से ही हुआ है। सभी प्रमुख धर्म उपदेश, इन पैगंबरों के ज्ञान में स्वर्णिम धागे की भाँति पिरोए हुए नज़र आते हैं। ये दिव्य आत्माएँ ऐसे समय में लोगों के बीच आईं जब उन्हें सहायता की सबसे अधिक आवश्यकता थी, जिस समय आध्यात्मिकता की अवनति अपने चरम पर थी और भौतिकता का सर्वत्र बोलबाला था। वही समय फिर से बहुत तेज़ी से लौट रहा है। संपूर्ण जगत आज कामेच्छा, जातिगत स्वार्थ और धन की आराधना में लिप्त है। लोग ईश्वर को भूल चुके हैं। सच्चे धर्म का तिरस्कार हो रहा है; मनुष्य को अच्छा जीवन चाहिए, किंतु आजकल के धर्मगुरु उसे पत्थर के दर्शन करवा रहे हैं। इसलिए ईश्वर को अपने एक सच्चे पैगंबर को भेजना पड़ा, ताकि वह दोबारा सच्ची आराधना को स्थापित कर सके और लोगों को भौतिक जड़ता से बाहर निकाल सके। मैं उन्हीं पूर्ववर्ती पैगंबरों की बताई राह पर चल रहा हूँ। यही मेरे जीवन का उद्देश्य है। ईश्वर ने मुझे यह आदेश दिया है।'

मेहर बाबा का सचिव इन आश्चर्यजनक बातों को बोलकर बताता है और मैं वह सब ध्यान से सुन रहा हूँ। मेरा दिमाग़ बिलकुल खुला हुआ है और मैं किसी भी तरह के मानसिक गतिरोध से बच रहा हूँ। इसका यह आशय नहीं है कि मैंने उनकी बातों को स्वीकार कर लिया है, बल्कि ऐसा इसलिए कि मैं जानता हूँ कि ऐसे पूरबवासियों की बातों को कैसे सुनना चाहिए। यदि ऐसा नहीं किया जाए तो स्वीकार करने लायक़ बात होने पर भी पश्चिमी व्यक्ति इतना कष्ट उठाकर भी कुछ प्राप्त नहीं कर सकता। परम सत्य को निर्मम जाँच-पड़ताल द्वारा भी पहचाना जा सकता है, किंतु पूर्वी जगत की पद्धतियों को मानसिक वातावरण के अनुकूल बनाने हेतु संशोधित करना पड़ता है। मेहर बाबा मुझे देखकर मुस्कराते हैं और फिर आगे कहना शुरू करते हैं:

'सभी पैगंबर, लोगों की सहायता के लिए नियम एवं क़ानून बनाते हैं ताकि लोग बेहतर जीवन जी सकें और ईश्वर की ओर उनका रुझान उत्पन्न हो सके। धीरे-धीरे ये नियम एक व्यवस्थित धर्म के सिद्धांत का रूप ले लेते हैं। परंतु उसके संस्थापक के जीवन के दौरान मौजूद आदर्शवादी सिद्धांत और प्रेरक बल, उस व्यक्ति की मृत्यु के बाद, धीरे-धीरे लुप्त हो जाता है। यही कारण है कि ऐसी संस्थाएँ, व्यक्ति को आध्यात्मिक सत्य के निकट नहीं ला पातीं और इसीलिए, सच्चा धर्म सदैव व्यक्तिगत विषय बनकर रह जाता है। धार्मिक संस्थाएँ पुरातत्व विभाग के समान बन जाती हैं, जो अपने अतीत को पुनर्जीवित करने का प्रयास करती रहती हैं। इसलिए मैं किसी नए धर्म, पंथ अथवा संस्था को स्थापित करने का प्रयत्न नहीं करूँगा, परंतु मैं लोगों में धार्मिक विचार जाग्रत करने तथा उनके भीतर जीवन के प्रति बेहतर समझ विकसित करने का कार्य अवश्य करूँगा। संस्थापक की मृत्यु के शताब्दियों बाद बनाए गए धर्म सिद्धांत एक-दूसरे से बहुत अलग होते हैं, किंतु सभी धर्मों का मूल एक जैसा होता है क्योंकि वे सब एक ही स्रोत - ईश्वर से उत्पन्न होते हैं। इसलिए मैं जब भी सार्वजनिक रूप से सामने आऊँगा तो किसी मौजूदा धर्म का विरोध नहीं करूँगा परंतु मैं किसी एक धर्म का समर्थन भी नहीं करूँगा। मैं लोगों का ध्यान कट्टरपंथी भेदभाव से हटाना चाहता हूँ ताकि लोग परम सत्य पर सहमत हो सकें। परंतु याद रखो, प्रत्येक पैगंबर लोगों के समक्ष आने से पूर्व समय, परिस्थितियों तथा लोगों की तत्कालीन मानसिकता को ध्यान में रखता है। इसीलिए वह केवल ऐसे धर्मसिद्धांतों का ही प्रचार करता है जो इन परिस्थितियों के अनुकूल होते हैं।'

मेहर बाबा कुछ पल के लिए रुकते हैं ताकि मैं उनके महान विचारों को आत्मसात कर सकूँ और फिर उनके शब्द एक नया मोड़ ले लेते हैं।

'क्या आपने ध्यान नहीं दिया कि कैसे सभी देशों को आधुनिक युग में, त्वरित संचार की परिधि में लाया गया है? क्या आप यह नहीं देख सकते कि रेल मार्ग, जहाज, टेलीफ़ोन, केबल, वायरलेस और अख़बारों ने कैसे समूची दुनिया को एक-दूसरे से जोड़ दिया है? एक देश में होने वाली महत्त्वपूर्ण घटना दस हज़ार मील दूर किसी अन्य देश के लोगों को एक दिन के भीतर पता लग जाती है। इसलिए यदि कोई व्यक्ति महत्त्वपूर्ण संदेश देना चाहता है तो समूची मानवजाति उसकी दर्शक बनने को तैयार है। इस सबके पीछे ठोस कारण हैं। मानव जाति को एक आध्यात्मिक सिद्धांत देने का समय बहुत तेज़ी से निकट आ रहा है, जो सभी जातियों और सभी देशों की आवश्यकता को पूरा करेगा। दूसरे शब्दों में पूरे विश्व को मेरा संदेश पहुँचाने का मार्ग प्रशस्त हो रहा है!'

मेहर बाबा की यह ज़बरदस्त उद्घोषणा, इस बात को पर्याप्त रूप से इंगित करती है कि उन्हें अपने भविष्य पर अनंत विश्वास है और उनकी संपूर्ण भाव-भंगिमा भी इस बात की पुष्टि करती है। उनके अपने अनुमान के अनुसार, उनका मूल्य किसी दिन असीमित रूप से बढ़

जाएगा!

'परंतु आप अपने इस उद्देश्य के विषय में संसार को कब बताएँगे?' मैं पूछता हूँ।

'मैं मौन तोड़कर अपना संदेश संसार को तभी दूँगा, जब सर्वत्र अफरा-तफरी और दुविधा की स्थिति पैदा हो जाएगी क्योंकि उसी समय मेरी सर्वाधिक आवश्यकता होगी। जिस समय पूरे संसार में उथल-पुथल मचेगी, भूकंप, बाढ़ और ज्वालामुखी फटेंगे, जब पूर्व और पश्चिम के बीच भयंकर युद्ध छिड़ेगा। निस्संदेह, समूचे संसार को कष्ट उठाना पड़ेगा क्योंकि उसके बाद ही विश्व का उद्धार संभव है।'

'क्या आपको इस युद्ध की तिथि पता है?'

'हाँ। वह अधिक दूर नहीं है, किंतु मैं वह तिथि नहीं बताना चाहता।'

'यह बहुत भयंकर भविष्यवाणी है,' मैं बोल पड़ता हूँ।

मेहर बाबा अपनी पतली अँगुलियों को क्षमायाचना की मुद्रा में फैलाते हैं।

'हाँ, ऐसा ही है। यह युद्ध बहुत भयंकर होगा क्योंकि वैज्ञानिक प्रयोगों द्वारा इसे पिछले युद्ध से कहीं अधिक घातक बना दिया जाएगा। हालाँकि यह युद्ध बहुत कम समय - केवल कुछ माह चलेगा। मैं उस समय स्वयं को सामने लाऊँगा और पूरे संसार को अपने उद्देश्य की जानकारी दूँगा। मैं अपने भौतिक प्रयासों और आध्यात्मिक शक्तियों द्वारा इस युद्ध को अचानक रोक दूँगा और सभी देशों में अशांति व्याप्त हो जाएगी हालाँकि, उसके साथ ही इस ग्रह पर बहुत-से बड़े प्राकृतिक परिवर्तन होंगे। पृथ्वी के विभिन्न भागों में जन-जीवन और संपत्ति को भारी क्षति पहुँचेगी। मैं यदि ऐसी स्थिति में मसीहा की भूमिका निभाता हूँ तो वह सिर्फ़ इसलिए कि विश्व की परिस्थितियों की ऐसी माँग होगी। यह तय मानिए कि मैं अपने आध्यात्मिक कार्य को पूर्ण किए बिना नहीं जाऊँगा।'

उनका सचिव, जो छोटे क़द का साँवला व्यक्ति है और मराठा लोगों की-सी काली टोपी पहनता है, अपनी अंतिम बात समाप्त करके मेरी ओर प्रभावित करने वाले तरीक़े से देखता है। उसके चेहरे का भाव ऐसा है मानो वह कह रहा हो: 'देखा! कैसा लगा! देखो, हम यहाँ कितनी महत्त्वपूर्ण बातें जानते हैं!'

उसके गुरु की अंगुलियाँ फिर से बोर्ड पर चलने लगती हैं और वह उसका अर्थ बताना आरंभ करता है।

'युद्ध ख़त्म होने के बाद शांति और विश्व सौहार्द का लंबा युग आरंभ होगा। निरस्त्रीकरण, सिर्फ़ बातों तक सीमित नहीं रहेगा, बल्कि वास्तविकता बन जाएगा। जातिगत और सांप्रदायिक मतभेद समाप्त हो जाएँगे। धार्मिक संगठनों के बीच कट्टरपंथी घृणा का अंत हो जाएगा। मैं पूरे विश्व का भ्रमण करूँगा और सभी देश मुझे देखने को उत्सुक होंगे। मेरा आध्यात्मिक संदेश प्रत्येक स्थान, प्रत्येक शहर, प्रत्येक गाँव तक पहुँचेगा। मैं वैश्विक

भाईचारा, शांति, ग़रीबों और दमित लोगों के प्रति सहानुभूति और ईश्वर के प्रति प्रेम को बढ़ावा दूँगा।'

'और भारत - आपके अपने देश का क्या?'

'मैं भारत में हानिकारक जाति परंपरा के पूर्ण उन्मूलन तक आराम से नहीं बैठूँगा। जाति परंपरा की स्थापना के साथ भारत की स्थिति विश्व में दयनीय हो गई थी। निचली और पिछड़ी जातियों का उत्थान होते ही भारत की गिनती, विश्व के प्रभावशाली देशों में होने लगेगी।'

'भारत के भविष्य का क्या होगा?'

'अपनी समस्त कमियों के बावजूद, भारत विश्व का सबसे अधिक आध्यात्मिक देश है। भविष्य में यह सभी देशों की नैतिक अगुआई करेगा। धर्म के सभी महान संस्थापक पूर्वी जगत में पैदा हुए और इसीलिए आध्यात्मिक प्रकाश के लिए लोगों को सदा पूर्व की ओर देखना होगा।'

मैं पाश्चात्य देशवासियों के साँवले लोगों के सामने दीन अवस्था में बैठने की कल्पना करने का प्रयास करता हूँ, मुझे सफलता नहीं मिलती। मेरे सामने श्वेत वस्त्रों में बैठा व्यक्ति शायद मेरी दुविधा को भाँप लेता है और फिर आगे कहता है:

'भारत की तथाकथित पराधीनता वास्तविक पराधीनता नहीं है। यह केवल शारीरिक स्तर तक सीमित है और इसीलिए अस्थाई है। इस देश की आत्मा अमर है। हालाँकि हमारे राष्ट्र ने अपनी शक्ति को बाहरी तौर पर खो दिया है, किंतु यह फिर भी महान है।'

मेहर बाबा का यह सूक्ष्म स्पष्टीकरण मेरी समझ से परे है। मैं पहले वाले विषय पर लौट आता हूँ।

'हमने पाश्चात्य जगत में आपके इस संदेश की अधिकांश बातें पहले सुनी हैं। तो क्या आपके पास हमें बताने को नया कुछ नहीं है?'

'मेरे शब्द, परंपरागत आध्यात्मिक सत्य की पुनरावृत्ति अवश्य करते हैं, परंतु मेरी गूढ़ और रहस्यमय शक्ति वैश्विक जीवन में एक नए तत्व का समावेश करेगी।'

मैं अब अपने मस्तिष्क को आराम देना चाहता हूँ। वहाँ कुछ देर शांति हो जाती है। मैं कोई प्रश्न नहीं पूछता। मैं अपना सिर घुमाकर गुफा से बाहर देखने लगता हूँ। बाहर विश्रांत मैदानों से बहुत आगे एक पर्वत शृंखला नज़र आती है। आकाश में निर्मम सूर्य, इंसानों, पशुओं और पृथ्वी पर समान भाव से गर्मी बरसा रहा है। समय बीतने लगता है। इस निर्जन गुफा के भीतर ऐसी तेज़ गर्मी में अवशोषक मस्तिष्कों के बीच बैठकर संसार के उद्धार की बड़ी-बड़ी योजनाएँ बनाना और ऐसे शानदार धार्मिक विचार प्रतिपादित करना बहुत सरल है। परंतु ऐसी बड़ी-बड़ी बातें भौतिकतापरक शहरों की कठिनाइयों से घिरे वास्तविक जीवन

के बीच उसी तरह ग़ायब हो जाती हैं, जैसे सूर्योदय होने से पहले धुंध उड़ जाती है।

'यूरोप बहुत कठिन और संशयी देश है,' मैं मसीहा की ओर देखकर कहता हूँ। 'आप हमें इस बात का आश्वासन कैसे देंगे कि आपको यह सब कहने का दिव्य अधिकार प्राप्त है? आप परिचित लोगों को अपने आध्यात्मिक सिद्धांत का विश्वास कैसे दिलाएँगे? एक सामान्य पश्चिमवासी आपको यही कहेगा कि यह सब असंभव है और हो सकता है, वह आपका मज़ाक़ भी उड़ा दे।'

'आप कल्पना नहीं कर पा रहे हैं कि आने वाला समय कितना बदल जाएगा।'

मेहर बाबा अपने पतले हाथों को थपथपाते हैं और फिर कुछ और आश्चर्यजनक दावे करते हैं जो सुनने में पश्चिमी कानों को बड़े शानदार लगते हैं। परंतु बाबा की भाव-भंगिमा बहुत सीमा तक सच्ची लगती है।

'मैं जब एक बार स्वयं को पैगंबर घोषित कर दूँगा तो कोई मेरी शक्ति के आगे ठहर नहीं पाएगा। मैं अपने उद्देश्य के प्रमाणस्वरूप अनेक चमत्कार दिखाऊँगा। अंधे लोगों को दृष्टि दूँगा, बीमार और विकलांगों के रोग दूर करूँगा। हाँ, यहाँ तक कि मृत लोगों को भी जीवित कर दूँगा। ये सब काम मेरे लिए बाएँ हाथ का खेल है! मैं यह सब इसलिए करूँगा ताकि लोग मेरा विश्वास करें और फिर मेरे संदेश पर भरोसा कर सकें। यह चमत्कार केवल उत्सुकता शांत करने के लिए नहीं, बल्कि संशयवादी लोगों को आश्वस्त करने के लिए किए जाएँगे।'

मेरी साँस थमने लगती है। यह इंटरव्यू सामान्य समझ की सीमा तक जा पहुँचा है। मेरा दिमाग़ लड़खड़ाने लगता है। हम लोग पूर्ववादी कल्पना-क्षेत्र में प्रवेश कर रहे हैं।

पारसी मसीहा आगे कहता है, 'यह समझ लीजिए कि मैं अपने शिष्यों को कहता हूँ कि यह सब चमत्कार उनके लिए नहीं, बल्कि जनता के लिए किए जाएँगे। मैं ऐसा कोई चमत्कार नहीं करना चाहता, किंतु मैं जानता हूँ कि ऐसा करने से सामान्य लोग मेरी बातों का विश्वास करने लगेंगे। यदि मैं इन कारनामों से संसार के लोगों को चकित कर दूँ तो ऐसा केवल इसलिए होगा क्योंकि मैं उन्हें अध्यात्म के रास्ते पर आगे बढ़ाना चाहता हूँ।'

'बाबा पहले ही अनेक शानदार कारनामे कर चुके हैं,' उनका सचिव कहता है।

मैं एकदम चौकन्ना हो जाता हूँ।

'जैसे...?' मैं तपाक से पूछता हूँ।

मेहर बाबा आत्म-विरोधी ढंग से मुस्कराते हैं।

'इन्हें कोई और समय दे दो, विष्णु,' बाबा कहते हैं। 'आवश्यकता पड़ने पर मैं कोई भी चमत्कार कर सकता हूँ। ऐसा करना मेरे जैसे दिव्य व्यक्ति के लिए बहुत सरल है।'

मैं यह बात ध्यान कर लेता हूँ कि मुझे अगले दिन बाबा के सचिव से उन शानदार चमत्कारों के विषय में जानकारी प्राप्त करनी है। ये सब बातें मेरी जाँच-पड़ताल का रोचक

हिस्सा बन जाएँगी। मैं एक उत्सुक अन्वेषक के रूप में आया हूँ और प्रत्येक तरह की सूचना मेरे लिए लाभदायक होगी।

इसके बाद कुछ देर फिर शांति हो जाती है। मैं मेहर बाबा से उनके जीवन के विषय में कुछ अन्य जानकारी प्रदान करने का अनुरोध करता हूँ।

'विष्णु, इन्हें वह भी बताओ,' मेहर बाबा सचिव की ओर इशारा करके कहते हैं। 'आपके पास मेरे शिष्यों से बात करने के लिए काफ़ी समय होगा क्योंकि आप यहाँ कुछ दिन रुकने वाले हैं। ये लोग आपको मेरे अतीत के विषय में बता देंगे।'

इसके बाद हमारा वार्तालाप सामान्य विषयों की ओर मुड़ जाता है। कुछ देर बाद, हमारी बैठक संपन्न हो जाती है। मैं अपने आवास पर लौटकर सबसे पहले एक सिगरेट जलाता हूँ और उसके सुगंधित धुएँ को ऊपर उठता हुआ देखता हूँ।

मुझे शाम को एक बेहद अनूठा नजारा देखने को मिलता है। आकाश में तारे हल्के-हल्के टिमटिमाने लगे हैं। हालाँकि अभी दिन समाप्त नहीं हुआ है, मंद प्रकाश में कुछ लालटेनें धीमे-धीमे जलने लगती हैं। मेहर बाबा अपनी गुफा के भीतर बैठे हैं और उनके शिष्यों, आगंतुकों और अरनगाँव के कुछ लोग प्रवेश द्वार के इर्द-गिर्द घोड़े की नाल की आकृति बनाकर बैठ जाते हैं।

प्रतिदिन शाम को यह रीति मेहर बाबा के सामने दोहराई जाती है और कुछ ही देर में यह फिर होने वाली है। एक शिष्य हाथ में धातु का कटोरा लेकर खड़ा हो जाता है जो दीपक का काम करता है। उसकी बत्ती चंदन की लकड़ी वाले सुगंधित तेल में डूबी हुई है। वह शिष्य दीपक को अपने गुरु के सिर के चारों ओर सात बार घुमाता है। वहाँ मौजूद लोग ज़ोर-ज़ोर से मंत्र और प्रार्थना बोलने लगते हैं। मुझे उनके मराठी उच्चारण में बाबा का नाम कई बार सुनाई पड़ता है। यह स्पष्ट है कि उन मंत्रें में उनके गुरु की प्रशंसा की जा रही है। सब लोग मेहर बाबा की ओर स्नेहमयी दृष्टि से देखते हैं। इसके बाद मेहर बाबा का छोटा भाई एक छोटा-सा हारमोनियम लेकर बैठ जाता है और गायकों के साथ मिलकर रोने जैसा संगीत बजाने लगता है।

इस कार्यक्रम के दौरान प्रत्येक भक्त गुफा के भीतर आता है। वह मेहर को प्रणाम करता है और उनके उघड़े हुए पैरों को चूमता है। उनमें से कुछ लोग तो पावन भावना से इतने ओत-प्रोत हैं कि वह पूरे एक मिनट तक बाबा के पैरों को चूमते हैं! मुझे बताया गया है कि ऐसा करने भारी आध्यात्मिक लाभ मिलता है क्योंकि इससे भक्त को मेहर का आशीर्वाद प्राप्त होता है और उसके बहुत-से पाप अपने आप धुल जाते हैं।

मैं अपने आवास पर यह सोचता हुआ लौट आता हूँ कि अगले दिन क्या देखने को मिलेगा। दूर मैदान में कहीं एक सियार के चीख़ने की आवाज़ आती है जिससे रात्रि की स्तब्धता टूट जाती है।

मैं अगले दिन मेहर बाबा के सचिव और कुछ अंग्रेज़ी बोलने वाले शिष्यों को उनके लकड़ी के एक बंगले के बाहर एकत्रित करता हूँ। हम लोग एक अर्ध-वृत्त बना कर बैठ जाते हैं। जिन लोगों को अंग्रेज़ी समझ में नहीं आती, वे हमसे कुछ दूरी पर खड़े मुस्कराते हुए रोचक दृष्टि से देखते रहते हैं। मैं इन लोगों से उनके अनूठे गुरु के जीवन के विषय में कुछ और जानकारियाँ प्राप्त करना चाहता हूँ जो मुझे अभी मालूम नहीं हैं।

उनका नाम मेहर है किंतु वे ख़ुद को सद्गुरु मेहर बाबा कहते हैं। 'सद्गुरु' का अर्थ 'आदर्श गुरु' होता है, जबकि 'बाबा' स्नेहपूर्ण एवं साधारण शब्द है, जो भारतीय लोगों द्वारा प्रयोग किया जाता है। मेहर बाबा के शिष्य उन्हें इसी नाम से बुलाते हैं।

मेहर बाबा के पिता ईरानी हैं और वे ज़रथ्रुष्ट के पंथ के अनुयायी हैं। वे ग़रीब और युवा थे जब भारत आए थे। मेहर उनके पहले पुत्र थे और उनका जन्म पूना शहर में 1894 में हुआ। बालक को पाँच वर्ष की आयु में स्कूल भेजा गया। वह पढ़ाई में अच्छा था और उसने सत्रह वर्ष में मैट्रिक की परीक्षा पास कर ली। उसने पुणे के डक्कन कॉलेज में दाख़िला लिया और वहाँ दो साल तक अच्छी आधुनिक शिक्षा प्राप्त की।

इसके बाद उसके जीवन का कष्टदायी एवं दुरूह समय आरंभ हुआ। एक दिन वह स्कूल से साइकिल पर लौट रहा था। रास्ते में एक प्रसिद्ध मुसलमान फ़क़ीर स्त्री का घर पड़ता था। उस फ़क़ीर का नाम हज़रत बाबाजान था और उसकी आयु सौ वर्ष से अधिक थी। वह उस समय एक लंबे सोफ़ा पर लेटी हुई थी जो उसके लकड़ी के बने छोटे से कमरे वाले घर के बरामदे में रखा हुआ था। मेहर की साइकिल जब उसके पास से गुज़री तो वह वृद्ध महिला उठी और उसने लड़के को बुलाया। लड़का साइकिल से उतरा और उसके पास गया। उस महिला ने बालक के हाथ थामे और उसे गले लगाकर उसके माथे को चूमा।

इसके बाद क्या हुआ यह ज़्यादा स्पष्ट नहीं है। मुझे मालूम हुआ कि वह बालक विचित्र मानसिक अवस्था में अपने घर लौटा और उसके बाद के आठ महीनों में उसकी मानसिक क्षमता धीरे-धीरे कम होती गई। वह ठीक से पढ़ाई करने में असमर्थ हो गया और आख़िर में उसे कॉलेज छोड़ना पड़ा क्योंकि वह बिलकुल पढ़ नहीं पाता था।

इसके बाद युवा मेहर की स्थिति बुद्धू जैसी हो गई और वह ठीक से अपना ध्यान नहीं रख पाता था। उसकी आँखें पीली और बेजान-सी होने लगीं तथा वह अपने मूल कार्य जैसे खाना, नहाना और शौचादि भी तक कर पाने में असमर्थ हो गया। उसके पिता जब उससे कहते, 'खाना खाओ!' तो वह मशीन की तरह खाने लगता अन्यथा उसे यह समझ में नहीं आता था कि उसके सामने भोजन क्यों रखा गया है। संक्षेप में, वह मशीनी मानव बनकर रह गया।

बीस साल का एक युवक, जिसके माता पिता को उसकी देखभाल तीन साल के बच्चे की तरह करनी पड़े, जब एक मानसिक रोगी जैसा लगने लगा तो उसके परेशान पिता ने यह

निष्कर्ष निकाला कि उसने शायद परीक्षा के दौरान चीज़ों को याद करने में दिमाग़ पर बहुत अधिक ज़ोर डाला था और इसीलिए उसकी स्थिति ऐसी हो गई थी। मेहर को बहुत-से चिकित्सकों के पास ले जाया गया जिन्होंने उसकी मानसिक स्थिति को देखते हुए उसे इंजेक्शन आदि दिए। लगभग नौ महीनों के बाद, उसकी दयनीय स्थिति में सुधार हुआ और फिर वह धीरे-धीरे बेहतर होती गई। कुछ समय बाद, मेहर अपने आसपास के वातावरण को सही ढंग से समझने लगा और एक सामान्य मनुष्य की तरह रहने लगा।

उसकी तबीयत ठीक हो जाने के बाद पता लगा कि उसका स्वभाव पूरी तरह बदल गया था। मेहर की दार्शनिक महत्त्वाकांक्षाएँ समाप्त हो गईं, उसकी भौतिक जीवन में सफलता पाने की इच्छा भी ग़ायब हो गई और खेलकूद में भी उसकी रुचि पूरी तरह ख़त्म हो गई। इन सब बातों की जगह, उसके मन में धार्मिक जीवन के प्रति ज़बरदस्त इच्छा और आध्यात्मिक उत्थान की सतत कामना जाग्रत हो गई।

मेहर का ऐसा मानना था कि उसके भीतर ये परिवर्तन मुसलमान फ़क़ीर स्त्री द्वारा किए चुंबन के कारण आए थे। मेहर दोबारा अपने भविष्य के संबंध में सलाह लेने उसी वृद्ध महिला के पास पहुँचा। उस महिला ने मेहर को आध्यात्मिक गुरु खोजने का निर्देश दिया। उसने महिला से पूछा कि उसे यह आशीर्वाद कहाँ प्राप्त होगा, तो महिला ने उत्तर स्वरूप, हवा में यूँ ही हाथ घुमा दिया।

इसके बाद मेहर अपने आसपास के इलाक़ों में बहुत-से धार्मिक लोगों के पास गया। वह अपने घर पुणे से सैकड़ों मील दूर बसे गाँवों में भी गया। एक दिन वह सकोरी नामक जगह के निकट पत्थर से बने छोटे-से मंदिर में पहुँच गया। वह स्थान छोटा था परंतु उसमें एक धार्मिक व्यक्ति रहता था। जब मेहर का सामना उपासनी महाराज से हुआ तो उसे लगा मानो उसे अपना गुरु मिल गया था।

युवक मेहर ने अपने घर से सकोरी तक बीच-बीच में आना-जाना आरंभ कर दिया। वह शुरू में कुछ दिन अपने गुरु के साथ बिताता था, परंतु एक बार वह चार महीने तक वहीं रहा। मेहर का कहना है कि उसी दौरान उसे अपने उद्देश्य के लिए तैयार किया गया। एक दिन शाम को उसने अपने स्कूल के लगभग तीस दोस्तों और बचपन के मित्रें को साथ लिया और उन्हें एक महत्त्वपूर्ण बैठक के विषय में रहस्यमय संकेत दिए। फिर वह उन सबको लेकर सकोरी के छोटे मंदिर में आ पहुँचा।

दरवाज़ा बंद कर दिया गया और तब उपासनी महाराज ने, जो वहाँ रहते थे, खड़े होकर उन सबको संबोधित किया। उन्होंने धर्म के विषय में बात की और उन सबसे सद्गुण प्राप्त करने को कहा। उपासनी महाराज ने उन्हें यह भी बताया कि उन्होंने मेहर को रहस्यमयी शक्तियों और अपने ज्ञान का आध्यात्मिक उत्तराधिकारी चुना है। उन्होंने फिर अचानक सब लोगों से कहा कि मेहर को दिव्य ज्ञान प्राप्त हो गया है! उन्होंने सबको अपने पारसी मित्र का

शिष्य बन जाने का निर्देश दिया ताकि उन्हें अपने इस जीवन और आने वाले जीवन में बेहतर आध्यात्मिक लाभ प्राप्त हो सके।

सुनने वालों में से कुछ ने उनकी सलाह को माना और शेष संशय में पड़े रहे। लगभग एक वर्ष बाद जब मेहर की आयु सत्ताइस वर्ष हुई तो उस युवा पारसी ने अपने छोटे-से समूह के बीच यह घोषणा कर दी कि उसे अपने दिव्य उद्देश्य का ज्ञान हो गया है और यह कि ईश्वर ने स्वयं उसे मानवजाति के हित में अत्यंत महत्त्वपूर्ण कार्य करने का निर्देश दिया है। मेहर ने सीधे तौर पर अपने उद्देश्य के विषय में नहीं बताया, परंतु कुछ वर्षों के भीतर उसने वह रहस्य खोल दिया। उसके भाग्य में पैगंबर बनना लिखा था!

मेहर ने 1924 में पहली बार भारत से बाहर क़दम रखा। उसने आधा दर्जन शिष्यों को साथ लेकर ईरान की यात्रा शुरू की और उनसे कहा कि वह अपने पूर्वजों के देश जा रहा है। उसका जहाज जैसे ही बुशायर बंदरगाह पहुँचा, उसने अचानक अपना विचार बदल दिया और वह अगले जहाज से दोबारा अपने घर लौट आया। इस घटना के तीन महीने बाद, विद्रोही सेनाओं ने ईरान की राजधानी तेहरान पर क़ब्ज़ा कर लिया और वहाँ के शासक को अपदस्थ कर दिया और राजगद्दी पर एक नया शाह बैठ गया।

मेहर बाबा ने अपने शिष्यों से कहा: 'देखा, ईरान का दौरा करते समय किस तरह मेरी अंतर्दृष्टि ने काम किया!'

मेहर बाबा के शिष्यों ने मुझे बताया कि नए शाह के अधीन, ईरानवासी पहले से ज़्यादा ख़ुश थे। वहाँ मुसलमान, ज़रथ्रुष्टवादी, यहूदी और ईसाई सब मिल-जुलकर प्रेम से रहते थे, जबकि पहले वाले शाह के शासनकाल में इन लोगों के बीच लगातार संघर्ष और क्रूर नरसंहार होता रहा था।

इस रहस्यमय यात्रा के कुछ वर्षों बाद, मेहर बाबा ने एक अनूठा शैक्षिक संस्थान शुरू किया। उनके सुझाव पर उनके शिष्यों ने अरनगाँव के पास कुछ जगह ख़रीदी और वहाँ बंगलों का निर्माण किया गया। साथ ही, वहाँ कुछ कच्ची झोपड़ियाँ भी बनाई गईं। इसके बाद, वहाँ एक निशुल्क विद्यालय खोला गया। उसमें पढ़ाने के लिए पारसियों के शिक्षित शिष्यों में से लोगों की भर्ती होने लगी और मेहर बाबा के शिष्यों अथवा उनके मित्रें के परिवारों के बच्चे वहाँ पढ़ने आने लगे। उनसे पढ़ाई का कोई शुल्क नहीं लिया जाता था और वहाँ रहना और खाना भी मुफ़्त था। विद्यालय में सामान्य धर्मनिरपेक्ष विषयों की पढ़ाई के अतिरिक्त, मेहर बाबा द्वारा एक अनामित धर्म पर विशेष उपदेश भी दिए जाते थे।

विद्यालय की आकर्षक शर्तों पर आसानी से लगभग एक सौ बच्चे पढ़ने आने लगे। उनमें से लगभग एक दर्जन बच्चे सुदूर ईरान से आए थे। उनको वही नैतिक शिक्षा प्रदान की जाती थी जो अधिकतर धर्मों में दी जाती है। उन्हें महान पैगंबरों के जीवन के विषय में भी बताया जाता था। धीरे-धीरे धार्मिक शिक्षा उनके अध्ययन का प्रमुख विषय बन गई। मेहर बाबा ने

कुछ बड़े लड़कों को धार्मिक रहस्यवाद की ओर प्रेरित कर दिया जो कुछ-कुछ ओजहीन प्रतीत होता है। उन्हें मेहर बाबा को पावन आत्मा के रूप में देखना सिखाया गया। यहाँ तक कि वे बच्चे मेहर बाबा की पूजा करने लगे। कुछ लड़कों में तो धार्मिक उन्माद के संकेत भी दिखाई पड़ने लगे। थोड़े-थोड़े दिनों के बाद, वहाँ विचित्र दृश्य देखने को मिलते थे।

इस असाधारण विद्यालय की एक विशेषता यह थी कि यहाँ पढ़ने वाले विद्यार्थी, विभिन्न जाति, पंथ और कुलों से आते थे। हिंदू, मुसलमान, भारतीय ईसाई और ज़रथ्रुष्टवादी बच्चे, उन्मुक्त भाव से एक-दूसरे से मिलते-जुलते, परंतु मेहर बाबा और अधिक व्यापक भर्ती के इच्छुक थे। उन्होंने इसी उद्देश्य से, अपने एक प्रमुख शिष्य को इंग्लैंड भेजा ताकि वह कुछ गोरे विद्यार्थियों को खोजकर ला सके। हालाँकि उस शिष्य को काफ़ी परेशानी हुई क्योंकि गोरे माता-पिता, अपने बच्चों को किसी ऐसे अजनबी के भरोसे नहीं छोड़ना चाहते थे, जो बच्चों को ज़बरदस्ती सुदूर एशिया के एक विद्यालय में भेजने का इच्छुक था। इसके अतिरिक्त सभी धर्मों के मिश्रण वाले विद्यालय का विचार उनके लिए अधिक मायने नहीं रखता था। इंग्लैंड में ही ऐसे बहुत-से विद्यालय हैं, जहाँ विभिन्न जातियों के विद्यार्थी स्वाभाविक तौर पर पढ़ते हैं और वहाँ भारत जैसे जाति-प्रधान देश की तरह, बात का बतंगड़ नहीं बनाया जाता।

एक दिन उसकी मुलाक़ात एक अंग्रेज़ से हो गई, जो थोड़ी-सी बातचीत के बाद, पारसी पैगंबर का अनुयायी बनने के लिए सहमत हो गया। वह बहुत उत्साही मनोवृत्ति का व्यक्ति था और उसने लंदन में फैले तरह-तरह के संप्रदायों का अध्ययन किया था। वह मेहर बाबा के शानदार उद्देश्य से सहमत हो गया। उसने मेहर बाबा के शिष्य की गोरे विद्यार्थी खोजने में सहायता भी की।

आख़िरकार, उन्हें तीन ऐसे बच्चे मिल गए जिनके ग़रीब माता-पिता उनसे अलग होने की क़ीमत पर भी अपने बोझ को कम करने के लिए तैयार हो गए। उसी समय अचानक भारतीय दफ़्तर सक्रिय हो गया। उसने पूरे मामले की जाँच-पड़ताल की और इस योजना पर पाबंदी लगा दी। वे बच्चे भारत नहीं जा सके। पारसी पैगंबर का प्रतिनिधि भारत लौट आया और उसके साथ वह अंग्रेज़ व्यक्ति, उसकी पत्नी और पत्नी की बहन भी भारत आ गए। उनके आगमन के पाँच-छह महीने बाद, मेहर बाबा ने उन्हें अपने उसी प्रमुख शिष्य के ख़र्चे पर वापस इंग्लैंड भेज दिया।

मुझे मेहर बाबा से पता लगा कि विद्यालय की स्थापना के पीछे उनके दो प्रमुख उद्देश्य थे। पहला, वह बच्चों के बीच जातिगत तथा धार्मिक अवरोधों को तोड़ना चाहते थे; दूसरा, वह उनमें से कुछ बच्चों को चुनना और उन्हें अपने आध्यात्मिक उद्देश्य की पूर्ति हेतु भावी संदेशवाहक बनना चाहते थे। उचित समय आने पर, वे जब तैयार हो जाते और मेहर बाबा के उद्देश्य की सार्वजनिक घोषणा का समय हो जाता तो, बाबा उन्हें पाँचों महाद्वीपों में भेज देते।

वे लोग वहाँ जाकर मानव जाति के अध्यात्मीकरण के उद्देश्य को पूर्ण करने में सहयोग देते।

इस विद्यालय के साथ-साथ, एक अन्य गतिविधि भी विकसित होने लगी थी। मेहर बाबा ने वहाँ एक अस्पताल भी खोल दिया। कुछ उत्साही शिष्यों ने आस-पास के इलाक़ों से अंधे, बीमार और विकलांग लोगों को अस्पताल में भर्ती कराया। उन्हें वहाँ मुफ़्त चिकित्सा, भोजन और आवास की सुविधा दी गई, और पारसी पैगंबर ने उन्हें आध्यात्मिक सांत्वना देने का कार्य किया। मेहर बाबा के कुछ उत्साही शिष्य बताते हैं कि पाँच कुष्ठ रोगी, बाबा के स्पर्श मात्र से ही ठीक हो गए। यह बड़े दु:ख की बात है कि मैं थोड़ा संशयी प्रवृत्ति का मनुष्य हूँ। यह कोई नहीं जानता कि वे पाँच लोग कौन थे, अब कहाँ हैं और उन्हें कैसे खोजा जाए। मुझे लगता है, यह पूर्व की अतिशयोक्ति का एक नमूना है। निश्चित रूप से, उनमें से एक कोढ़ी मेहर बाबा का शिष्य बन गया होगा। निस्संदेह, यह समाचार कोढ़-ग्रस्त भारत में जंगल की आग की तरह फैला होगा और अरनगाँव के निकट स्थापित अस्पताल में कोढ़ियों और बीमार लोगों की भीड़ लग गई होगी।

इसके बाद, वहाँ विशाल संख्या में भक्त, आगंतुक और अन्य लोग आने लगे। इस असाधारण बस्ती की जनसंख्या बढ़ती गई। पूरे स्थान पर धार्मिक उत्साह तीव्रता से फैल गया। स्पष्ट तौर पर, मेहर बाबा ही उस पूरे दृश्य के केंद्र में स्थित हैं।

उस स्थान की स्थापना के 18 महीने बाद उसे अचानक बंद कर दिया गया और वहाँ की सभी गतिविधियों को रोक दिया गया। बच्चों को उनके माता-पिता के पास वापस भेज दिया गया और बीमार लोग भी अपने-अपने घर लौट गए। मेहर बाबा ने इसका कोई कारण नहीं बताया। मुझे मालूम पड़ा कि इस तरह की अचानक होने वाली गूढ़ और आवेशपूर्ण गतिविधि, मेहर बाबा के स्वभाव की एक सामान्य बात थी।

1929 की वसंत ऋतु में, मेहर बाबा ने साधु लेक नामक अपने शिष्य को पहली बार भारत-भ्रमण पर भेजा। बाबा ने चलते समय उसे यह निर्देश दिया:

‘तुम एक पैगंबर के लिए कार्य कर रहे हो। तुम्हें विश्वबंधु बनना है। किसी धर्म को नष्ट मत करना। यह तय बात है कि मुझे तुम्हारे विषय में सबकुछ पता लग जाएगा। दूसरे लोगों की बातों से दुखी और उदास मत होना। मैं तुम्हारा मार्गदर्शन करूँगा। मेरे अतिरिक्त और किसी के आदेश का पालन मत करना।’

मुझे मिली सूचना के अनुसार यह स्पष्ट था कि वह बेचारा व्यक्ति भ्रमणशील जीवन के लिए शारीरिक रूप से अयोग्य था। उसने मद्रास में कुछ शिष्य तैयार किए, किंतु वह जल्दी ही बीमार हो गया तथा लौटने के कुछ समय बाद ही उसकी मृत्यु हो गई।

यही, उस पारसी पैगंबर के जीवन की संक्षिप्त रूपरेखा है।



मेहर बाबा से मेरी कई बार अनौपचारिक और छोटी-मोटी बात हो चुकी है लेकिन मैं विश्व के प्रति उनके स्वघोषित उद्देश्य के विषय में कुछ ठोस सुनना चाहता हूँ। मैं उनसे एक अंतिम इंटरव्यू का अनुरोध करता हूँ।

उन्होंने आज हल्के नीले रंग का स्कार्फ़ पहना है और उनका वर्णमाला बोर्ड उनके घुटनों पर बातचीत के लिए तैयार रखा है। उनके शिष्य उनके प्रशंसक व दर्शक बनकर मौजूद हैं। सब एक-दूसरे को देखकर मुस्कराते हैं और तभी मैं वहाँ छाए मौन के बीच अचानक एक प्रश्न करता हूँ।

'आपको कैसे पता आप पैगंबर हैं?'

उनके शिष्य उस धृष्टता के लिए मेरी ओर आश्चर्य से देखते हैं। उनके गुरु की मोटी भँवें भी हिलने लगती हैं। उन्हें मेरे प्रश्न से कोई परेशानी नहीं है और वह मुझ उत्सुक पश्चिमवासी को देखकर मुस्कराते हुए तत्काल उत्तर देते हैं:

'मुझे पता है! मुझे बहुत अच्छी तरह पता है। जिस तरह आप यह जानते हैं कि आप मनुष्य हैं, उसी तरह मुझे पता है कि मैं एक पैगंबर हूँ। यही मेरा संपूर्ण जीवन है। मेरा परम आनंद अनंत है। आप स्वयं को कुछ और समझने की भूल नहीं करते, इसी तरह मैं भी अपने विषय में कोई भूल नहीं करता। मेरे पास एक दिव्य कार्य है और मैं उसे करूँगा।'

'जब उस मुसलमान फ़क़ीर स्त्री ने आपको चूमा था तो वास्तविक तौर पर क्या हुआ था? क्या आपको याद है?'

'हाँ! उस समय तक मैं अन्य युवकों की तरह सांसारिक था। हज़रत बाबाजान ने मेरे लिए वह दरवाज़ा खोल दिया। उनका चुंबन से मेरे जीवन में मोड़ आ गया। मुझे लगा कि संपूर्ण ब्रह्मांड, अंतरिक्ष में समा रहा है और मैं बिलकुल अकेला हूँ। हाँ - मैं भगवान के साथ अकेला था। मैं कई महीनों तक सो नहीं सका और फिर भी मुझे किसी तरह की कमज़ोरी महसूस नहीं हुई। मैं पहले की तरह स्वस्थ था। मेरे पिताजी समझ नहीं पाए। उन्हें लगा कि मैं पागल हो गया हूँ। उन्होंने एक के बाद एक कई डॉक्टर बुलाए। उन लोगों ने मुझे दवाइयाँ दीं, कई तरह के इंजेक्शन लगाए, लेकिन वे सब ग़लत थे। मैं ईश्वर के साथ था और मुझे ऐसी कोई बीमारी नहीं थी जिसे उन्हें ठीक करना था। सिर्फ़ इतना था कि मैं सामान्य से अलग हो गया था और मुझे उस अवस्था में वापस लौटने में काफ़ी समय लगा। आप कुछ समझे?'

'काफ़ी कुछ! अब आप सामान्य अवस्था में लौट गए हैं तो आप ये बातें लोगों को कब बताएँगे?'

'आने वाले समय में मेरा रूप प्रकट होगा। परंतु मैं आपको कोई निश्चित तिथि नहीं बता सकता।'

'और उसके बाद क्या होगा?'

‘इस पृथ्वी पर मेरा कार्य तैंतीस वर्ष तक चलेगा। उसके बाद मेरी दुखद मृत्यु हो जाएगी। मेरे अपने लोग, पारसी ही मेरे हिंसक अंत का कारण बनेंगे। परंतु अन्य लोग मेरे कार्य को आगे बढ़ाएँगे।’

‘आपका मतलब, आपके शिष्य?’

‘मेरे बारह चुनिंदा शिष्य हैं और उन्हीं में से एक, नियत समय पर गुरु बन जाएगा। मैं उनके लिए कभी-कभी उपवास और मौन व्रत धारण करता हूँ, क्योंकि इससे उनके पाप नष्ट होते हैं और उनको आध्यात्मिक तौर पर तैयार होने में सहायता मिलती है। ये सब लोग मेरे साथ पिछले जन्मों में रह चुके हैं और इसलिए मैं उनकी सहायता करने के लिए विवश हूँ। इसके अतिरिक्त, 44 सदस्यों का एक बाहरी घेरा भी होगा। ये पुरुष एवं स्त्रियाँ, थोड़े कम आध्यात्मिक दर्जे के होंगे। इनका कार्य उन बारह प्रमुख शिष्यों की सहायता करना होगा जो पूरी तरह तैयार हो चुके होंगे।’

‘क्या इस पैगंबरी के अन्य दावेदार भी हैं?’

मेहर उन विवेकहीन लोगों की निंदा सुनकर हँसते हैं।

‘हाँ। एक कृष्णमूर्ति हैं, जो श्रीमती बेसेंट पर आश्रित हैं। ब्रह्मविद्या में विश्वास रखने वाले लोग ख़ुद को धोखे में रखते हैं। उन्हें नियंत्रण में रखने वाले लोग तिब्बत के हिमालय में कहीं रहते हैं। उनके निवास स्थान पर आपको मिट्टी और पत्थरों के अतिरिक्त कुछ नहीं मिलेगा। इसके अतिरिक्त, किसी सच्चे आध्यात्मिक गुरु को किसी अन्य के शरीर को तैयार और प्रशिक्षित करने की कभी आवश्यकता नहीं पड़ती। यह हास्यास्पद है!’

इस अंतिम वार्तालाप से कुछ विचित्र वक्तव्य उभरते हैं; कुछ विचित्र तथा अस्त-व्यस्त दावे, जो मेहर पतली अँगुलियाँ बोर्ड पर लिखते हुए बताती हैं... ‘अमेरिका का भविष्य बहुत उज्ज्वल है। वह जल्द ही आध्यात्मिक देश बन जाएगा। मैं उन सबको जानता हूँ जिनका मुझमें विश्वास है। मेरी क्रियाओं को समझने का प्रयास मत करो, तुम उन्हें कभी नहीं जान पाओगे। मैं जब किसी स्थान पर जाता हूँ और चाहे वहाँ कितने भी कम समय के लिए रहूँ, वहाँ का आध्यात्मिक वातावरण उन्नत हो जाता है।’

‘मैं इस विश्व को ऐसी आध्यात्मिक गति प्रदान करूँगा कि शीघ्र ही इसकी सब तरह की भौतिक, आर्थिक, राजनीतिक, लैंगिक और सामाजिक समस्याएँ दूर हो जाएँगी क्योंकि उसे स्वार्थ की भावना नष्ट हो जाएगी और उसके स्थान पर भाईचारा स्थापित हो जाएगा। शिवाजी, जो सत्रहवीं शताब्दी में मराठा साम्राज्य के मुखिया थे, यहाँ पर मौजूद हैं (मेहर स्वयं की ओर इशारा करते हैं जिसका अर्थ है कि वे स्वयं को शिवाजी का अवतार मानते हैं)। कुछ ग्रहों पर लोग रहते हैं। वे संस्कृति और भौतिक विकास के संदर्भ में पृथ्वी के समान हैं, परंतु हमारी पृथ्वी आध्यात्मिक तौर पर सबसे अधिक उन्नत है।’

कोई भी देख सकता है कि मेहर बाबा अपने दावों पर चर्चा करते समय किसी तरह की

विनम्रता नहीं दर्शाते। इंटरव्यू समाप्त होने पर वे मुझे इशारा करके कुछ बताते हैं जिसे सुनकर मैं थोड़ा हैरान हूँ।

'आप पश्चिम में मेरे प्रतिनिधि बनकर जाइए! वहाँ मेरे नाम का दिव्य पैगंबर के रूप में प्रचार कीजिए। मेरे लिए कार्य कीजिए। ऐसा करके आप मानवजाति के कल्याण के लिए कार्य करेंगे।'

'यह संसार मुझे पागल समझेगा,' मेहर बाबा के बताए हुए कार्य की कल्पना करके मैं असहज होकर उत्तर देता हूँ।

मेहर मेरी बात से असहमत हैं।

मैं उत्तर देता हूँ कि पाश्चात्य जगत को आश्वस्त करने के लिए अनेक चमत्कार करने की आवश्यकता है। इसके बिना वे लोग पैगंबर तो दूर, किसी को आध्यात्मिक और अलौकिक व्यक्ति भी नहीं मानेंगे। चूँकि मैं कोई चमत्कार नहीं कर सकता, इसलिए मैं उनके उद्देश्य की अगुवाई नहीं कर सकता।'

'आप चमत्कार करने लगेंगे!' मेहर मुझे दिलासा देते हुए आश्वस्त करते हैं।

मैं चुप रहता हूँ। मेहर बाबा मेरे मौन को ग़लत समझ लेते हैं।

'आप मेरे साथ रहिए। मैं आपको महान शक्तियाँ प्रदान करूँगा। आप बहुत भाग्यशाली हैं। मैं बहुत-सी उन्नत शक्तियाँ प्राप्त करने में आपकी सहायता करूँगा, ताकि आप पाश्चात्य जगत में अपनी सेवाएँ प्रदान कर सकें!'



उस अविश्वसनीय इंटरव्यू के शेष हिस्से का वर्णन करना व्यर्थ है। कुछ लोग जन्मजात महान होते हैं, कुछ बाद में महानता को प्राप्त करते हैं और अन्य लोग इसके लिए किसी प्रेस एजेंट को नियुक्त कर लेते हैं। मेहर को बाद वाला रास्ता पसंद है।

मैं अगले दिन वहाँ से निकलने के लिए तैयार हो जाता हूँ। मैंने काफ़ी पवित्र ज्ञान प्राप्त कर लिया है और अनेक भविष्यवाणियाँ सुन ली हैं जो फ़िलहाल मेरे लिए पर्याप्त हैं। मैं विश्व के सुदूर इलाक़ों में केवल ऐसे धार्मिक उपदेश और अपनी महत्ता का बखान सुनने नहीं निकला हूँ। मैं तथ्य खोज रहा हूँ, चाहे वे कितने भी विचित्र और असामान्य क्यों न हों। मुझे विश्वसनीय प्रमाण भी चाहिए। बेहतर हो कि वे प्रमाण थोड़े निजी हों, मैं जिनकी जाँच करके संतुष्ट हो सकूँ।

मेरा सामान बंध चुका है और मैं निकलने के लिए तैयार हूँ। मैं मेहर बाबा के पास जाकर उनसे विनम्रतापूर्वक विदा लेता हूँ। वे मुझे बताते हैं कि कुछ ही महीनों में वे नासिक शहर के पास स्थित अपने केंद्रीय मुख्यालय में रहने चले जाएँगे। वह मुझे वहाँ उनके पास आकर एक

महीना रहने के लिए कहते हैं।

'ऐसा कीजिए। आप जब आ सकते हैं, तब आइए। मैं आपको बहुत शानदार आध्यात्मिक अनुभव करवाऊँगा और अपने बारे में वास्तविक सत्य से अवगत करवाऊँगा। आपको मेरी भीतरी आध्यात्मिक शक्तियाँ देखने का मौक़ा मिलेगा। इसके बाद आपको कोई संदेह नहीं रह जाएगा। आप अपने निजी अनुभव के आधार पर सिद्ध कर सकेंगे कि मेरा दावा सच्चा है। इसके बाद आप पश्चिम जगत में लौटकर मेरे लिए लोगों का विश्वास प्राप्त कर सकते हैं।'

मैं अपनी सुविधा के अनुसार एक महीना मेहर बाबा के साथ बिताने का निश्चय करता हूँ। उस पारसी पवित्र व्यक्ति के नाटकीय व्यक्तित्व और उसके अनूठे उद्देश्य के बावजूद, मैं खुले दिमाग़ से पूरी बात की जाँच-पड़ताल करना चाहता हूँ।



मैं मुंबई के शहरी जीवन के शोरगुल में कुछ समय के लिए लौटता हूँ और फिर पुणे के लिए निकल पड़ता हूँ। इस प्राचीन भूमि पर मेरा भ्रमण आरंभ होने वाला है।

मेरी रुचि उस वृद्ध मुसलमान फ़क़ीर स्त्री में जाग्रत हो गई है, जिसके अचानक बीच में आने से मेहर बाबा के जीवन में परिवर्तन हुआ। मेरे विचार से उस स्त्री से एक छोटी-सी मुलाक़ात करना अनुचित नहीं होगा। मैंने मुंबई में उसके बारे में पहले ही कुछ प्राथमिक जानकारी प्राप्त कर ली है। मुझे एक भूतपूर्व न्यायाधीश खंडालावाला से, जो उस स्त्री को पिछले पचास वर्षों से जानते हैं, यह पता लगा कि उसकी आयु सचमुच पिच्यानवे वर्ष के क़रीब है। मुझे याद है कि मेहर बाबा के शिष्यों ने मुझे उसकी आयु एक सौ तीस वर्ष बताई थी, परंतु उसे उत्साह और आवेश में कही गई अतिशयोक्ति कह सकता हूँ।

न्यायाधीश महोदय ने मुझे उस स्त्री की कहानी सुनाई। वह अफ़गानिस्तान और भारत के बीच में स्थित बलूचिस्तान नाम के क्षेत्र की रहने वाली है। वह बहुत जल्दी घर छोड़कर भाग गई थी। बहुत लंबे और रोमांचक पैदल-भ्रमण के बाद वह शताब्दी के आरंभ में पुणे पहुँची और तब से, वह उस शहर को छोड़कर नहीं गई। शुरू में, उसने एक नीम के वृक्ष के नीचे बसेरा बनाया। वह उसी पेड़ के नीचे रहने लगी। आसपास के मुसलमान लोगों के बीच उसकी शुचिता और अनूठी शक्तियों की ख्याति फैलने लगी और फिर धीरे-धीरे हिंदुओं में भी उसके प्रति आदर का भाव जाग्रत हो गया। आख़िर कुछ मुसलमानों ने उसी पेड़ के नीचे उस फ़क़ीर स्त्री के लिए लकड़ी का घर बनवा दिया क्योंकि वह पक्के मकान में रहने को तैयार नहीं थी। इससे उसे कहने को एक घर मिल गया और वर्षा से भी उसका बचाव संभव हो गया।

मैंने न्यायाधीश महोदय से इस मामले में उनकी निजी राय पूछी। उन्होंने बताया कि उन्हें इसमें कोई संदेह नहीं कि हज़रत बाबाजान एक सच्ची फ़क़ीर हैं। वह न्यायाधीश भी पारसी है, इसलिए मैं उनसे मेहर बाबा के विषय में भी जानना चाहता हूँ क्योंकि वह मेहर को अच्छी तरह जानते हैं। मुझे उनसे जो कुछ पता लगा उसके बाद उस पारसी पैगंबर के प्रति मेरा रुझान होने की संभावना नहीं है। मैं अंत में न्यायाधीश से उपासनी महाराज के विषय में पूछता हूँ, जो मेहर बाबा के प्रेरणा-स्रोत हैं। मेरे चतुर और ज्ञानी मित्र, जिनके पास सांसारिक मामलों का बहुत विस्तृत अनुभव है, मुझे उस व्यक्ति के साथ हुए दुर्भाग्यपूर्ण संपर्क का विस्तृत विवरण बताते हैं। मैं यहाँ दो उदाहरण देता हूँ:

'उपासनी ने भयंकर ग़लतियाँ की हैं। एक बार उसने मुझे बनारस जाने के लिए, जहाँ वह उस समय रहता था, प्रेरित किया। कुछ समय बाद मुझे किसी की मृत्यु की आशंका हुई और मेरी पुणे वापस लौटने की इच्छा हुई, जहाँ मेरा परिवार रहता था। उपासनी ने मुझे यह कहकर जाने से रोक दिया कि सबकुछ ठीक हो जाएगा। इसके बावजूद दो दिन बाद मुझे तार मिला जिसमें लिखा था कि मेरे पुत्र की पत्नी ने एक बच्चे को जन्म दिया था और जन्म के कुछ ही मिनटों के बाद उस बच्चे की मृत्यु हो गई। एक दूसरे मामले में उपासनी ने मेरे दामाद को, जो उस समय मुंबई शेयर बाज़ार में पैसा लगाने के विषय में सोच रहा था, बताया कि ऐसा करना उसके लिए अत्यंत लाभदायक सिद्ध होगा। मेरे दामाद ने उपासनी की सलाह पर शेयर बाजार में प्रवेश किया और वह लगभग बर्बाद हो गया!'

मैं न्यायाधीश खंडालावाला के स्वतंत्र विचारों से प्रभावित हुआ हूँ। उन्होंने उपासनी महाराज का भंडाफोड़ कर दिया जिनके बारे में मेहर का कहना था कि वह 'इस युग के महानतम आध्यात्मिक व्यक्तियों में से एक है।' हालाँकि न्यायाधीश महोदय यह स्वीकार करने में नहीं हिचकिचाते कि मेहर बाबा स्वयं ईमानदार हैं। उन्हें बाबा की आध्यात्मिक शक्तियों पर विश्वास भी है, हालाँकि उनकी शक्तियों की पड़ताल होना अभी बाक़ी है।

मैं पुणे पहुँचकर, वहाँ छावनी के एक होटल में रुकता हूँ। वहाँ से सीधा हज़रत बाबाजान के घर के लिए निकल पड़ता हूँ। मेरे साथ एक गाइड है, जो फ़क़ीर स्त्री को निजी तौर पर जानता है और वह मेरे लिए हिंदुस्तानी बोलकर दुभाषिया का काम करने वाला है।

हज़रत बाबाजान से हमारी भेंट एक पतली गली में होती है, जहाँ छोटे-छोटे तेल के दीपकों और बिजली के बल्ब का मिला-जुला प्रकाश है। बाबाजान दीवान पर खुले में सबके सामने लेटी हुई हैं। उनके घर को गली से बाड़ेदार तार से अलग किया गया है। उनके लकड़ी के घर के पीछे से नीम का वृक्ष साफ़ नज़र आता है, जिसके सफ़ेद फूल हवा में सुगंध फैला रहे हैं।

'आपको जूते उतारने होंगे,' मेरे गाइड ने मुझे चेताया। 'इन्हें पहनकर भीतर प्रवेश करना अनादर समझा जाता है।' मैं उसकी बात मानता हूँ और एक मिनट के बाद हम हज़रत

बाबाजान के बिस्तर के निकट खड़े होते हैं।

वह पीठ के बल लेटी हैं, उनके सिर के नीचे तकिए रखे हैं। उनके रेशमी बालों की चमकदार सफ़ेदी, उनके झुर्रियों से भरे चेहरे और भरी हुई भँवों से बिलकुल मेल नहीं खाती।

मैं नई-नई सीखी हिंदुस्तानी के अपने छोटे-से भंडार में से एक वाक्य बोलकर बाबाजान को अपना परिचय देता हूँ। वह अपना बूढ़ा सिर घुमाती हैं और फिर अपने दुबले-पतले हाथ को बाहर निकालकर मेरा हाथ अपने हाथ में लेती हैं। वह उसे कसकर पकड़ती हैं और फिर मुझे अपनी सांसारिक आँखों से टकटकी लगाए देखती रहती हैं। उनकी आँखों को देखकर मैं दुविधा में पड़ जाता हूँ। उन्हें समझ पाना कठिन है। उनमें सूनापन दिखाई दे रहा है। वह चुपचाप मेरे हाथ को तीन-चार मिनट तक पकड़े रखती हैं और मेरी ओर देखती रहती हैं। मैं उनकी आँखों के भाव को ग्रहण कर रहा हूँ। यह बड़ी अनूठी संवेदना है। मुझे समझ नहीं आता कि मैं क्या करूँ।

आख़िर वह अपना हाथ वापस खींच लेती हैं और उसे अपने माथे को कई बार रगड़ती हैं। फिर वह मेरे गाइड की ओर देखकर स्थानीय भाषा में कुछ कहती हैं। मैं उसका अर्थ समझ नहीं पाता। मेरा गाइड धीरे-से उसका अनुवाद करके बोलता है:

'इन्हें भारत बुलाया गया है और जल्द ही यह इस बात को समझ जाएँगे।'

एक लंबी चुप्पी के बाद, वह फिर कुछ बोलती है। उसका अर्थ पुस्तक में नहीं, बल्कि मेरी स्मृति में अंकित है। उनका स्वर बहुत धीमा है। उनके मुँह से शब्द मुश्किल से निकल रहे हैं। क्या यह संभव है कि इस वृद्ध और दुबले-पतले ढाँचे, दुर्बल और जर्जर शरीर के भीतर आश्चर्यजनक शक्तियों से युक्त किसी सच्चे फ़क़ीर की आत्मा मौजूद है? कौन कह सकता है? शरीर के शब्दों को देखकर आत्मा के पृष्ठों को पढ़ पाना हमेशा सरल नहीं होता।

निस्संदेह, उस महिला की आयु सौ वर्ष के क़रीब है। मुझे बताया जाता है कि उनकी दुर्बल शारीरिक स्थिति के कारण किसी को उनके साथ लगातार बातचीत करने की अनुमति नहीं है। मैं चुपचाप वहाँ से निकलने के लिए तैयार हो जाता हूँ और मेरे मन में एक विचार पूरी दृढ़ता से बैठ गया है। मुझे लगता है, उनकी आँखों का सूनापन यह संकेत दे रहा है कि वह मृत्यु-द्वार के निकट हैं। उनका मन, उनके जर्जर शरीर से अलग होने वाला है, लेकिन वह उनकी विचित्र आँखों के माध्यम से, फिर से संसार की ओर लौट आता है।*

मैं होटल लौटकर अपनी भावनाओं को सार-रूप देता हूँ। मुझे विश्वास है कि हज़रत बाबाजान के भीतर निश्चित रूप से कोई गहन मनोवैज्ञानिक उपलब्धि मौजूद है। मेरे भीतर सहज रूप से उनके प्रति आदर का भाव जाग्रत हो रहा है। मुझे महसूस होता है कि उनके साथ संपर्क से मेरे सामान्य विचार बदल गए हैं। मेरे भीतर उस रहस्यमय तत्व का अवर्णनीय भाव जाग्रत हो गया है, जो वैज्ञानिकों द्वारा की गई सब तरह की खोजों और अनुसंधानों के बावजूद, हमारे सांसारिक जीवन के चारों ओर घूमता है।

मुझे यह बिलकुल स्पष्ट लगता है कि संसार की इस महान गुत्थी के मूलभूत रहस्यों को प्रकट करने वाले वैज्ञानिक लेखक, जो कुछ कहते हैं, वह सतही तौर पर

खींची गई रेखाओं के अतिरिक्त कुछ नहीं है। परंतु मैं यह नहीं समझ पाया कि उस स्त्री फ़क़ीर के साथ हुए क्षणिक संपर्क ने मेरे आत्म-विश्वासी और मानसिक तथ्यों के आधार को कैसे झिंझोड़ दिया।

उस फ़क़ीर स्त्री की भविष्यवाणी मेरे मस्तिष्क में घूम रही है। मैं उसका अर्थ समझने में असमर्थ हूँ। मुझे किसी ने भारत नहीं बुलाया; क्या मैं यहाँ अपनी इच्छा से स्वयं नहीं आया हूँ? अब जबकि मैं उस घटना के बहुत समय बाद, ये पंक्तियाँ लिख रहा हूँ तो मुझे उन बातों का थोड़ा अर्थ समझ में आ रहा है। हे मेरे गुरुओं, यह सचमुच विचित्र दुनिया है!

---

* मैं कुछ महीनों बाद उनके पास फिर गया। उनकी मृत्यु निकट होने का आकलन सही साबित हुआ। उनकी शीघ्र ही मृत्यु हो गई।

अध्याय 5

अड्यार नदी का संन्यासी

मैं दक्षिण की ओर डक्कन के पठार पर आगे बढ़ता हूँ। समय तेज़ी से बीत रहा है और इस बीच अनेक सप्ताह निकल जाते हैं। मैं बहुत-सी शानदार जगहों पर जा गया हूँ किंतु मुझे अब तक कोई अद्भुत व्यक्ति नहीं मिला है। मुझे नहीं पता कि वह कौन-सी शक्ति है लेकिन कोई अज्ञात और प्रेरक शक्ति, जिसका मैं अंधाधुंध पालन कर रहा हूँ, मेरी गति को तीव्रता प्रदान करती है। मैं कभी-कभी इस तरह आगे बढ़ता हूँ मानो मैं कोई पर्यटक हूँ।

आख़िर, मैं मद्रास जाने वाली ट्रेन पर सवार हो जाता हूँ। मेरा मद्रास में कुछ समय बताने का विचार है। रात की लंबी यात्रा के दौरान, जब नींद मुश्किल से आती है, तो मैं उन अदृश्य फ़ायदों का हिसाब लगाता हूँ जो मुझे पश्चिमी भारत की यात्रा के दौरान हुए हैं।

मुझे ज़बरदस्ती यह स्वीकार करना होगा कि मुझे अभी तक ऐसा कोई योगी नहीं मिला, जिससे मिलकर मुझे प्रसन्नता हुई हो। किसी ऋषि से मिलने का विचार तो अब मेरे मस्तिष्क की गहराई में चला गया है। मैंने इस बीच निष्क्रिय भारत के बहुत-से अंधविश्वास और दमघोंटू रीति-रिवाज भी देख लिए हैं, जिसके बाद मुझे यह एहसास हो गया है कि बंबई के परिचित लोगों का अविश्वास और उनकी चेतावनियाँ सही थीं। मुझे ऐसा भी लग रहा है कि मैंने स्वयं जो काम हाथ में लिया है उसे पूरा करना बहुत मुश्किल होगा। इधर-उधर सत्तावन तरह के ऐसे पवित्र लोग मौजूद हैं परंतु उनमें किसी में भी पर्याप्त आकर्षण नहीं है। लोग मंदिरों में भटकते हैं, जहाँ का रहस्यमय वातावरण आशादायक होता है। मैं पवित्र मंदिर में पहुँचकर उसकी दहलीज पर खड़ा हो जाता हूँ। मुझे भीतर पूजा करने वाले बहुत-से उत्साही लोग दिखाई पड़ते हैं। वे पूजा के समय एक घंटी बजाते हैं ताकि उनकी प्रार्थना उनके इष्ट

देव के कानों तक पहुँचने से रह ना जाए!

मुझे मद्रास पहुँचकर प्रसन्नता हुई और वहाँ की रंग-बिरंगी छटा ने मुझे आकर्षित कर लिया है। मैं शहर से बाहर क़रीब दो मील की दूरी पर एक मनोहर स्थान पर रुका हूँ ताकि यूरोपीय लोगों की अपेक्षा भारतीय लोगों से मेरा संपर्क आसानी से हो सके। मेरा घर ब्राह्मणों की गली में स्थित है। वह सड़क, रेत की मोटी पर्त से ढँकी है जिसमें मेरे जूते धँस रहे हैं। सड़क के किनारे बनी पगडंडी कच्ची मिट्टी की है और वहाँ की कोई वस्तु बीसवीं शताब्दी के विकास का स्पर्श पाकर सुधरी नहीं है। वहाँ के रंगे-पुते मकानों में कहीं खंबे वाले और कहीं खुले बरामदे हैं। मेरे घर के भीतर एक टाइल वाला बरामदा है, जो चारों ओर से ढँका है। एक पुराने कुएँ से बाल्टी में पानी लाया जाता है।

इस जगह से दो या तीन गलियाँ छोड़कर बहुत शानदार उष्णकटिबंधीय दृश्य है, जिसे देखकर मुझे बहुत प्रसन्नता हो रही है। शीघ्र ही मुझे यह पता लगता है कि वहाँ से केवल आधे घंटे की पैदल दूरी पर अड्यार नदी बहती है। इस चौड़ी नदी के पास बहुत-से खजूर के छायादार वृक्ष हैं, जिनके प्रति मेरा मन आकर्षित हो गया है। मैं अपने ख़ाली समय में नदी के शांत पानी के निकट कई मील तक पैदल टहलता हूँ।

अड्यार नदी मद्रास से होकर बहती है और इसी नदी से शहर की दक्षिणी सीमा बनती है। उसके बाद यह कोरोमंडल के ऊँचे-नीचे तट से होती हुई समुद्र में मिल जाती है। मैं एक सुबह, इसी मनोहारी नदी के किनारे अपने एक ब्राह्मण परिचित व्यक्ति के साथ टहल रहा हूँ। उसे यह ज्ञात हो गया है कि मेरी रुचि किस दिशा में है। वह कुछ देर बाद अचानक मेरा हाथ पकड़ लेता है।

‘देखो!’ वह कहता है, ‘क्या तुम उस युवक को देख सकते हो, जो हमारी ओर आ रहा है? लोग इसे योगी मानते हैं। तुम्हारी इसमें रुचि हो सकती है, परंतु दुःख की बात है कि वह हमसे कभी बात नहीं करता!’

‘ऐसा क्यों?’

‘मुझे पता है, वह कहाँ रहता है किंतु वह इस जिले का सबसे संकोची व्यक्ति है।’

इतनी देर में वह अजनबी हमारे लगभग निकट पहुँच जाता है। उसका बदन गठीला है और मेरे अनुमान से वह लगभग पैंतीस वर्ष का है। उसका क़द औसत से थोड़ा अधिक है। मुझे उसके विषय में सबसे आकर्षक बात यह लगी कि उसके चेहरे का स्वरूप नीग्रो जैसा है। उसकी त्वचा का रंग गहरा होकर लगभग काला हो गया है। उसकी नाक चपटी और चौड़ी है। उसके होंठ मोटे और काया बलिष्ठ है। उसे देखकर लगता है वह आर्य जाति का नहीं है। उसके लंबे साफ़-सुथरे बाल सिर पर जूड़े की तरह बंधे हैं। उसने कान में विचित्र और बड़ी-बड़ी बालियाँ हैं। उसके शरीर पर लिपटा सफ़ेद शॉल घूमकर उसके बाएँ कंधे पर पड़ा है और वह नंगे पैर चल रहा है।

वह हमारी उपेक्षा करके तेज़ क़दमों से आगे बढ़ जाता है। उसकी आँखें झुकी हुई हैं मानो वह ज़मीन पर कुछ खोज रहा हो। उसे देखकर आभास होता है कि उन आँखों के पीछे उसका मस्तिष्क किसी बात पर गहराई से विचार कर रहा है। वह चलते हुए क्या सोच रहा है? मुझे यह सोचकर आश्चर्य होता है। उसे देखकर मेरी उत्सुकता तथा रुचि बढ़ जाती है। अचानक हमारे बीच का अवरोध तोड़ने की मेरी इच्छा बढ़ जाती है।

'मैं उससे बात करना चाहता हूँ। चलो, वापस चलते हैं,' मैं सुझाव देता हूँ।

मेरा ब्राह्मण मित्र इसका विरोध करता है।

'ऐसा करना व्यर्थ है।'

'मैं कम से कम कोशिश तो कर सकता हूँ,' मैं जवाब देता हूँ।

ब्राह्मण फिर से मुझे रोकने का प्रयास करता है।

'यह व्यक्ति हमारी पहुँच से पूरी तरह बाहर है और हम उसके बारे में कुछ नहीं जानते। वह अपने पड़ोसियों से भी दूर रहता है। हमें इसके बीच में नहीं पड़ना चाहिए।'

परंतु मैं इससे पहले ही योगी की ओर बढ़ चुका हूँ। मेरे मित्र को मजबूरन मेरे पीछे आना पड़ रहा है।

हम शीघ्र ही उस व्यक्ति के पीछे पहुँच गए हैं। उसे हमारी उपस्थिति का अंदाज़ा नहीं है। परंतु वहाँ से उसने अपनी चाल को थोड़ा धीमा कर दिया है। हम उसके पीछे-पीछे चलते हैं।

मैं अपने साथी से कहता हूँ, 'कृपया इनसे पूछिए, क्या हम इनसे बात कर सकते हैं।' मेरा मित्र संकोच करता है और फिर सिर हिला देता है।

'नहीं, मेरी हिम्मत नहीं है,' वह दबे स्वर में उत्तर देता है।

मुझे यह सोचकर बुरा लग रहा है कि उस योगी से मिलने का एक मूल्यवान अवसर हाथ से निकल रहा है। इस कारण मुझे और प्रयास करने की इच्छा होती है। अब मेरे पास योगी से स्वयं बात करने के अतिरिक्त कोई विकल्प नहीं है। मैं हिंदू और यूरोपीय दोनों तरह की परंपराओं को ताक पर रखकर उस व्यक्ति के रास्ते में खड़ा हो जाता हूँ। मैं अपने सीमित हिंदुस्तानी शब्द-भंडार से एक छोटा-सा वाक्य बोलने का प्रयास करता हूँ। वह मेरी ओर देखता है और उसके चेहरे पर हल्की-सी मुस्कान आ जाती है। परंतु वह अपना सिर हिलाकर नकारात्मक उत्तर देता है।

मुझे उस समय मद्रास में बोली जाने वाली तमिल भाषा का केवल एक शब्द मालूम है। दक्षिण भारत में बहुत कम लोग हिंदुस्तानी भाषा जानते हैं। परंतु मुझे यह बात अभी तक पता नहीं है। सौभाग्य से मेरे ब्राह्मण मित्र को ऐसा महसूस होता है कि वह मुझे इस तरह असहाय छोड़कर नहीं जा सकता। वह मेरी सहायता के लिए आगे बढ़ता है।

वह कुछ हिचकिचाते हुए और क्षमा-याचना वाले स्वर में, तमिल भाषा में कुछ बोलता है।

योगी उसकी बात का उत्तर नहीं देता। उसका चेहरा कठोर हो जाता है और आँखें ठंडी और मैत्रीपूर्ण भाव से भर जाती हैं।

मेरा ब्राह्मण साथी मेरी ओर संकोच से देखने लगता है। इस बीच लंबी चुप्पी व्याप्त है। हम दोनों में से किसी को नहीं पता कि हमें क्या करना चाहिए। मुझे यह सोचकर बहुत दुःख होता है कि संन्यासियों को उनकी भाषा के विषय में बताना बहुत कठिन कार्य है। उन लोगों को इंटरव्यू बिलकुल पसंद नहीं है और वे अपने निजी अनुभव के विषय में अजनबी से बात नहीं करना चाहते। वह सिर पर टोपी लगाए हुए किसी गोरे व्यक्ति के लिए, जिनके विषय में ऐसा माना जाता है कि उन्हें योग के सूक्ष्म ज्ञान की न तो समझ है और ना ही उसके प्रति सहानुभूति है, अपना मौन बिलकुल तोड़ना नहीं चाहते।

इस भाव के बाद एक और भाव जाग्रत होता है। मुझे अचानक महसूस होता है कि वह योगी मुझे बहुत ध्यान से देख रहा है। मुझे पता नहीं क्यों, ऐसा लगता है कि वह मेरे विचारों को पढ़ने का प्रयास कर रहा है। वह ऊपरी तौर पर मुझसे विरक्त रहने का दिखावा कर रहा है। क्या मैं ग़लत सोच रहा हूँ?

मैं इस विचित्र भाव को ख़ुद से दूर नहीं कर पा रहा हूँ कि मैं एक प्रकार का अणुवीक्षण-यंत्र संबंधी नमूना बनकर रह गया हूँ।

मेरा ब्राह्मण मित्र बहुत घबराया हुआ है और मुझे वहाँ से दूर हटने का इशारा करता है। यदि ऐसे ही एक मिनट और बीत गया तो शायद मैं उसके मूक आग्रह को स्वीकार करके और स्वयं को पराजित मानकर वहाँ से लौट जाऊँगा।

तभी अचानक योगी ने अपने हाथ से हमें एक नज़दीक के ऊँचे खजूर के वृक्ष के पास आने का संकेत किया। उसने वहाँ पहुँचकर हमें बैठने का इशारा किया। उसके बाद वह स्वयं भी धरती पर बैठ गया।

उसने ब्राह्मण से तमिल में कुछ कहा। मैंने देखा कि उसका स्वर संगीतमय है और उसमें एक अनूठा कंपन है।

‘योगी कह रहा है कि वह तुमसे बात करने को तैयार है,’ मेरे मित्र ने मुझे बताया और फिर उसने यह भी कहा कि योगी ने कई वर्ष नदी के एक निर्जन भाग का भ्रमण किया है।

मैं सबसे पहले उसका नाम पूछता हूँ। उसके उत्तर में मुझे उपाधियों की लंबी सूची सुनाई जाती है। मैं तत्काल उसे दोहराने के लिए कहता हूँ। मुझे लगता है कि उसका पहला नाम ‘ब्रह्मासुगनानंद’ है और उसके लगभग इतने ही लंबे या इससे भी लंबे चार और नाम हैं। उसे शायद केवल ब्रह्मा बुलाना ही उचित होगा। यदि मुझे उन सभी पाँचों नामों का उल्लेख करना हो तो उनमें इतने अक्षर होंगे कि उनसे यह पूरा पृष्ठ भर जाएगा। मैं उस युवा व्यक्ति के गोत्र के नामों की लंबाई सुनकर विस्मित और भयभीत हूँ।* इसलिए इन नामों के विषय में मौन साधे रखना ही बेहतर होगा और मैंने अपने अपरिचित पाठकों के लिए इस मामले को

आसान बनाने के उद्देश्य से वार्ता के दौरान, योगी को यही छोटा-सा नाम ब्रह्मा दिया है।

‘कृपया इन्हें बताओ कि मेरी योग में रुचि है और मैं उसके विषय में इनसे कुछ जानना चाहता हूँ,’ मैं कहता हूँ।

योगी मेरी बात के अनुवाद को सुनकर सिर हिलाकर हामी भर देता है।

‘हाँ, मुझे मालूम है,’ वह मुस्कराते हुए उत्तर देता है। ‘साहब से कहो, वह अपना प्रश्न पूछें।’

‘आप किस तरह की योग पद्धति का पालन करते हैं?’

‘मेरी पद्धति शरीर के नियंत्रण पर आधारित है। यह सभी तरह की योग पद्धतियों में सबसे कठिन है। इसमें शरीर और स्वास्थ्य दोनों से संघर्ष करना होता है क्योंकि ये दोनों ही ज़िद्दी टट्टू की तरह हैं। उन दोनों पर विजय प्राप्त करना आवश्यक है। इसके बाद तंत्रिकाओं और मस्तिष्क को अधिक आसानी से नियंत्रित किया जा सकता है।’

‘आपको इससे क्या लाभ होता है?’

ब्राह्मण नदी की ओर देखने लगता है।

‘शारीरिक स्वास्थ्य, इच्छा शक्ति और दीर्घ आयु इसके कुछ लाभों में से हैं,’ वह उत्तर देता है। ‘मैं जिस पद्धति का पालन करता हूँ, उसके प्रशिक्षण में पारंगत होने वाला योगी अपने शरीर को फ़ौलादी सहन-शक्ति प्रदान कर सकता है। उसे दर्द का एहसास नहीं होता। मैं किसी को जानता हूँ जिसने एक शल्य-चिकित्सक से अपना ऑपरेशन करवाया था और उसे सुलाने की कोई दवाई नहीं दी गई थी। उसने उस पीड़ा को बहुत आसानी से झेल लिया। ऐसा व्यक्ति अत्यधिक सर्दी के मौसम में भी नंगे बदन सुरक्षित रह सकता है।’

मैं अपनी नोटबुक निकाल लेता हूँ क्योंकि मुझे ऐसा आभास हो रहा है कि मैंने

जितना सोचा था, यह वार्तालाप उससे अधिक रोचक होने वाला है। ब्रह्मा, लेखन में मेरी रुचि देखकर मुस्कराता है, परंतु वह कोई आपत्ति नहीं करता।

‘मुझे अपनी योग पद्धति के विषय में और कुछ बताइए,’ मैं उससे अनुरोध करता हूँ।

‘मेरे गुरु हिमालय की खुली पहाड़ियों में रह चुके हैं। वे केवल एक लाल दुशाला ओढ़कर बर्फ़ में घिरे रहते थे। वह बिना हिले कई घंटों तक इतनी ठंडी जगह पर बैठ सकते हैं जहाँ पानी तत्काल जमकर बर्फ़ बन जाता है। परंतु उन्हें कोई कठिनाई महसूस नहीं होती। यही हमारे योग की शक्ति है।’

‘तो फिर, आप शिष्य हैं?’

‘मुझे अभी कई और पड़ाव पार करने हैं। मैंने प्रतिदिन यह अभ्यास करते हुए बारह वर्ष बिताए हैं।’

‘क्या आपके पास कोई असाधारण शक्तियाँ भी हैं?’

ब्रह्मा सिर हिलाता है, परंतु वह मौन रहता है।

यह विचित्र युवक मेरी उत्सुकता को और बढ़ाता जा रहा है।

‘क्या यह पूछना उचित होगा कि आप योगी कैसे बने?’ मैं अनिश्चितता-भरे स्वर में से पूछता हूँ।

शुरू में मुझे कोई उत्तर नहीं मिलता। हम लोग खजूर के वृक्ष के नीचे बैठे हैं। मैं नदी के दूसरे छोर पर उगे नारियल के वृक्षों पर चिल्लाते कौवों को सुन सकता हूँ। इसी शोरगुल में कुछ बंदरों की भी आवाज़ मिली हुई है, जो उन्हीं पेड़ों पर कूद-फांद रहे हैं।

‘हाँ, क्यों नहीं!’ ब्रह्मा अचानक उत्तर देता है। मेरा मानना है कि उसे इस बात का एहसास है कि मेरे प्रश्न केवल क़िताबी उत्सुकता तक सीमित नहीं हैं बल्कि अपने भीतर बहुत गहराई समाहित किए हुए हैं। वह अपने हाथ, दुशाले के भीतर छुपा लेता है और नदी के दूसरी ओर किसी वस्तु पर ध्यान केंद्रित करता है। फिर वह बोलता है:

‘मैं बचपन में बहुत चुपचाप और अकेला रहता था। मुझे बच्चों की सामान्य आदतों में आनंद प्राप्त नहीं होता था। मुझे उनके साथ खेलने का भी मन नहीं करता था। मैं मैदानों में अकेले रहना पसंद करता था। ऐसे अकेले और उदास लड़के को बहुत कम लोग समझ सकते हैं। मैं ऐसा नहीं कह सकता कि मैं उस जीवन से ख़ुश था। मैंने बारह वर्ष की आयु में संयोग से कुछ बड़े लोगों का वार्तालाप सुना और मुझे उनकी बातचीत से पहली बार योग के विषय में मालूम पड़ा। इस घटना ने मेरे भीतर योग के विषय में जानकारी प्राप्त करने की इच्छा जाग्रत कर दी। मैंने अनेक लोगों से उसके विषय में पूछा और इस तरह मुझे तमिल में लिखी कुछ क़िताबें प्राप्त हुईं, जिनमें मैंने योगियों के बारे में अनेक रोचक बातें पढ़ी। जिस प्रकार रेगिस्तान में चलते हुए घोड़े को पानी की तलाश रहती है, उसी प्रकार मेरा मन योगियों के विषय में जानकारी प्राप्त करने के लिए तत्पर रहता था। परंतु मैं एक ऐसे मोड़ पर आ पहुँचा, जहाँ से आगे बढ़ पाना असंभव लग रहा था। मैंने एक दिन संयोग से एक पुस्तक में एक वाक्य पढ़ा था। वह इस प्रकार था: “योग के मार्ग पर सफलता प्राप्त करने के लिए व्यक्ति को निजी शिक्षक या गुरु की आवश्यकता होती है।” इन शब्दों ने मेरे ऊपर बहुत गहरा प्रभाव डाला। मुझे लगा कि घर छोड़कर और यात्रा करने से ही मुझे एक उचित गुरु मिल सकेगा। परंतु मेरे माता-पिता निश्चित ही मुझे इस बात की अनुमति नहीं देते। मुझे समझ में नहीं आया कि मैं क्या करूँ। मैंने गुप्त रूप से कुछ श्वास-क्रियाएँ करना आरंभ कर दिया, जिनके विषय में मुझे क़िताबों से थोड़ी-बहुत जानकारी प्राप्त हुई थी। उनके अभ्यास से मुझे लाभ नहीं, बल्कि हानि हुई। मुझे उस समय भी यह एहसास नहीं हुआ कि किसी उचित गुरु के मार्गदर्शन के बिना उस अभ्यास को करना व्यक्ति के लिए सुरक्षित नहीं है। परंतु मैं उसमें इतना डूब गया था कि किसी गुरु के मिलने की प्रतीक्षा नहीं कर पाया। श्वसन क्रियाओं ने

कुछ ही वर्षों में अपना प्रभाव दिखाना आरंभ कर दिया। मेरे सिर के ऊपर एक छोटा घाव बन गया। ऐसा लगता था मानो मेरी खोपड़ी उस कमज़ोर जगह से टूट गई हो। उस घाव में से ख़ून का रिसाव होने लगा और मेरा शरीर धीरे-धीरे ठंडा और निष्क्रिय पड़ने लगा। मुझे लगा मैं मरने वाला हूँ। दो घंटे बाद, मेरी मन की आँखों के सामने एक विचित्र दृश्य उत्पन्न हुआ। मुझे एक पूज्य योगी की आकृति दिखाई दी, जो मुझसे कह रहे थे: "अब तुमने देखा कि तुमने इन निषेध अभ्यासों को करके स्वयं को कैसी ख़तरनाक परिस्थिति में डाल दिया है। यह तुम्हारे लिए एक कठोर सबक़ है।" इसके बाद वह दृश्य मेरी आँखों के आगे से ओझल हो गया। उसी क्षण से, मेरी स्थिति बेहतर होने लगी और मैं कुछ ही समय में पूरी तरह स्वस्थ हो गया। परंतु उस घाव का निशान आज भी मौजूद है।'

ब्रह्मा ने अपना सिर झुकाया तो मैंने देखा कि उसके मस्तक के शीर्ष पर एक छोटा गोल घाव का निशान स्पष्ट दिखाई दे रहा था।

'इस दुर्भाग्यपूर्ण अनुभव के बाद मैंने श्वसन-अभ्यास पूरी तरह छोड़ दिया और कुछ समय तक अपने घर के बंधनों की पकड़ ढीली पड़ने की प्रतीक्षा की। मुझे जैसे ही घर से स्वतंत्र होने का अवसर मिला, मैंने घर छोड़ दिया और मैं गुरु की तलाश में निकल गया। मुझे पता था कि गुरु की जाँच करने का सबसे अच्छा तरीक़ा, कुछ महीने उसके साथ रहना है। मैंने बहुत-से गुरु खोजे और समय को इस तरह बाँटा ताकि मैं उन सबके साथ कुछ समय बिता सकूँ। मैं निराश होकर फिर घर लौट आया। उनमें से कुछ लोग मठाधीश थे, तो कुछ आध्यात्मिक ज्ञान की संस्थाओं के मुखिया बन गए थे। परंतु उनमें से किसी के साथ मुझे संतोष नहीं मिला। उन्होंने मुझे बहुत-सा दार्शनिक ज्ञान तो दिया किंतु वह उनके अपने अनुभव पर आधारित नहीं था। उनमें से अधिकतर लोगों ने वही कहा, जो पुस्तकों में लिखा है। वह मुझे किसी तरह का व्यवहारिक मार्गदर्शन नहीं दे सके। मुझे क़िताबी ज्ञान नहीं चाहिए था बल्कि मैं योग से संबंधित व्यवहारिक अनुभव प्राप्त करना चाहता था। मैंने कम से कम, दस गुरुओं की जाँच की, परंतु उनमें से कोई भी सच्चा योग गुरु सिद्ध नहीं हुआ। मैंने हिम्मत नहीं हारी। मेरी युवा उत्सुकता और ज्वलंत हो गई क्योंकि ठोकर खाने से सफलता प्राप्त करने की इच्छाशक्ति बढ़ती जाती है।'

'अब मैं व्यस्त हो गया था। मैंने अपने पैतृक निवास को सदा के लिए छोड़ने का मन बना लिया था और मैं सांसारिक जीवन का त्याग करके सच्चे गुरु की तलाश में निकल जाना चाहता था। मैं इसके बाद अपनी ग्यारहवीं भ्रमण-यात्रा पर घर से निकल गया। मैं चलते-चलते तंजोर जिले के एक बड़े-से गाँव में पहुँच गया। मैंने वहाँ नदी के तट पर पहुँचकर स्नान किया और उसके बाद, तट के किनारे चलता रहा।'

'कुछ ही समय बाद, मैं लाल पत्थर से बने एक मंदिर तक पहुँचा। वह मंदिर बहुत छोटा था। मैंने भीतर झाँका तो वहाँ बहुत-से लोग एक निर्वस्त्र पुरुष के आसपास घेरा बनाकर खड़े

थे। उस व्यक्ति ने तन पर केवल एक लंगोट धारण कर रखा था। वे लोग उसे अत्यंत आदर से देख रहे थे। उस व्यक्ति के चेहरे पर कुछ विशिष्ट आदरणीय और रहस्यमय भाव था। मैं मंदिर के प्रवेश द्वार पर खड़ा रहा। मुझे विस्मय और आकर्षण दोनों महसूस हो रहे थे। मुझे शीघ्र ही पता लगा कि वे लोग उस व्यक्ति से कुछ निर्देश ले रहे थे। मुझे अचानक ऐसा लगा कि उनके बीच खड़ा वह व्यक्ति सच्चा योगी था। वह क़िताबी विद्वान न होकर, वास्तविक गुरु था। मुझे ऐसा क्यों लगा, मैं यह समझा नहीं सकता।'

'अचानक उस व्यक्ति ने अपना चेहरा घुमाकर द्वार की ओर देखा। हमारी नज़रें आपस में मिल गईं। उसके बाद मैंने अपने भीतर की आवाज़ को सुना और मैं मंदिर के अंदर चला गया। गुरु ने बड़े स्नेह से मेरा स्वागत किया और फिर मुझे बैठाकर कहा: "मुझे छह महीने पहले यह आदेश हुआ था कि मैं तुम्हें अपना शिष्य बनाऊँ और तुम अब आ गए हो।" मुझे ध्यान आया कि मुझे अपनी ग्यारहवीं यात्रा घर से निकले पूरे छह महीने बीत चुके थे। इस तरह मेरी भेंट अपने गुरु से हुई। इसके बाद वह जहाँ भी जाते, मैं उनके साथ जाता था। वह कभी शहरों में जाते, तो कभी निर्जन वनों में घूमते थे। मैं उनकी सहायता और मार्गदर्शन से योग के पथ पर प्रगति करने लगा और मुझे आत्म-संतुष्टि हुई। मेरे गुरु सच्चे योगी थे, जिन्हें बहुत अनुभव था। हालाँकि वे जिस मार्ग का पालन करते थे, वह शारीरिक नियंत्रण पर आधारित था। योग की अनेक पद्धतियाँ होती हैं। उनकी अपनी प्रक्रियाएँ और अभ्यास होते हैं। मुझे जिस पद्धति का प्रशिक्षण दिया गया, वह मस्तिष्क की जगह, शरीर से आरंभ होती है। मुझे इसके बाद श्वास पर नियंत्रण करना भी सिखाया गया। एक अवसर पर मुझे चालीस दिन का उपवास रखना था ताकि मैं योग शक्तियों को प्राप्त करने के लिए स्वयं को तैयार कर सकूँ।'

'आप कल्पना नहीं कर सकते कि एक दिन मुझे यह जानकर कितनी हैरानी हुई जब मेरे गुरु ने मुझे बुलाया और कहा कि संसार के पूर्ण परित्याग का जीवन अभी तुम्हारे लिए आरंभ नहीं हुआ है। अपने लोगों के पास लौट जाओ और सामान्य जीवन आरंभ कर दो। तुम्हारा विवाह होगा और फिर तुम्हारी एक संतान होगी। 39 वर्ष की आयु में तुम्हें कुछ संकेत दिए जाएँगे और उसके बाद तुम फिर से सांसारिक जीवन त्यागने के लिए स्वतंत्र हो जाओगे। इसके बाद तुम वन में जाकर एकांत में ध्यान का अभ्यास करोगे, ताकि तुम उस लक्ष्य को प्राप्त कर सको जिसे प्रत्येक योगी प्राप्त करना चाहता है। मैं तुम्हारी प्रतीक्षा करूँगा और तब तुम मेरे पास लौट सकते हो।'

'मैंने अपने गुरु के आदेश का पालन किया और मैं अपने घर लौट आया। कुछ समय बाद, एक निष्ठावान स्त्री से मेरा विवाह हुआ जिससे मुझे एक संतान भी प्राप्त हुई जैसा कि मेरे गुरु ने भविष्यवाणी की थी। परंतु विवाह के कुछ ही समय बाद मेरी पत्नी की मृत्यु हो गई। मेरे माता-पिता भी जीवित नहीं थे, इसलिए मैं अपने पैतृक स्थान को छोड़कर इस घर

में आ गया। यह एक वृद्ध विधवा स्त्री का मकान है, जो हमारे ही क्षेत्र की रहने वाली है। वह मुझे बचपन से जानती है और मेरी सभी घरेलू आवश्यकताओं का ध्यान रखती है। वह इतने वर्षों में काफ़ी समझदार हो गई है। वह मुझे एकांत में समय बिताने की अनुमति प्रदान करती है, जो हमारी शिक्षा-पद्धति के नियमों का हिस्सा है।'

ब्रह्मा बोलना बंद कर देता है। मैं उसके इस वर्णन से इतना प्रभावित हूँ कि मेरी प्रश्नवाचक ज़ुबान लगभग ठहर गई है। हमारे बीच दो-तीन मिनट का पूर्ण मौन व्याप्त हो जाता होता है। उसके बाद योगी उठ खड़ा होता है। वह अपने घर की ओर मुँह करता है और धीरे-धीरे चलने लगता है। मैं और मेरा ब्राह्मण साथी भी उसके पीछे चल पड़ते हैं।

हम मनोहारी खजूर के वृक्षों के बीच से होते हुए चलते रहते हैं। नदी का जल तेज़ धूप में चमचमा रहा है और नदी तट पर टहलते हुए हमें लगभग एक घंटा बीत चुका है। हम लोग धीरे-धीरे मनुष्यों के आवास क्षेत्र में प्रवेश कर रहे हैं। वहाँ मछुआरे पानी में उतरकर परंपरागत तरीक़े से अपने कार्य में व्यस्त हैं। वे लोग न तो नाव में बैठकर और ना ही किनारे पर बैठकर मछली पकड़ते हैं, बल्कि कमर तक पानी में खड़े होकर मछली पकड़ते हैं। वे इसके लिए जाल और टोकरियों को हाथ से पकड़े रखते हैं। रंग-बिरंगे पक्षियों के आने से वहाँ का सौंदर्य और बढ़ गया है। मंद हवा में हल्की सुगंध भी है और वह नदी की ओर से बहती हमारे चेहरे को स्पर्श कर रही है। हम लोग चलते हुए सड़क तक पहुँच जाते हैं, जहाँ हमें नदी से दूर होने का अफ़सोस हो रहा है। इस बीच चिल्लाते हुए सूअरों का झुंड हमारे पास से गुज़रता है, जिसकी देख-रेख एक वृद्ध और नीची जाति वाली महिला कर रही है। वह बीच-बीच में इधर उधर भागने वाले सूअर को अपनी बेंत से मारती है।

आख़िर, ब्रह्मा हमें मुड़कर अलविदा कह देता है। मैं उससे दोबारा मिलने की इच्छा व्यक्त करता हूँ। वह हामी भर देता है। मैं उससे पूछता हूँ कि क्या वह स्वयं मिलने आकर मेरा मान बढ़ाएगा। मुझे और मेरे ब्राह्मण साथी को इस बात से बहुत आश्चर्य होता है कि योगी उसी शाम हमसे मिलने के लिए मान जाता है।



मैं संध्या के समय ब्रह्मा के आगमन की प्रतीक्षा कर रहा हूँ। मेरे दिमाग़ में एक के बाद बहुत-से प्रश्न घूम रहे हैं। योगी की संक्षिप्त आत्मकथा ने मुझे हैरत में डाल दिया है। उसके विचित्र व्यक्तित्व ने मेरे लिए दुविधा पैदा कर दी है।

मेरा सेवक योगी के आगमन का समाचार देता है। मैं सीढ़ियों से उतरकर नीचे जाता हूँ जहाँ बरामदे में योगी मेरी प्रतीक्षा कर रहा है। मैं हाथ से उसे छूकर स्पर्श करता हूँ जो स्वागत का प्रतीक है। सामान्य हिंदू अभिवादन का यह संकेत, जिसे मैंने जल्द सीख लिया है,

पाश्चात्य लोगों को कुछ अजीब लगेगा। यह मुद्रा इस बात का संकेत है कि 'तुम्हारी और मेरी आत्मा एक है!' हिंदुओं को किसी यूरोपीय द्वारा ऐसी मुद्रा कम ही देखने को मिलती है, हालाँकि यह हम लोगों के हाथ मिलाने का एक भारतीय तरीक़ा ही है। मैं चाहता हूँ कि मुझे मैत्रीपूर्ण ढंग से स्वीकार किया जाए और इसलिए, मैं भारतीय परंपराओं और रीतियों को जितना भी जानता हूँ, उसके अनुसार उनका आदर करने का प्रयास कर रहा हूँ। इसका यह अर्थ नहीं है कि मैं यहाँ का निवासी हो जाऊँगा। मेरा ऐसा कोई उद्देश्य नहीं है। परंतु मैं मानता हूँ कि हमें दूसरों के साथ उसी तरह का व्यवहार करना चाहिए जिस तरह के व्यवहार की हम उनसे अपेक्षा रखते हैं।

ब्रह्मा मेरे साथ दूसरे कक्ष में प्रवेश करता है और वहाँ पहुँचते ही वह तुरंत पालथी मारकर ज़मीन पर बैठ जाता है।

'क्या आप दीवान पर नहीं बैठेंगे?' मैं अपने दुभाषिये के माध्यम से योगी से पूछता हूँ। 'यह काफ़ी गद्देदार और अत्यंत सुविधाजनक है।'

लेकिन नहीं, योगी को सख़्त ज़मीन पर बैठना ही पसंद है। भारतीय लोगों के फ़र्श पर लकड़ी के तख़्ते नहीं बल्कि सख़्त टाइलें लगी होती हैं।

मैं योगी के आगमन पर कृतज्ञता व्यक्त करता हूँ और उसे भोजन परोसता हूँ। वह चुपचाप बैठकर भोजन कर लेता है।

भोजन के बाद मैं सोचता हूँ कि मुझे उसे अपने बारे में कुछ बताना चाहिए, कुछ ऐसा जिसे सुनकर उसे यह समझ में आए कि मैंने अचानक उसके योगी जीवन में हस्तक्षेप क्यों किया है। इसलिए मैं संक्षेप में उन बातों का उल्लेख करता हूँ जिनके कारण मैं भारत आया हूँ। मेरी बात समाप्त होने पर ब्रह्मा लंबे समय से ओढ़ी अपनी चुप्पी तोड़ता है और मेरे कंधे पर दोस्तों की तरह हाथ रखता है।

'यह जानकर बहुत अच्छा लगा कि पश्चिम में भी ऐसे लोग रहते हैं। आपकी यह यात्रा व्यर्थ नहीं जाएगी क्योंकि आपको सीखने को बहुत कुछ मिलेगा। मेरे लिए यह बहुत सुखद है कि नियति ने हम दोनों को यहाँ एक स्थान पर मिलाया है। आप जो कुछ भी पूछना चाहते हैं, पूछिए! मुझे मेरी प्रतिज्ञा जहाँ तक अनुमति देगी, मैं आपको वह सबकुछ सहर्ष बताऊँगा।'

यह तो सचमुच मेरा सौभाग्य है। मैं योगी से उसकी योग पद्धति, उसके इतिहास और उसके उद्देश्यों के बारे में पूछता हूँ।

'कौन कह सकता है कि शारीरिक नियंत्रण की जो पद्धति मैंने सीखी है वह कितनी पुरानी है? हमारे ग्रंथ बताते हैं कि इस पद्धति को भगवान शिव ने घेरंड मुनि को बताया था और उनके मुख से ऋषि मार्कंडेय ने इसे सीखा, जिन्होंने फिर इस पद्धति को अन्य लोगों को सिखाया। इस तरह यह हज़ारों वर्षों में हम तक पहुँची है, लेकिन इसे कितने हज़ार वर्ष हो चुके हैं, हमें न यह मालूम है और न ही हमारी इसे जानने में कोई रुचि है। हालाँकि हमारा

मानना है कि यह प्राचीनतम योग पद्धतियों में अंतिम पद्धति है। उन दिनों में भी मनुष्य का पतन इतना अधिक था कि भगवान को उसे शरीर के शुद्धिकरण द्वारा आध्यात्मिक मोक्ष का मार्ग बताना पड़ा। शारीरिक नियंत्रण के योग को केवल वही लोग समझते हैं जो इसमें पारंगत हैं। अधिकांश जनसाधारण के मन में इस प्राचीन पद्धति के विषय में अपूर्ण धारणा है। दु:ख की बात है कि वैसे पारंगत लोग आज के समय में इतने कम हैं। इसी कारण इन पद्धतियों को मूर्खतापूर्ण ढंग से तोड़-मरोड़ कर प्रस्तुत किया जाता है और यह बिना किसी कठिनाई के लोगों तक ऐसे ही पहुँच गई है। आप बनारस जाइए तो वहाँ आपको एक व्यक्ति मिलेगा, जो रात और दिन, नुकीली कीलों के बिस्तर पर बैठा या सोता रहता है। किसी अन्य स्थान पर आपको ऐसा व्यक्ति मिलेगा जिसने अपना एक हाथ हवा में उठा रखा है और उसके उपयोग में न आने के कारण उसके नाख़ून कई इंच लंबे हो गए हैं तथा उसका आधा हाथ बेकार हो चुका है। आपको यह बताया जाएगा कि यह लोग भी योग पद्धति का अभ्यास करते हैं लेकिन ऐसा नहीं है। ऐसे लोग योग को बदनाम कर रहे हैं। हमारा उद्देश्य लोगों को आश्चर्य में डालने के लिए शरीर को मूर्खतापूर्ण तरीक़े से कष्ट देना नहीं है। स्वयं को इस तरह का कष्ट देने वाले ये साधु-संन्यासी अज्ञानी लोग हैं जिन्होंने किसी के कहने में आकर अथवा किसी मित्र आदि से कुछ ऐसे अभ्यास सीख लिए हैं जिनसे वह अपने शरीर को ज़बरदस्ती कष्ट देते हैं। उन्हें चूँकि हमारे उद्देश्यों के विषय में जानकारी नहीं है, इसलिए उन्होंने इन पद्धतियों को विकृत रूप प्रदान कर दिया है और वे उन्हें अस्वाभाविक ढंग से फैलाते जा रहे हैं। इसके बावजूद आम जनता ऐसे मूर्खों का आदर-सत्कार करती है और उनके ऊपर भोजन और धन बर्बाद करती है।'

'परंतु क्या सचमुच उन्हें दोष दिया जाना चाहिए? सच्चे योगी इतनी कम संख्या में मौजूद हैं और यदि वे भी अपनी पद्धतियों को गुप्त रखेंगे तो ऐसी भ्रांतियों का फैलना तो स्वाभाविक है,' मैं अपनी आपत्ति दर्ज करते हुए कहता हूँ।

ब्रह्मा अपने कंधों को थोड़ा उठाता है और उसके चेहरे पर तिरस्कारपूर्ण भाव दिखाई पड़ने लगता है।

'क्या कोई राजा अपने रत्न आदि जनता को दिखाने के लिए सड़क पर रख देता है?' योगी पूछता है। 'नहीं! वह उन्हें राजकोष में छिपाकर बहुत सावधानी से संभालकर रखता है। हमारे विज्ञान की भी यही स्थिति है। यह मनुष्य का सबसे बड़ा ख़ज़ाना है। क्या इसे बाज़ार में किसी को भी दे दिया जाना चाहिए? जो भी इस ख़ज़ाने को लेना चाहता है, उसे इसकी तलाश करनी होगी। यही इसका एकमात्र और सही तरीक़ा है। हमारे ग्रंथों में बार-बार गोपनीयता पर ज़ोर दिया गया है। हमारे गुरु केवल जाँचे-परखे शिष्यों को ही अपना ज्ञान प्रदान करते हैं जिन्होंने कई वर्षों तक निष्ठापूर्वक अपने गुरु की सेवा की है। हमारी योग पद्धति सबसे प्राचीन है और वह ख़तरों से भरी हुई है। यह ख़तरा शिष्यों को नहीं, बल्कि

अन्य लोगों को भी है। क्या आपको लगता है कि मुझे यह अनुमति है कि मैं इस योग पद्धति के प्रारंभिक सिद्धांत आपको बता दूँ?'

'अच्छा, ऐसी बात है!'

'परंतु हमारे योग में एक ऐसी पद्धति भी है, जिसके विषय में आपसे खुलकर बात कर सकता हूँ। इसमें हम इच्छाशक्ति को दृढ़ तथा आरंभिक लोगों के लिए शरीर को स्वस्थ बनाते हैं ताकि वे असली योग के कठिन अभ्यासों को करने के लिए तैयार हो सकें।'

'पश्चिम वासियों के लिए यह सचमुच रोचक होगा!'

'हमारे पास शारीरिक अभ्यास के नाम पर लगभग बीस ऐसे अभ्यास हैं जो शरीर के विभिन्न अंगों को मज़बूत करते हैं और अनेक तरह की बीमारियों और रोगों का उपचार करते हैं। इनमें से कुछ ऐसी मुद्राएँ हैं जिनमें विशिष्ट तंतु-केंद्रों को दबाया जाता है। ऐसा करने से जो शरीर के अंग ठीक से काम नहीं कर रहे, वे भली-भाँति फिर से काम करने लगते हैं।'

'क्या आप औषधियों का प्रयोग करते हैं?'

'यदि आवश्यक हो तो चंद्रमा के वर्धन-काल के दौरान कुछ जड़ी-बूटियों का उपयोग किया जाता है। शरीर को स्वस्थ रखने के लिए हमारे पास मुख्य रूप से चार प्रकार के अभ्यास या पद्धतियाँ मौजूद हैं। सबसे पहले, हम विश्राम की कला सीखते हैं ताकि शरीर की नसों को आराम दिया जा सके। इसके लिए चार उपयुक्त अभ्यास होते हैं। इसके बाद, हम शरीर को "खींचने" का तरीक़ा सीखते हैं। हमने इन व्यायामों को पशुओं के ख़ुद को स्वाभाविक ढंग से खींचने के अंदाज़ को देखकर तैयार किया है। इसके बाद हम शरीर को विभिन्न तरीक़ों से शुद्ध करते हैं जिन्हें जानकर आपको बहुत उत्सुकता होगी। उनका बहुत शानदार प्रभाव पड़ता है। अंत में, हम श्वास लेने और उसको नियंत्रित करने के तरीक़े सीखते हैं।'

मैं योगी से अनुरोध करता हूँ कि वह मुझे कुछ अभ्यास करके दिखाए।

ब्रह्मा मुस्कराते हुए कहता है, 'इसमें ऐसा कोई गुप्त रहस्य नहीं है। मैं आपको यह अभ्यास अभी करके दिखाता हूँ। हम विश्राम की कला से आरंभ करते हैं। हमें यह तरीक़ा बिल्लियों से सीखने को मिलता है। हमारे गुरु शिशुओं द्वारा बनाए घेरे में एक बिल्ली को बैठा देते हैं। शिष्यों को कहा जाता है कि वे पशु को विश्राम करते हुए ध्यान से देखें। गुरु यह आदेश देता है कि वे ध्यान से देखें कि बिल्ली दोपहर की गर्मी में किस तरह सहजता से निद्रा में चली जाती है।'

'गुरु बताता है कि जब बिल्ली, किसी चूहे के बिल के सामने झुककर बैठती है तो वे उसे भी ध्यान से देखें। गुरु इस बात को स्पष्ट करते हैं कि बिल्ली सही मायनों में आराम करने का आदर्श उदाहरण प्रस्तुत करती है और उसे यह बहुत अच्छी तरह पता है कि अपनी शक्ति को

किस तरह संचित करके रखना है। आप सोचते हैं कि आपको विश्राम करना आता है परंतु वास्तव में ऐसा नहीं है। आप कुर्सी पर कुछ देर बैठते हैं फिर इधर-उधर हिलते हैं, झुकते हैं, अपने पैरों को सीधा करते हैं। यदि आप अपनी कुर्सी से उठकर खड़े नहीं होते तो देखने से ऐसा लगता है कि आप आराम कर रहे हैं। परंतु आपके मस्तिष्क में अनेक विचार घूम रहे होते हैं। क्या आप इसे विश्राम कह सकते हैं? क्या आप उस समय भी सक्रिय नहीं हैं?'

'मैंने कभी इस बात पर विचार ही नहीं किया,' मैं उत्तर देता हूँ।

'पशुओं को विश्राम करना आता है। परंतु मनुष्यों को अभी तक इसका ज्ञान नहीं है। ऐसा इसलिए है कि पशु अपनी चित्त-प्रवृत्ति के अनुसार कार्य करते हैं जो प्रकृति की देन है, जबकि मनुष्य अपने विचारों के आधार पर कार्य करता है। चूँकि मनुष्य का अपने मस्तिष्क पर अधिकतर कोई नियंत्रण नहीं होता, इसके परिणामस्वरूप नसों और शरीर पर इसका प्रभाव पड़ता है और उन्हें किसी तरह का आराम महसूस नहीं होता।'

'फिर हमें ऐसे में क्या करना चाहिए?'

'आपको सबसे पहले बैठने का सही तरीक़ा सीखना चाहिए। कुर्सियाँ उत्तर के देशों में स्थित ठंडे कमरों के लिए उपयोगी हो सकती हैं, परंतु कम से कम, योगाभ्यास करते समय आपको बैठने के लिए कुर्सी का उपयोग नहीं करना चाहिए। तभी आप योग के लिए तैयार हो सकेंगे। हमारा बैठने का तरीक़ा सचमुच बहुत आरामदायक है। कुछ देर चलने अथवा काम करने के बाद, यह पूरे शरीर को आराम देता है। इस अभ्यास को सीखने का सबसे आसान तरीक़ा यह है कि आप अपने कमरे की दीवार के सामने एक छोटी दरी या चटाई बिछाइए। उसके ऊपर जितना आराम से हो सके, बैठना चाहिए और कमर टिकाने के लिए दीवार का उपयोग कीजिए। आप दरी को कमरे के बीच में भी बिछा सकते हैं। फिर किसी कुर्सी का सहारा लेकर बैठ सकते हैं। इसके बाद पैरों को घुटनों से उत्तर की तरफ़ मोड़ना है। इसमें किसी तरह का ज़ोर या मांसपेशियों पर दबाव नहीं पड़ना चाहिए। आपका पहला अभ्यास यह होगा कि आप इस तरह बैठें और अपने शरीर को पूरी तरह शांत होने दें। उस समय आपको केवल धीरे-धीरे श्वास लेना है। ऐसी स्थिति में बैठने के बाद आपको ख़ुद को यह वचन देना है कि आप अपने विचारों को सभी सांसारिक परेशानियों से दूर कर लेंगे। अपने दिमाग़ को किसी सुंदर वस्तु, चित्र अथवा फूल पर केंद्रित करें।'

मैं अपनी कुर्सी छोड़कर ज़मीन पर बैठ जाता हूँ और ठीक वैसा ही करने का प्रयास करता हूँ, जैसा मुझे ब्रह्मा ने कहा है। इस तरह पैर मोड़कर पुराने ज़माने के दर्जी बैठते थे।

'हाँ! इस तरह आराम से बैठिए,' ब्रह्मा ने कहा। 'परंतु यह अन्य यूरोपीय लोगों के लिए इतना सुविधाजनक नहीं होगा क्योंकि वे इसके आदी नहीं है। आपके बैठने में एक कमी है - अपनी कमर को झुका कर नहीं, उसे सीधा रखकर बैठिए! अब मैं आपको एक और अभ्यास दिखाता हूँ।'

ब्रह्मा अपने घुटने मोड़कर उन्हें अपनी ठुड्डी की ओर ले जाता है। हालाँकि उसके पैर अभी मुड़े हुए हैं। ऐसा करने से उसके पैर, उसके धड़ से दूर हो जाते हैं। वह अपने हाथों को अपने घुटनों को पकड़ लेता है।

'यदि आप बहुत लंबे समय से खड़े हैं तो यह ऐसा करने से बहुत आराम मिलता है। आपको यह ध्यान रखना होगा कि आपके शरीर का अधिकांश वज़न आपके कूल्हों पर रहे। जब भी आप बहुत थका हुआ महसूस करें तो आपको यह अभ्यास करना चाहिए। इससे आपके प्रमुख तंतु-केंद्र विश्रांति की अवस्था में आ जाते हैं।'

'यह अभ्यास बहुत आसान है!'

'हमें विश्राम की कला सीखते हुए कुछ जटिल नहीं करना होता है, बल्कि आसान अभ्यास करने से सबसे बढ़िया परिणाम मिलते हैं। अब आप अपनी पीठ के बल सीधे लेट जाइए और अपने पैरों को थोड़ा बाहर की ओर खोल दीजिए। अपने पंजों को भी बाहर की ओर खोलकर रखिए। अपने हाथों को आगे लाकर अपने शरीर के साथ उन्हें आराम से रख लीजिए। अपनी प्रत्येक मांसपेशी को ढीला छोड़ दीजिए। अब अपनी आँखें बंद कर लीजिए। अपना संपूर्ण वज़न ज़मीन पर छोड़ दीजिए। आप यह अभ्यास बिस्तर पर लेटकर ठीक से नहीं कर सकते, क्योंकि इसके लिए रीढ़ की हड्डी को पूरी तरह सीधा रखना बहुत आवश्यक है। आप फ़र्श पर चटाई बिछाकर उस पर लेट सकते हैं। इस पद्धति में प्राकृतिक उपचार की शक्तियों द्वारा आपको आराम मिलता है। हम इसे शवासन कहते हैं। कुछ दिन के अभ्यास से आप इस तरह एक घंटा भी लेट सकते हैं। ऐसा करने से आपकी मांसपेशियों और नसों में भरा तनाव पूरी तरह दूर हो जाता है। मस्तिष्क को आराम देने के बाद ही मांसपेशियों को आराम दिया जाता है।'

'आपके इन अभ्यासों में सचमुच किसी न किसी तरीक़े से चुपचाप बैठना सिखाया जाता है!'

'क्या आपके लिए यह कोई मायने नहीं रखता? आप पश्चिमवासी सदा सक्रिय रहने की चेष्टा करते हैं। परंतु क्या विश्राम का तिरस्कार किया जाना चाहिए? क्या आपके लिए शांत नसों का कोई अर्थ नहीं है? किसी भी योग पद्धति के लिए विश्राम सबसे आवश्यक है। यह सिर्फ़ हमारी आवश्यकता नहीं, बल्कि आपके जगत की भी एक महत्त्वपूर्ण आवश्यकता है।'

ब्रह्मा के शब्द बहुत सार्थक हैं।

'यह अभ्यास आज शाम के लिए पर्याप्त है। अब मुझे चलना चाहिए।'

मैं ब्रह्मा से उस ज्ञान के आगे के निर्देश देने का अनुरोध करता हूँ।

'मैं कल सुबह आपको नदी किनारे मिलूँगा,' ब्रह्मा उत्तर देता है।

वह अपने सफ़ेद दुशाले को कंधों पर डालकर फिर से अपने हाथों से मेरा हाथ स्पर्श

करके मुझसे विदा लेता है। मैं उसके साथ हुए उस रोचक वार्तालाप के विषय में सोचता रह जाता हूँ, जो उस दिन अचानक समाप्त हो गया था।



योगी से अनेक अवसरों पर मेरी फिर मुलाक़ात होती है। मैं उसकी इच्छा के अनुसार उससे प्रातःकालीन भ्रमण के समय मिलता हूँ, परंतु प्रयास करने पर वह मेरे साथ शाम को भी समय बताता है। वह समय मेरे और मेरी खोज के लिए बहुत लाभदायक सिद्ध होता है। योगी, दिन की रोशनी की अपेक्षा चंद्रमा के प्रकाश में गूढ़ ज्ञान देने का अधिक इच्छुक दिखाई पड़ता है। थोड़ी पूछताछ के बाद, मैं उस बिंदु को सुलझा पाने में सफल हो जाता हूँ, जिसने मुझे बहुत समय से दुविधा में डाल रखा है। मैं अब तक यही समझता आया हूँ कि सभी हिंदू सांवले रंग के होते हैं, परंतु फिर ब्रह्मा की त्वचा नीग्रो की तरह गहरे काले रंग की क्यों है?

इसका कारण यह है कि वह भारत की प्रथम निवासी जाति का बाशिंदा है। आज से हज़ारों वर्ष पहले भारत पर आक्रमण करने वाली सबसे पहली आर्य जाति, जब उत्तर-पश्चिम दिशा से पहाड़ों के रास्ते दाख़िल हुई तो उनकी मुठभेड़ यहाँ की स्वदेशी द्रविड़ जाति से हुई। उन्होंने उसे दक्षिण दिशा में खदेड़ दिया। यह द्रविड़ जाति आज तक एक पृथक समुदाय के रूप में रहती है। अंतर सिर्फ़ इतना है कि उन्होंने आक्रमणकारियों के धर्म को आत्मसात कर लिया है। उष्णकटिबंधीय प्रदेश में सूरज की तेज़ गर्मी ने उनकी त्वचा का रंग काला कर दिया है। इस कारण और अन्य प्रमाणों को देखते हुए कुछ विशिष्ट मानवजाति विज्ञानियों को लगता है कि ये लोग किसी अफ़्रीकी समुदाय के हैं। उन दिनों की भाँति, जब देशभर में उनका निर्विवाद फैलाव था, द्रविड़ जाति के लोग आज भी लंबे बाल रखते हैं और सिर के पीछे जूड़ा बनाते हैं। वे आज भी अपनी आदिवासी भाषा बोलते हैं, जिनमें सबसे महत्त्वपूर्ण तमिल भाषा है।

ब्रह्मा यह बात बहुत विश्वास के साथ कह रहा है कि उन आक्रमणकारियों ने अन्य वस्तुओं की भाँति, उसकी जाति से योग का ज्ञान भी ले लिया। परंतु बहुत-से हिंदू विद्वान इस बात का खंडन करते हैं इसलिए, मैं मूल आवास के इस कम महत्त्व वाले प्रश्न को यूँ ही छोड़ देता हूँ!

मैं चूँकि योग की शारीरिक संस्कृति के विषय पर शोध नहीं कर रहा हूँ, इसलिए मैं यहाँ दो या तीन शारीरिक अभ्यासों से अधिक का वर्णन नहीं करना चाहता, जो वैसे शारीरिक नियंत्रण के योग का अत्यंत महत्त्वपूर्ण अंग हैं। ब्रह्मा ने खजूर के उपवन या अपने कक्ष में जो बीस या उससे अधिक शारीरिक क्रियाएँ करके दिखाई हैं, उनके लिए शरीर को इतना अधिक

मोड़ना पड़ता है कि किसी पश्चिम जगत के व्यक्ति को ये योग-क्रियाएँ हास्यास्पद अथवा कठिन या फिर दोनों लग सकती हैं। इनमें से कुछ क्रियाओं में दोनों पैरों को ऊपर उठाकर दोनों घुटनों पर वज़न को संतुलित करना होता है अथवा अपने पूरे शरीर के वज़न को अँगुलियों की नोक पर संतुलित करना पड़ता है। कुछ क्रियाओं में हाथों को पीछे ले जाकर उन्हें दोबारा विपरीत दिशा से आगे लाना पड़ता है, तो कुछ क्रियाओं को करने के लिए सभी अंगों को मोड़कर गाँठ की तरह बनाना पड़ता है। किसी-किसी अभ्यास में तो पैरों को उठाकर गर्दन या कंधों के ऊपर से किसी करतब की तरह करना पड़ता है। एक श्रेणी के अभ्यास में अत्यंत विचित्र तरीक़े से अपने धड़ को घुमाने की आवश्यकता पड़ती है। ब्रह्मा जिस तरह यह अभ्यास करके दिखाता है, मैं उसे देखकर समझ सकता हूँ कि योग की कला कितनी कठिन है!

'आप की पद्धति में ऐसे कितने अभ्यास करने पड़ते हैं?' मैं पूछता हूँ।

ब्रह्मा उसके उत्तर में कहता है,'शारीरिक नियंत्रण के योग विज्ञान में कुल मिलाकर चौरासी मुद्राएँ हैं, परंतु मुझे अभी चौंसठ मुद्राओं का ज्ञान है।' यह कहते हुए वह एक और मुद्रा बना लेता है और इतना सहज होकर बैठ जाता है जैसे मैं कुर्सी पर आराम से बैठता हूँ। ब्रह्मा बताता है कि यह उसकी मनपसंद मुद्रा है। वह मुद्रा ज़्यादा कठिन तो नहीं है, किंतु मुझे देखने में वह सहज भी प्रतीत नहीं होती। योगी का बायाँ पैर उसकी जाँघ में फँसा हुआ है और दूसरे पैर की एड़ी शरीर के नीचे फँसी हुई है। उसका दायाँ पैर मोड़कर इस तरह रखा है कि सारा वज़न उसी पर पड़ रहा है।

'ऐसी मुद्रा बनाने का लाभ क्या है?' मैं ब्रह्मा से पूछता हूँ।

'कोई योगी यदि इस मुद्रा में बैठकर एक विशिष्ट श्वास क्रिया का अभ्यास करे तो वह अधिक युवा हो सकता है!'

'और वह श्वास क्रिया कौन-सी है?'

'मुझे आपको वह क्रिया बताने की अनुमति नहीं है।'

'तो इन मुद्राओं का उद्देश्य क्या है?'

'कुछ विशिष्ट मुद्राओं में नियत अवधि के लिए बैठने या खड़े होने का आपकी नज़र में महत्त्व कम हो सकता है, परंतु उस मुद्रा में एकाग्रता और इच्छाशक्ति का संकेंद्रण इतना तीव्र होता है कि उसके अभ्यास से योगी के भीतर सुप्त पड़ी शक्तियाँ जाग्रत हो जाती हैं। वे ऐसी शक्तियाँ हैं जिन्हें प्रकृति भी गुप्त रखती है। इसलिए वे बहुत कम जाग्रत होती हैं और उसके लिए सही तरह से श्वास क्रिया का अभ्यास करना आवश्यक है क्योंकि श्वास में बहुत शक्ति होती है। हालाँकि उन शक्तियों को जाग्रत करना ही हमारा असली उद्देश्य है, किंतु हमारे पास लगभग ऐसे बीस अभ्यास हैं जिनके द्वारा व्यक्ति अच्छा स्वास्थ्य प्राप्त कर सकता है और अनेक रोगों से मुक्त भी हो सकता है। कुछ अन्य अभ्यास ऐसे हैं जिनके द्वारा शरीर

अशुद्धियों से मुक्त हो जाता है। क्या ये सब महत्त्वपूर्ण नहीं है? हमारी कुछ मुद्राएँ ऐसी हैं जो हमें मस्तिष्क और मन पर नियंत्रण करने में सहायता प्रदान करती हैं। यह बिलकुल सत्य है कि जितना प्रभाव विचार का शरीर पर पड़ता है, उतना ही प्रभाव शरीर का भी विचारों पर बढ़ता है। योग की उन्नत अवस्थाओं में जब हम कई घंटों तक ध्यान में डूबे रहते हैं तो उचित मुद्रा न केवल हमारे मस्तिष्क को भटकने से बचाती है अपितु हमें अपने उद्देश्य को प्राप्त करने में भी सहायक सिद्ध होती है। इनके अतिरिक्त, इच्छा शक्ति में ज़बरदस्त वृद्ध केवल उन्हीं लोगों को मिलती है जो लगन और निष्ठा से इन क्रियाओं का अभ्यास करते हैं। आप यह भी देख सकते हैं कि इन पद्धतियों से कैसे गुण विकसित होते हैं।'

'परंतु शरीर को इस तरह तोड़-मरोड़ करने की क्या आवश्यकता है?' मैं पूछता हूँ।

'ऐसा इसलिए है क्योंकि हमारे पूरे शरीर में बहुत-से नाड़ी-केंद्र स्थित हैं और प्रत्येक मुद्रा एक अलग केंद्र को प्रभावित करती है। नसों द्वारा हम शरीर के अंगों को अथवा मस्तिष्क के विचारों को प्रभावित कर सकते हैं। हम शरीर को मोड़कर व घुमाकर उन नाड़ी-केंद्रों तक पहुँच पाते हैं, जिन केंद्रों तक अन्यथा पहुँच पाना असंभव है।'

'अच्छी बात है।' योग और शारीरिक संस्कृति का आधार अब मुझे थोड़ा स्पष्ट होने लगा है। हमारे यूरोपीय और अमेरिकी पद्धतियों के मूल सिद्धांतों से इसकी तुलना करना काफ़ी रोचक है। मैं ब्रह्मा को अपनी पद्धतियों के विषय में बताता हूँ।

'मैं आपकी पद्धतियों के बारे में नहीं जानता परंतु मैंने बहुत-से गोरे सैनिकों को मद्रास के पास शिविर में सैन्य अभ्यास करते देखा है। उन्हें देखकर मैं समझ पाया हूँ कि उनके संचालक उनसे क्या करवाना चाहते होंगे। उनका सर्वप्रथम उद्देश्य मांसपेशियों को मज़बूत बनाना होता है, क्योंकि पश्चिमवासी, शरीर को सक्रिय रखना सबसे बड़ा गुण मानते हैं। शायद इसीलिए आप लोग अपने हाथ-पैरों का ऊर्जावान तरीक़े से इस्तेमाल करते हैं। आप अपनी ऊर्जा को बड़ी तेज़ी से व्यय करते हैं ताकि आपकी मांसपेशियाँ विकसित हों और शक्तिशाली बन सकें। इसमें कोई संदेह नहीं कि उत्तर जगत के ठंडे देशों में ऐसा करना सही है।'

'हमारी और आपकी पद्धतियों में मुख्य अंतर क्या है?'

'हमारे अधिकांश योगाभ्यास में मुद्राएँ बनाई जाती हैं और मुद्रा बन जाने के बाद शरीर में किसी तरह की गतिविधि नहीं होती। हम सक्रिय रहने के लिए अधिक ऊर्जा प्राप्त करने का प्रयास नहीं करते, अपितु हम धैर्य की शक्ति को विकसित करने की कोशिश करते हैं। देखिए, हम मानते हैं कि मांसपेशियों का विकास आवश्यक है, परंतु हमारे विचार से मांसपेशियों के पीछे की शक्ति अधिक महत्त्वपूर्ण है। इसलिए यदि मैं आपसे कहूँ कि ख़ास तरह से अपने कंधों पर खड़े होने से आपके मस्तिष्क में ख़ून का प्रवाह तेज़ हो जाएगा, आपकी नसों को आराम मिलेगा और आपकी शारीरिक कमज़ोरी दूर हो जाएगी तो शायद आप उस अभ्यास

को एक बार करेंगे और उसके बाद उसे जल्दी-जल्दी कई बार दोहराएँगे। आप ऐसा करके उन मांसपेशियों को मज़बूत कर सकते हैं, जिनकी इस अभ्यास में आवश्यकता होती है। परंतु ऐसा करने से आपको वह लाभ नहीं मिलेगा जो एक योगी को इसे अपने तरीक़े से करने से प्राप्त होता है।'

'और यह तरीक़ा क्या है?'

'योगी इस अभ्यास को धीरे और ध्यान से करता है। वह उसी मुद्रा में काफ़ी देर तक स्थिर रहता है। मैं आपको यह संपूर्ण शारीरिक मुद्रा करके दिखाता हूँ।'

ब्रह्मा अपनी पीठ के बल लेटकर दोनों हाथों को पेट के दोनों तरफ़ से रखता है और पैरों को जोड़ लेता है। वह अपने पैरों को धीरे-धीरे उठाता है। उसके घुटने सीधे रहते हैं। ऐसा करते हुए वह ज़मीन के साथ लगभग साठ डिग्री का कोण बना लेता है। वह अपनी कमर को अपने हाथों से सहारा देता है और उसकी कुहनियाँ धरती पर टिकी हुई हैं। इसके बाद वह शरीर को ऊपर उठाता है। ऐसा करने से उसका ऊपरी हिस्सा और कंधे सीधे हो जाते हैं। उसकी छाती आगे को झुक कर उसकी ठुड्डी से मिल जाती है। फिर वह हाथों से ऊपरी हिस्से को थाम लेता है। उसके शरीर का पूरा वज़न उसके कंधों, गर्दन तथा सिर पर आ जाता है।

वह इस तरह क़रीब पाँच मिनट तक उसी मुद्रा में स्थिर रहता है और फिर उठ जाता है। वह उसका महत्त्व समझाने लगता है।

'इस मुद्रा से शरीर का रक्त कुछ देर के लिए मस्तिष्क में आ जाता है। सामान्य स्थिति में ख़ून के प्रभाव को हृदय द्वारा विपरीत दिशा में धकेलकर उसे मस्तिष्क तक पहुँचाया जा सकता है। इन दोनों तरीक़ों के बीच यही अंतर है कि इस आसन को करने से मस्तिष्क और उसके अंदर की नसों को आराम मिलता है। दिमाग़ का अधिक प्रयोग करने वाले लोगों जैसे चिंतकों और विद्यार्थियों के लिए यह योगाभ्यास बहुत लाभदायक है। परंतु यही इसका एकमात्र लाभ नहीं है। यह गुप्तांग को भी मज़बूत बनाता है। परंतु इसे करने के लाभ तभी मिल सकते हैं जब इस अभ्यास को आपके ढंग से नहीं, अपितु हमारे तरीक़े से किया जाए।'

'यदि मैं ग़लत नहीं हूँ तो आपका कहने का अर्थ है कि आपका योगाभ्यास शरीर को विश्रांति प्रदान करता है जबकि हमारी पाश्चात्य पद्धतियाँ, शरीर को उत्तेजित करती हैं?'

'ऐसा ही है,' ब्रह्मा मेरी बात से सहमति व्यक्त करता है।

इसके बाद मैं जिस योगाभ्यास को ब्रह्मा के संग्रह से चुनता हूँ, उसे थोड़े धैर्य और अभ्यास से जल्दी ही सीखा जा सकता है। इस मुद्रा में योगी अपने पैरों को आगे फैलाकर बैठ जाता है। वह अपने दोनों हाथों को सिर के ऊपर उठाकर अपनी हाथों की तर्जनी अँगुली को मोड़ लेता है फिर अपने धड़ को आगे झुकाता है और ऐसा करते हुए श्वास बाहर छोड़ता है। वह अपने पैर के अँगूठे को अपने हाथों की मुड़ी हुई अँगुलियों से पकड़ लेता है। सीधे पैर का अँगूठा सीधी तर्जनी से और बाएँ पैर का अँगूठा बाएँ हाथ की तर्जनी से पकड़ा जाता है।

इसके बाद वह अपने सिर को धीरे-धीरे आगे झुकाता है और उसे आगे फैले हुए अपने हाथों के बीच में फँसा देता है। ऐसा करने से उसका सिर उसकी जाँघ को स्पर्श करने लगता है। वह इस विचित्र मुद्रा में कुछ देर स्थिर रहता है और फिर धीरे-धीरे अपनी स्वाभाविक मुद्रा में लौट आता है।

'इस आसन को एकदम नहीं करना चाहिए,' ब्रह्मा मुझे चेतावनी देते हुए कहता है। 'शुरू में अपने सिर को धीरे-धीरे घुटनों की ओर थोड़ा-थोड़ा लाने का प्रयास करना चाहिए। इस आसन को ठीक से सीखने में यदि कुछ सप्ताह भी लग जाएँ तो कोई बात नहीं। इसे अच्छी तरह सीख लेने पर यह सदा के लिए आपका हो जाएगा।'

मुझे बताया जाता है कि इस अभ्यास से रीढ़ की हड्डी मज़बूत होती है और यह रीढ़ की हड्डी की दुर्बलता के कारण नसों से संबंधित परेशानियों को दूर करता है। इससे रक्त के प्रवाह में भी आश्चर्यजनक लाभ होता है।

अगले अभ्यास के दौरान, ब्रह्मा फ़र्श पर बैठकर अपने दोनों पैरों को नीचे की ओर मोड़ लेता है। उसके पैरों की एड़ियाँ उसके कूल्हों के नीचे दब जाती हैं। फिर वह अपने धड़ को पीछे की ओर मोड़ता है तथा कंधों को ज़मीन से स्पर्श करा देता है। वह अपने हाथों को गर्दन के नीचे से मोड़कर अपनी गर्दन को सहारा देता है और फिर अपने दोनों हाथों से कंधों को पकड़ लेता है। वह उसी मुद्रा में कुछ देर स्थिर रहता है और फिर स्वाभाविक स्थिति में लौटकर बताता है कि इस अभ्यास से गर्दन, कंधों और पैरों में स्थित नसों के केंद्र पर अनुकूल प्रभाव पड़ता है और इससे छाती को भी बहुत लाभ मिलता है।

एक औसत अंग्रेज़, एक औसत भारतीय व्यक्ति को कितना कमज़ोर और दुर्बल समझता है! वह उसे उष्णकटिबंधीय गर्मी तथा कुपोषण का शिकार मानता है। उसे यह जानकर बहुत आश्चर्य होता है कि भारत में प्राचीन समय से शारीरिक विकास और स्वास्थ्य संबंधित कितनी सुविचारित पद्धति उपलब्ध रही है! यदि हमारी पाश्चात्य पद्धतियों में भी यह उपयोगिता होती तो इनके महत्त्व पर कोई संदेह करने की सोच भी नहीं सकता था।

हालाँकि ऐसा कहने का अर्थ यह नहीं है कि इस तरह के अभ्यास अपने आप में पूर्ण हैं या फिर शारीरिक विकास, स्वास्थ्य रक्षा और रोगों से मुक्ति पाने का यही एकमात्र तरीक़ा है। यदि पाश्चात्य जगत अपने वैज्ञानिक शोध के शानदार तरीक़ों की सहायता से योग की परंपरागत पद्धतियों पर काम करे तो शायद हमें अपने शरीर का संपूर्ण ज्ञान और स्वास्थ्य पर संपूर्ण नियंत्रण प्राप्त हो सकता है।

हालाँकि मैं जानता हूँ कि ऐसे योगाभ्यास और आसन एक दर्जन से अधिक नहीं है जिन्हें बिना कठिनाई के किया जा सकता है। शेष लगभग सत्तर आसन और मुद्राएँ इतनी कठिन हैं कि उन्हें कोई बहुत उत्साही और अत्यंत लचीले शरीर वाला कोई युवा व्यक्ति ही कर सकता है।

ब्रह्मा स्वयं भी स्वीकार करता है:

‘मैंने बारह वर्ष, प्रतिदिन बहुत कड़ा अभ्यास किया है और उसके बाद ही मैं इन चौंसठ मुद्राओं और आसनों को सीख पाया हूँ। यह मेरा सौभाग्य था कि मैंने यह आसन उस समय सीखने आरंभ किए जब मैं युवा था क्योंकि अधिक आयु होने पर इन्हें करने का प्रयास करना बहुत कष्टदायक होता है। किसी वयस्क व्यक्ति की हड्डियाँ और मांसपेशियाँ आदि लचीलापन खो देते हैं और इसलिए उन्हें हिलाने से काफ़ी दर्द होता है। तथापि यह बहुत हैरत की बात है कि सतत अभ्यास द्वारा इन आसनों को सीखा जा सकता है।’

मुझे ब्रह्मा की इस बात पर कोई संदेह नहीं है कि सतत अभ्यास द्वारा कोई भी व्यक्ति इन आसनों को सीख सकता है। किशोरावस्था पूर्ण होते ही इनका अभ्यास शुरू करने से लाभ होता है और आरंभिक स्थिति में इन्हें सीखने से इनका महत्त्व भी बढ़ जाता है। जिस प्रकार करतब करने वाले भी अधिकतर वही लोग सफल होते हैं, जिन्हें बचपन से प्रशिक्षण दिया जाता है, उसी तरह शारीरिक नियंत्रण का अभ्यास करने वाले वही योगी सफल होते हैं जो अपना प्रशिक्षण पच्चीस वर्ष की आयु से पहले आरंभ कर देते हैं।

मुझे लगता है कि कोई भी वयस्क यूरोपीय व्यक्ति यदि इन आसनों को करने का प्रयास करेगा तो इस दौरान उसकी एकाध हड्डी अवश्य टूट जाएगी! मैं जब इस बारे में ब्रह्मा से बात करता हूँ तो वह मुझसे आंशिक रूप से सहमत होता है तथा अपनी बात पर अड़ा रहता है कि निरंतर अभ्यास द्वारा अधिकांश मामलों में सफलता प्राप्त हो जाती है। हालाँकि ऐसा सब मामलों में नहीं होता, परंतु वह इस बात से सहमत है कि यूरोपीय लोगों के लिए यह अधिक कठिन चुनौती भरा कार्य है।

‘हम पूरब वासियों को इस बात का लाभ भी मिलता है कि हमें बचपन से पैर मोड़कर बैठना सिखाया जाता है। क्या कोई यूरोपीय व्यक्ति दो घंटे अपने पैर मोड़कर स्थिर बैठ सकता है? इस तरह पैरों को मोड़कर बैठना हमारे योगासनों के आरंभिक अभ्यास का हिस्सा है। हम इसे सर्वोत्कृष्ट मानते हैं। क्या मैं आपको यह करके दिखाऊँ?’

इसके बाद ब्रह्मा ऐसा आसन लगाकर बैठ जाता है जिसे पाश्चात्य जगत के लोगों ने बुद्ध की तस्वीरों व चित्रें में देखा है। वह बिलकुल सीधा बैठकर अपने दाएँ पैर को मोड़कर उसे अपनी बाईं जाँघ में फँसा लेता है और बाएँ पैर को मोड़कर उसके पंजे को दाईं जाँघ के ऊपर ले आता है। ऐसा करने से उसकी एड़ी पेट के निचले कोने को स्पर्श करती है। उसके दोनों पैरों की एड़ियाँ ऊपर की ओर उठी हुई हैं। यह बहुत कलात्मक और संतुलित मुद्रा है। मुझे तभी विचार आता है कि मुझे भी उस आकर्षक मुद्रा को बनाने का प्रयास करना चाहिए।

मैं उसका अनुकरण करने का प्रयास करता हूँ। मेरे टखनों में बहुत तेज़ दर्द होता है लेकिन इस प्रयास में मुझे सफलता मिल जाती है। मैं शिकायत भरे लहजे में कहता हूँ कि मैं इस मुद्रा में एक क्षण के लिए भी नहीं बैठ सकता। मैंने भगवान बुद्ध की इस मुद्रा को दुकानों

पर जब पीतल की आकर्षक मूर्तियों में बना देखा, तभी से मुझे यह बहुत शानदार प्रतीत होती है! परंतु अपने पैरों को मोड़कर स्वयं इस मुद्रा में बैठना कितना असहज है! ब्रह्मा की मुस्कान भी मुझे उस आसन में दोबारा बैठने के लिए प्रेरित नहीं कर पाती। मैं फ़िलहाल उस प्रयास को स्थगित कर देता हूँ।

ब्रह्मा कहता है, 'आपके जोड़ बहुत अनम्य हो गए हैं। आपको यह अभ्यास करने से पहले अपने टखनों और घुटनों में थोड़ा तेल लगाना चाहिए। आपको कुर्सियों पर बैठने की आदत है, इसलिए इस मुद्रा में बैठने से आपके पैरों में दर्द हो रहा है। परंतु प्रतिदिन इसका थोड़ा अभ्यास करने से यह कठिनाई दूर हो जाएगी।'

'मुझे संदेह है कि मैं यह आसन कभी सीख पाऊँगा!'

'यह ग़लत है। आपको इसे सीखने में थोड़ा समय अवश्य लगेगा, लेकिन आपने इसे निश्चित रूप से सीख जाएँगे। एक दिन आपको सफलता मिलेगी और तब आपको हैरानी होगी। यह अचानक हो जाता है!*

'यह कितनी कष्टदायक है कि यातना जैसा महसूस हो रहा है!'**

'यह दर्द धीरे-धीरे कम हो जाता है। पूर्ण सफलता प्राप्त करने में कुछ समय अवश्य लगता है, परंतु आख़िरकार वह अवस्था आ जाती है जब इस मुद्रा को करने में कोई कठिनाई नहीं होती।'

'परंतु क्या इसे करने से मुझे कुछ है लाभ होगा?'

'अवश्य! हम इसे पद्मासन कहते हैं। यह इतना महत्त्वपूर्ण है कि हमारे किसी भी प्रशिक्षु को इसे छोड़ने की अनुमति नहीं होती। हालाँकि वह चाहे तो कुछ अन्य आसन और मुद्राओं को छोड़ सकता है। अपने ध्यान के अभ्यास को आगे बढ़ाने के लिए योगियों के जीवन में इस आसन का बहुत महत्त्व है। इसका एक कारण यह है कि इससे शरीर को ठोस आधार मिलता है, जिससे ध्यान की गहन अवस्था में चले जाने के बाद भी योगी के लुढ़क जाने की संभावना नहीं रहती। ऐसा अचानक हो जाता है क्योंकि योगी अपनी इच्छा से ध्यान अवस्था में चले जाते हैं। आपने देखा होगा कि पद्मासन में दोनों पैर आपस में जुड़ जाते हैं और इससे शरीर पूरी तरह स्थिर व शांत हो जाता है। व्यग्र और अस्थिर शरीर, दिमाग़ को भी बेचैन करता है। परंतु पद्मासन में बैठने से व्यक्ति शांति और नियंत्रण महसूस करता है। इस मुद्रा में बैठकर ध्यान की शक्ति को अर्जित करना आसान हो जाता है, जिसका हम लोगों के लिए बहुत महत्त्व है। अंत में, हम लोग इस मुद्रा में बैठकर श्वास क्रियाओं का अभ्यास करते हैं क्योंकि इन्हीं से अंदर, अध्यात्म की अग्नि प्रज्ज्वलित होती है जो शरीर के भीतर सुप्तावस्था में रहती है। यह अदृश्य ऊर्जा जिस समय जाग्रत होती है, शरीर में रक्त का प्रवाह नए सिरे से आरंभ होता है तथा कुछ विशिष्ट और महत्त्वपूर्ण स्नायु केंद्रों पर उस शक्ति का दबाव पड़ता है।'

मैं इतने स्पष्टीकरण से संतुष्ट हूँ और योगासन के विषय में इस वार्ता को विराम देता हूँ। ब्रह्मा ने शरीर पर असाधारण नियंत्रण को दर्शाने और मुझे संतुष्ट करने के लिए अनेक भयानक और कष्टदायी मुद्राएँ बनाई हैं। क्या किसी पश्चिमवासी में इन जटिल अभ्यासों को सीखने और उनमें पारंगत होने का धैर्य है? क्या उनके पास यह सब करने का समय है?

---

* ‘दक्षिण पूर्वी भारत की भाषा तमिल, जर्मन भाषा से इस मायने में मिलती है कि दोनों में ही लंबे संयुक्त शब्दों को बहुत आसानी से बना लिया जाता है। इसका परिणाम यह होता है कि जितनी देर में आप उन्हें समझ पाएँगे, आपकी ट्रेन कुलशेखरपटनम नाम के स्टेशन को पार कर जाएगी। बेहतर हो कि मैं समय रहते, इस नाम को लिखना छोड़ दूँ!

* मैं बुद्ध की इस मुद्रा के प्रति इतना आकर्षित था कि मैंने आठ महीनों के कष्टदायक प्रयासों के बाद इसे करने में सफलता प्राप्त कर ली और उसके बाद मुझे कभी कठिनाई नहीं हुई!

** अनुभवहीन और नए शौक़ीन लोगों को यह बताना बहुत आवश्यक है कि इस तरह के योगाभ्यास करने में ख़तरा होता है। मैंने एक शल्यचिकित्सक से इनके विषय में बात की तो उसने मुझे बताया कि टखने या जोड़ के शिरा अथवा स्नायु का टूटना, किसी गहरी चोट की तरह होता है।

अध्याय 6

मृत्युंजय योग

ब्रह्मा इच्छा व्यक्त करता है कि मैं उसके घर आऊँ। उसने मुझे बताया है कि वास्तव में वह किसी घर में नहीं रहता, बल्कि उसने घर के पीछे उद्यान में एक कमरे की कुटिया बना रखी है ताकि वह अपनी स्वतंत्रता को बचाकर रख सके।

मैं एक दिन दोपहर को उसके घर चला गया। वह घर धूल-भरी सड़क पर बना है, जो निर्जन और उपेक्षित दिखाई पड़ती है। मैं उस प्राचीन ढाँचे के बाहर कुछ क्षण के लिए खड़ा रहता हूँ और लकड़ी से बनी ऊपरी मंज़िल का निरीक्षण करता हूँ। उसकी बाहर की ओर निकली हुई खिड़की मध्यकालीन यूरोपीय घरों की याद दिलाती है। मैं उसके भारी-भरकम पुराने दरवाज़े को धकेल कर खोलता हूँ, जिसकी चरमराहट से कमरे और गलियारे गूँज उठते हैं।

एक वृद्ध महिला, जिसके चेहरे पर मातृत्व-भरी हँसी फैली है, अचानक मेरे सामने आ जाती है। वह बार-बार झुककर मेरा अभिवादन करती है। फिर वह मुझे एक लंबे, अंधेरे गलियारे से लेकर आगे चल पड़ती है और हम उसके रसोईघर से होते हुए घर के पिछली तरफ़ बने उद्यान तक पहुँच जाते हैं। मैं जो पहली चीज़ वहाँ देखता हूँ, वह एक विशाल पीपल का वृक्ष है। उसकी छायादार टहनियों के नीचे एक पुराने तरह का कुआँ बना है। वह महिला मुझे कुएँ की दूसरी ओर बनी कुटिया के पास ले जाती है। वह कुटिया बाँस से निर्मित है और उसकी छत घास-फूस की बनी है।

वह महिला, जो ब्रह्मा की तरह ही कृष्ण वर्ण की है, अत्यंत उत्साहित नज़र आती है और फिर वह अचानक कुटिया की ओर देखकर तमिल भाषा में कुछ बोलने लगती है। कुछ पल

बाद कुटिया के भीतर से संगीतमय उत्तर सुनाई पड़ता है। उसका द्वार धीरे-धीरे खुलता है और भीतर से योगी निकलकर आता है। वह मुझे स्नेह के साथ अपनी सादा कुटिया के भीतर ले जाता है। वह दरवाज़ा खुला छोड़ देता है। महिला कुछ देर कुटिया के द्वार पर खड़ी मुझे देखती रहती है। उसके चेहरे पर अवर्णनीय प्रसन्नता व्याप्त है।

योगी की कुटिया का कमरा बहुत सादा है। उसमें एक बिना गद्दे का दीवान है तथा एक दीवार के साथ काग़ज़ों से भरी एक लकड़ी की बेंच पड़ी है। तांबे का एक जल-पात्र रस्सी से बँधा छत से लटका है। फ़र्श पर बड़ी-सी दरी बिछी है।

'आप बैठ जाइए,' ब्रह्मा ने फ़र्श की ओर इशारा करते हुए कहा। 'मैं क्षमा चाहता हूँ, मेरे पास आपके लिए कुर्सी नहीं है!'

हम सब लोग - ब्रह्मा, मैं और वह युवक जो मेरे दुभाषिया का काम कर रहा है, दरी पर बैठ जाते हैं। कुछ देर बाद, वृद्ध विधवा चाय की केतली लेकर लौट आती है और किसी मेज़ पर नहीं, बल्कि दरी पर ही रख देती है। वह दोबारा जाती है और कुछ बिस्किट संतरे तथा अन्य फल लेकर लौटती है, जिन्हें तांबे की तश्तरियों में सजा कर रखा गया है।

इससे पहले कि हम वह बढ़िया सामग्री खाना शुरू करें, ब्रह्मा गेंदे के फूल की एक माला मेरे गले में डाल देता है। मैं उसे देखकर हैरान हूँ और उसका विरोध करता हूँ क्योंकि मैं जानता हूँ कि यह भारतीय परंपरा कुछ विशिष्ट लोगों के लिए होती है और मैंने कभी स्वयं को श्रेणी में नहीं माना।

'किंतु मेरे भाई,' ब्रह्मा मुस्कराते हुए कहता है, 'आप मेरी इस कुटिया में आने वाले पहले यूरोपीय व्यक्ति और मेरे पहले मित्र भी हैं। मैं इस तरह आपका सम्मान करके अपनी और इस वृद्ध महिला की प्रसन्नता व्यक्त करना चाहता हूँ।'

इसके आगे विरोध करने का कोई लाभ नहीं है। मुझे ज़बरदस्ती गेंदे के फूल की माला गले में डालकर फ़र्श पर बैठना पड़ता है। मुझे सचमुच इस बात की ख़ुशी है कि यह स्थान, यूरोप से बहुत दूर है और यहाँ मेरा कोई मित्र मुझे इस तरह के विचित्र दृश्य में देखकर मेरी हँसी नहीं उड़ा सकता!

हम लोग चाय और फलादि खाकर कुछ देर बातचीत करते हैं। ब्रह्मा मुझे बताता है कि उसने कुटिया और उसके भीतर का सामान अपने हाथों से बनाया है। कोने की बेंच पर रखे काग़ज़ देखकर मेरी उत्सुकता बढ़ गई है। मैं ब्रह्मा से उन काग़ज़ों के बारे में पूछता हूँ। वे काग़ज़ गुलाबी रंग के हैं और उन पर हरी स्याही से कुछ लिखा गया है। ब्रह्मा उनमें से कुछ काग़ज़ उठाता है, जिन पर मेरे विचार से कुछ तमिल भाषा में लिखा गया है। मेरे साथ बैठा दुभाषिया उन काग़ज़ों को देखता है लेकिन वह उन्हें पढ़ने या समझने में असमर्थ है। वह मुझे बताता है कि उन काग़ज़ों पर तमिल भाषा की किसी प्राचीन लिपि में लिखा गया है, जो शायद कई शताब्दी पूर्व प्रचलित रही होगी। परंतु अब उसे केवल कुछ ही लोग समझ सकते

हैं। वह मुझे यह भी बताता है कि तमिल दर्शन और साहित्य की कालजयी रचनाएँ भी दुर्भाग्य से इसी प्राचीन लिपि में लिखी गई हैं और आधुनिक जीवनशैली और भाषा से परिचित लोगों के लिए इसे समझ पाना कठिन है।

ब्रह्मा कहता है, 'सभी काग़ज़ मैंने अधिकतर रात के समय लिखे हैं। कुछ में योग के अनुभव हैं, जिन्हें मैंने काव्य रूप में लिखा है। कुछ लंबी कविताएँ हैं, जिनमें मैंने अपने दिल की बात लिखी है। यहाँ कुछ युवा लोग हैं जो स्वयं को मेरा शिष्य कहते हैं, और वे यहाँ आकर इन काग़ज़ों को ज़ोर से पढ़कर सुनाते हैं।'

ब्रह्मा कलात्मक दिखने वाले एक काग़ज़ को उठाता है, जिसके कुछ पन्नों पर लाल और हरी स्याही से कुछ लिखा है और उन्हें हरे रंग की डोरी से बाँधा गया है। वह मुस्कराते हुए मुझे वह काग़ज़ भेंट करता है।

'मैंने इसे ख़ास तौर पर आपके लिए लिखा है,' वह कहता है।

मेरा युवा दुभाषिया बताता है कि वह चौरासी पंक्तियों की एक कविता है, जो मेरे नाम से आरंभ होकर मेरे ही नाम पर समाप्त होती है। परंतु इससे अधिक युवक को कुछ भी समझ में नहीं आता। वह बीच-बीच में से कुछ शब्द पढ़ता है और बताता है कि उस कविता में शायद कोई निजी संदेश है। परंतु वह इतनी गूढ़ तमिल में लिखा है कि उसका उचित अनुवाद कर पाना उसके लिए संभव नहीं है। परंतु मुझे यह अनपेक्षित उपहार प्राप्त करके बहुत प्रसन्नता महसूस होती है, क्योंकि उसमें योगी की सहृदयता की अभिव्यक्ति है।

मेरे आगमन के उपलक्ष्य में हो रही धूमधाम समाप्त होने के बाद, वृद्ध महिला वहाँ से चली जाती है और हम लोग गंभीर बात करने के लिए बैठ जाते हैं। मैं एक बार फिर श्वास क्रिया वाले विषय पर बात शुरू करता हूँ, जो योग में बहुत महत्त्वपूर्ण है और जिसे अब तक गुप्त रखा गया है। रामा को इस बात का खेद है कि वह मुझे और अधिक अभ्यास करके नहीं दिखा सकता, परंतु वह मुझे उससे संबंधित कुछ सिद्धांत बताने के लिए तैयार हो जाता है।

'प्रकृति ने हर मनुष्य को 21,600 साँसें दी हैं, जो उसे रोज़ दिन और रात एक सूर्यास्त से अगले सूर्यास्त के बीच लेनी होती हैं। श्वास को जल्दी और ज़ोर से लेने से यह नपी हुई गिनती के पार चली जाती है और इसके फलस्वरूप मनुष्य का जीवन छोटा हो जाता है। इसके विपरीत यदि श्वास को धीरे, गहराई से और आराम से लिया जाए तो जीवन को लंबा किया जा सकता है। संचित की गई प्रत्येक श्वास, एक विशाल भंडार तैयार करने में सहायक सिद्ध होती है और इसी भंडार से मनुष्य को अपने जीवन के लिए अतिरिक्त वर्ष मिलते हैं। योगी सामान्य लोगों की भाँति अधिक श्वास नहीं लेते और ना ही उन्हें ऐसा करने की आवश्यकता होती है। मुझे खेद है, मैं आपको अपनी प्रतिज्ञा तोड़कर इससे अधिक नहीं बता सकता।'

योगी का श्वास-भंडार मुझे उत्तेजित कर देता है। क्या यह संभव है कि इस गूढ़ ज्ञान का,

जिसे इतने यत्न से छिपाकर रखा गया है, वास्तव में कोई महत्त्व नहीं है? यदि सचमुच ऐसा है तो यह बात समझ में आती है कि क्यों ये विचित्र योगी लोग, ऊपरी तौर पर उत्सुक दिखने वाले या मानसिक रूप से अपरिपक्व और आध्यात्मिक रूप से अयोग्य लोगों से अपनी पहचान छुपा कर रखते हैं और उनसे अपने ज्ञान की रक्षा करते हैं। क्या यह संभव है कि मैं भी इन्हीं में से किसी श्रेणी में आता हूँ और इतना कष्ट उठाकर भी इस ज्ञान को प्राप्त किए बिना ही मैं अपने देश वापस लौट जाऊँगा?

परंतु ब्रह्मा आगे कहता है:

'क्या हमारे गुरुओं के पास श्वास की शक्तियों की कुंजी नहीं है? वे रक्त और श्वास के बीच के संबंध को बहुत नज़दीकी से समझते हैं। वे यह भी जानते हैं कि किस तरह मस्तिष्क, श्वास का अनुसरण करता है और उन्हें इस बात का भी ज्ञान है कि श्वास और विचार की प्रक्रिया द्वारा किस तरह आत्मा को जाग्रत किया जा सकता है। मैं यह कहना चाहता हूँ कि श्वास और कुछ नहीं, अपितु संसार की सूक्ष्म शक्तियों की ही अभिव्यक्ति है, जो वास्तव में शरीर का पोषण भी करती है। यही शक्ति है जो अदृश्य रूप में हमारे महत्त्वपूर्ण अंगों में अंतर्निहित है। जब यह शक्ति हमारे शरीर से निकल जाती है तो उसका अनुसरण करते हुए श्वास भी रुक जाती है और परिणामस्वरूप मनुष्य की मृत्यु हो जाती है। परंतु श्वास पर नियंत्रण करके इस अदृश्य शक्ति को कुछ सीमा तक नियंत्रित करना संभव है। हालाँकि हम शरीर को उसके चरम तक ले जाते हैं, यहाँ तक कि हम हृदय की धड़कन को भी नियंत्रित कर सकते हैं। क्या आपको लगता है कि हमारे प्राचीन ऋषि-मुनियों के पास शरीर और उसमें अंतर्निहित शक्तियाँ मात्र थीं?'

मैं उन प्राचीन ऋषि-मुनियों और उनके उद्देश्यों के बारे में क्या सोचता हूँ, वह सब कुछ अचानक मेरे मस्तिष्क में जाग्रत हुई तीव्र इच्छा के पीछे छिप जाता है।

'क्या आप हृदय की गति को भी नियंत्रित कर सकते हैं?' मैं हैरानी से पूछता हूँ।

'मैंने अपने हृदय, उदर और गुर्दों पर कुछ सीमा तक नियंत्रण प्राप्त कर लिया है,' ब्रह्मा अहंकारविहीन ढंग से शांतिपूर्वक उत्तर देता है।

'आप यह सब कैसे कर लेते हैं?'

'कुछ विशेष तरह की मुद्राओं, श्वास क्रियाओं और योगाभ्यास के संयोजन से ये शक्तियाँ प्राप्त की जा सकती हैं। निस्संदेह, ये अभ्यास योग की उच्चतर अवस्थाओं से संबंधित हैं तथा इतने कठिन हैं कि बहुत कम लोग इन्हें कर पाते हैं। मैंने इनके अभ्यास से उन मांसपेशियों पर भी नियंत्रण प्राप्त कर लिया है, जो हृदय के साथ मिलकर काम करती हैं और उन्हीं हृदय की मांसपेशियों के माध्यम से मैं अन्य अंगों को भी नियंत्रित कर सकता हूँ।'

'यह सब बहुत असाधारण है!'

'क्या आपको वाक़ई ऐसा लगता है? आप मेरी छाती पर ठीक हृदय के ऊपर हाथ रखिए और उसे महसूस कीजिए।' ऐसा कहकर ब्रह्मा अपनी मुद्रा को बदल लेता है और एक विचित्र आसन बनाकर आँखें बंद करके बैठ जाता है।

मैं उसकी बात मान लेता हूँ और इस बात की धैर्यपूर्वक प्रतीक्षा करता हूँ कि आगे क्या होने वाला है। कुछ मिनटों तक ब्रह्मा किसी पत्थर की भाँति स्थिर रहता है। वह बिलकुल नहीं हिलता। फिर धीरे-धीरे उसके हृदय की धड़कन मंद पड़ने लगती है। मैं उसकी गति को धीमा होते हुए महसूस कर सकता हूँ। कुछ ही देर में उसके हृदय की धड़कन पूरी तरह रुक जाती है। मेरे अंदर एक विचित्र रोमांच हो रहा है। उसके हृदय की धड़कन लगभग सात सेकेंड तक रुकी रहती है।

मैं ऐसा दिखाने का प्रयास करता हूँ मानो मुझे कोई भ्रम हुआ है। परंतु मुझे इतनी घबराहट हो रही है कि उसे छिपाने का मेरा प्रयास व्यर्थ सिद्ध होता है। योगी के हृदय की धड़कन धीरे-धीरे लौटने लगती है। तब मुझे राहत महसूस होती है। उसकी धड़कन तेज़ होने लगती है और वह कुछ ही पलों में सामान्य गति पर लौट आती है।

उसके बाद भी योगी कुछ देर तक स्थिर रहता है और ध्यान की अवस्था से बाहर नहीं निकलता। उसके बाद वह धीरे-धीरे आँखें खोलकर पूछता है:

'क्या आपने मेरे हृदय की धड़कन का रुकना महसूस किया था?'

'हाँ, बहुत स्पष्ट रूप से!' मुझे इस बात में कोई संदेह नहीं कि उसने जो किया, वह मेरा भ्रम नहीं था। वही कार्य जिसे अन्य लोग चालाकीपूर्वक करते हैं, ब्रह्मा ने उसे अपनी आंतरिक शक्ति से पूरा किया था।

ब्रह्मा मानो मेरा विचार पढ़ लेता है। वह उत्तर में कहता है:

'मेरे गुरु की उपलब्धि की तुलना में यह कुछ भी नहीं है। आप अगर उनकी कोई नस भी काट दें तो भी वे अपने रक्त के प्रवाह को नियंत्रित कर लेते हैं, यहाँ तक कि उसे रोक भी देते हैं। मैंने भी अपने रक्त के प्रवाह को कुछ सीमा तक नियंत्रित करना सीख लिया है परंतु मैं अभी उसे ठीक से नहीं कर सकता।'

'क्या आप मुझे वह नियंत्रण दिखा सकते हैं?'

वह मुझे अपनी कलाई थामने के लिए कहता है, जहाँ मैं उसकी नसों में रक्त को बहता हुआ महसूस कर सकता हूँ।

दो-तीन मिनट के भीतर मुझे महसूस होता है कि मेरे अंगूठे के नीचे रक्त का प्रवाह धीमा हो रहा है। कुछ ही पलों में, प्रवाह बिलकुल थम जाता है। ब्रह्मा ने अपनी धड़कन को पूरी तरह रोक दिया है।

मैं उत्सुकता से धड़कन के वापस लौटने की प्रतीक्षा करता हूँ। एक मिनट बीत जाता है,

परंतु कुछ नहीं होता। दूसरा मिनट भी इसी तरह बीत जाता है। मेरा ध्यान लगातार घड़ी पर है। मैं प्रत्येक सेकेंड को बीतते देख रहा हूँ। तीसरा मिनट भी इसी तरह निकल जाता है। चौथे मिनट के मध्य में, मुझे ब्रह्मा की नस में हल्की-सी गतिविधि महसूस होती है। मेरा तनाव कम होने लगता है। कुछ ही पलों में ब्रह्मा की धड़कन सामान्य गति पर लौट आती है।

'यह कितना अजीब है!' मैं अचानक बोल पड़ता हूँ।

'यह तो कुछ भी नहीं है,' वह विनम्रता से उत्तर देता है।

'आज का दिन तो चमत्कारों से भरा हुआ है। क्या आप मुझे और एक चमत्कार नहीं दिखाएँगे?'

ब्रह्मा संकोच करता है।

'बस, एक और!' वह कहता है, 'और उसके बाद आपको संतोष करना होगा।'

वह कुछ देर फ़र्श की ओर देखता है और फिर कहता है:

'मैं अब अपनी श्वास रोकूँगा!'

'फिर तो आपकी निश्चित रूप से मृत्यु हो जाएगी!' मैं अचानक घबरा कर कहता हूँ।

वह हँसकर मेरी बात को नज़रअंदाज़ कर देता है।

'अब आप अपने हाथ को मेरे नथुनों के ठीक नीचे रखिए।'

मैं उसकी बात मान लेता हूँ। योगी द्वारा छोड़ी गई श्वास की गर्माहट मेरे हाथ को स्पर्श करती है। उसके बाद ब्रह्मा आँखें बंद कर लेता है। उसका शरीर प्रतिमा की भाँति स्थिर हो जाता है। वह ध्यान की गहन अवस्था में जा रहा है। मैं अपने हाथ को उसकी नाक के नीचे रख देता हूँ। वह किसी मूर्ति की भाँति पूरी तरह स्थिर हो चुका है। धीरे-धीरे, आराम-से उसकी श्वास घटने लगती है। आख़िर, वह पूरी तरह रुक जाती है!

मैं उसके नथुनों और होंठों की ओर देखता हूँ। मैं उसके कंधों और छाती को ध्यान से देखता हूँ। परंतु मुझे किसी तरह की गतिविधि या प्रमाण दिखाई नहीं पड़ता। मुझे पता है कि इतना परीक्षण काफ़ी नहीं है। मैं इससे अधिक जाँच करना चाहता हूँ, परंतु कैसे? मेरा दिमाग़ तेज़ी से दौड़ रहा है।

कमरे में कोई शीशा नहीं है। मुझे अचानक वहाँ पीतल की पॉलिश की हुई एक तश्तरी मिल जाती है। मैं तश्तरी को ब्रह्मा के नथुनों के नीचे टिका देता हूँ और फिर उसे योगी के होंठों के सामने भी रखता हूँ। तश्तरी का चमकदार सतह पर किसी तरह की नमी या धुंधलापन दिखाई नहीं पड़ता।

इस बात पर विश्वास करना असंभव लगता है कि एक शांत परंपरागत शहर के निकट, ऐसे शांत परंपरागत घर के भीतर, मैंने ऐसी विशिष्ट चीज़ से संपर्क स्थापित किया है। कुछ ऐसा, जिसे पाश्चात्य विज्ञान एक दिन अपनी इच्छा के विरुद्ध स्वीकार करने पर विवश हो

जाएगा। परंतु इस बात का प्रमाण मौजूद है और इस पर संदेह भी नहीं किया जा सकता। योग, सचमुच, कोई व्यर्थ भ्रांति नहीं है।

ब्रह्मा जब गहन ध्यान की अवस्था से बाहर आता है तो वह थका हुआ दिखाई पड़ता है।

'क्या अब आप संतुष्ट हैं?' वह थकान-भरी मुस्कान के साथ पूछता है।

'मैं अत्यंत संतुष्ट हूँ, परंतु मैं अभी तक इस बात को समझ नहीं सका कि आपने यह कैसे किया है?'

'आपको यह बता पाना मेरे लिए वर्जित है। श्वास को रोकना एक अभ्यास है, जो योग का ही एक अंश है। किसी गोरे व्यक्ति को यह मूर्खतापूर्ण प्रयास लग सकता है, परंतु हमारे लिए इसका बहुत महत्त्व है।'

'परंतु हमें सदा यही बताया गया कि मनुष्य श्वास लिए बिना जीवित नहीं रह सकता! निस्संदेह, यह मूर्खतापूर्ण विचार नहीं है।'

'यह मूर्खतापूर्ण विचार नहीं है, परंतु यह सत्य भी नहीं है,' ब्रह्मा कहता है। 'मैं श्वास को अपनी इच्छा अनुसार दो घंटे तक रोक सकता हूँ। मैंने कई बार ऐसा किया है परंतु मेरी मृत्यु नहीं हुई।' वह मुस्कराता है।

'मुझे बहुत दुविधा हो रही है। यदि आपको यह समझाने की अनुमति नहीं है, तो आप शायद इन पद्धतियों के पीछे के सिद्धांत पर कुछ रोशनी डाल सकते हैं।'

'बहुत अच्छा! हम पशुओं से सबक़ सीख सकते हैं। मेरे गुरु का सिखाने का यही पसंदीदा तरीक़ा है। हाथी, बंदर की अपेक्षा बहुत धीरे श्वास लेता है और इसीलिए अधिक समय तक जीवित रहता है। कुछ विशाल सर्प, कुत्तों की अपेक्षा धीमी गति से श्वास लेते हैं और अधिक समय तक जीवित रहते हैं। इससे पता लगता है कि जो जीव धीमी गति से श्वास लेते हैं, वे अधिक समय तक जीवित रहते हैं। यदि आप मेरी इस बात को समझ गए हैं, तो आपको अगली बात समझने में आसानी होगी। हिमालय पर्वत में कुछ चमगादड़ ऐसे हैं जो शरद-ऋतु में सो जाते हैं। वे पर्वत की गुफाओं में कई सप्ताह तक उल्टे लटके रहते हैं और दोबारा जागने तक एक बार भी श्वास नहीं लेते। इसी तरह हिमालय में रहने वाले भालू भी सर्दी में गहन निद्रा में चले जाते हैं। उनका शरीर देखने में निर्जीव प्रतीत होता है। हिमालय की कंदराओं में, जहाँ सर्दी के समय आसानी से भोजन नहीं मिलता, कुछ ऐसी साही रहते हैं जो महीनों तक सोते रहते हैं और निद्रा के दौरान उनकी श्वास की प्रक्रिया रुक जाती है। यदि ये सब पशु बिना श्वास लिए जीवित रह सकते हैं, तो मनुष्य के लिए ऐसा कर पाना संभव क्यों नहीं है?'

ब्रह्मा के विचित्र तथ्यपूर्ण वक्तव्य सचमुच रोचक हैं, परंतु वे उसके द्वारा दिखाए कारनामों जितने संतोषजनक नहीं हैं। यह एक आम धारणा है कि जीवित रहने के लिए श्वास

लेना अनिवार्य है और इस धारणा को कुछ मिनटों की बातचीत के आधार पर पूरी तरह नज़रअंदाज़ नहीं किया जा सकता।

‘हम पश्चिमवासियों को यह बात समझने में कठिनाई होती है कि श्वास प्रक्रिया के अभाव में शरीर जीवित कैसे रह सकता है।’

‘जीवन सदा चलता रहता है,’ योगी गूढ़ ढंग से उत्तर देता है। ‘मृत्यु केवल शरीर की एक आदत है।’

‘परंतु इसका यह अर्थ तो नहीं हो सकता कि मृत्यु पर विजय प्राप्त करना संभव है?’ मैं विश्वास के साथ पूछता हूँ। ब्रह्मा मेरी और विचित्र ढंग से देखता है।

‘क्यों नहीं?’ हमारे बीच तनावपूर्ण मौन व्याप्त हो जाता है। वह मुझे ध्यान से देखने लगता है मानो कुछ खोज रहा हो।

‘आपके अंदर चूँकि समझने की संभावना मौजूद है, इसलिए मैं आपको अपना एक पुराना रहस्य बता रहा हूँ। परंतु इसके लिए आपको मेरी एक शर्त माननी होगी।’

‘वह क्या?’

‘आप उन अभ्यासों को छोड़कर, जो मैंने आपको सिखाए हैं, किसी भी श्वास प्रक्रिया को प्रयोग की तरह करने का प्रयास नहीं करेंगे।’

‘मुझे मंजूर है!’

‘ठीक है, तो फिर आप अपने वचन पर क़ायम रहिएगा। आप अभी तक यही मानते आए हैं कि श्वास के पूरी तरह रुक जाने से मृत्यु हो जाती है।’

‘हाँ।’

‘तो फिर क्या यह मान लेना तर्कसंगत नहीं है कि हम जितनी देर तक अपने श्वास को शरीर के भीतर रोक सकते हैं, उतनी अवधि तक, हमारा शरीर भी जीवित रह सकता है?’

‘देखिए...?’

‘हम इससे अधिक और कोई दावा नहीं करते। हम सिर्फ़ इतना कहते हैं कि श्वास-नियंत्रण की प्रक्रिया में पारंगत व्यक्ति, जो पूरी तरह अपनी इच्छा से अपने श्वास को रोक सकता है, अपनी जीवनधारा को सुरक्षित रख सकता है। क्या आप इस बात को समझे?’

‘हाँ, शायद!’

‘अब ऐसे योगी की कल्पना कीजिए, जो अपनी श्वास को कुछ मिनटों तक नहीं, बल्कि कई सप्ताह अथवा महीनों या फिर वर्षों तक रोक कर रख सकता है। आप इस बात को स्वीकार करते हैं कि जहाँ श्वास है, वहाँ जीवन है। तो क्या अब आपको मनुष्य के दीर्घायु होने की संभावना दिखाई देती है?’

मैं मौन हो जाता हूँ। मैं इस बात को ग़लत कैसे कह सकता हूँ? परंतु मैं इसे स्वीकार भी कैसे कर सकता हूँ? क्या इससे मध्यकालीन युग के उन यूरोपीय कीमियागरों के दिवास्वप्नों की स्मृति लौट नहीं आती जो जीवन के लिए अमृत की कामना करते थे परंतु एक-एक करके मृत्यु का ग्रास बन गए? परंतु यदि ब्रह्मा स्वयं भ्रमित नहीं है, तो वह मुझे भ्रमित करने का प्रयास क्यों करेगा? उसने मुझे अपने पास नहीं बुलाया और न ही वह शिष्य बनाने का कोई प्रयास करता है।

मेरे मन में अजीब-सा भय पैदा हो जाता है। क्या यह योगी पागल है? नहीं, यह काफ़ी समझदार है और अन्य मामलों में तर्कसंगत लगता है। क्या इसे भ्रमित मान लेना उचित होगा? परंतु मेरे भीतर कुछ है, जो इस निष्कर्ष को भी स्वीकार नहीं करता। मैं स्तब्ध हूँ।

'क्या मैं आपको संतुष्ट नहीं कर सका हूँ?' वह फिर पूछता है। 'क्या आपने उस फ़क़ीर की कहानी नहीं सुनी, जिसे महाराजा रणजीत सिंह ने लाहौर में एक संदूक में बंद करके दफ़ना दिया था? उस फ़क़ीर को अंग्रेज़ी सेना के अधिकारियों की उपस्थिति में दफ़नाया गया था। उस पूरी प्रक्रिया को सिखों के अंतिम राजा ने स्वयं अपनी आँखों से देखा था। उस फ़क़ीर के मक़बरे पर छह सप्ताह तक सैनिकों ने सुरक्षा पहरा दिया था। परंतु वह फ़क़ीर स्वस्थ और जीवित बाहर निकल आया! इस कहानी की जाँच कीजिए क्योंकि मुझे यह बताया गया है कि यह आपके सरकारी दस्तावेज़ में कहीं दर्ज है।'

'उस फ़क़ीर ने निश्चित रूप से अपनी श्वास पर पूर्ण नियंत्रण प्राप्त कर लिया था और वह श्वास को अपनी इच्छा से कितने भी देर तक रोक सकता था। वह योग में पारंगत नहीं था, क्योंकि मैंने किसी वृद्ध व्यक्ति से सुना है, जो उसे जानता था कि, उस फ़क़ीर का चरित्र अच्छा नहीं था। उसका नाम हरिदास था और वह उत्तर में कहीं रहता था। यदि वह व्यक्ति वायुरहित स्थान पर इतने लंबे समय तक बिना श्वास लिए जीवित रह सकता है, तो सोचिए, योग के सच्चे गुरुओं द्वारा क्या कुछ किया जा सकता है, जो गुप्त रूप से अभ्यास करते हैं और धन अर्जित करने के लिए इस तरह के चमत्कार नहीं करते!'*

हमारी बातचीत के बाद दीर्घ मौन व्याप्त हो जाता है।

'ऐसी अनेक शक्तियाँ हैं जो योग द्वारा अर्जित की जा सकती हैं, परंतु आज के भ्रष्ट समय में, उन शक्तियों को अर्जित करने के लिए कौन इतना भारी दाम देगा?'

हमारे बीच फिर मौन व्याप्त हो जाता है।

'हम लोग प्रतिदिन जो कार्य करते हैं और जीते हैं, उसके द्वारा हमारे पास इन शक्तियों को अर्जित किए बिना भी, वह सब कुछ पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध है,' मैं अपनी रक्षा में उत्तर देता हूँ।

'हाँ,' ब्रह्मा मेरी बात से सहमत होते हुए कहता है, 'शारीरिक नियंत्रण का यह मार्ग केवल कुछ ही लोगों के लिए है। इसीलिए इस विज्ञान के गुरुओं ने अनेक शताब्दियों से इसे

गुप्त रखा है। वे शिष्यों की तलाश नहीं करते, बल्कि शिष्य उन्हें खोजते हैं।'



अगली बार हमारी मुलाक़ात मेरे घर पर होती है। शाम का समय है और हम कुछ देर बाद रात्रि भोजन के लिए उठ जाते हैं। भोजन करने और कुछ देर आराम के बाद, हम चाँदनी से रोशन बरामदे में बैठ जाते हैं। मैं कुर्सी पर बैठता हूँ जबकि योगी को फ़र्श पर चटाई बिछाकर बैठना अधिक सुविधाजनक लगता है।

हम लोग कुछ देर बाहर चुपचाप बैठकर चंद्रमा के प्रकाश का आनंद लेते हैं।

मुझे पिछली मुलाक़ात में देखे आश्चर्यजनक कारनामों के विषय में सबकुछ याद है। मैं जल्द ही मौत को चुनौती देने वाले इन अविश्वसनीय लोगों के बारे में फिर से बातचीत शुरू कर देता हूँ।

'क्यों नहीं?' ब्रह्मा अपना मनपसंद सवाल पूछता है। 'शारीरिक नियंत्रण के योग में सिद्धहस्त एक योगी है, जो दक्षिण के नीलगिरी पर्वतों में कहीं रहता है। वह अपना स्थान छोड़कर कहीं नहीं जाता। उत्तर में भी एक योगी है, जिसका घर हिमालय की किसी गुफा में है। आप इन लोगों से मिल नहीं सकते क्योंकि ये संसार से दूर रहते हैं। परंतु इन लोगों की उपस्थिति हमारे लिए एक परंपरा है और हमें बताया गया है कि यह लोग सैकड़ों वर्षों से जीवित हैं!'

'क्या आपको सचमुच इस पर विश्वास है?' मैं संशयपूर्वक पूछता हूँ।

'निश्चय ही! क्या मेरे अपने गुरु का उदाहरण मेरे सामने नहीं है?'

एक प्रश्न, जो मेरे दिमाग़ में कई दिनों से है, फिर उभर आता है। मैं अभी तक इसे पूछने में संकोच कर रहा था परंतु अब हमारी मित्रता इतनी घनिष्ठ हो गई है कि मैं उस प्रश्न को पूछ लेता हूँ। मैं योगी की ओर निष्ठापूर्वक देखकर पूछता हूँ:

'ब्रह्मा, आपके गुरु कौन हैं?'

वह मेरी ओर देखता है परंतु कोई उत्तर नहीं देता। वह मुझे संकोचपूर्वक देख रहा है।

वह जब बोलना शुरू करता है, तो उसका स्वर धीमा और गंभीर है:

'मेरे गुरु को उनके दक्षिण में रहने वाले शिष्य येरुंबू स्वामी के नाम से जानते हैं। इसका अर्थ है, चींटी शिक्षक!'

'बड़ा विचित्र नाम है!' मैं अचानक बोल पड़ता हूँ।

'मेरे गुरु अपने साथ हमेशा एक झोले में पिसा चावल रखते हैं और वे उसे चीटियों को खिलाते रहते हैं। परंतु उत्तर में हिमालय के गाँव में जहाँ वे कभी-कभी रहते हैं, उनका नाम

कुछ अलग है।'

'क्या वे शारीरिक नियंत्रण के योग में पूरी तरह सिद्धहस्त हैं?'

'हाँ, यह सही बात है।'

'और आपको लगता है कि वे...?'

'मेरा मानना है कि उनकी आयु चार सौ वर्ष से अधिक है,' ब्राह्मण मेरा वाक्य समाप्त कर देता है।

सहसा हमारे बीच तनावपूर्ण मौन व्याप्त हो जाता है।

मैं उसकी ओर आश्चर्य से देखता हूँ।

'उन्होंने मुझे कई बार बताया है कि मुगल बादशाहों के शासनकाल के दौरान क्या कुछ हुआ। उन्होंने मुझे उन दिनों की कहानियाँ भी सुनाई हैं जब आपकी ईस्ट इंडिया कंपनी पहली बार मद्रास आई थी।'

पाश्चात्य व्यक्ति के कानों के लिए ऐसे वक्तव्यों को स्वीकार करना बहुत मुश्किल है।

'परंतु कोई भी छोटा बच्चा, जिसने इतिहास की क़िताब पढ़ी है, ये सब बातें बता सकता है,' मैं अपना तर्क देता हूँ।

ब्रह्मा मेरी बात को नज़रअंदाज़ कर दे देता है और आगे कहता है:

'मेरे गुरु को पानीपत की पहली लड़ाई बहुत अच्छी तरह ध्यान है।* मेरे गुरु पलासी के युद्ध को भी नहीं भूले हैं।** मुझे याद आता है कि उन्होंने किस तरह बेशुदानंद नामक अपने एक शिष्य को अस्सी वर्ष का बालक कहकर पुकारा था!'

मैं चंद्रमा के प्रकाश में साफ़ देख सकता हूँ कि इन शब्दों को कहते हुए ब्रह्मा की भाव-भंगिमा में कोई परिवर्तन नहीं हुआ है। मेरा मस्तिष्क, जो जाँच-पड़ताल के कड़े तरीक़ों को पढ़कर परिपक्व हुआ है, इस तरह की धारणाओं को कैसे स्वीकार कर सकता है? आख़िरकार, ब्रह्मा हिंदू है और उसके भीतर किंवदंतियों को स्वीकार करने की क्षमता अवश्य होगी। उसका विरोध करना व्यर्थ है। मैं चुप रहता हूँ। योगी आगे कहता है:

'मेरे गुरु ग्यारह वर्ष से अधिक समय तक भारत और तिब्बत के बीच पड़ने वाले नेपाल राज्य के एक पुराने महाराजा के आध्यात्मिक गुरु रह चुके हैं। उन्हें गाँव के लोग अच्छी तरह जानते हैं और बहुत प्यार करते हैं। वे लोग मेरे गुरु को भगवान की तरह मानते हैं। परंतु मेरे गुरु उनसे बहुत विनम्र भाव से बातचीत करते हैं, जिस तरह एक पिता अपने बच्चों से बात करता है। उन्हें जाति के नियमों पर बिलकुल विश्वास नहीं है और वे मछली या मांस भी नहीं खाते।'

'किसी भी मनुष्य के लिए इतने वर्षों तक जीवित रहना कैसे संभव है?' मेरे विचार स्वतः बाहर निकल रहे हैं। ब्रह्मा किसी अन्य दिशा में देखने लगता है, मानो उसे मेरी उपस्थिति का

एहसास ही नहीं है।

'ऐसा करने के तीन तरीक़े हैं। पहला तरीक़ा है, सभी आसनों और श्वास क्रियाओं का अभ्यास करना तथा शारीरिक नियंत्रण के लिए नियमित रूप से अभ्यास करना। यह अभ्यास तब तक जारी रखना चाहिए जब तक व्यक्ति इसमें पारंगत नहीं हो जाता। ऐसा करने के लिए एक योग्य गुरु का होना आवश्यक है जो आपको ये अभ्यास करना सिखा सके। दूसरा तरीक़ा है, कुछ विशिष्ट जड़ी-बूटियों का नियमित रूप से सेवन करना। इन बूटियों के विषय में केवल जानकार लोगों को ही पता है, जो इनका व्यापक अध्ययन कर चुके हैं। ये लोग जड़ी-बूटियों को अपने साथ रखते हैं और कहीं घूमने जाते समय, अपने कपड़ों में छिपाकर ले जाते हैं। इन सिद्धहस्त योगियों का जब पृथ्वीलोक से जाने का समय निकट आता है तो ये किसी योग्य शिष्य को चुनकर उसे सारे रहस्य बताते हैं और जड़ी-बूटियों का ज्ञान भी देते हैं। यह विद्या हर किसी को नहीं दी जाती। तीसरे तरीक़े को समझा पाना सरल रही नहीं है।' यह कहकर ब्रह्मा अचानक रुक जाता है।

'क्या आप उसे समझाने का प्रयास नहीं करेंगे?' मैं अनुरोध करता हूँ।

'हो सकता है, आपको मेरी बात पर हँसी आ जाए!'

मैं ब्रह्मा को आश्वासन देता हूँ कि मैं उसकी बात का उचित सम्मान करूँगा।

'अच्छी बात है। मनुष्य के मस्तिष्क में एक बहुत छोटा छिद्र होता है* उस छिद्र के भीतर आत्मा का निवास होता है। इस छिद्र के ऊपर एक प्रकार का वाल्व होता है, जो छिद्र की रक्षा भी करता है। मनुष्य की रीढ़ की हड्डी के तल में प्राणवायु प्रवाहित होती है जो हमें दिखाई नहीं देती और जिसके विषय में मैंने आपको पहले भी कई बार बताया है। प्राणवायु का प्रवाह निरंतर घटने के कारण ही शरीर बूढ़ा होता है और इस प्रवाह के तेज़ होने से शरीर को नया जीवन मिलता है। मनुष्य जब अपने ऊपर पूर्ण नियंत्रण प्राप्त कर लेता है तो उसे थोड़े-से अभ्यास द्वारा प्राणवायु के प्रवाह पर भी नियंत्रण हो जाता है। केवल कुछ पारंगत योगियों को ही इसका ज्ञान है। मनुष्य जब इतना तैयार हो जाता है कि प्राणवायु को अपनी रीढ़ की हड्डी में रोक सकता है, तो वह मस्तिष्क के उस छिद्र पर ध्यान केंद्रित करने का प्रयास करता है। परंतु उसकी सुरक्षा करने वाले वाल्व को खोलने के लिए एक योग्य गुरु द्वारा प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है, अन्यथा इस कार्य में सफलता नहीं मिल सकती। यदि कोई ऐसा गुरु मिल जाए जो यह विद्या सिखा सके, तो प्राणवायु को छिद्र में प्रवेश करवाया जा सकता है। हम उसी को दीर्घायु का अमृत कहते हैं। यह कोई सरल कार्य नहीं है क्योंकि जो व्यक्ति इसे अपने स्तर पर करने का प्रयास करता है, उसकी मृत्यु भी हो सकती है। परंतु इसमें सफलता मिलने पर मनुष्य अपनी इच्छा से अपनी मृत्यु का समय चुन सकता है और तब उसे वास्तविक मृत्यु पर विजय प्राप्त करने की शक्ति मिल जाती है। वह किसी भी समय मृत्यु को चुन सकता है और बहुत जाँच-पड़ताल करने के बाद भी ऐसा ही प्रतीत

होता है कि उसकी मृत्यु स्वाभाविक रूप से हुई है। जिस व्यक्ति के पास इन तीनों तरीक़ों का ज्ञान है, वह सैकड़ों वर्षों तक जीवित रह सकता है। मुझे यही सिखाया गया है। उसकी मृत्यु होने के बाद भी उसके शरीर में कीटाणुओं का संक्रमण नहीं होता और एक शताब्दी बाद भी उसके शरीर का क्षय नहीं होता!'

मैं यह बात समझाने के लिए ब्रह्मा का धन्यवाद करता हूँ। मुझे बहुत आश्चर्य हो रहा है। मुझे यह सब रोचक तो लग रहा है, परंतु मैं अभी तक आश्वस्त नहीं हूँ। मानव शरीर विज्ञान ऐसे किसी प्रवाह के विषय में नहीं जानता जिसकी चर्चा ब्रह्मा ने की और न ही उसे किसी ऐसे अमृत का ज्ञान नहीं है। क्या शारीरिक आश्चर्यों से जुड़ी ये कथाएँ केवल अंधविश्वास और भ्रांतियाँ हैं? ये बातें व्यक्ति को कहानी-किस्सों के युग में ले जाती हैं और इन्हें सुनकर व्यक्ति उन कलंदरों और जादूगरों के समय में लौट जाता है जो जीवन अमृत की बातें करते हैं। तथापि, ब्रह्मा ने श्वास और रक्त के प्रवाह पर नियंत्रण के जो कारनामे मुझे दिखाए, उससे इस बात का भरोसा

अवश्य मिलता है कि यौगिक शक्तियाँ केवल पाखंड नहीं हैं और इन शक्तियों को निश्चित रूप से आश्चर्यजनक कार्यों में प्रयोग किया जा सकता है। यहाँ तक पहुँचने आने बाद मेरे लिए ब्रह्मा के साथ आगे चल पाना मुश्किल है।*

मैं ब्रह्मा का आदर करता हूँ, इसलिए चुप रहता हूँ। मैं इस बात का ध्यान रखता हूँ कि मेरा बौद्धिक संघर्ष मेरे चेहरे पर दिखाई न दे।

ब्रह्मा आगे कहता है, 'ऐसी शक्तियों की इच्छा उन लोगों को अधिक होती है जिनकी मृत्यु निकट होती है। परंतु हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि इन शक्तियों को प्राप्त करने का रास्ता ख़तरों से भरा हुआ है। क्या आप मानेंगे कि हमारे गुरु इन अभ्यासों के बारे में कहते हैं: इन्हें इस तरह छुपाकर रखो, जैसे आप हीरों से भरे संदूक को छुपाकर रखते हो!'

'इसका मतलब, आप मुझे वह रहस्य नहीं बताएँगे?'

'जो इस विद्या में पारंगत होना चाहते हैं, उन्हें दौड़ने से पहले चलना सीखना होगा!' ब्राह्मण एक हल्की-सी मुस्कराहट के साथ उत्तर देता है।

'ब्रह्मा, मैं एक अंतिम प्रश्न करना चाहता हूँ।'

योगी सिर हिलाकर हामी भरता है।

'आपके गुरु कहाँ रहते हैं?'

'वे तराई जंगल की दूसरी ओर नेपाल के पहाड़ों में स्थित एक मंदिर में रहते हैं।'

'क्या उनके मैदानी इलाक़ों में लौटने की कोई संभावना है?'

'उनकी गतिविधियों के विषय में कौन भविष्यवाणी कर सकता है? वे नेपाल में कई वर्षों तक भी रह सकते हैं या फिर दोबारा अपनी यात्रा आरंभ कर सकते हैं। उन्हें नेपाल बहुत

पसंद है क्योंकि भारत की अपेक्षा योग वहाँ अधिक पनप रहा है। देखिए, शारीरिक नियंत्रण की शिक्षा, अलग-अलग जगहों पर भिन्न प्रकार से दी जाती है। हमारी पद्धति तंत्र पर आधारित है, जो हिंदुओं की अपेक्षा नेपाल के वातावरण में बेहतर तरीक़े से समझी जाती है।'

ब्रह्मा फिर चुप हो जाता है। मेरा अनुमान है कि वह अपने गुरु के प्रभावशाली व्यक्तित्व का ध्यान कर रहा है। मैंने जो बातें आज सुनी हैं, वे यदि काल्पनिक न होकर सच हैं, तो वास्तव में हमें एक दीर्घायु या कहें, अमर मनुष्य की झलक मिल सकती है!



मैंने यदि अपनी क़लम तेज़ी से नहीं चलाई, तो यह अध्याय कभी पूरा नहीं होगा। इसलिए मैं उस पाँच नाम वाले योगी के साथ अपनी भेंट का अंतिम यादगार दृश्य बताने का प्रयास करता हूँ। भारत में शाम के बाद, रात बहुत जल्दी हो जाती है। यहाँ यूरोप की तरह सूर्यास्त अधिक समय तक नहीं रहता। जैसे-जैसे ब्राह्मण की कुटिया पर संध्या का अंधकार छाने लगता है, वह एक लालटेन जलाकर उसे एक डोरी द्वारा छत से लटका देता है। हम दोबारा बैठ जाते हैं। वृद्ध विधवा महिला मुझे योगी के साथ अकेला छोड़ चुपचाप वहाँ से चली जाती है। हमारे साथ वह युवक भी है जो हमारे बीच दुभाषिये का काम कर रहा है। जलती अगरबत्ती की सुगंध से कमरे का वातावरण आध्यात्मिक बनने लगता है।

आज शाम को ब्रह्मा से विदा लेने के उदास विचार मेरे ऊपर हावी हैं। मैं उन्हें नज़रअंदाज़ करने की कोशिश करता हूँ परंतु इसमें सफल नहीं हो पाता। मैं इस दुभाषिये के रूप में बैठे अवरोध के कारण ब्रह्मा को स्पष्ट रूप से नहीं बता सकता कि मेरे हृदय में क्या चल रहा है। उसने जो तथ्य और विचित्र सिद्धांत मुझे बताए हैं वे किस सीमा तक सही हैं। मैं उसे यह नहीं कह सकता, परंतु मैं इस बात के लिए उसकी प्रशंसा करता हूँ कि उसने मुझे अपने एकांतवास में प्रवेश करने दिया। मुझे बीच-बीच में ऐसा भी महसूस हुआ कि हमारे हृदय में एक दूसरे के प्रति सहानुभूति विकसित हो रही है। मैं अब यह भी समझ सकता हूँ कि उसके लिए इस आदत को छोड़ने का क्या अर्थ होगा।

मैं ब्रह्मा से विदाई की इस बेला में आज रात एक अंतिम प्रयास करूँगा कि वह अपने गूढ़ रहस्य मेरे सामने प्रकट कर दे।

ब्रह्मा पूछता है, 'क्या आप शहरी जीवन का त्याग करके पर्वतों या जंगलों में कुछ वर्षों तक एकांत और एकाकी जीवन बिताने के लिए तैयार हैं?'

'मुझे सोचने के लिए समय चाहिए, ब्रह्मा!'

'क्या आप अपनी अन्य गतिविधियों, अपने कार्य, अपने मनोरंजन आदि को छोड़कर

कुछ महीनों के लिए नहीं, अपितु कई वर्षों के लिए, अपना समय हमारी पद्धति का अभ्यास करने में बिताने के लिए तैयार हैं?'

'मुझे ऐसा नहीं लगता। नहीं, मैं अभी तैयार नहीं हूँ। शायद एक दिन...'

'तो फिर मैं आपको यहाँ से आगे नहीं ले जा सकूँगा। शारीरिक नियंत्रण की यह योग प्रक्रिया बहुत गंभीर है और उसे किसी व्यक्ति के मनोरंजन का हिस्सा नहीं बनाया जा सकता!'

मैं योगी बनने की अपनी संभावना को तेज़ी से समाप्त होता हुआ महसूस कर रहा हूँ। मुझे यह सोचकर दुःख हो रहा है कि यह पद्धति और इसके लिए आवश्यक कठिन प्रशिक्षण एवं कड़ा अनुशासन मेरे लिए नहीं है। परंतु इसमें ऐसा कुछ अवश्य है जो शारीरिक शक्तियों की अपेक्षा मेरे हृदय के अधिक निकट है। मैं योगी को विश्वास में लेकर यह बता देता हूँ।

'ब्रह्मा, ये शक्तियाँ सचमुच बहुत शानदार और मनमोहक हैं। मैं एक दिन अवश्य तुमसे अधिक गहराई से प्रशिक्षण प्राप्त करना चाहूँगा। परंतु इनसे आख़िर, स्थाई आनंद कितना और किस सीमा तक प्राप्त हो सकता है? क्या योग में इससे बेहतर और कुछ नहीं है? शायद मैं अपनी बात को ठीक से समझा नहीं सका हूँ।'

ब्रह्मा सिर हिलाकर कहता है: 'मैं समझता हूँ!'

हम दोनों मुस्कराते हैं।

'हमारे ग्रंथ कहते हैं, बुद्धिमान मनुष्य शारीरिक नियंत्रण की योग पद्धति के साथ मानसिक नियंत्रण का योगाभ्यास करेगा,' ब्रह्मा धीरे-से कहता है। 'ऐसा कहा जा सकता है कि पहला अभ्यास मनुष्य को दूसरे चरण के लिए तैयार करता है। हमारे प्राचीन गुरुओं ने इस पद्धति के सिद्धांतों को जब भगवान शिव से प्राप्त किया था, तो उन्हें बताया गया था कि इसका अंतिम उद्देश्य पूर्ण रूप से भौतिक नहीं है। वे समझ गए थे कि शारीरिक नियंत्रण को मस्तिष्क पर नियंत्रण की दिशा में सिर्फ़ एक क़दम की तरह देखना चाहिए और उसके आगे बढ़कर व्यक्ति को आध्यात्मिक रूप से आदर्श बनना चाहिए।'

'आप देख सकते हैं कि हमारी पद्धति शरीर के माध्यम से आत्मा तक पहुँचने का प्रयास करती है। इसीलिए मेरे गुरु ने मुझे सिखाया है: "पहले अपने शरीर को नियंत्रित करो। उसके बाद मस्तिष्क पर नियंत्रण प्राप्त कर सकते हो।" याद रखिए, जो शरीर पूर्ण रूप से नियंत्रित है, वह मस्तिष्क को भटकाने में सफल नहीं हो सकता। बहुत कम लोग हैं जो सीधा विचारों पर नियंत्रण पाने के मार्ग पर चल पड़ते हैं। इसके बावजूद यदि कोई व्यक्ति मानसिक नियंत्रण के पथ पर आगे बढ़ना चाहता है तो हम हस्तक्षेप नहीं करते क्योंकि फिर वह उसका अपना मार्ग बन जाता है।'

'और वह विशुद्ध मानसिक योग है?'

‘हाँ, ऐसा ही है। यह ऐसे प्रशिक्षण की तरह है जिसमें मस्तिष्क को एक स्थिर प्रकाश में बदलने का प्रयास किया जाता है और उसके बाद उस प्रकाश को आत्मा के निवास-स्थान की ओर मोड़ दिया जाता है।’

‘इस तरह का प्रशिक्षण कब आरंभ किया जा सकता है?’

‘इसके लिए भी गुरु की आवश्यकता होती है।’

‘कहाँ?’

ब्रह्मा कंधे उचका देता है।

‘भाई, जो लोग भूखे हैं, वे भोजन की तलाश करते हैं। परंतु जो भूख से मर रहे हैं, वे भोजन के पीछे पागलों की तरह दौड़ते हैं। आप जब भूख से तड़प रहे व्यक्ति की तरह अपने गुरु को खोजेंगे तो आपको अवश्य कोई गुरु मिल जाएगा। जो लोग निष्ठापूर्वक गुरु की खोज करते हैं, उन्हें नियत समय पर गुरु की प्राप्ति अवश्य होती है।’

‘आपका मानना है कि इस संबंध में भी मनुष्य की नियति होती है?’

‘आप ठीक कह रहे हैं!’

‘मैंने कुछ क़िताबें देखी हैं...’

योगी अपना सिर हिला देता है।

‘गुरु के बिना आपकी क़िताब काग़ज़ के टुकड़े से अधिक कुछ नहीं है। हमारे यहाँ “गुरु” शब्द का अर्थ है - जो अंधकार को दूर करता है। जिस व्यक्ति के प्रयास और उसकी नियति पूर्ण रूप से उसके पक्ष में होते हैं वह बहुत जल्दी प्रकाश की ओर बढ़ जाता है क्योंकि ऐसे में गुरु स्वयं अपनी शक्तियों का प्रयोग करके शिष्यों को लाभ देता है।’

ब्रह्मा कोने में रखी बेंच की ओर जाता है और वहाँ काग़ज़ों के ढेर में से एक बड़ा-सा दस्तावेज़ लेकर लौटता है और मुझे दे देता है। उस काग़ज़ पर बड़े व्यवस्थित ढंग से अनेक रहस्यमय गूढ़ संकेत, कुछ विचित्र प्रतीक और लाल, हरी तथा काली स्याही से तमिल अक्षर लिखे हुए हैं। उस काग़ज़ के सबसे ऊपर एक बड़ा-सा चित्रलिप्यात्मक प्रतीक बना हुआ है जिसमें सूर्य, चंद्रमा और मनुष्य की आँखों के चित्रात्मक प्रतीक आसानी से पहचान सकता हूँ। इन सभी चित्रों और लिखित सामग्री को केंद्र में स्थित ख़ाली जगह के इर्द-गिर्द बनाया गया है।

‘कल रात, मैंने इसे बनाने में काफ़ी समय लगाया है,’ ब्रह्मा कहता है। ‘आप जब यहाँ से जाएँ तो इस बीच की ख़ाली जगह में मेरा एक चित्र चिपका दें।’

वह मुझे बताता है कि यदि मैं रात को सोने से पहले, इस विचित्र काग़ज़ पर 5 मिनट तक ध्यान केंद्रित करूँगा तो मुझे बहुत स्पष्ट रूप से ब्रह्मा का सपना दिखाई देगा।

‘यदि हमारे भौतिक शरीरों के बीच 5000 मील की दूरी है, तो भी इस काग़ज़ पर अपने

विचारों को केंद्रित करते ही हमारी आत्माएँ मिल जाएँगी।’ वह बड़े आत्म-विश्वास से कहता है। वह बताता है, ‘स्वप्न में होने वाली हमारी मुलाक़ात उतनी ही वास्तविक और सच्ची होगी, हम जिस तरह अभी मिलते हैं।’

मैं यह बताना चाहता हूँ कि मेरा सामान बँध चुका है और मैं शीघ्र ही यहाँ से चला जाऊँगा। मुझे इस बात में संदेह है कि मैं दोबारा, कब और कहाँ, ब्रह्मा से मिलूँगा!

वह उत्तर देता है कि उसे इस बात में कोई संदेह नहीं कि हम लोगों की नियति में जो लिखा है वह अवश्य होगा और फिर वह मुझे कहता है:

‘मैं वसंत-ऋतु के समय यह स्थान छोड़कर तंजोर जिले में चला जाऊँगा। वहाँ दो शिष्य मेरी प्रतीक्षा कर रहे हैं। यह कौन कह सकता है कि वहाँ क्या होगा, क्योंकि आप तो जानते हैं कि मुझे पूरी उम्मीद है कि एक दिन मुझे अपने गुरु का बुलावा अवश्य आएगा।’

हम दोनों के बीच दीर्घकालिक मौन व्याप्त है। तभी ब्रह्मा बहुत धीमी आवाज़ में मेरा नाम पुकारकर उस मौन को तोड़ देता है। मैं दुभाषिये को देखता हूँ और इस बात की प्रतीक्षा करता हूँ कि मुझे फिर कोई नई बात सुनने को मिलेगी।

‘कल रात मेरे गुरु मेरे समक्ष प्रकट हुए थे। उन्होंने मुझे तुम्हारे बारे में कहा कि तुम्हारा मित्र ज्ञान प्राप्त करने के लिए उत्सुक है। वह पिछले जन्म में हम लोगों जैसा था। उसने योगाभ्यास किया परंतु वह हमारी परंपरा का नहीं था। वह आज फिर हिंदुस्तान लौटा है, परंतु वह विदेशी है। वह पहले जो कुछ जानता था, उसे भूल चुका है। उसके ऊपर जब तक किसी गुरु की कृपा नहीं होगी, वह अपने पूर्व संचित ज्ञान से दोबारा परिचित नहीं हो सकेगा। उस ज्ञान को फिर से प्राप्त करने के लिए गुरु का स्पर्श आवश्यक है। उससे कहो कि उसे जल्द ही एक गुरु मिलेगा और फिर उसे ज्ञान की प्राप्ति अपने आप हो जाएगी। यह निश्चित बात है। उसकी बेचैनी को दूर करो। वह गुरु और ज्ञान प्राप्त किए बिना हमारी धरती से नहीं लौटेगा। यह उसके भाग्य में नियत है कि वह यहाँ से ख़ाली हाथ नहीं जाएगा!’

मैं आश्चर्य से पीछे हट गया। लालटेन का प्रकाश हम तीनों पर पड़ रहा है। मेरे युवा दुभाषिये का चेहरा भी आश्चर्य से भरा है।

‘क्या आपने यह नहीं कहा था कि आपके गुरु यहाँ से बहुत दूर नेपाल में हैं?’ मैंने पूछा।

‘निस्संदेह, गुरु वहीं रहते हैं।’

‘तो फिर वह एक रात में बारह हजार मील की दूरी कैसे तय कर सकते हैं?’

ब्रह्मा रहस्यमय ढंग से मुस्कराता है।

‘हम दोनों के बीच संपूर्ण भारतवर्ष की दूरी मौजूद है, परंतु मेरे गुरु सदा मेरे साथ रहते हैं। मैं किसी चिट्ठी या संदेशवाहक के बिना भी उनका संदेश प्राप्त कर सकता हूँ। उनके विचार वायु के माध्यम से मुझ तक पहुँचते हैं। उनका संदेश मेरे पास आ जाता है और मैं उसे

समझ लेता हूँ।'

'टेलीपैथी?'

'आप जो चाहें, समझें!'

मैं उठ जाता हूँ क्योंकि मेरा जाने का समय हो चुका है। हम लोग का एक-साथ बाहर निकलते हैं और मंदिर की प्राचीन दीवारों के किनारे चलने लगते हैं। वहाँ लगे वृक्षों की शाखाओं के बीच से चंद्रमा का प्रकाश छनकर आ रहा है। हम खजूर के वृक्षों के बीच से होते हुए गुज़र रहे हैं।

मुझसे विदा लेते समय ब्रह्मा धीरे से कहता है:

'आपको पता है मेरे पास बहुत कम चीज़ें हैं। मेरे लिए इसका बहुत महत्त्व है, यह रख लीजिए!'

ऐसा कहकर वह अपने बाएँ हाथ की छोटी अँगुली पकड़कर खींचता है। फिर वह अपने बाएँ हाथ की हथेली को आगे करता है। मुझे चंद्रमा की रोशनी में उसके हाथ पर रखी एक चमकती हुई स्वर्ण-मुद्रिका दिख रही है। हरे रंग के एक गोल पत्थर को, जिस पर हल्के लाल रंग की धारियाँ बनी हैं, आठ पतले पंजों ने जकड़ रखा है। ब्रह्मा उस मुद्रिका को मेरे हाथ पर रख देता है। मैं उस अप्रत्याशित उपहार को लौटाने का प्रयास करता हूँ, परंतु वह मेरे हाथ को और कसकर पकड़ लेता है और मुद्रिका वापस लेने से मना कर देता है।

'योग के एक महान विद्वान ने मुझे यह मुद्रिका दी थी। उन दिनों मैं ज्ञान की तलाश में बहुत दूर-दूर घूमता था। मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ कि आप इसे पहन लीजिए।'

मैं ब्रह्मा को धन्यवाद देता हूँ और उससे मज़ाक़िया लहजे में पूछता हूँ:

'क्या यह मेरे लिए भाग्यशाली सिद्ध होगी?'

'नहीं, मैं ऐसा नहीं कह सकता। परंतु इस पत्थर के अंदर शक्तिशाली मंत्र है, जो आपको रहस्यमय ऋषि-मुनियों के समीप पहुँचने में सहायता करेगा। यह आपके भीतर गूढ़ शक्तियों को जाग्रत करने में भी आपकी सहायता करेगा। आपको जब कभी इन चीज़ों की ज़रूरत हो, तो इसे पहन लीजिए!'

हम लोग एक-दूसरे से अंतिम बार विदाई लेते हैं और फिर अपने-अपने रास्ते चल पड़ते हैं।

मैं धीमी गति से चलने लगता हूँ। मेरे मस्तिष्क में विचारों में उथल-पुथल मची है। मैं ब्रह्मा के सुदूरवर्ती गुरु के असाधारण संदेश के विषय में सोच रहा हूँ। यह इतना असाधारण है कि मैं इस पर कोई विवाद नहीं कर सकता। मैं शांत हो जाता हूँ। इस बीच मेरे हृदय में विश्वास और संदेह के बीच ज़बरदस्त संघर्ष चल रहा है।

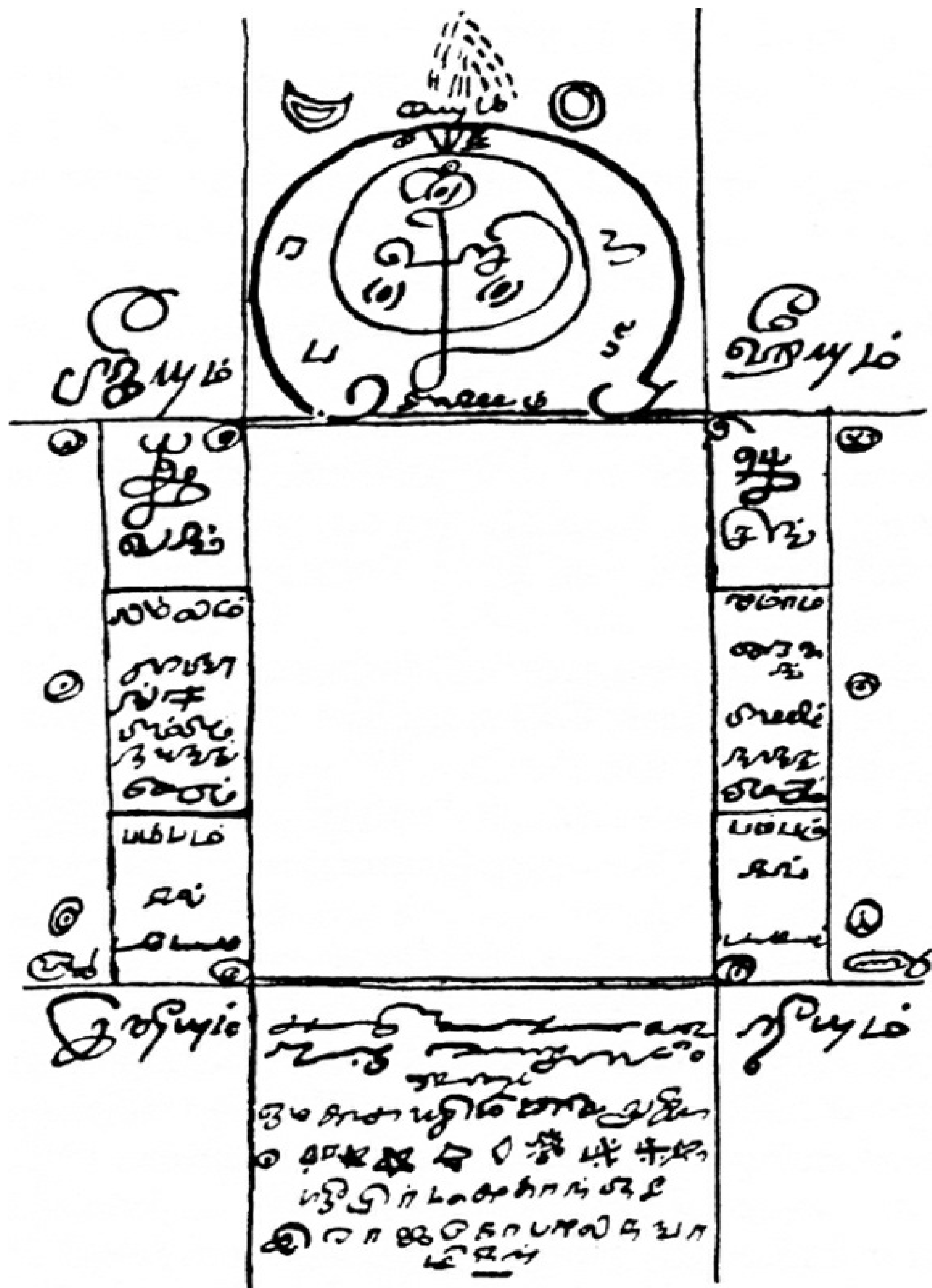
मैं स्वर्ण-मुद्रिका पर नज़र डालता हूँ और स्वयं से पूछता हूँ, "क्या किसी अँगूठी में कोई

ऐसी कोई शक्ति हो सकती है?" मैं यह समझ पाने में असमर्थ हूँ कि वह अँगूठी क्यों और कैसे मुझे या किसी अन्य को मानसिक या आध्यात्मिक ढंग से प्रभावित कर सकती है। यह अंधविश्वास की पोषक है। इसके बावजूद ब्रह्मा इसके शानदार गुण की सच्चाई को लेकर आश्वस्त लग रहा था। क्या सचमुच ऐसा संभव है? मैं इसका उत्तर पाने के लिए बेचैन हूँ। इस विचित्र धरती पर कुछ भी संभव है! परंतु ऐसी बातों में बुद्धि बीच में आ जाती है और बहुत-से प्रश्नचिह्न खड़े कर देती है।

मैं इसी ऊहापोह और कपोल-कल्पना के विषय में विचार करता हुआ वहाँ से दूर हट जाता हूँ। अचानक मेरा सिर किसी चीज़ से टकराता है। मैं नज़र उठाकर देखता हूँ तो मुझे खजूर के वृक्ष की एक काव्यात्मक छवि दिखाई पड़ती है। उसकी शाखाओं के बीच में बहुत-से जुगनू नृत्य करते प्रकाश-बिंदुओं जैसे नज़र आते हैं।

रात्रि में आकाश गहरे नीले रंग का दिखाई पड़ता है। मैं जिस मार्ग पर चल रहा हूँ, वहाँ ज़बरदस्त शांति व्याप्त है। मुझे एक तरह की विचित्र और रहस्यमय विश्रांति आनंदित करने लगती है। यहाँ तक कि कुछ बड़े चमगादड़, जो कभी-कभी मेरे सिर के ऊपर से फड़फड़ाते हुए निकलते हैं, अपने पंखों को धीमे-से हिला रहे हैं। वह पूरा दृश्य मुझे भाव-विभोर कर देता है। मैं एक क्षण के लिए रुक जाता हूँ। चंद्रमा की रोशनी में मेरी ओर बढ़ता एक व्यक्ति मुझे फुदकते प्रेत जैसा दिखाई दे रहा है।

मैं अपने आवास पर पहुँचता हूँ तो मुझे देर तक नींद नहीं आती। आख़िर, उषाकाल के आसपास मेरी आँख लग जाती है और मेरे भीतर चल रहा विचारों का भँवर विस्मृति में डूब जाता है।



योगी का जादुई चार्ट

"मेरी कोई फ़ोटो बीच में लगा दें। यदि हमारे भौतिक शरीरों के बीच पाँच हज़ार मील की दूरी है तो भी इस काग़ज़ पर अपने विचारों को केंद्रित करते ही, आत्मा के माध्यम से हमारा मिलन हो सकता है।"

---

* मैंने इस संदर्भ की पुष्टि की और पाया कि यह वास्तविक घटना लाहौर में 1837 में हुई थी। उस फ़क़ीर को महाराजा रणजीत सिंह, सर क्लाड वेड, डॉ. हौनिगबर्गर तथा कई अन्य लोगों की उपस्थिति में दफ़नाया गया था। सिख सैनिकों का एक प्रहरी रात और दिन उस क़ब्र की निगरानी करता था ताकि किसी तरह की चालाकी ना की जा सके। बाद में, 40 दिन के उपरांत जब क़ब्र खोदी गई तो फ़क़ीर जीवित निकला। इस घटना का पूरा विवरण कोलकाता के अभिलेखागार में मौजूद है।

* सन 1526 में हुई पानीपत की लड़ाई में क्रूर और अत्याचारी तैमूरलंग के वंशज बाबर की सेना ने आगरा के राजा पर आक्रमण कर दिया था।

** यह युद्ध 1757 में हुआ और इसी के बाद भारत में अंग्रेज़ों के शासन की शुरुआत हुई।

* यह संभव है कि ब्रह्मा मस्तिष्क से जुड़े चार निलयों से बनने वाले छिद्र की बात कर रहा हो, परंतु मैं यह बात विश्वास से नहीं कह सकता।

* ब्रह्मा के साथ हुई पूरी वार्ता तथा उसके आश्चर्यजनक वक्तव्य और स्पष्टीकरण मुझे किसी शानदार स्वप्न की भाँति लग रहे हैं। मैंने इन बातों को जब भी काग़ज़ पर उतारने का प्रयास किया, मैं इन्हें पुस्तक में से पूरी तरह निकाल देने पर विवश हो गया। मैंने कई अन्य वार्ताओं को ज़बरदस्ती इसमें से निकाला भी है। मुझे इसमें कोई संदेह नहीं कि ऐसा करने से ख़ुद को श्रेष्ठ कहने वाले अनेक यूरोपीय लोग एशियाई अंधविश्वास की अवहेलना करने के दोषी माने जाएँगे। यदि मैंने इन चर्चाओं को प्रकाशित होने दिया है, तो यह मेरे नहीं, बल्कि अन्य लोगों के निर्णय के कारण हुआ है।

अध्याय 7

मौनी बाबा

यदि मैं एक रोचक मुलाक़ात के विषय में बताना चाहूँ, तो मुझे इन दर्ज बातों का क्रम तोड़कर लगभग एक सप्ताह पीछे लौटना होगा।

मैंने मद्रास से बाहर अपने आवास के दौरान उन असाधारण लोगों के विषय में पूछताछ करना बंद नहीं किया है जिनकी मैं खोज कर रहा हूँ और जिनमें मेरी रुचि है। मैं न्यायाधीशों, वकीलों, शिक्षकों, व्यापारियों और यहाँ तक कि एक-दो धार्मिक व्यक्तियों से भी बातचीत कर चुका हूँ। मैंने कई लोगों का साक्षात्कार किया है और अपने ही व्यवसाय के बहुत-से लोगों के साथ अनेक आनंदमय घंटे बिताए हैं। मुझे एक सहायक संपादक के विषय में पता लगा, जिसने मुझे निजी तौर पर बताया कि वह अपने युवा काल में योग का उत्सुक छात्र रहा है। उस समय उसने जिस गुरु से योग सीखा था, उसे वह आज भी मस्तिष्क के नियंत्रण की विद्या में पारंगत मानता है। परंतु दस वर्ष पहले उसके गुरु का देहांत हो गया था।

यह शिष्य बड़ा मनमोहक है और अत्यंत बुद्धिमान हिंदू भी है। परंतु यह बड़े दुःख की बात है कि इसे यह नहीं पता कि ऐसे सिद्ध योगी अब कहाँ मिल सकते हैं।

मुझे कुछ अस्पष्ट कहानियाँ, मूर्खतापूर्ण किस्से और सकारात्मक झिड़कियाँ भी मिली हैं। यह सच है कि मेरी भेंट एक पवित्र व्यक्ति से हुई, जिसका ईसा मसीह जैसा चेहरा और उसके जैसे वस्त्र पिकाडिली की शुष्क और नीरस गलियों में खलबली मचा सकते थे। परंतु उसने मुझे बताया कि उसे भी इस धरती पर श्रेष्ठ जीवन की तलाश है। उसने अपना कृषि का अच्छा कार्य छोड़ दिया और बंजारों की तरह भिक्षु बनकर घूमने लगा। वह मेरे समक्ष उस जगह को ख़रीदने का प्रस्ताव भी रखता है, बशर्ते मैं वहीं बस जाऊँ और परेशान तथा पीड़ित

भारतीयों की सेवा करूँ। यह दु:ख की बात है कि मैं ख़ुद परेशान हूँ! वह अपना उदार प्रस्ताव किसी और को दे देता है।

एक दिन, मुझे एक सिद्ध योगी के विषय में जानकारी मिलती है। वह मद्रास से बाहर, क़रीब आधा मील दूर रहता है। उसे भी लोगों से मिलना-जुलना पसंद नहीं है, इसीलिए बहुत कम लोग उसे जानते हैं। मेरी उत्सुकता तत्काल जाग्रत हो जाती है और मैं उसके साथ मिलने के तैयार हो जाता हूँ। उस योगी का घर, लंबे बाँस के सरकंडों के बीच एक चौरस अहाते में स्थित है। वह घर मैदान के ठीक बीच में निर्मित है।

मेरा साथी उस अहाते की ओर संकेत करता है।

मुझे बताया गया है, 'वह योगी अधिकांश समय ध्यान में मग्न रहता है। इस बात की संभावना बहुत कम है कि अगर हम उसके दरवाज़े को ज़ोर से हिलाएँगे या उसका नाम ज़ोर से पुकारेंगे तो वह हमें शायद ही सुन पाएगा। यदि हमने ऐसा कुछ किया तो उसे अशिष्ट भी समझा जाएगा।'

अहाते में प्रवेश करने के लिए एक फ़ाटक बना हुआ है। वह सब तरफ़ से पूरी तरह बंद है। मैं सोच में पड़ जाता हूँ कि हम घर के भीतर प्रवेश कैसे करेंगे। वहाँ पूर्ण शांति है। हम लोग मैदान के आस-पास घूमते हैं और निकट के एक स्थान से चक्कर लगाकर लौट आते हैं। हमें वहाँ एक लड़का मिलता है, जो बताता है कि हमें योगी के अनुचर का घर कहाँ मिलेगा। एक घुमावदार रास्ते पर चलने के बाद हम उस स्थान पर पहुँच जाते हैं।

वह व्यक्ति योगी का नियुक्त हुआ नौकर है। उसकी पत्नी और बहुत-से बच्चे भी हमें देखने के लिए घर से बाहर निकल आते हैं। हम उसे अपनी इच्छा बताते हैं, परंतु वह हमारी सहायता करने से मना कर देता है। वह स्पष्ट रूप से कहता है कि मौनी बाबा अजनबियों से नहीं मिलते और एकांत में ही रहते हैं। बाबा का दिन अधिकतर गहन ध्यान में बीतता है और यदि उनके एकांत को भंग किया जाए तो वह नाराज़ हो जाते हैं।

मैं नौकर से सहायता करने का अनुरोध करता हूँ, परंतु वह अपनी ज़िद पर अड़ा है। मेरा मित्र उसे धमकी भी देता है कि यदि हमें भीतर नहीं जाने दिया गया तो हम सरकारी मदद का प्रयोग करेंगे। यह निश्चित रूप से ग़लत तरीक़ा है परंतु मैं अनैतिक ढंग से अनेक बार इसका प्रयोग करता हूँ। वहाँ ज़ोरदार बहस छिड़ जाती है। मैं उसे धमकी के साथ, अच्छी बख़्शीश देने का प्रलोभन भी देता हूँ। वह कुछ ही देर बाद हमारी बात मान जाता है और योगी के घर की चाबी ले आता है। मेरे साथी के कहे अनुसार, वह व्यक्ति तनख़्वाह पर काम करने वाला नौकर लगता है क्योंकि यदि वह बाबा का निजी शिष्य होता तो न धमकियों से और न ही धन के प्रलोभन से प्रभावित होता।

हम फिर उस अहाते के फ़ाटक तक पहुँचते हैं और वहाँ लगे एक बड़े-से लोहे के ताले को खोल देते हैं। नौकर हमें बताता है कि बाबा के पास इतना कम सामान है कि उन्हें चाबी

की आवश्यकता नहीं है। वह उस घर के अंदर बंद रहते हैं और नौकर के आने तक बाहर निकलने का कोई तरीक़ा नहीं है। वह नौकर दिन में दो बार मौनी बाबा के पास जाता है। हमें बताया जाता है कि दिन के समय अधिकतर बाबा ध्यान में मग्न रहते हैं और वह शाम को कुछ फल एवं मिठाई और एक कप दूध लेते हैं। हालाँकि ऐसा कई बार हुआ है कि उनको दिया गया खाना किसी ने नहीं छुआ। अंधकार के समय, कभी-कभी बाबा अपनी कुटिया से बाहर निकलकर मैदान में टहलते हैं और यही उनका एकमात्र व्यायाम है।

हम लोग उस जगह को पार करके एक आधुनिक कुटिया तक पहुँच जाते हैं। वह बड़े पत्थरों से बनी है और उस पर पेंट किया गया है। नौकर अपनी जेब से एक और चाबी निकालता है और भारी दरवाज़े को खोलता है। मुझे कुटिया के लिए ली गईं इतनी सावधानियों को देखकर आश्चर्य होता है क्योंकि नौकर ने हमें बताया था कि बाबा के पास बहुत कम सामान है। उसके बाद वह व्यक्ति हमें एक छोटी-सी कहानी सुनाता है:

'बहुत साल पहले मौनी बाबा की कुटिया में में ताला और सुरक्षा नहीं थी। परंतु एक दिन दुर्भाग्य से वहाँ एक व्यक्ति आया जिसने शराब पी हुई थी और उसने बाबा कि अरक्षित अवस्था का लाभ उठाकर उन पर हमला कर दिया। शराबी ने बाबा की दाढ़ी खींची, उन्हें छड़ी से पीटा और उन्हें बहुत-सी भद्दी गालियाँ भी दीं।'

संयोग से, वहाँ कुछ युवक खेल रहे थे और उस हमले की आवाज़ ने उनका ध्यान आकर्षित कर लिया। वे लोग कुटिया के भीतर आए और उन्होंने बाबा को उस हमलावर से बचाया तथा उन लड़कों में से एक ने भागकर आस-पास के घरों में लोगों को सूचना दी। कुछ ही देर में वहाँ बहुत-से लोग एकत्रित हो गए और उन्होंने उस शराबी हमलावर की जमकर पिटाई की। इस बात की संभावना थी कि उस दिन हमलावर की जान भी जा सकती थी!'

इस पूरी घटना के दौरान मौनी बाबा सबकुछ शांत भाव से सहन करते रहे। उसके बाद उन्होंने बीच-बचाव किया और यह निम्नलिखित संदेश लिखा:

'यदि आप इस व्यक्ति को मारेंगे तो यह मुझे मारने के समान होगा। मैंने उसे क्षमा कर दिया है। आप भी इसे जाने दीजिए।'

मौनी बाबा की कही बात, अलिखित क़ानून के समान थी। उनके अनुरोध को तत्काल मान लिया गया और हमलावर को छोड़ दिया गया।



मौनी बाबा का नौकर कमरे में झाँककर चेतावनी देता है कि हमें बिलकुल शांत रहना है, क्योंकि मौनी बाबा ध्यान मग्न हैं। मैं जूते उतार कर बाहर बरामदे में छोड़ देता हूँ, क्योंकि यह हिंदू परंपरा का कठोर नियम है। मैं जैसे ही सिर नीचे झुकाता हूँ, मुझे दीवार में एक छोटा-सा

पत्थर दिखाई देता है। उस पर तमिल भाषा में कुछ लिखा है। उसे मेरा साथी अनुवाद करके मुझे बताता है कि उस पर 'मौनी बाबा का आवास' लिखा है।

हम उस कुटिया में प्रवेश करते हैं। वह एक शानदार बढ़िया छत वाली साफ़-सुथरी जगह है। वहाँ फ़र्श के बीच में, संगमरमर का क़रीब एक फ़ीट ऊँचा मंच बना है। फ़र्श पर बेहतरीन डिजाइन वाला ईरानी कालीन भी बिछा है। मौनी बाबा उस कालीन पर शांत अवस्था में बैठे हैं।

आप एक आकर्षक व्यक्ति की कल्पना कीजिए, जिसकी पीलापन लिए हुए काले रंग की त्वचा दमक रही है। उसका शरीर सीधा है और वह योग मुद्रा में बैठा है, जिसे मैं आसानी से पहचान सकता हूँ। वह मुद्रा मुझे ब्रह्मा ने भी दिखाई थी। उसका बायाँ पैर, उसके शरीर के नीचे दबा है और उसने दायाँ पैर अपनी बाईं जाँघ पर रखा है। मौनी बाबा का सिर, कमर, गर्दन और सीधी पंक्ति में हैं। उनके लंबे काले बाल कंधे तक झूल रहे हैं। उनकी लंबी दाढ़ी भी लहरा रही है। उनके हाथ उनके घुटनों पर हैं। मैं देख सकता हूँ कि बाबा का शरीर गठा हुआ और बलिष्ठ है। उनका स्वास्थ्य बहुत बढ़िया है। उन्होंने शरीर पर केवल लंगोट पहन रखा है।

बाबा का चेहरा तत्काल मेरी स्मृति में बैठ जाता है। वह ऐसे व्यक्ति का चेहरा है, जो जीवन पर विजय प्राप्त करने के बाद मुस्करा रहा है। ऐसा व्यक्ति, जिसने जीवन की उन दुर्बलताओं पर नियंत्रण प्राप्त कर लिया है, जिन्हें हम कमज़ोर मनुष्य, इच्छा अथवा अनिच्छा से झेल रहे हैं। बाबा का मुँह थोड़ा खुला है। उनकी नाक छोटी और सीधी है। उनकी आँखें खुली हैं। वह बिना पलक झपकाए ठीक अपने सामने देख रहे हैं। मौनी बाबा किसी प्रतिमा की भाँति बिना हिले-डुले चुपचाप बैठे हैं।

मुझे पहले ही बता दिया गया है कि मौनी बाबा ध्यान की गहन अवस्था में लीन हैं, जहाँ उनकी प्रकृति का मानव अंग अस्थाई ठहराव में डूबा हुआ है और वे अपने आस-पास की परिस्थितियों से पूरी तरह अनजान हैं। मैं शांत भाव से बाबा को देखता रहता हूँ। मुझे इसमें कोई संदेह नहीं कि वह निस्पंदन ध्यान में मग्न हैं। ऐसे ही, कई घंटे बीत जाते हैं परंतु बाबा अब भी उसी तरह स्थिर और बिना हिले-डुले बैठे हैं।

मुझे जिस बात ने सबसे अधिक प्रभावित किया है, वह यह है कि पूरे समय बाबा की पलकें नहीं झपकी हैं। मैं आज तक किसी ऐसे मनुष्य से नहीं मिला जो दो घंटे से भी अधिक समय तक बिना हिले-डुले और पलकें झपकाए बैठ सकता हो। मुझे धीरे-धीरे ऐसा लगने लगा कि यदि मौनी बाबा की आँखें सचमुच खुली हैं तो वे अंधे हैं। यदि उनका मस्तिष्क जाग्रत अवस्था में है, तो भी उन्हें सांसारिक जगत का कोई भान नहीं है। उनकी शारीरिक इंद्रियाँ, निद्रा की अवस्था में चली गई हैं। उनकी आँखों से कभी-कभी आँसू की एकाध बूंद गिर पड़ती है। स्पष्ट है, पलकों को स्थिर कर लेने के कारण उनकी आँसुओं की ग्रंथि अपना

नियमित कार्य नहीं कर पा रही है।

तभी एक हरे रंग की छिपकली, छत से नीचे उतरती है। वह कालीन पर रेंगती हुई मौनी बाबा के पैर पर चढ़ जाती है और फिर वहाँ से उतर कर संगमरमर के मंच के पीछे चली जाती है। यदि वह पत्थर की दीवार पर चढ़ जाती, तो भी उसे बाबा के पैर के समान स्थिर और ठोस आधार नहीं मिल पाता। बीच-बीच में, कुछ मक्खियाँ भी बाबा के चेहरे पर बैठती हैं और उनकी त्वचा को स्पर्श करके उड़ जाती हैं। परंतु बाबा के चेहरे पर किसी तरह की प्रतिक्रिया देखने को नहीं मिलती। यदि मक्खियाँ किसी तांबे की प्रतिमा पर बैठतीं तो भी इसी तरह का प्रभाव देखने को मिलता!

मेरा ध्यान मौनी बाबा के श्वास की ओर चला जाता है। वह बहुत धीमी गति से चल रही है और उसे महसूस कर पाना बहुत मुश्किल है। श्वास का स्वर सुनाई नहीं दे रहा, किंतु वह अत्यंत नियमित गति से चल रही है। वही एकमात्र संकेत है जिससे पता लगता है कि मौनी बाबा के शरीर से प्राण अभी निकले नहीं हैं।

हम जिस बीच प्रतीक्षा करते हैं, मैं बाबा के एकाध फ़ोटो लेने का निश्चय करता हूँ। मैं कैमरा निकालता हूँ और बाबा पर फ़ोकस करता हूँ। कमरे में रोशनी अच्छी नहीं है।

मैं घड़ी देखता हूँ। दो घंटे बीत चुके हैं। योगी ने अभी तक ध्यान से बाहर निकलने का कोई संकेत नहीं दिया है। इस तरह स्थिर बैठे रहने की उसकी क्षमता सचमुच बहुत शानदार है। मैं पूरा दिन वहाँ रुकने के लिए तैयार हूँ क्योंकि मुझे उस विचित्र मनुष्य का साक्षात्कार लेकर अपना उद्देश्य पूरा करना है। परंतु बाबा का नौकर हमारे कान में कहता है कि अधिक प्रतीक्षा करना बेकार है और ऐसा करने से कुछ प्राप्त नहीं होगा। यदि हम एक-दो दिन में वापस आएँगे तो शायद हमारा भाग्य अच्छा हो, परंतु वह कोई निश्चित से वादा नहीं कर सकता।

हम अस्थाई रूप से अपनी हार मानकर अपने शहर लौट आते हैं। मेरी रुचि अभी इस कार्य में कम नहीं हुई है, बल्कि बाबा से मिलने पर वह और बढ़ गई है।

मैं अगले दो दिनों में मौनी बाबा के विषय में कुछ सूचना एकत्रित करने का प्रयास करता हूँ। इसके लिए मुझे इधर-उधर से कुछ जाँच-पड़ताल करनी है। मुझे एक पुलिस वाले का साक्षात्कार तथा बाबा के नौकर से भी कुछ लंबी बातचीत करनी है। इस तरह मैं मौनी बाबा की कहानी के कुछ हिस्से जोड़ पाने में सफल हो जाता हूँ।

मौनी बाबा, मद्रास में लगभग आठ वर्ष पहले आए थे। उन्हें कोई नहीं जानता था और किसी को नहीं पता कि वे जब वहाँ आए तो किस अवस्था में थे। उन्होंने निर्जन स्थान पर अपना घर बनाया और वहीं अब उनकी कुटिया स्थित है। कुछ इच्छुक लोगों ने उनसे बातचीत करने की कोशिश की परंतु उन्हें कोई उत्तर नहीं मिला। बाबा किसी से बात नहीं करते और न ही किसी आवाज़ या किसी व्यक्ति पर भी ध्यान देते थे। वे नारियल का खोल

आगे बढ़ाकर कभी-कभी अपने लिए भोजन अवश्य माँग लेते थे।

कई दिनों तक लगातार, मौनी बाबा इस अनाकर्षक स्थान पर बैठे रहे। यहाँ बहुत तेज़ धूप पड़ती थी और बारिश के मौसम में तेज़ बारिश भी होती थी। वहाँ धूल-मिट्टी तथा कीड़े-मकोड़ों का ख़तरा भी रहता था, परंतु उन्होंने किसी तरह की सहायता माँगने का प्रयास नहीं किया। उन्होंने सदा बाहरी वातावरण से अनभिज्ञ रहकर शांत रूप से जीवन बिताया। उनके सिर पर कोई सुरक्षा नहीं थी और न ही शरीर पर कोई वस्त्र था। वे केवल एक छोटा-सा लंगोट बाँधते थे।

उन्होंने अपने बैठने की योग मुद्रा भी नहीं बदली। मद्रास जैसे बड़े शहर का पहाड़ी इलाक़ा किसी संन्यासी के लिए खुले में बैठने तथा लंबे समय तक ध्यान-मग्न रहने हेतु बिलकुल उपयुक्त नहीं था। प्राचीन भारत में इस तरह का व्यवहार करने से किसी को भी बहुत आदर-सम्मान मिल सकता था। परंतु इस आधुनिक योगी को अपने रहस्यमय अभ्यास और साधना के लिए निर्जन वनों और पहाड़ की कंदराओं या फिर अपने कमरे के एकांत का सहारा लेना पड़ा।

इस विचित्र संन्यासी ने ध्यान के लिए इतना अनुपयुक्त स्थान क्यों चुना? एक अप्रिय घटना जानने के बाद इसका कारण पता लगता है।

एक दिन कुछ युवा और अज्ञानी बदमाश लड़के उस अकेले योगी के पास आ गए और उसे परेशान करने लगे। वे लगातार एक ही समय पर आकर प्रतिदिन पत्थर फेंकने, कचरा फेंकने जैसे काम करने लगे और भद्दी गालियाँ देने लगे। यह संन्यासी शांत रहकर बहुत दिनों तक धैर्यपूर्वक सबकुछ सहन करता रहा। हालाँकि वह उन लोगों को सबक़ सिखाने में पूरी तरह सक्षम था, संन्यासी ने लड़कों को डाँटा भी नहीं क्योंकि उसने मौन धारण किया हुआ था।

वे युवा लड़के योगी को इसी तरह लगातार परेशान करते रहे। तभी एक दिन जब वे अपनी रोज़ की भाँति योगी को तंग कर रहे थे, एक व्यक्ति वहाँ से गुज़रा। उस अजनबी को यह देखकर बहुत आश्चर्य हुआ कि संन्यासी के साथ इस तरह दुर्व्यवहार हो रहा था। वह मद्रास लौटा और उसने पुलिस को सूचना दी। बाबा के लिए मदद की प्रार्थना की सूचना मिलते ही वहाँ सहायता पहुँच गई और पुलिस ने उन बदमाश लड़कों के झुंड को चेतावनी देकर वहाँ से भगा दिया।

इस घटना के बाद एक पुलिस अफ़सर ने संन्यासी के विषय में कुछ जाँच-पड़ताल करने का निश्चय किया। परंतु उसे एक व्यक्ति भी ऐसा नहीं मिला जो योगी के विषय में कुछ भी जानता था। तब उसने विवशता में योगी से स्वयं ही प्रश्न करने का विचार किया। इसके लिए उसने क़ानून के प्राधिकार की सहायता भी ली। बहुत संकोच के बाद योगी ने पट्टी पर यह संक्षिप्त वक्तव्य लिख कर दिया:

‘मैं मरकयार का शिष्य हूँ। मेरे गुरु ने मुझे आदेश दिया कि मैं मैदानों को पार करके दक्षिण दिशा में मद्रास चला जाऊँ। उन्होंने मुझे इस स्थान के विषय में बताया और मुझे यहीं रहकर योग और साधना का अभ्यास करने का आदेश दिया ताकि मैं इस विद्या में दक्ष हो सकूँ। मैंने सांसारिक जीवन और इच्छाओं का त्याग करके अकेले रहने का निर्णय किया है। मेरा मद्रास की गतिविधियों में कोई रुचि नहीं है। आध्यात्मिक पथ पर आगे बढ़ने के अतिरिक्त मेरी कोई इच्छा नहीं है।’

उस पुलिस अफ़सर को यह जानकर बहुत संतुष्टि हुई कि वह श्रेष्ठ कोटि का सच्चा फ़क़ीर था और इसलिए वह बदमाशों से योगी को सुरक्षा देने का वचन देकर वहाँ से लौट गया। उसने मरकयार का नाम पहचान लिया क्योंकि वह मुसलमान फ़क़ीर था, जिसकी हाल में मृत्यु हुई थी।

एक पुरानी कहावत है कि ‘बुराई में से ही अच्छाई का उदय होता है।’ इस अप्रिय घटना का परिणाम यह हुआ कि मद्रास के धनी और धार्मिक लोगों को योगी के विषय में पता लग गया। उन लोगों ने योगी को अच्छे घर का प्रलोभन देकर शहर बुलाने की चेष्टा की। परंतु वह योगी अपने गुरु के आदेश का उल्लंघन करने को तैयार नहीं था। अंत में योगी के संरक्षक को वहीं पत्थर और लकड़ी का एक बंगला बनवाना पड़ा जिसे बाद में योगी ने छोड़ने से मना कर दिया। योगी यहाँ रहने के लिए तैयार हो गया क्योंकि उस पर एक अच्छी छत थी, जिससे योगी को बदलते मौसम से बचने में मदद भी मिल गई।

योगी के संरक्षक ने योगी के लिए एक नौकर भी नियुक्त कर दिया। अब योगी को भिक्षा माँगने की आवश्यकता नहीं थी और भोजन का प्रबंध नौकर करने लगा। यह कह पाना मुश्किल है कि उस योगी के गुरु को इस अनुभव के इतना रुचिकर परिणाम का पूर्वाभास हुआ था या नहीं, परंतु इसमें कोई संदेह नहीं कि उसके शिष्य की स्थिति पहले से कहीं बेहतर हो गई थी।

मुझे बताया गया कि मौनी बाबा का एक भी शिष्य नहीं है। वह न किसी शिष्य को खोजते हैं और न ही किसी को अपना शिष्य बनाना स्वीकार करते हैं। वह लोगों में से हैं जो एकांत में रहकर आध्यात्मिक मुक्ति प्राप्त करने के इच्छुक हैं। यदि इस बात में सच्चाई है तो पाश्चात्य दृष्टिकोण से उनका व्यवहार ऊपरी तौर पर स्वार्थपूर्ण प्रतीत होता है। परंतु यदि मौनी बाबा के उदार स्वभाव को ध्यान किया जाए जब उन्होंने बदमाश लड़कों के प्रति सहिष्णुता का व्यवहार दर्शाया और उनके विरुद्ध कोई कार्यवाही नहीं की, तो व्यक्ति सोचने के लिए विवश हो जाता है कि क्या ऐसा योगी स्वार्थी हो सकता है!



मैं दो अन्य लोगों के साथ मौनी बाबा के साक्षात्कार का एक और प्रयास करता हूँ। साथ में, एक मेरा दुभाषिया है और दूसरा कोई और नहीं बल्कि वही योगी है - अड्यार वाला योगी ब्रह्मा, जिसने मुझे इतना कुछ सिखाया। मैं उसे स्नेहपूर्वक 'अड्यार का योगी' कहता हूँ। ब्रह्मा शहर के भीतर नहीं जाता लेकिन मैं जब उसे अपना उद्देश्य बताता हूँ और साथ चलने की इच्छा व्यक्त करता हूँ तो वह मेरा अनुरोध सहर्ष स्वीकार कर लेता है।

उस शहर के बाहर हमें एक और व्यक्ति मिलता है, जो एक बड़ी-सी गाड़ी में आया है। वह गाड़ी उसने बाहर छोड़ दी है और मैदान को पार करके वह भी उसी उद्देश्य से वहाँ आ पहुँचा है। उसे भी मौनी बाबा से मिलना है। वह बातचीत के दौरान मुझे बताता है कि वह हैदराबाद के निजाम के अधीन छोटे-से राज्य गदवाल की महारानी का भाई है। वह मुझे यह भी बताता है कि वह उस योगी का संरक्षक है तथा उसके आवास की देखरेख का ख़र्च उठाता है। वह मद्रास किसी काम से आया है, लेकिन योगी से मिले बिना और उनका आशीर्वाद लिए बिना नहीं जाएगा। योगी का आशीर्वाद क्यों महत्त्वपूर्ण है, यह बात मुझे उस व्यक्ति द्वारा बताई एक कहानी से पता लगती है।

गदवाल के दरबार में एक महिला थी, जिसका बच्चा एक भयंकर रोग से ग्रस्त था। उस महिला ने मौनी बाबा के विषय में सुना तो वह उन्हें खोजती हुई मद्रास आ पहुँची। उसने बच्चे को ठीक करने के लिए योगी से आशीर्वाद की प्रार्थना की। योगी द्वारा आशीर्वाद देने के बाद उस बच्चे के स्वास्थ्य में ज़बरदस्त सुधार हुआ। यह घटना महारानी को भी पता लगी और वह भी संन्यासी से मिलने आती है। वह योगी को एक बटुआ देती है, जिसमें छह सौ रुपये हैं, परंतु योगी वह लेने से मना कर देता है। वह बहुत ज़ोर देती है तो योगी एक संदेश लिखकर कहता है कि उस पैसे से उसकी कुटिया के चारों सुरक्षा के लिए एक बाड़ा बनवा दिया जाए ताकि उसे अधिक एकांत मिल सके। महारानी उसकी इच्छा पूरा करने का आदेश देती है और इस प्रकार वहाँ बांस की चारदीवारी बन दी जाती है।

योगी का नौकर हमें फिर से कुटिया के भीतर ले जाता है। हम योगी को उसी ध्यान-मुद्रा में बैठा देखते हैं, जैसे उसे पहली बार देखा था।

हम लोग चुपचाप बैठ जाते हैं और संगमरमर के मंच पर बैठे ऊँचे क़द के शानदार व्यक्तित्व वाले मौनी बाबा की धैर्यपूर्वक प्रतीक्षा करते हैं। लगभग डेढ़ घंटे बाद, हमें बाबा के शरीर में गतिविधि के संकेत दिखाई पड़ते हैं। श्वास की गति कुछ बढ़ गई है। वह अब हमें सुनाई भी देने लगी है। योगी की पलकें हिलती हैं और फिर वह आँख की पुतलियों को ऊपर चढ़ा लेता है, जिसके कारण हमें आँखों के भीतर का सफ़ेद हिस्सा दिखने लगता है। कुछ पल बाद, पुतलियाँ अपनी सामान्य स्थिति में लौट आती हैं। इसके बाद योगी के शरीर में हल्की गतिविधि होने लगती है।

पाँच मिनट बाद, योगी की आँखों में परिवर्तन होता है, जिसे देखकर हमें यह पता लग

जाता है कि संन्यासी अब अपने आसपास के वातावरण से अवगत हो चुका है। वह दुभाषिये की ओर ध्यान से देखता है और फिर झटके से अपना सिर घुमा कर ब्रह्मा की ओर देखता है। फिर दूसरे आगंतुक को देखने के बाद वह मेरी ओर देखने लगता है।

मैं इस अवसर का लाभ उठाता हूँ और उसके पैरों के पास एक काग़ज़ और पेंसिल रख देता हूँ। वह हिचकिचा कर पेंसिल उठा लेता है और तमिल में बड़े-बड़े अक्षरों में लिखता है:

'उस दिन यहाँ फ़ोटो खींचने की कोशिश किसने की थी?'

मुझे विवशता में स्वीकार करना पड़ता है कि वह कार्य मैंने किया था। वैसे देखा जाए तो मेरा वह प्रयास व्यर्थ गया क्योंकि रोशनी कम थी और फ़ोटो ठीक नहीं आई।

योगी फिर से लिखता है:

'आप दोबारा किसी ध्यानस्थ योगी से मिलने जाएँ, तो उन्हें परेशान न करें। इस तरह व्यवधान डालकर, उनका ध्यान भंग करने का प्रयास मत कीजिए। मेरे मामले में अधिक फ़र्क़ नहीं पड़ा, परंतु मैं आपको यह बताना उचित समझता हूँ कि अन्य योगियों से मिलते समय ऐसा करना उचित नहीं है। इस तरह हस्तक्षेप करना ख़तरनाक हो सकता है और वे योगी आपको शाप भी दे सकते हैं!'

योगी की बातों से लगता है कि उसके एकांत को भंग करना एक प्रकार का दुष्कर्म है और इसलिए मैं ऐसा करने के लिए खेद व्यक्त करता हूँ।

गदवाल की महारानी का भाई, योगी का सम्मान करता है। उसका कार्य समाप्त होने के बाद, मैं योगी को अपना परिचय देता हूँ और बताता हूँ कि मुझे भारत के प्राचीन ज्ञान में बहुत रुचि है। मैं यह भी बताता हूँ कि मैंने सुना है भारत में अब भी कुछ ऐसे लोग हैं जिन्होंने योग के क्षेत्र में ज़बरदस्त उपलब्धि प्राप्त की है और मैं ऐसे लोगों को खोज रहा हूँ। मैं संन्यासी से पूछता हूँ कि क्या वह मुझे इस बारे में ज्ञान दे सकता है?

संन्यासी प्रतिमा की भाँति स्थिर बैठा है। उसके चेहरे पर किसी तरह की अभिव्यक्ति का संकेत नहीं है। अगले दस मिनट तक वह कोई संकेत नहीं देता मानो उसने मेरे प्रार्थना सुनी ही नहीं है। मुझे डर लगता है कि मेरा यह प्रयास भी व्यर्थ जाएगा। शायद यह योगी मेरे जैसे भौतिकवादी पश्चिमवासी को ऐसे गूढ़ ज्ञान के अयोग्य समझता है। शायद वह कैमरे से फ़ोटो लेने के कारण मुझसे चिढ़ गया है। क्या मैं उस योगी से कुछ अधिक अपेक्षा नहीं रख रहा हूँ क्योंकि मैं चाहता हूँ कि वह मुझ जैसे विदेशी और निष्ठाहीन व्यक्ति के लिए अपना ध्यान भंग कर दे? मुझे भीतर से शर्मिंदगी महसूस हो रही है।

मैं कुछ ज़्यादा ही जल्दी हताश हो गया हूँ। संन्यासी काग़ज़ उठाकर पेंसिल से कुछ लिखता है। अपनी बात लिखने के बाद काग़ज़ दुभाषिये की ओर बढ़ा देता है।

'इसमें समझने के लिए क्या है?' दुभाषिया अनुवाद करके बताता है। योगी का लिखा

पढ़ पाना मुश्किल है।

'यह संसार समस्याओं से भरा हुआ है?' मैं उदास मन से कहता हूँ।

मेरी बात से योगी के चेहरे पर हल्की-सी उपहासपूर्ण मुस्कान आ गई है।

संन्यासी मुझसे पूछता है, 'तुम जब स्वयं को ही नहीं समझते, तो इस संसार को समझने की आशा क्यों करते हो?'

वह सीधे मेरी आँखों में देख रहा है। मैं उसकी दृष्टि के पीछे छिपे ज्ञान को महसूस कर सकता हूँ। उसमें बहुत-से ऐसे रहस्य हैं, जिन्हें उसने बड़ी सावधानी से अपने भीतर छिपा रखा है। मैं उसके विचित्र व्यवहार का कारण नहीं समझ पा रहा हूँ।

'फिर भी मुझे बहुत हैरानी होती है,' मैं इतना ही कह पाता हूँ।

'तुम मक्खी की भाँति ज्ञान के शहद बूंदों के पीछे क्यों दौड़ रहे हो जबकि विशुद्ध शहद का खंड तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहा है?'

योगी का उत्तर मुझे चकित कर देता है। उसकी रहस्यमय अस्पष्टता मुझे आकर्षित कर रही है। उसकी बात मुझे किसी कविता की भाँति लग रही है। परंतु मैं जब जीवन की समस्याओं को सुलझाने का प्रयत्न करता हूँ तो मुझे उसमें कोई सार दिखाई नहीं पड़ता।

'परंतु व्यक्ति को उसकी खोज कहाँ करनी चाहिए?'

'स्वयं को पहचानो! तुम्हें उस सत्य का आभास होगा जो तुम्हारे अपने भीतर छिपा है,' योगी उत्तर देता है।

'परंतु मुझे अपने भीतर तो केवल अज्ञानता का खोखलापन दिखाई पड़ता है,' मैं कहता हूँ।

'वह अज्ञानता तुम्हारे विचारों में है,' संन्यासी लिखकर संस्कृत में उत्तर देता है।

'क्षमा करें गुरुदेव, किंतु आपके उत्तर से मेरी दुविधा और बढ़ रही है!'

संन्यासी मेरे उतावलेपन पर मुस्करा देता है। वह कुछ लिखता है:

'तुम्हारा ध्यान केवल अपने वर्तमान अज्ञान पर है। अपने पूर्ववर्ती ज्ञान के बारे में सोचो, जो कि आत्म-बोध का स्वरूप है। विचार एक बैलगाड़ी है, जो मनुष्य को पहाड़ी सुरंग के अंधेरे में ले जाता है और यदि इसे वापस मोड़ दो तो यह तुम्हें फिर से प्रकाश की ओर ले जाएगा।'

मैं संन्यासी के शब्दों पर विचार करता हूँ लेकिन मेरी दुविधा अब भी बनी हुई है। यह देखकर संन्यासी फिर से काग़ज़ माँगता है और कुछ देर पेंसिल को हवा में रोककर फिर लिखता है:

'विचारों को पीछे की ओर मोड़ना ही श्रेष्ठ कोटि का योग है। अब समझे?'

मुझे उसकी बात थोड़ी-बहुत समझ में आने लगी है। मुझे लगता है यदि इस विषय पर कुछ देर सोचने का समय मिले तो हम एक-दूसरे को समझ सकते हैं। इसलिए मैं इस बात पर और अधिक ज़ोर न देने का निश्चय करता हूँ।

मैं संन्यासी को देखने में इतना व्यस्त हूँ कि मैंने इस बात पर ध्यान ही नहीं दिया कि दरवाज़ा खुला देखकर वहाँ एक और आगंतुक आ गया है। वह हमारे साथ बैठ चुका है। मुझे उसकी उपस्थिति का अंदाज़ा तब होता है जब वह मेरे कान में कुछ कहता है। वह बिलकुल मेरे पीछे बैठा है। मैं जिस बीच संन्यासी के उत्तर पर विचार करता हूँ और उसके लिखे अक्षरों से थोड़ा हताश हूँ, मुझे एक रहस्यमय फुसफुसाहट सुनाई पड़ती है। कोई बहुत बढ़िया अंग्रेज़ी में कह रहा है:

'आपको जिस उत्तर की प्रतीक्षा है, वह मेरे गुरु आपको दे सकते हैं!'

मैं सिर घुमाकर नए आगंतुक को देखता हूँ।

उस व्यक्ति की आयु चालीस वर्ष से अधिक नहीं है। उसने भिक्षु जैसे लाल वस्त्र पहने हैं। उसके चेहरे की त्वचा पीतल की तरह चमक रही है। उसकी काया बलिष्ठ है और कंधे चौड़े हैं। उसका व्यक्तित्व दमदार है। उसकी नाक पतली और तोते की तरह मुड़ी है। उसकी आँखें छोटी हैं तथा लगातार हँसने के कारण उसके किनारों पर झुर्रियाँ पड़ गई हैं। वह फ़र्श पर बैठा है और मुझे देखकर मुस्करा रहा है।

मैं इस तरह अचानक किसी आगंतुक से बातचीत करके अशिष्टता को बढ़ावा नहीं देना चाहता, इसलिए मैं अपना ध्यान फिर संन्यासी पर केंद्रित कर लेता हूँ।

अचानक मेरे दिमाग़ में एक और प्रश्न उत्पन्न उठता है। उसे पूछने के लिए थोड़ी हिम्मत चाहिए।

'महाराज, इस संसार को सहायता की आवश्यकता है। क्या आपके जैसे ज्ञानी लोगों का इस तरह एकांत में रहना उचित होगा?'

संन्यासी के चेहरे पर विचित्र भाव उत्पन्न हो जाता है।

'मेरे बच्चे,' वह उत्तर देता है, 'तुम जब स्वयं को ही नहीं जानते, तो तुम मुझे समझने का स्वप्न कैसे देख रहे हो? आत्मा के विषय में इस तरह चर्चा करने का कोई लाभ नहीं है। योग के अभ्यास द्वारा तुम्हें पहले स्वयं को जानना होगा। इस मार्ग पर चलने के लिए बहुत कठिन मेहनत की आवश्यकता होती है। इसके बाद तुम्हारी समस्याएँ अपने आप सुलझ जाएँगी!'

मैं उससे पूछने का एक अंतिम प्रयास करता हूँ।

'संसार को, जितना उसके पास ज्ञान है, उससे अधिक की आवश्यकता है। मैं वह ज्ञान प्राप्त करके उसे बाँटना चाहता हूँ। मुझे क्या करना चाहिए?'

'तुम्हें जब परम सत्य का आभास हो जाएगा तो तुम स्वयं जान जाओगे कि मानव-जाति

के कल्याण के लिए क्या सर्वोत्कृष्ट है। तुम्हारे पास ऐसा करने का सामर्थ्य भी होगा। यदि फूल में शहद है, तो मक्खी उसे अपने आप खोज लेती है। यदि मनुष्य के पास आध्यात्मिक ज्ञान और शक्ति है तो उसे लोगों की तलाश करने की आवश्यकता नहीं पड़ती, बल्कि लोग स्वयं उसके पास पहुँच जाते हैं। स्वयं को पूरी तरह पहचानने का प्रयास करो। इसके बाद किसी अन्य निर्देश की आवश्यकता नहीं होगी। बस, तुम्हें इतना ही करना है!'

इसके बाद संन्यासी साक्षात्कार को रोकने की इच्छा व्यक्त करता है ताकि वह फिर से ध्यान आरंभ कर सके।

मैं संन्यासी से अनुरोध करता हूँ कि वह मुझे एक अंतिम संदेश दे।

मौनी बाबा शून्य में देखते हैं। एक मिनट के बाद वह काग़ज़ पर कुछ लिखकर मेरी ओर बढ़ा देते हैं उस पर लिखा है:

'मैं तुम्हारे यहाँ आने से बहुत प्रसन्न हूँ। इसे मेरी दीक्षा समझो!'

मैं मौनी बाबा के उत्तर को अभी ठीक से समझ भी नहीं पाता हूँ, कि मुझे अपने शरीर में एक विचित्र प्रवाह महसूस होता है। वह प्रवाह मेरी रीढ़ की हड्डी से होता हुआ मेरी गर्दन में, और फिर मेरे सिर तक पहुँच जाता है। अचानक मेरी इच्छा-शक्ति अपने चरम पर पहुँच गई है। मैं स्वयं पर विजय प्राप्त करने की इच्छा के प्रति सजग हो गया हूँ। मुझे भीतर से ऐसा भी महसूस होता है कि मेरा आदर्श और कुछ नहीं बल्कि मेरे अपने ही भीतर की आवाज़ है जो मुझे परम आनंद प्रदान कर सकती है।

मुझे अपने भीतर मौनी बाबा से आता एक विचित्र प्रवाह महसूस हो रहा है। तभी मेरे दिमाग़ में एक विचार का टेलीपैथी की भाँति प्रवेश होता है। क्या ऐसा संभव है कि मौनी बाबा मुझे अपनी उपलब्धि का आभास देने का प्रयास कर रहे हैं?

संन्यासी की आँखें फिर स्थिर हो जाती हैं। उसका शरीर योग-मुद्रा में शांत होने लगता है। मैं समझ गया हूँ कि वह फिर से ध्यान में डूबने जा रहा है। उसका ध्यान विचारों से और अधिक गहन होगा। वह अपनी चेतना को ध्यान की गहराई में ले जा रहा है, जो उसे इस संसार से कहीं ज़्यादा पसंद है।

क्या यह सच्चा योगी है? क्या यह किसी रहस्यमय तलाश में है जिसका मानव जाति के लिए कुछ अर्थ हो सकता है? कौन जानता है?

हम वहाँ से बाहर निकलते हैं तो अड्यार का योगी, ब्रह्मा मेरी ओर देखकर शांत स्वर में कहता है:

'यह सिद्ध योगी है और इसके पास गूढ़ शक्तियाँ भी हैं। परंतु यह अध्यात्म को और अधिक मज़बूत और आदर्श स्थिति में लाना चाहता है। शारीरिक नियंत्रण के योग के लंबे अभ्यास से इसका शरीर अत्यंत स्वस्थ है। मैं देख सकता हूँ कि यह मानसिक नियंत्रण की

कला में पारंगत होकर काफ़ी आगे बढ़ चुका है। मैं इसे पहले से जानता हूँ।'

'कब से?'

'मैंने इसे कई वर्ष पूर्व यहाँ देखा था। उस समय यह बिना कुटिया के खुले मैदान में रहता था और योगाभ्यास करता था। मैं इसे पहचान गया था कि यह भी योगाभ्यास द्वारा मेरे मार्ग पर ही चल रहा है। उसने मुझे यह भी कहा था कि वह आरंभिक जीवन में सेना का एक सिपाही था। सेवा काल समाप्त होने के बाद वह सांसारिक जीवन से थक गया और उसने एकांत को गले लगा लिया। इसके बाद, उसकी भेंट एक प्रसिद्ध फ़क़ीर मरकयार से हुई और फिर वह उसका शिष्य बन गया।'

हम लोग मैदान से होकर गुज़रते हैं और बाहर सड़क पर आ जाते हैं। मैं इस अप्रत्याशित और अवर्णनीय अनुभव के विषय में किसी से कुछ नहीं कहना चाहता। मैं उस पर गंभीरता से विचार करना चाहता हूँ।

मेरी भेंट मौनी बाबा से फिर कभी नहीं हुई। वह नहीं चाहता था कि मैं उसके एकांत जीवन में फिर से हस्तक्षेप करूँ। इसलिए मैं उसकी इच्छा का सम्मान करते हुए उसे ध्यान में डूबा छोड़ वहाँ से लौट जाता हूँ। उसकी प्रशिक्षण केंद्र चलाने अथवा शिष्य बनाने की इच्छा नहीं है। वह केवल निर्बाध ढंग से इस जीवन से आगे चला जाना चाहता है। उसने मुझसे जो कहा, उससे अधिक उसके पास कहने को कुछ नहीं है। वह हम पश्चिमवासियों की तरह वार्तालाप की कला में माहिर नहीं है।

अध्याय 8

दक्षिण भारत के आध्यात्मिक गुरु

हम मद्रास जाने वाली सड़क के अंत तक अभी पहुँचे भी नहीं हैं कि अचानक कोई मेरे पास आकर खड़ा हो जाता है। मैं सिर घुमाता हूँ। वहाँ पीले वस्त्रों में एक योगी खड़ा है। वह मुझे देख कर मुस्कराता है। उसकी मुस्कान शानदार है और मुस्कराने की वजह से उसकी आँखों के किनारे पर झुर्रियों से बारीक लकीरें पड़ गई हैं।

'आप मुझसे बात करना चाहते हैं?' मैं पूछता हूँ।

'जी, हाँ!' वह बढ़िया अंग्रेज़ी में उत्तर देता है। 'क्या मैं आपसे पूछ सकता हूँ कि आप हमारे देश में क्या कर रहे हैं?'

मैं यह विचित्र प्रश्न सुनकर हिचकिचाता हूँ और फिर उत्तर देने का निश्चय करता हूँ।

'बस, यूँ ही घूम रहा हूँ!'

'मुझे लगता है, आपकी हमारे यहाँ के धार्मिक लोगों में बहुत रुचि है?'

'हाँ, थोड़ी है।'

'मैं एक योगी हूँ,' वह मुझे बताता है।

इतना मोटा योगी मैंने आज से पहले कभी नहीं देखा।

'आप यहाँ कितने समय से हैं?' मैं पूछता हूँ।

'जी, लगभग तीन वर्ष से।'

'हाँ, आप मुझे योगी ही लगते हैं। कृपया ऐसा कहने के लिए मुझे क्षमा करें!'

वह गर्व से सीधा खड़ा हो जाता है। वह नंगे पैर है।

‘मैं महाराज की सेना में सात वर्ष तक सैनिक रह चुका हूँ,’ वह बोलता है।

‘बहुत अच्छा!’

‘जी हाँ, मैं मेसोपोटामिया के युद्ध के समय भारतीय सेना में था। युद्ध के उपरांत मुझे सेना के लेखा विभाग में भेज दिया गया क्योंकि मेरी बुद्धि कुशाग्र थी!’

मैं उसके ही मुँह से उसकी अपनी तारीफ़ सुनकर मुस्कराने के लिए विवश हो जाता हूँ।

‘मैंने पारिवारिक समस्याओं के कारण नौकरी छोड़ दी और कुछ समय तक मुझे काफ़ी परेशानी हुई। इसी से फिर मुझे आध्यात्मिक मार्ग पर चलने और योगी बनने की प्रेरणा मिली।’

मैं उसे अपना कार्ड देता हूँ।

‘क्या हम एक दूसरे का परिचय जान लें?’ मैं कहता हूँ।

‘मेरा व्यक्तिगत नाम सुब्रमण्यम है। मैं जाति से अय्यर हूँ।’ वह जल्दी से उत्तर देता है।

‘तो, श्रीमान सुब्रमण्यम, मौनी बाबा के घर में आपने जो बात मेरे कान में कही थी, मैं उस विषय में बात करने की प्रतीक्षा कर रहा हूँ।’

‘और मैं भी आपसे इसी विषय में बात करना चाहता था! आप अपने प्रश्न को लेकर मेरे गुरु के पास चलिए क्योंकि वह भारत के सबसे बुद्धिमान व्यक्ति हैं। वे यहाँ तक कि योगियों से भी अधिक बुद्धिमान हैं!’

‘तो? आपने पूरे भारतवर्ष का भ्रमण कर लिया है? क्या आप ऐसे महान योगियों से मिल चुके हैं जो आप इस तरह का वक्तव्य दे रहे हैं?’

‘मैं बहुत-से योगियों से मिला हूँ क्योंकि मैंने दक्षिण से लेकर ऊपर उत्तर में हिमालय तक पूरे देश को अच्छी तरह देखा है।’

‘क्या सचमुच?’

‘महाशय, मैं आज तक कभी अपने गुरु जैसे किसी व्यक्ति से नहीं मिला। वह महात्मा हैं और मैं चाहता हूँ कि आप भी उनसे एक बार भेंट करें।’

‘ऐसा क्यों?’

‘क्योंकि उन्होंने ही मुझे आपके पास भेजा है! उन्हीं की शक्ति से आप भारत पहुँचे हैं!’

मुझे यह अतिशयोक्ति लग रही है। मैं अचानक उस व्यक्ति से दूर हट जाता हूँ। मुझे अति भावुक लोगों के अतिशयोक्तिपूर्ण वक्तव्यों से घबराहट होती है और यह स्पष्ट है कि पीले वस्त्रों में यह योगी बहुत ज़्यादा भावुक है। इसका स्वर, इसकी मुद्राएँ, इसकी भाव-भंगिमा और इसके आस-पास का वातावरण इस बात को स्पष्ट बता रहा है।

‘मैं समझा नहीं!’ मैंने उत्तर दिया।

वह अपनी बात को समझाने लगा:

'मेरी आठ महीने पहले अपने गुरु से मुलाक़ात हुई थी। मुझे पाँच महीने तक उनके साथ रहने की अनुमति मिली और फिर मुझे दोबारा यात्रा पर भेज दिया गया। मुझे नहीं लगता कि आपको उनके जैसा कोई व्यक्ति मिलेगा। उनके पास ऐसी आध्यात्मिक शक्तियाँ हैं कि वह आपके बिना कहे भी आपके विचारों को पढ़कर उत्तर दे सकते हैं। उनके श्रेष्ठ आध्यात्मिक ज्ञान को पहचानने के लिए आपको बस कुछ समय उनके साथ बिताना होगा।'

'क्या आपको विश्वास है कि उन्हें मेरा इस तरह उनसे मिलना अच्छा लगेगा?'

'अवश्य महोदय! निस्संदेह! मैं उन्हीं के मार्गदर्शन से आपके पास आया हूँ।'

'वह कहाँ रहते हैं?'

'पवित्र आकाशदीप के पर्वत - अरुणाचल पर!'

'और यह कहाँ है?'

'उत्तर आर्कोट क्षेत्र में, जो दक्षिण भारत में बहुत नीचे स्थित है। मैं आपका मार्गदर्शन करूँगा और आपको वहाँ ले चलूँगा। मेरे गुरु आपकी सब शंकाओं का निवारण करेंगे और आपकी सभी समस्याओं का समाधान कर देंगे क्योंकि उन्हें परम सत्य का ज्ञान है।'

'यह बहुत रोचक है!' मैं अनमने ढंग से बोल पड़ता हूँ। 'परंतु मुझे खेद है कि इस समय मेरे लिए यात्रा करना असंभव है। मेरा सामान बंधा हुआ है और मैं जल्द ही उत्तर-पूर्व दिशा की ओर निकलने वाला हूँ। वहाँ मुझे दो महत्त्वपूर्ण लोगों से मुलाक़ात करनी है।'

'परंतु यह उससे भी अधिक महत्त्वपूर्ण है!'

'मैं माफ़ी चाहता हूँ। हम लोगों की मुलाक़ात देर से हुई। मैं पहले ही जाने का निश्चय कर चुका हूँ और इसे बदल पाना संभव नहीं होगा। मैं दक्षिण भारत की यात्रा पर बाद में आऊँगा, परंतु हमें इस यात्रा का विचार अभी के लिए छोड़ना होगा।'

मेरी बात सुन कर योगी निराश हो जाता है।

'आप एक बहुत अच्छा अवसर खो रहे हैं और...'

मुझे उससे तर्क करना व्यर्थ लगता है। मैं उसकी बात बीच में काट देता हूँ।

'मुझे अब जाना होगा। धन्यवाद!'

'मैं आपकी अस्वीकृति को स्वीकार नहीं करूँगा,' वह बोलता है। 'मैं कल शाम को आपके पास आऊँगा और उम्मीद करता हूँ कि तब तक आपका इरादा बदल जाएगा।'

हमारी यह वार्ता अचानक समाप्त हो जाती है। मैं देखता हूँ कि वह योगी सड़क पार करके दूसरी ओर चला जाता है।

मुझे घर पहुँचने पर ऐसा महसूस होने लगता है कि शायद मुझसे निर्णय लेने में कुछ भूल

हुई है। यदि योगी का गुरु उसके बताए दावों पर आधा भी खरा उतरता है तो दक्षिणी छोर तक जाने का कष्ट उठाया जा सकता है। परंतु मैं इस तरह के अति उत्साही भक्तों से मिल-मिलकर थक चुका हूँ। ये लोग अपने गुरुओं के विषय में बहुत बढ़ा-चढ़ाकर बोलते हैं और बाद में, उनसे मिलकर मुझे निराशा होती है और पश्चिमवासियों द्वारा की जाने वाली आलोचनाएँ सही प्रतीत होती हैं। इसके अतिरिक्त कई रातों तक ठीक से सो न पाने और गर्मी भरे दिनों में घूमने के कारण मेरा शरीर अशांत हो गया है। इसलिए मुझे ऐसी यात्रा पर जाना व्यर्थ प्रतीत हो रहा है।

परंतु मैं यह तर्क देकर भी मन में उठे भाव को दबा नहीं पा रहा हूँ। मेरे भीतर की एक विचित्र प्रेरणा मुझे बता रही है कि उस योगी के आग्रह और उसके गुरु के विषय में किए गए उसके दावों का ठोस आधार हो सकता है। मैं हताशा के भाव को दूर नहीं कर पा रहा हूँ।



चाय और बिस्किट का नाश्ता करते समय, नौकर किसी आगंतुक के आने की सूचना देता है। आने वाला व्यक्ति स्याही बिरादरी का, यानी एक लेखक है जिसका नाम वेंकटरमणी है।

मैंने अपने संदूक के नीचे बहुत-से परिचय-पत्र फेंक रखे हैं। उन्हें इस्तेमाल करने में मेरी अब कोई रुचि नहीं है। हालाँकि मैंने उनमें से एक का इस्तेमाल मुंबई में इस खोज को शुरू करने से पहले किया था और एक अन्य का उपयोग मद्रास में किया था क्योंकि मुझे एक व्यक्तिगत संदेश देने का कार्य सौंपा गया था। इस प्रकार यह है दूसरा पत्र वेंकटरमणी को मेरे द्वार पर ले आया है।

वेंकटरमणी, मद्रास विश्वविद्यालय प्रबंधन सभा का सदस्य है, परंतु वह ग्रामीण जीवन पर लिखे शानदार निबंधों और उपन्यासों के लिए अधिक प्रख्यात है। वह मद्रास प्रेसिडेंसी का पहला ऐसा हिंदू लेखक है, जो अंग्रेज़ी में लिखता है और जिसे साहित्य की सेवा के लिए सार्वजनिक समारोह में पुरस्कार से भी सम्मानित किया जा चुका है। उसकी लेखन-कला इतनी बढ़िया है कि उसकी भारत में रवींद्रनाथ टैगोर और इंग्लैंड में लार्ड हेल्डन द्वारा प्रशंसा की जा चुकी है। उसके गद्य में बहुत शानदार उपमाएँ हैं परंतु उसकी कहानियों में उपेक्षित ग्रामीण जीवन का दु:ख छिपा है।

वह जैसे ही कमरे में प्रवेश करता है, मैं उसके लंबे, दुबले-पतले व्यक्तित्व को देखता हूँ। उसका सिर छोटा है और बाल भी छोटे हैं। उसकी नाक एवं ठुड्डी भी छोटी है और उसने चश्मा लगाया है। उसकी आँखें एक विचारक आदर्शवादी तथा कवि की आँखें हैं। उसकी उदास आँखों में कष्ट में जी रहे कृषकों का दु:ख साफ़ झलकता है।

हमें शीघ्र ही एहसास होता है कि हमारी बहुत-सी अभिरुचियाँ एक समान हैं। अनेक

मुद्दों पर बातचीत करने के बाद और राजनीति पर विस्तृत चर्चा करने के उपरांत, मैं उसे भारत आने का असली कारण बताता हूँ। मैं बहुत खुले मन से अपना उद्देश्य बता देता हूँ। मैं उससे पूछता हूँ कि क्या वह किसी सच्चे योगी के विषय में जानता है जिसके पास वाक़ई दिखाने लायक़ कोई उपलब्धि है। मैं उसे यह चेतावनी भी देता हूँ कि मेरी मैले-कुचैले संन्यासियों या तमाशा दिखाने वाले फ़क़ीरों में कोई रुचि नहीं है।

वह अपना सिर नकारात्मक अंदाज़ में हिलाता है।

'भारत में अब ऐसे लोग नहीं मिलते। हमारे देश में बढ़ते हुए भौतिकवाद जनित एक ओर तेज़ी से होते पतन तथा दूसरी ओर ग़ैर आध्यात्मिक पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव के कारण जिन महान गुरुओं की तुम खोज कर रहे हो, वे सब ग़ायब हो चुके हैं। फिर भी, मेरा विश्वास है कि कुछ ऐसे लोग निर्जन वनों में अवश्य मौजूद होंगे, किंतु उन्हें खोजने में पूरा जीवन बिताने के बाद भी बहुत मुश्किल से तुम्हारी उनसे भेंट हो पाएगी। जब मेरे भारतीय साथी मित्र इस तरह की खोज करते हैं तो उन्हें बहुत दूर तक की यात्रा करनी पड़ती है तो फिर किसी यूरोपीय व्यक्ति के लिए ऐसा करना कितना मुश्किल होगा?'

'क्या आपको थोड़ी-सी आशा है?' मैं पूछता हूँ।

'यह कहना मुश्किल है। तुम भाग्यशाली भी हो सकते हो!'

मैं अकारण एक प्रश्न कर बैठता हूँ:

'क्या आपने उत्तरी आर्कोट के पहाड़ों में किसी योगी के विषय में सुना है?'

वह सिर हिलाकर मना कर देता है।

हम लोग दोबारा साहित्यिक विषयों पर बातचीत करने लगते हैं।

मैं उसे सिगरेट देता हूँ, पर वह धूम्रपान नहीं करता। मैं अपनी सिगरेट जलाता हूँ और जिस बीच उसकी सुगंध का आनंद ले रहा हूँ, वेंकटरमणी प्राचीन हिंदू संस्कृति की, जिसके आदर्शों का तेज़ी से पतन हो रहा है, प्रशंसा में दिल खोलकर मन की बात सामने रखता है। वह सादा जीवन, सामुदायिक सेवा, शांतिपूर्ण जीवन, आध्यात्मिक उद्देश्य के विषय में बात करता है। वह उन परजीवी मूर्खताओं को निकाल फेंकना चाहता है जो भारतीय समाज के शरीर में धीरे-धीरे फैल रही हैं। हालाँकि उसके दिमाग़ में जो बात सबसे अधिक समाई है, वह लाखों भारतीय गाँवों की रक्षा करने से संबंधित है क्योंकि हमारे गाँव धीरे-धीरे विशाल औद्योगीकृत शहरों की बस्तियों में परिवर्तित हो रहे हैं। हालाँकि यह ख़तरा अभी बहुत दूर है, परंतु पाश्चात्य औद्योगिक इतिहास की स्मृति तथा आजकल के मौजूदा हालात को देखते हुए वह अपनी दूरदर्शी नज़र से देख चुका है कि ऐसा होना अवश्यंभावी है। वेंकटरमणी मुझे बताता है कि उसका जन्म दक्षिण भारत के एक प्राचीन गाँव में हुआ था। उसे इस बात का बहुत दु:ख है कि उसका गाँव सांस्कृतिक पतन और भौतिक दरिद्रता का शिकार हो गया है।

उसे सीधे-सादे ग्रामीणवासियों के जीवन को सुधारने की योजनाएँ बनाना बहुत पसंद है और जब तक वे लोग दुखी हैं, वह स्वयं को सुखी अनुभव नहीं कर सकता।

मैं उसके दृष्टिकोण को समझने का प्रयास करता हूँ और चुपचाप उसकी बात सुनता हूँ। अंत में वह चलने के लिए उठ जाता है। मैं उसकी लंबी और दुबली-पतली आकृति को ओझल होता हुआ देखता हूँ।

अगले दिन सुबह मुझे बहुत आश्चर्य होता है कि वह फिर मेरे पास आया है। उसकी गाड़ी मेरे द्वार पर तेज़ी से आकर रुकती है। उसे डर है कि मैं कहीं बाहर ना चला जाऊँ।

'मुझे कल रात ही यह संदेश मिला है कि मेरे सर्वोच्च संरक्षक एक दिन के लिए चेंगलपट्टु में ठहरे हुए हैं,' वह अचानक बोलता है।

कुछ देर में साँस पर क़ाबू पाने के बाद वह फिर बोलने लगता है:

'कुंभकोणम में रहने वाले परम पूजनीय शंकराचार्य दक्षिण भारत के आध्यात्मिक गुरु हैं। लाखों लोग उन्हें ईश्वर का संदेशवाहक मानकर उनकी पूजा करते हैं। उन्होंने मुझमें रुचि दिखाई और मेरे साहित्यिक भविष्य को प्रेरित किया। मैं आध्यात्मिक परामर्श के लिए उन्हीं के पास जाता हूँ। मैं आपको अब वह बात बताना चाहता हूँ जो मैं कल नहीं कह सका था। हम शंकराचार्य को सर्वश्रेष्ठ आध्यात्मिक उपलब्धि का गुरु मानते हैं परंतु वह योगी नहीं हैं। वह दक्षिणी हिंदू जगत के अगुवा हैं। वह सच्चे संन्यासी हैं और एक महान धार्मिक दार्शनिक भी हैं क्योंकि उन्हें हमारे समय की अधिकांश आध्यात्मिक बातों का ज्ञान है। उन्होंने इस क्षेत्र में अनेक उपलब्धियाँ भी प्राप्त की हैं। मेरा मानना है कि उन्हें सच्चे योगियों के विषय में अवश्य जानकारी होगी। वह बहुत-से गाँवों की यात्रा करते हैं और एक शहर से दूसरे शहर में घूमते हैं, ताकि उन्हें इस तरह के विषयों की पूर्ण जानकारी मिल सके। वह जहाँ भी जाते हैं, वहाँ रहने वाले धार्मिक लोग उनसे मिलने अवश्य आते हैं। वह शायद आपको कोई लाभकारी सलाह दे सकेंगे। क्या आप उनसे मिलना चाहेंगे?'

'मैं इसके लिए आपका बहुत आभारी हूँ। मुझे उनसे मिलने में बहुत ख़ुशी होगी। यहाँ से चेंगलपट्टु कितनी दूर है?'

'वह यहाँ से केवल पैंतीस मील दूर है! लेकिन रुकिए?'

'क्या हुआ?'

'मुझे इस बात पर संदेह है कि पूज्य शंकराचार्य आप से भेंट करेंगे। मैं निश्चय ही उन्हें इसके लिए राज़ी करने का पूरा प्रयास करूँगा परंतु...'

'मैं यूरोपीय हूँ!' मैं उसके लिए वाक्य पूरा कर देता हूँ। 'मैं समझ सकता हूँ।'

'क्या आप फटकार सुनने का ख़तरा उठा सकते हैं?' वह पूछता है।

'हाँ, क्यों नहीं! चलिए, चलते हैं।'

हम लोग थोड़ा हल्का भोजन करने के बाद चेंगलपट्टु के लिए रवाना हो जाते हैं। मैं अपने मित्र से शंकराचार्य के विषय में सवाल पूछता चलता हूँ। मुझे पता लगता है कि भोजन और वस्त्रों के संदर्भ में शंकराचार्य लगभग संन्यासी जैसी सादगी से रहते हैं, परंतु उनके पद की गरिमा ऐसी है कि यात्रा करते समय वह राजसी धूमधाम के साथ चलते हैं। उनके पीछे अनेक हाथी और ऊँट, पंडित और उनके शिष्य और बहुत-से लोग चलते हैं। वे जहाँ से गुज़रते हैं, वहाँ लोगों की भीड़ लग जाती है। लोग उनके पास आध्यात्मिक, मानसिक, शारीरिक और आर्थिक सहायता के लिए आते हैं। प्रतिदिन उनके चरणों में हज़ारों रुपये का चढ़ावा चढ़ता है, किंतु उन्होंने दरिद्रता में जीवन यापन करने की शपथ ली है इसलिए उनके नाम पर आने वाला यह चढ़ावा अन्य लाभकारी कार्यां में लगा दिया जाता है। वह ग़रीबों का दुःख दूर करते हैं, उन्हें शिक्षा प्रदान करते हैं। उस धन से मंदिरों की देखरेख और वर्षा-जलाशयों की स्थिति में सुधार किया जाता है जो दक्षिण भारत के लिए बहुत लाभकारी है। परंतु उनके जीवन का उद्देश्य मुख्य रूप से आध्यात्मिक है। वह जहाँ भी रुकते हैं, वहाँ लोगों को हिंदू संस्कृति और उसकी विरासत का ज्ञान प्रदान करते हैं तथा लोगों के दिल और दिमाग़ को भी प्रभावित करते चलते हैं। वह अधिकतर किसी स्थानीय मंदिर में प्रवचन देते हैं और फिर निजी तौर पर बहुत-से लोगों के सवालों के जवाब देते हैं।

मुझे बताया गया है कि शंकराचार्य, आरंभिक शंकराचार्य की पंक्ति में यह उपाधि प्राप्त करने वाले छियासठवें व्यक्ति हैं। उनके पद और शक्ति को सही ढंग से समझने के लिए मुझे वेंकटरमणी से अनेक प्रश्न पूछने पड़ रहे हैं। उसकी बातों से पता लगता है कि आदिगुरु शंकराचार्य लगभग दो हज़ार वर्ष पूर्व हुए थे और वह अब तक के महानतम ऐतिहासिक ब्राह्मण गुरुओं में से एक हैं। उन्हें एक तार्किक रहस्यवादी तथा उच्च श्रेणी का दार्शनिक कहा जा सकता है। उनके समय में हिंदू धर्म, बहुत अस्त-व्यस्त और बुरी दशा में था तथा उसका आध्यात्मिक महत्त्व तेज़ी से घट रहा था। ऐसा लगता है कि इसी उद्देश्य से उनका जन्म हुआ था। उन्होंने अट्ठारह वर्ष की आयु से भारत-भ्रमण आरंभ किया और इस बीच उन्होंने बहुत-से विद्वानों और पुजारियों से शास्त्रार्थ किया तथा उन्हें अपने सिद्धांतों से परिचित करवाया। ऐसा करने से उनके बहुत-से शिष्य बन गए। उनकी बुद्धि अत्यंत कुशाग्र थी। उनकी भेंट जिन भी लोगों से हुई, उनका कोई सानी नहीं था। वह भाग्यशाली थे कि उन्हें अपने समय के पैगंबर की तरह स्वीकार किया और सम्मान दिया गया।

उनके जीवन के बहुत-से उद्देश्य थे। यद्यपि उन्होंने अपने देश में मुख्य धर्म का प्रचार किया। साथ ही, उन्होंने धर्म की आड़ में पल रही अनेक ख़तरनाक कुरीतियों की निंदा की। उन्होंने लोगों को सन्मार्ग पर चलाने का प्रयास किया तथा उन्हें इस बात की शिक्षा दी कि व्यक्तिगत प्रयासों के अभाव में दिखावटी रीति-रिवाजों का कोई लाभ नहीं है। उन्होंने अपनी माँ की मृत्यु पर अंतिम संस्कार करके जाति-प्रथा के नियमों को तोड़ा, जिसके लिए

तत्कालीन पुजारियों ने उन्हें समाज से बहिष्कृत भी कर दिया था। यह निर्भय युवक भगवान बुद्ध का एक योग्य उत्तराधिकारी था जिसने पहली बार जाति के नियमों को तोड़ा था। ब्राह्मणों द्वारा पढ़ाए पाठ के विपरीत, शंकराचार्य ने यह शिक्षा दी कि प्रत्येक मनुष्य, चाहे वह किसी भी जाति अथवा वर्ण का हो, ईश्वर की कृपा प्राप्त करके परम सत्य को जान सकता है। उन्होंने किसी विशिष्ट संप्रदाय की स्थापना नहीं की और हमेशा यही कहा कि प्रत्येक धर्म, यदि पूरी तन्मयता से उस पर चला जाए, ईश्वर तक पहुँचने का मार्ग है। उन्होंने अपनी बात को सिद्ध करने के लिए दर्शन के सिद्धांतों का सहारा लिया और उनकी विवेचना की। शंकराचार्य ने एक विशाल और शिक्षित विरासत अपने पीछे छोड़ी है, जिसका देश-भर के प्रत्येक शहर में आदर और सम्मान किया जाता है। पंडित वर्ग, आदिगुरु शंकराचार्य की दार्शनिक और धार्मिक विरासत को मूल्यवान समझता है। हालाँकि वे लोग स्वाभाविक रूप से, उसके अर्थ को लेकर परस्पर झगड़ते रहते हैं।

शंकराचार्य ने भगवा वस्त्र पहनकर तथा हाथ में दंड लेकर पूरे देश का भ्रमण किया। उन्होंने अपनी कुशल रणनीति के तहत, चारों दिशाओं में चार बड़े संस्थान स्थापित किए। उत्तर में बद्रीनाथ, पूर्व में पुरी, इत्यादि। इन सबका केंद्रीय मुख्यालय, दक्षिण में स्थित है, जहाँ से उन्होंने अपना कार्य आरंभ किया था। आज तक, हिंदू धर्म के लिए दक्षिण भारत अत्यंत पवित्र स्थान माना जाता है। वर्षा-काल समाप्त होने के बाद, इन संस्थानों से प्रशिक्षित भिक्षुओं के समूह निकलते थे और देश-भर में शंकराचार्य का संदेश प्रसारित करते थे। आदिगुरु शंकराचार्य की मृत्यु मात्र बत्तीस वर्ष की आयु में हो गई। हालाँकि उनके विषय में एक जनश्रुति यह भी है कि वे अचानक ग़ायब हो गए थे।

इस सूचना का महत्त्व यह पता लगने पर समझ में आता है कि आदिगुरु शंकराचार्य के उत्तराधिकारी, जिनसे मैं आज मिलने वाला हूँ, उन्हीं के कार्य और शिक्षा को आगे बढ़ा रहे हैं। इस संदर्भ में एक विचित्र परंपरा है। आदिगुरु शंकराचार्य ने अपने शिष्यों से को वचन दिया था कि वे आत्मा-रूप में सदैव उनके साथ रहेंगे और अपने उत्तराधिकारियों पर 'हावी' रहते हुए रहस्यमय ढंग से इस कार्य को पूरा करेंगे। लगभग कुछ ऐसा ही सिद्धांत, तिब्बत के लामा पद के साथ भी जुड़ा है। दलाई लामा के पद पर रहने वाला व्यक्ति, अपने अंतिम क्षणों में अपने उत्तराधिकारी को नामित करता है। सामान्यतः, किसी कम आयु के बालक को इस पद के लिए चुना जाता है और उसे श्रेष्ठ शिक्षकों के सानिध्य में प्रशिक्षण देकर बालक को उस महान पद के योग्य बनाया जाता है। उसे केवल धार्मिक और बौद्धिक प्रशिक्षण ही नहीं, बल्कि श्रेष्ठ कोटि के योग और ध्यान का प्रशिक्षण भी दिया जाता है। इस प्रशिक्षण के बाद, उसे लोगों की सेवा में कार्य करते हुए जीवन व्यतीत करना होता है। अनेक शताब्दियों से यही परंपरा चली आ रही है। इस पद को प्राप्त करने वाले व्यक्ति में कभी श्रेष्ठ गुणों तथा और निस्वार्थता का अभाव नहीं पाया जाता है।

वेंकटरमणी अपनी कथाओं को छियासठवें शंकराचार्य की शानदार उपलब्धियों से और गौरवान्वित कर रहा है। इनमें एक घटना यह भी है कि उन्होंने अपने एक चचेरे भाई का चमत्कारिक ढंग से उपचार किया था। उनका भाई गठिया रोग से ग्रस्त था और पूरी तरह बिस्तर पर रहता था। शंकराचार्य ने एक दिन उसके घर जाकर उसके शरीर को छुआ और मात्र तीन घंटे में वह बिस्तर से उठ खड़ा हुआ। कुछ ही समय बाद वह पूरी तरह ठीक हो गया।

इसके अतिरिक्त यह भी कहा जाता है कि शंकराचार्य के पास लोगों के विचारों को पढ़ लेने की शक्ति है। वेंकटरमणी को इस बात पर पूर्ण विश्वास भी है।



हम खजूर के पेड़ों से भरे मार्ग से होते हुए चेंगलपट्टु पहुँचते हैं, जहाँ हमें रंगे-पुते और साफ़-सुथरे घर दिखाई देते हैं। उनकी छतें अधिकतर लाल हैं और वहाँ की गलियाँ बहुत संकरी हैं। हम नीचे उतरकर शहर के बीच में पहुँचते हैं, जहाँ भारी भीड़ एकत्रित है। मुझे एक घर में ले जाया जाता है। वहाँ कुछ सचिवों का एक समूह भारी मात्रा में कुंभकोणम में स्थित मुख्यालय से परमपूज्य शंकराचार्य द्वारा किए जाने वाले पत्रचार की देख-रेख करता है।

मैं साथ वाले एक कमरे में प्रतीक्षा करता हूँ। वहाँ कुर्सी नहीं है। इस बीच वेंकटरमणी एक सचिव संदेश देकर शंकराचार्य के पास भेज देता है। लगभग आधे घंटे बाद, वह व्यक्ति लौटकर उत्तर देता है कि शंकराचार्य से भेंट नहीं हो सकती। परम पूज्य किसी यूरोपीय से मिलने के इच्छुक नहीं हैं। इसके अतिरिक्त, वहाँ पहले से ही दो सौ लोग उनकी प्रतीक्षा कर रहे हैं। बहुत-से लोग तो उनका साक्षात्कार करने के लिए पिछली रात से ही वहाँ रुके हुए हैं। उनका सचिव हमसे क्षमा माँगता है।

मैं दार्शनिक भाव से परिस्थिति को स्वीकार कर लेता हूँ परंतु वेंकटरमणी शंकराचार्य का मित्र होने के नाते फिर से प्रयास करना चाहता है। भीड़ में मौजूद बहुत-से लोग वेंकटरमणी का इरादे जानकर नाख़ुश हैं। काफ़ी बातचीत और कहासुनी के बाद वेंकटरमणी को काम में सफलता मिल जाती है। वह मुस्कराता हुआ चेहरे पर विजयी भाव लेकर लौटता है। ‘परम पूज्य, आपको विशेष अनुमति देने को तैयार हो गए हैं। वह आप से लगभग एक घंटे में मिलेंगे।’

मैं ख़ाली समय में मुख्य मंदिर के इर्द-गिर्द की ख़ूबसूरत गलियों में घूमकर अपना समय व्यतीत करता हूँ। मेरी मुलाक़ात कुछ नौकरों से होती है, जो हाथियों और ऊँटों को पानी पिलाने ले जा रहे हैं। उनमें से एक उस पशु की ओर इशारा करता है, जिसपर बैठकर दक्षिण भारत के आध्यात्मिक गुरु सवारी करते हैं। वह राजसी अंदाज़ में घूमते हैं। उस बड़े-से हाथी

पर शानदार सजावटी हौदा बँधा है। उस पर महँगे वस्त्र और सोने की कारीगरी की गई है। मैं उस महिमामंडित वृद्ध पशु को गली से निकलते देखता हूँ। चलते हुए उसकी सूँड़ ऊपर-नीचे मुड़ती रहती है।

मुझे वहाँ की पुरानी परंपरा याद है। किसी आध्यात्मिक महापुरुष से मिलने जाते समय कुछ फूल, फल या मिठाई आदि ले जानी होती है। मैं भी अपने मेजबान के लिए कुछ उपहार लेना चाहता हूँ। मुझे वहाँ केवल संतरे और फूल दिखाई पड़ते हैं। मुझसे जितने आसानी से उठाए जा सकते हैं मैं ख़रीद लेता हूँ।

परम पूज्य शंकराचार्य के अस्थाई निवास के बाहर जो भीड़ जमा है, मैं उसमें फंसकर एक महत्त्वपूर्ण रिवाज भूल जाता हूँ। वेंकटरमणी मुझे अचानक याद दिलाता है, 'अपने जूते उतारिए!' मैं जल्दी से जूते उतारता हूँ और उन्हें गली में छोड़ देता हूँ। मुझे आशा है कि लौटने पर, मुझे जूते वहीं मिलेंगे!

हम लोग एक छोटे-से दरवाज़े से होकर एक ख़ाली कमरे में पहुँचते हैं। दूसरे सिरे पर एक अहाता है, जिसमें बहुत मंद रोशनी दिखाई पड़ रही है। मुझे वहाँ एक छोटे क़द की आकृति नज़र आती है। मैं उसके पास पहुँचकर, अपने साथ लाए फल आदि अर्पित कर देता हूँ। फिर मैं नीचे झुककर अभिवादन करता हूँ। उस परंपरा में जो कलात्मकता है मुझे बहुत पसंद है, हालाँकि वह आदर-सत्कार और सीधे-साधे शिष्टाचार की अभिव्यक्ति है। मुझे पता है कि शंकराचार्य पादरी नहीं है क्योंकि हिंदू धर्म में ऐसा कोई पद नहीं होता। परंतु वे एक शिक्षक हैं और उन्होंने विस्तृत क्षेत्र में धार्मिक लोगों को प्रेरणा दी है। उनके ज्ञान के समक्ष समस्त दक्षिण भारत सिर झुकाता है!



मैं उनकी ओर शांत भाव से देखता हूँ। इसे लघुकाय व्यक्ति ने भगवा वस्त्र पहने हैं और अपना वज़न भिक्षुओं वाले दंड पर टिकाया हुआ है। मुझे बताया गया है कि उनकी आयु चालीस वर्ष से कम है, इसलिए मुझे यह देखकर बहुत आश्चर्य हो रहा है कि उनके बहुत-से बाल सफ़ेद हैं।

मुझे उनका सादगी-भरा चेहरा अच्छी तरह ध्यान है, जिसे मैंने गलियारे में लगे एक बड़े-से चित्र में देखा था। उनके चेहरे पर वह दुर्लभ तत्व भी है, जिसे फ़्रांसीसी लोग अपनी भाषा में 'सुसंस्कृत' कहते हैं। उनकी भाव-भंगिमा बहुत विनम्र है। उनकी बड़ी, काली आँखें असाधारण रूप से शांत व सुंदर हैं। उनकी नाक, छोटी सीधी और सुगठित है। उनकी ठुड्डी पर थोड़ी-सी दाढ़ी है और उनका मुँह किसी का भी ध्यान आकर्षित कर सकता है। उनके जैसा चेहरा मध्यकालीन युग के एक ईसाई संत जैसा है, हालाँकि उनमें सिर्फ़ इतना ही फ़र्क़

है कि इनके चेहरे में बौद्धिकता का अतिरिक्त समावेश दिखाई पड़ता है। हमारे जैसे व्यवहारिक पश्चिमवासी कहेंगे कि उनकी आँखें, स्वप्नद्रष्टा की आँखें हैं। परंतु मुझे ऐसा महसूस होता है कि उन आँखों के पीछे सपनों के अतिरिक्त और बहुत कुछ छिपा है।

'मैं आपका बहुत आभारी हूँ कि आपने मिलने की अनुमति दी,' मैं अपना परिचय देते हुए कहता हूँ।

वे मेरे लेखक साथी की ओर मुड़कर अपनी भाषा में कुछ कहते हैं। मैं उसका सही अनुमान लगा लेता हूँ।

'परमपूज्य आपकी अंग्रेज़ी भाषा समझते हैं। परंतु उन्हें डर है कि आप उनकी भाषा नहीं समझेंगे। इसलिए वह चाहते हैं कि मैं उनके दिए उत्तरों का अनुवाद करूँ!' वेंकटरमणी ने कहा।

मैं इस साक्षात्कार के आरंभिक चरण का जल्दी ज़िक्र कर दूँगा, क्योंकि उस दौरान उन हिंदू महात्मा की अपेक्षा मेरे विषय में अधिक बातचीत हुई थी। उन्होंने भारत में मेरे व्यक्तिगत अनुभवों के विषय में पूछा। उनकी इस बात को जानने में बहुत रुचि थी कि मेरे जैसे विदेशी व्यक्ति के मन में भारत के लोगों और यहाँ की संस्थाओं के विषय में क्या धारणा बनी है। मैं अपनी राय बहुत साफ़ और स्पष्ट शब्दों में उन्हें बताता हूँ, जिसमें प्रशंसा और निंदा के मिले-जुले अंश हैं।

इसके बाद हमारी बातचीत विस्तृत विषयों की ओर चली जाती है। मुझे यह जानकर आश्चर्य होता है कि वह नियमित रूप से अंग्रेज़ी के अख़बार पढ़ते हैं और उन्हें बाहरी जगत की मौजूदा घटनाओं की बहुत अच्छी जानकारी है। उन्हें निश्चित रूप से वेस्टमिन्स्टर के विषय में होने वाले शोर-शराबे का पता नहीं है किंतु वे यह जानते हैं कि यूरोप में लोकतंत्र अपने आरंभिक चरण में कितनी कष्टपूर्ण अवस्था से गुज़र रहा है।

मुझे वेंकटरमणी के उस विश्वास का भलीभाँति पता है, जब उसने बताया था कि शंकराचार्य के पास दिव्य दृष्टि है। मेरे मन में संसार के भविष्य को लेकर उत्सुकता पैदा हो रही है और मैं उस विषय में उनकी राय जानना चाहता हूँ।

'आपको क्या लगता है कि विश्व में सर्वत्र राजनीतिक और आर्थिक परिस्थितियाँ कब तक सुधर पाएँगी?'

'इस तरह का सुधार बहुत जल्दी नहीं होता,' वे उत्तर देते हैं। 'इस प्रक्रिया में समय लगता है। ऐसी स्थिति में जबकि सभी राष्ट्र, विध्वंसकारी अस्त्र-शस्त्रों पर अधिक पैसा ख़र्च करते हैं, स्थितियों में सुधार कैसे हो सकता है?'

'आजकल निरस्त्रीकरण के बारे में बहुत बात होती है। क्या इसका कोई महत्त्व है?'

'यदि आप पर अपने लड़ाकू जहाजों को कबाड़ के भाव बेच देंगे और अपनी तोपों में

जंग लगने देंगे तो इससे युद्ध नहीं रुकेगा। इसके बावजूद, लोग हाथ में लकड़ियाँ लेकर भी लड़ते रहेंगे!'

'परंतु इसमें सुधार के लिए क्या किया जाना चाहिए?'

'कुछ नहीं! बस, दो राष्ट्रों के बीच, अमीर और ग़रीब के बीच, आध्यात्मिक बोध और समझ को विकसित करना होगा। इसी से सद्भावना विकसित होगी और विश्व में सही मायनों में शांति और समृद्धि स्थापित होगी।'

'यह बड़ा मुश्किल लगता है। हम लोगों का दृष्टिकोण बिलकुल सद्भावनापूर्ण नहीं है। फिर क्या होगा?'

परम पूज्य अपने हाथ को दंड पर अधिक मज़बूती से रखते हैं।

'फिर भी ईश्वर तो मौजूद है,' वे धीरे-से उत्तर देते हैं।

'यदि ईश्वर है तो भी वह दिखाई नहीं देता,' मैं खुलकर उनका विरोध करता हूँ।

'भगवान के मन में मानवजाति के प्रति प्रेम के अतिरिक्त और कुछ नहीं है!' शंकराचार्य सौम्य उत्तर देते हैं।

'आज विश्व भर में व्याप्त दुःख और परेशानियों को देखकर लगता है कि भगवान हमारे प्रति बिलकुल बेपरवाह हैं,' मैं अचानक बोल पड़ता हूँ। मैं भीतर के कटु भाव को दबाने में असमर्थ हूँ। परम पूज्य मेरी और विचित्र भाव से देखते हैं। मुझे अचानक अपने मुँह से निकले शब्दों पर खेद है।

'धैर्यवान मनुष्य की आँखें, गहराई से देखती हैं। ईश्वर नियत समय पर ही किसी मनुष्य को अपना साधन बनाकर चीज़ों को ठीक करते हैं। देशों के बीच बढ़ती बेचैनी, लोगों की कुटिलता और लाखों दुखी लोगों के कष्टों की प्रतिक्रिया के फलस्वरूप ही भगवान रक्षा के लिए किसी मनुष्य को भेजते हैं। इस संदर्भ में प्रत्येक शताब्दी में कोई पैगंबर पैदा होता है। यह प्रक्रिया भौतिकी के नियम की तरह कार्य करती है। आध्यात्मिक अज्ञानता और भौतिकवाद के कारण उत्पन्न दुख, जितने अधिक होंगे, संसार की मदद करने के लिए प्रकट होने वाला व्यक्ति उतना ही अधिक महान होगा!'

'तो क्या आप हमारे समय में भी किसी ऐसे व्यक्ति के प्रकट होने की आशा करते हैं?'

'हमारी शताब्दी में!' वे भूल सुधार करते हुए उत्तर देते हैं। 'अवश्य! आज संसार की आवश्यकता इतनी अधिक है और यहाँ व्याप्त आध्यात्मिक अंधकार इतना गहरा है कि मुझे पूरा विश्वास है कि ईश्वर का भेजा कोई व्यक्ति अवश्य प्रकट होगा!'

'तो क्या आपका मानना है कि आज के समय में लोगों का पतन अधिक हो रहा है?' मैं पूछता हूँ।

'नहीं, मुझे ऐसा नहीं लगता,' उन्होंने धैर्यपूर्वक उत्तर दिया। 'मनुष्य के अंतर में आत्मा

का निवास होता है, जो उसे आख़िर में, ईश्वर के पास ले आती है।'

'परंतु पाश्चात्य जगत के शहरों में कुछ बदमाश क़िस्म के लोग भी हैं जिनके व्यवहार को देखकर लगता है मानो उनके भीतर किसी राक्षस का निवास है।' मैं एक आधुनिक बदमाश के बारे में सोचते हुए कहता हूँ।

'लोगों से अधिक उनके वातावरण का दोष होता है। वे जहाँ पैदा होते हैं, उनके आसपास का वातावरण और परिस्थितियाँ उन्हें बुरा बनने पर मजबूर कर देते हैं। परंतु वे लोग वास्तव में इतने बुरे नहीं होते। यह बात तो पूर्व और पश्चिम दोनों ही जगत के लिए सत्य है। समाज को उसकी उच्च अवस्था तक पहुँचाना पड़ता है। भौतिकवाद और आदर्शवाद के बीच संतुलन क़ायम करना ज़रूरी है। इसके अतिरिक्त सांसारिक समस्याओं का कोई अन्य समाधान नहीं है। आज देश जिस तरह की समस्याओं में घिरे हैं, वही उन्हें परिवर्तन की ओर ले जाएँगी, ठीक उसी तरह जैसे व्यक्ति पराजित होने के बाद कोई अन्य मार्ग चुन लेता है।'

'तो क्या लोगों को अपनी सांसारिक गतिविधियों में आध्यात्मिक सिद्धांतों का समावेश करना चाहिए?'

'हाँ, कुछ ऐसा ही है। यह अव्यवहारिक नहीं है क्योंकि इसी एकमात्र तरीक़े से ऐसे परिणाम प्राप्त हो सकते हैं। जिससे अंत में सबको संतुष्टि हो और जो लंबे समय तक क़ायम रह सके। यदि संसार में अधिक लोगों के पास आध्यात्मिक ज्ञान होगा तो वह अधिक तेज़ी से फैल सकता है। भारत अपने आध्यात्मिक महापुरुषों का सम्मान करता है, उनका समर्थन करता है और उन्हें आदर देता है। परंतु प्राचीन समय में उन्हें अधिक सम्मान प्राप्त था। यदि समूचे संसार को आध्यात्मिक दूरदर्शी लोगों से मार्गदर्शन मिले तो पूरा विश्व शीघ्र ही शांति और समृद्धि की ओर प्रेरित हो सकता है।'

मुझे इस बात का शीघ्र ही पता लग गया कि श्री शंकराचार्य, पूर्वी जगत की प्रशंसा करने के लिए पश्चिम की निंदा नहीं करते, जैसा कि यहाँ बहुत-से लोगों की आदत है। उनका मानना है कि इस संसार में सबके अपने-अपने गुण और दोष हैं और इस मायने में सभी लोग बिलकुल बराबर हैं! वे ऐसी उम्मीद करते हैं कि भावी पीढ़ियाँ बुद्धिमत्ता से काम लेंगी और एशियाई तथा यूरोपीय सभ्यताओं की अच्छी बातों को मिलाकर श्रेष्ठ एवं संतुलित सामाजिक योजना तैयार हो पाएगी।

मैं इस विषय को यहीं छोड़कर उनसे कुछ व्यक्तिगत प्रश्न पूछने की अनुमति माँगता हूँ। वह इसके लिए सहर्ष तैयार हो जाते हैं।

'आपके पास यह पदवी कितने समय से है?'

'वर्ष 1907 से! मैं उस समय केवल बारह वर्ष का था। इस पद पर मेरी नियुक्ति के चार वर्ष बाद, मैं कावेरी नदी के तट पर स्थित एक गाँव में रहने लगा। मैंने वहीं पर तीन साल तक ध्यान का अभ्यास एवं अध्ययन किया। मैंने इसके बाद ही सार्वजनिक सेवा का कार्य आरंभ

किया।’

‘आप अपने कुंभकोणम स्थित मुख्यालय पर बहुत कम समय रहते हैं?’

‘इसका कारण है कि मुझे वर्ष 1918 में नेपाल के महाराजा ने कुछ समय के लिए अपने यहाँ आमंत्रित किया था। मैंने उनका प्रस्ताव स्वीकार कर लिया और मैं तब से उत्तर दिशा की ओर धीरे-धीरे बढ़ रहा हूँ। परंतु देखिए! मैं इतने वर्षों में कुछ ही मील चल पाया हूँ क्योंकि मेरे पद से जो परंपरा जुड़ी है, उसके अनुसार मुझे अपने मार्ग में पड़नेवाले प्रत्येक गाँव और शहर में, यदि वह अधिक दूर न हो, ठहरना पड़ता है। मुझे वहाँ के स्थानीय मंदिर में आध्यात्मिक प्रवचन देने पड़ते हैं और वहाँ के निवासियों को थोड़ा ज्ञान भी प्रदान करना होता है।’

अब मैं अपनी खोज के विषय में उनसे बात शुरू करता हूँ। परम पूज्य मुझसे उन सब योगियों के विषय में पूछते हैं जिनसे मैं अब तक मिल चुका हूँ। मैं उनसे खुलकर सबकुछ बताता हूँ:

‘मैं किसी ऐसे व्यक्ति से मिलना चाहता हूँ, जिसने योग के क्षेत्र में बड़ी उपलब्धियाँ प्राप्त की हों और वह मुझे इस संबंध में किसी तरह का प्रमाण दे सके। यहाँ अधिकतर धार्मिक लोग ऐसे हैं जिनसे प्रमाण माँगो तो वे नई-नई बातें बनाने लगते हैं। क्या मैं कुछ ज़्यादा अपेक्षा कर रहा हूँ?’

शंकराचार्य की शांतिमय आँखें मुझे देखने लगती हैं।

वहाँ एक मिनट की शांति व्याप्त हो जाती है। परम पूज्य अपनी दाढ़ी में अँगुलियाँ घुमाते हैं।

‘यदि आप वास्तविक योग की दीक्षा लेना चाहते हैं तो आपकी अपेक्षा अधिक नहीं है। आपकी ईमानदारी इस कार्य में सहायक सिद्ध होगी और इस बीच, मैं आपकी दृढ़-शक्ति को भी देख सकूँगा। परंतु आपके भीतर प्रकाश जाग्रत हो रहा है, जो आपको निस्संदेह उस दिशा में ले जाएगा, जहाँ आप जाना चाहते हैं!’

मैं नहीं कह सकता कि मुझे उनकी बात ठीक से समझ में आ रही है अथवा नहीं।

‘मैं अभी तक मार्गदर्शन के लिए ख़ुद पर ही निर्भर हूँ। यहाँ तक कि आपके कुछ प्राचीन ऋषि-मुनि भी यही कहते हैं कि हमारे भीतर जो ईश्वर विद्यमान है, उससे बड़ा और कोई नहीं है,’ मैं बोल पड़ता हूँ।

शंकराचार्य तत्काल उत्तर देते हैं:

‘ईश्वर सर्वव्यापी है! मनुष्य उसे ख़ुद तक सीमित कैसे रख सकता है? ईश्वर तो समूचे ब्रह्मांड में व्याप्त है।’

मुझे लगता है मैं कुछ ज़्यादा ही बोल गया हूँ। मैं तुरंत उस विषय से पीछे लौट आता हूँ।

'मेरे लिए कौन-सी दिशा सबसे उपयुक्त होगी?'

'आप भ्रमण करना जारी रखिए। आपका भ्रमण जब समाप्त हो जाए तो उन विभिन्न योगियों और धार्मिक लोगों के विषय में विचार कीजिए, जिनसे आप अब तक मिल चुके हैं। इसके बाद उनमें से किसी एक को चुन लीजिए जिससे आप सबसे अधिक प्रभावित हुए हैं। उसके पास दोबारा जाइए। वह निश्चित रूप से आपको आशीर्वाद देगा!'

मैं शंकराचार्य की शांत भाव-भंगिमा को देखता हूँ। मैं उनकी प्रशंसा किए बिना नहीं रह पाता। 'परंतु मान लीजिए, परम पूज्य कि उनमें से कोई भी मुझे पर्याप्त रूप से प्रभावित नहीं करता। फिर क्या होगा?'

'तो फिर आपको तब तक अकेले ही आगे बढ़ना होगा, जब तक आपको आशीर्वाद न मिल जाए। नियमित रूप से ध्यान का अभ्यास कीजिए। इस संसार की श्रेष्ठ बातों के विषय में अपने हृदय में प्रेमपूर्वक विचार कीजिए। अपनी आत्मा के विषय में विचार कीजिए, जो आपको यहाँ तक लाई है। इसका अभ्यास करने के लिए सुबह उठने के बाद का समय श्रेष्ठ होता है। इसके बाद संध्याकाल इसके लिए उचित समय है। इन दोनों समय पर आस-पास का वातावरण अपेक्षाकृत अधिक शांत होता है और ध्यान में कम व्यवधान उत्पन होते हैं।'

शंकराचार्य मेरी ओर दयालु भाव से देखते हैं। मुझे उनके भीतर की शांति देखकर ईर्ष्या हो रही है। निश्चित ही, उनके हृदय में उस तरह की उथल-पुथल नहीं होती, जिससे मैं सदैव डरा रहता हूँ। मैं अचानक उनसे पूछ बैठता हूँ:

'यदि मुझे सफलता प्राप्त नहीं हुई तो क्या मैं आपके पास सहायता के लिए दोबारा आ सकता हूँ?'

श्री शंकर धीमे-से सिर हिला देते हैं।

'मैं एक सार्वजनिक संस्था का प्रमुख हूँ। मेरा समय मेरा अपना नहीं है। मेरी गतिविधियाँ सारा समय ले लेती हैं। मैं निजी तौर पर शिष्यों की सहायता कैसे कर सकता हूँ? आपको किसी और गुरु की तलाश करनी होगी, जो आपको समय दे सके।'

'परंतु मुझे बताया गया है कि ऐसे सच्चे गुरु बहुत कम हैं और वे किसी यूरोपीय व्यक्ति से तो बिलकुल नहीं मिलते।'

वह मेरी बात से सहमत दिख रहे हैं। वे कहते हैं:

'सत्य अवश्य विद्यमान है और उसे खोजा जा सकता है!'

'क्या आप मुझे किसी योग्य गुरु के पास नहीं भेज सकते जो मुझे योग की सच्चाई के प्रमाण दे सके?'

काफ़ी देर मौन रहने के बाद भी परम पूज्य कोई उत्तर नहीं देते।

'हाँ, मैं भारत में ऐसे केवल दो गुरुओं को जानता हूँ, जो आपकी इच्छा पूरी कर सकते

हैं। उनमें से एक बनारस के एक बड़े घर में रहते हैं और उनका घर भी बहुत विशाल मैदानों में कहीं छिपा हुआ है। बहुत कम लोगों को उन तक पहुँचने की अनुमति है। निश्चित रूप से, किसी यूरोपीय के लिए तो उनका एकांत भंग करना संभव ही नहीं है। मैं आपको उनके पास भेज सकता हूँ, लेकिन मुझे डर है कि वह यूरोपीय व्यक्ति से मिलने से मना कर सकते हैं!'

'और दूसरे?'

'दूसरे गुरु यहाँ से बहुत दूर दक्षिण दिशा में रहते हैं। मैं एक बार उनसे मिला था और मुझे पता है कि वह श्रेष्ठ गुरु हैं। मुझे लगता है कि आपको उनके पास जाना चाहिए।'

'वह कौन हैं?'

'उन्हें "महर्षि"* कहते हैं। उनका निवास अरुणाचल क्षेत्र में है जो पूर्व में स्थित है। क्या मैं आपको उनके विषय में पूरी जानकारी दे दूँ ताकि आप उन्हें खोज सकें?'

मेरी मन की आँखों के सामने अचानक एक चित्र उभरता है।

मुझे पीले वस्त्रों वाला वही योगी दिखाई देता है जिसने मुझे अपने गुरु के पास ले जाने का प्रस्ताव दिया था। उसने इसी स्थान का नाम लिया था।

'परम पूज्य, आपका बहुत-बहुत धन्यवाद!' मैं कहता हूँ। 'परंतु मेरे साथ एक गाइड है जो उस स्थान का रहने वाला है।'

'तो क्या आप वहाँ जाएँगे?'

मुझे संकोच हो रहा है।

'मेरे दक्षिण दिशा से प्रस्थान करने के सभी प्रबंध कर लिए गए हैं,' मैं अनिश्चय भरे अंदाज़ में कहता हूँ।

'मैं आपसे एक अनुरोध करना चाहता हूँ।'

'अवश्य! मुझे बहुत हर्ष होगा।'

'मुझे वचन दीजिए कि आप महर्षि से मिले बिना दक्षिण भारत छोड़कर नहीं जाएँगे।'

मैं देख सकता हूँ कि उनकी आँखों में मेरी सहायता करने की इच्छा है। मैं उन्हें वचन देता हूँ।

उनके चेहरे पर सौम्य मुस्कान आ जाती है।

'आपको अधिक उत्सुक होने की आवश्यकता नहीं है। जो आप चाहते हैं, वह आपको अवश्य मिलेगा!'

गली में एकत्रित भीड़ में हो रही खुसपुसाहट की आवाज़ घर के भीतर तक आ रही है।

'मैंने आपका बहुत मूल्यवान समय लिया। मैं क्षमा चाहता हूँ।'

श्री शंकर के चेहरे पर शांति व्याप्त है। वह मेरे साथ बग़ल वाले कमरे तक आते हैं और

मेरे साथी के कान में कुछ कहते हैं। मुझे उनकी कही बात में अपना नाम सुनाई पड़ता है।

मैं दरवाज़े पर पहुँचकर मुड़ता हूँ और उन्हें देखकर नमस्कार करता हूँ। परम पूज्य मुझे अपना अंतिम संदेश देने के लिए वापस बुलाते हैं:

'आप मुझे सदैव याद रखेंगे और मैं भी आपको हमेशा याद रखूँगा!'

मैं इन गूढ़ और अचरज-भरे शब्दों को उस व्यक्ति से दूर चला चला जाता हूँ जिसने बचपन से अब तक का अपना संपूर्ण जीवन ईश्वर की सेवा में समर्पित कर दिया है। वे एक पुजारी हैं, जिन्हें सांसारिक शक्तियों की कोई परवाह नहीं है क्योंकि उन्होंने सर्वस्व त्याग दिया है। उन्हें जो कुछ पदार्थ अर्पित किए जाते हैं, वे उन्हें तत्काल ज़रूरतमंदों को दे देते हैं। उनका सुंदर और सौम्य व्यक्तित्व सदैव मेरी स्मृति में रहेगा।

मैं शाम तक चेंगलपट्टु में घूमता हूँ और वहाँ के कलात्मक एवं प्राचीन सौंदर्य को निहारता हूँ। फिर मेरे मन में घर लौटने से पहले परम पूज्य के अंतिम दर्शन करने की इच्छा होती है।

वह उस समय शहर के सबसे बड़े मंदिर में हैं। पीले वस्त्रों में दुबली-पतली और विनम्र आकृति पुरुषों, स्त्रियों और बच्चों की विशाल जनसभा को संबोधित कर रही है। वहाँ ज़बरदस्त भीड़ है परंतु सब लोग पूरी तरह शांत बैठे हैं। मैं उनकी स्थानीय भाषा का अर्थ तो नहीं समझ सकता परंतु इतना अवश्य देख सकता हूँ कि वे वहाँ बैठे बुद्धिमान ब्राह्मण से लेकर अनपढ़ किसान तक प्रत्येक व्यक्ति के आकर्षण का केंद्र हैं।

मैं जहाँ एक ओर उस सौम्य आत्मा के प्रति प्रशंसा से भरा हूँ, वहीं दूसरी ओर उस विशाल भीड़ में उनके प्रति आस्था को देखकर मुझे ईर्ष्या हो रही है। संभवतः उनके जीवन में कभी संदेह के क्षण उत्पन्न ही नहीं होते। उनका विश्वास है कि ईश्वर है, और बस बात यहाँ ख़त्म हो जाती है! उन्हें देखकर ऐसा नहीं लगता कि वे उन अंधेरों से परिचित हैं जिनसे होकर मनुष्य को गुज़रना पड़ता है। ऐसा समय, जब मनुष्य को संसार जंगल के समान संघर्षमय प्रतीत होता है, जब मनुष्य के जीवन से ईश्वर का आभास ओझल हो जाता है, जब मनुष्य को अपना अस्तित्व ब्रह्मांड के इस छोटे से अंश पर, जिसे हम पृथ्वी कहते हैं, नगण्य लगने लगता है।

हम लोग तारों से आच्छादित आकाश के नीचे से चेंगलपट्टु से बाहर निकल आते हैं। मुझे खजूर के वृक्षों का झूलना और उनकी टहनियों की सरसराहट सुनाई पड़ रही है। अचानक मेरा साथी हमारे बीच व्याप्त चुप्पी को तोड़ता है:

'तुम सचमुच बहुत भाग्यशाली हो!'

'क्यों?'

'क्योंकि परम पूज्य ने पहली बार किसी यूरोपीय लेखक को साक्षात्कार दिया है।'

‘अच्छा?’

‘यही तुम्हारे लिए उनका आशीर्वाद है!’



मैं घर लौटता हूँ तो आधी रात बीत चुकी है। मैं सिर उठाकर आकाश की ओर देखता हूँ। असंख्य तारे टिमटिमा रहे हैं। यूरोप के किसी भी स्थान पर एक समय में इतने तारे एक साथ नज़र नहीं आते। मैं सीढ़ियों के रास्ते हाथ में टार्च लेकर ऊपर की ओर जाता हूँ।

अंधेरे में अचानक एक आकृति मेरा अभिवादन करती है।

‘सुब्रमण्यम!’ मैं चौंक जाता हूँ। ‘तुम यहाँ क्या कर रहे हो? भगवा वस्त्रों में वह योगी ज़ोर से हँसता है।

‘महाशय, क्या मैंने आपके पास दोबारा आने का वादा नहीं किया था?’ वह मुझे याद दिलाता है।

‘हाँ, निश्चय ही किया था!’

मैं अपने कमरे में बैठकर उससे सवाल करता हूँ।

‘तुम्हारे गुरु को महर्षि कहते हैं ना?’

अब चौंकने की बारी उसकी है।

‘आपको कैसे पता? आपने कैसे जाना?’

‘वह सब छोड़ो। कल हम लोग उनके पास जाएँगे। मैंने अपना कार्यक्रम बदल दिया है।’

‘यह तो बहुत अच्छी ख़बर है, महाशय!’

‘परंतु मैं वहाँ अधिक समय नहीं रुकूँगा। शायद कुछ दिन काफ़ी होंगे।’

मैं उससे कुछ और प्रश्न करता हूँ और फिर सोने चला जाता हूँ। सुब्रमण्यम को फ़र्श पर चटाई बिछाकर सोना पसंद है। वह सूती चादर लपेटकर सो जाता है, जो उसके गद्दे, चादर और लिहाफ़ सबका काम करती है। वह सुविधाजनक बिस्तर पर सोने से मना कर देता है।

इसके बाद मेरी अचानक नींद खुल जाती है। कमरे में पूर्ण अंधकार है। मुझे नसों में तनाव महसूस होता है। मेरे आसपास के वातावरण में मानो विद्युत दौड़ रही है। मैं तकिए के नीचे से घड़ी निकालता हूँ और उसके रेडियम की चमक में समय देखता हूँ। रात के पौने तीन बजे हैं। उसी समय मुझे अपने बिस्तर के पैरों की तरफ़ एक चमकदार वस्तु दिखाई देती है। मैं उठ बैठता हूँ और उसे ध्यान से देखने लगता हूँ।

मुझे देखकर हैरानी होती है कि मेरे सामने परम पूज्य श्री शंकराचार्य बैठे हैं। वह मुझे बहुत स्पष्ट दिखाई पड़ रहे हैं। वह किसी अलौकिक आत्मा जैसे नहीं, बल्कि मनुष्य जैसी

ठोस आकृति लिए हुए हैं। उनके आसपास रहस्यमय प्रकाश झिलमिला रहा है, जो उन्हें इर्द-गिर्द के अंधकार से अलग करता है।

क्या यह दृश्य सचमुच संभव है? मैं तो उन्हें चेंगलपट्टु में छोड़ आया था। मैं इसकी जाँच के लिए अपनी आँखें ज़ोर-से बंद करता हूँ परंतु इसका कोई प्रभाव नहीं पड़ता। वह मुझे अब भी बहुत स्पष्ट दिखाई पड़ रहे हैं।

यह कहना पर्याप्त होगा कि मुझे उनकी दयालु और मैत्रीपूर्ण उपस्थिति का स्पष्ट एहसास हो रहा है। मैं आँखें खोलता हूँ और सामने पीले वस्त्रों में बैठे तपस्वी को स्पष्ट देख सकता हूँ। उनके चेहरे में थोड़ा अंतर है, परंतु वे मुस्कराते हुए मानो कह रहे हैं:

'विनम्र बनो। फिर जो तुम चाहते हो, वह तुम्हें अवश्य मिलेगा!'

मुझे ऐसा क्यों महसूस हो रहा है कोई जीवित मनुष्य मुझसे बात कर रहा है? मुझे यह भूत-प्रेत या आत्मा जैसा क्यों नहीं लग रहा? वह दृश्य, जिस तरह प्रकट हुआ था, अचानक उसी तरह ग़ायब हो जाता है। मुझे ख़ुशी है और मैं उस अलौकिक दृश्य से बिलकुल परेशान नहीं हूँ। क्या मुझे उसे स्वप्न मानकर भूल जाना चाहिए?

मुझे उसके बाद नींद नहीं आती। मैं उस दिन कुंभकोणम के परम पूज्य श्री शंकराचार्य से हुई स्मरणीय मुलाक़ात के विषय में सोचता रहता हूँ, जो दक्षिण भारत के सीधे-सादे लोगों के लिए ईश्वर के अवतार हैं।

---

* यह पदवी संस्कृत से ली गई है। 'महा' का मतलब है महान और 'ऋषि' मतलब तपस्वी। इस तरह महर्षि का अर्थ है, महान तपस्वी।

अध्याय 9

पवित्र प्रकाशदीप पर्वत

दक्षिण भारत रेलवे के मद्रास टर्मिनल पर मैं और सुब्रमण्यम सीलोन बोट ट्रेन के एक डिब्बे में चढ़ जाते हैं। हम कई घंटों तक बहुरंगी दृश्यों के बीच से गुज़रते हैं। चावलों के हरे-भरे खेतों के बीच-बीच में कहीं पर क्षीणकाय लाल पर्वत है। राज्य के विशाल नारियल के वृक्षों के बागान निकल जाने के बाद हमें खेतों में काम करते हुए कृषक दिखाई पड़ते हैं।

मैं खिड़की से बाहर देख रहा हूँ। संध्याकाल तेज़ी से बाहर के प्राकृतिक परिदृश्य में घुल रहा है। मैं अपना सिर घुमाकर अन्य बातों के विषय में सोचने लगता हूँ। मैं ब्रह्मा की दी हुई स्वर्ण मुद्रिका पहनने के बाद अपने साथ हुई विचित्र बातों के बारे में सोचने लगता हूँ। मेरी योजनाएँ अचानक बदल रही हैं। इसी तरह की अप्रत्याशित घटनाओं के चलते मुझे अचानक सुदूर दक्षिण में जाना पड़ रहा है, जबकि मैंने पूर्व दिशा में जाने की योजना बनाई थी। क्या यह संभव है? मैं स्वयं से पूछता हूँ कि क्या उस स्वर्ण मुद्रिका में जड़े पत्थर में सचमुच कोई रहस्यमय शक्ति है जिसके विषय में योगी ने उल्लेख किया था? हालाँकि मैं खुले दिमाग़ से सोचना चाहता हूँ परंतु वैज्ञानिक परिवेश में प्रशिक्षित किसी पश्चिमवासी के लिए इस विचार को अधिक महत्त्व देना बहुत मुश्किल है। मैं इसे थोड़ी देर के लिए अपने दिमाग़ से निकाल देता हूँ, परंतु यह मेरे दिमाग़ के भीतर कहीं बस गया है। ऐसा क्यों हो रहा है कि मेरे क़दम अचानक पर्वतों में रहने वाले उस आश्रम की ओर जा रहे हैं? ऐसा क्यों है कि यह दोनों पुरुष, जिन्होंने पीले वस्त्र पहने हैं, नियति बनकर मेरे सामने प्रकट हो गए हैं और मेरी अनिच्छुक आँखों को महर्षि की ओर मोड़ रहे हैं? मैंने नियति शब्द का प्रयोग यहाँ पर साधारण ढंग से नहीं किया है परंतु मुझे इससे बेहतर कोई शब्द नहीं सूझ रहा है। मेरे पिछले

अनुभव ने मुझे सिखाया है कि ऊपरी तौर पर कम महत्त्वपूर्ण प्रतीत होने वाली घटनाएँ भी, कभी-कभी मनुष्य के जीवन निर्माण में अनपेक्षित भूमिका निभाती हैं।

हम ट्रेन से उतरकर मुख्य लाइन को छोड़ देते हैं जो पुड्डुचेरी से चालीस मील दूर है। यह भाग कभी फ़्रांस का अधिकृत हिस्सा था। हम वहाँ से आगे एक छोटे स्टेशन तक पहुँचते हैं जहाँ ट्रेनों की आवाजाही कम होती है। हमें लगभग दो घंटे वहाँ के प्रतीक्षालय में इंतज़ार करना पड़ता है। सुब्रमण्यम बाहर प्लेटफ़ार्म पर चहल-क़दमी करता है और उसकी लंबी आकृति तारों की रोशनी में अर्द्ध-मानव, अर्द्ध-प्रेत जैसी दिखाई दे रही है। आख़िरकार हमें ट्रेन नज़र आती है और हम उस में बैठ जाते हैं। उसमें बहुत कम लोग बैठे हैं।

मुझे बैठे-बैठे नींद आ जाती है। मेरा साथी कुछ घंटों बाद मुझे जगाता है। हम लोग एक छोटे स्टेशन पर उतरते हैं और वहाँ से आगे ट्रेन शांतिपूर्ण अंधकार में आगे निकल जाती है। हम लोग छोटे-से प्रतीक्षालय में बैठ जाते हैं। वहाँ एक लालटेन जल रही है।

हम लोग धैर्यपूर्वक सुबह होने की प्रतीक्षा करते हैं। भोर का मंद प्रकाश उदय होता है। वह कमरे में बनी खिड़की की झिर्री से भीतर आ रहा है। मैं वहाँ से बाहर जाकर देखता हूँ। सुबह की धुंध में मुझे दूर एक निर्जन पहाड़ की आकृति दिखाई पड़ती है जो वहाँ से कुछ मील की दूरी पर है। उसकी तलहटी बहुत प्रभावशाली है तथा पर्वत भी काफ़ी बड़ा है परंतु उसका शीर्ष दिखाई नहीं पड़ता क्योंकि वह अभी सुबह की धुंध से ढँका है।

मेरा गाइड बाहर निकलता है। बाहर एक बैलगाड़ी खड़ी है जिसमें बैठा व्यक्ति ज़ोर-ज़ोर से खर्राटे ले रहा है। एक आवाज़ देने पर वह उठ जाता है। उसे अपने ग्राहक देखकर प्रसन्नता होती है। हम उसे अपने गंतव्य स्थान के विषय में बताते हैं तो वह हमें ले जाने के लिए उत्सुक नहीं दिखता। मैं उसके संकरे वाहन को संशय-भरी निगाह से देखता हूँ। वह एक क़िस्म की बांस की छत वाली बैलगाड़ी है। बहरहाल, हम उस पर चढ़ जाते हैं और वह व्यक्ति हमें लेकर चल पड़ता है। योगी के पास बैठने की इतनी ही जगह है जितनी एक आदमी को कम से कम चाहिए। मैं भी गाड़ी की नीची छत के नीच झुककर बैठा हूँ और मेरे पैर बाहर हवा में झूल रहे हैं। वाहन चालक बैलों के बीच लगे डंडे पर बैठा है और उसकी ठुड्डी उसके घुटनों को छू रही है।

उसके मज़बूत, छोटे और सफ़ेद बैलों के बहुत चाहने पर भी गाड़ी तेज़ रफ़्तार से नहीं चल पा रही है। ये प्यारे पशु भारत के भीतरी हिस्सों में बड़े लाभदायक पशु माने जाते हैं क्योंकि ये घोड़ों से अधिक गर्मी बर्दाश्त कर सकते हैं और इन्हें खाने के लिए भी कम चाहिए। बीती शताब्दियों में इन शांत गाँवों और इस तरह के छोटे शहरों की परंपराएँ ज्यादा नहीं बदली हैं। जिस तरह की बैलगाड़ियाँ लोगों को 100 ई.पू. के समय में ले जाया करती थीं, आज लगभग दो हज़ार वर्ष बाद भी उसी तरह की परिवहन व्यवस्था काम कर रही है।

हमारे वाहन चालक को, जिसका चेहरा तांबे-सा चमक रहा है, अपने पशुओं पर गर्व

महसूस है। उनके लंबे और सुंदर घुमावदार सींगों में आभूषण बँधे हैं। उनके पतले पैरों में पीतल की छोटी-छोटी घंटियाँ लटक रही हैं। वह उन्हें एक चाबुक की मदद से हाँकता है। वे लोग धूल-भरी सड़क पर आराम से भागते चल रहे हैं। इसी बीच में देखता हूँ कि दिन बड़ी तेज़ी से निकल आया है।

हमारे दाईं और बाईं ओर आकर्षक प्राकृतिक परिदृश्य उभरकर आया है। यह सपाट मैदान वाला इलाक़ा नहीं है और जहाँ तक क्षितिज की ओर दृष्टि जाती है, वहाँ तक छोटी-बड़ी पहाड़ियाँ देखने को मिलती हैं। वहाँ की मिट्टी लाल है और रास्ते में कांटेदार झाड़ियाँ उगी हैं।

हमारे निकट से एक थका हुआ किसान निकलता है। वह खेत में मेहनत के बाद घर जा रहा है। कुछ ही देर में, पीतल का घड़ा सिर पर रखे हुए एक लड़की दिखाई देती है। उसके शरीर पर केवल एक लाल रंग का वस्त्र लिपटा है और उसके कंधे उघड़े हैं। उसकी नाक में लाल रंग की लौंग है और हाथों में सोने के कंगन हैं। उसकी कृष्ण त्वचा बताती है कि वह द्रविड़ जाति की है। ब्राह्मणों और मुसलमानों को छोड़कर, वहाँ रहने वाले अधिकतर निवासी ऐसे ही दिखते हैं। द्रविड़ जाति की कन्याएँ सामान्यतः प्रसन्नचित्त रहती हैं। वे अन्य क्षेत्रें की महिलाओं की अपेक्षा अधिक बोलती हैं और उनकी आवाज़ अधिक संगीतमय है।

वह लड़की हमें चौंककर देखने लगती है। मेरा ऐसा अनुमान है कि इस प्रदेश में यूरोपीय बहुत कम नज़र आते होंगे।

इस तरह हम रास्ता तय करते हुए छोटे-से शहर तक पहुँच जाते हैं। वहाँ के घर समृद्धशाली हैं और एक विशाल मंदिर की दोनों ओर गलियों में बने हुए हैं। यदि मेरा अनुमान सही है तो वह मंदिर लगभग एक चौथाई मील लंबा है। मुझे उसकी बनावट की विशालता का अंदाज़ा तब होता है, जब हम उसके विशाल द्वार तक पहुँचते हैं। हम वहाँ कुछ पलों के लिए रुकते हैं। मैं एक नज़र डालता हूँ। उसके आकार की ही भाँति उसकी बनावट भी बहुत प्रभावशाली है। मैंने इस तरह का ढाँचा आज से पहले कभी नहीं देखा। उसके विशाल भीतरी क्षेत्र के चारों ओर एक बड़ा-सा चतुर्भुजीय अहाता बना है, जो भूलभुलैया जैसा दिखता है। उसके चारों ओर बनी ऊँची दीवारें सैकड़ों वर्षों की धूप और मौसम की मार झेलते-झेलते काली पड़ गई हैं और उनका रंग फ़ीका पड़ गया है। प्रत्येक दीवार में एक द्वार है जिसके ऊपर विशालकाय पगोडा जैसा बड़ा-सा विचित्र ढाँचा है। यह ढाँचा अलंकृत, किंतु तराशा हुआ पिरामिड जैसा प्रतीत होता है। इसका निचला भाग पत्थर से बना है किंतु ऊपरी भाग को ईंटों से पलस्तर करके बनाया गया है। यह पगोडा कई तल में विभाजित है। यह पूरा ही ढाँचा बहुत सुंदर आकृतियों और नक्काशी से भरा है। इन चार प्रवेश द्वारों के अतिरिक्त, मुझे पाँच अन्य ऐसे ही ढाँचे नज़र आते हैं जो मंदिर के भीतर बने हुए हैं। ये मिस्र के पिरामिड से कितने मिलते-जुलते हैं!

मुझे चलते-चलते बड़ी संख्या में ऊँची छत वाले सपाट पत्थर के बने खंबे दिखाई देते हैं और छोटी-छोटी इमारतों में मंद प्रकाश वाले मंदिर और अंधेरे गलियारे भी नज़र आते हैं। मैं जल्द ही इस रोचक स्थान को देखने आने का मन बना लेता हूँ। हमारी बैलगाड़ी आगे बढ़ जाती है और हम फिर से खुले क्षेत्र में पहुँच जाते हैं। वहाँ के दृश्य बहुत मनोहारी हैं। सड़क लाल मिट्टी से ढँकी है। उसके दोनों ओर छोटी झाड़ियाँ हैं और कहीं-कहीं ऊँचे वृक्ष भी हैं। उनकी टहनियों के बीच बहुत-से पक्षी छिपे हैं क्योंकि मुझे उनके पंख फड़फड़ाने का स्वर तथा संगीतमय कलरव सुनाई पढ़ता है।

रास्ते में हमें अनेक सुंदर और छोटे मंदिर दिखाई पड़ते हैं। मैं यह देखकर बहुत आश्चर्यचकित हूँ कि उनकी बनावट में बहुत अंतर है। मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचता हूँ कि उन्हें अलग-अलग कालखंडों के दौरान बनाया गया होगा। कुछ अत्यधिक अलंकृत हैं और सामान्य हिंदू परंपरा के अनुसार बनाए गए हैं। परंतु बड़े आकार वाले मंदिर सपाट खंभों से बने हैं, जिन्हें मैंने दक्षिण भारत के अतिरिक्त और कहीं नहीं देखा। वहाँ दो-तीन मंदिर ऐसे भी हैं जिनकी कलात्मकता लगभग यूनानी अंदाज़ की है।

मेरा अनुमान है कि हम पाँच या छह मील का सफ़र कर चुके हैं। हम पहाड़ी के निचले ढलान तक पहुँचते हैं जिसकी झलक मुझे स्टेशन से मिली थी। सुबह की साफ़ और खिली धूप में वह पहाड़ लाल रंग के विशालकाय दैत्य जैसा नज़र आता है। धुंध पूरी तरह उड़ चुकी है और पहाड़ी का शिखर स्पष्ट दिखाई पड़ रहा है। यह लाल मिट्टी पर बना एक अकेला पर्वत है जिसका अधिकांश भाग बंजर है। वहाँ आसपास का इलाक़ा वृक्षहीन दिखाई पड़ता है। पहाड़ से टूटे हुए बड़े-बड़े पत्थर और शिलाखंड आस-पास बिखरे पड़े हैं।

'अरुणाचल! पवित्र लाल पर्वत!' मेरा साथी मेरी ओर देखकर ज़ोर से बोलता है। उसके चेहरे पर प्रशंसा का अनोखा भाव है। वह किसी मध्यकालीन संत की भाँति उत्साह और प्रसन्नता से भरा है।

मैं उससे पूछता हूँ, 'क्या इस नाम का कोई अर्थ है?'

'मैंने अभी आपको इसका अर्थ बताया है,' वह मुस्कराकर उत्तर देता है। 'यह नाम दो शब्दों से बना है, "अरुण" और "अचल" जिसका अर्थ है "लाल पर्वत" क्योंकि यही इस मंदिर के इष्ट देव का भी नाम है। इसका पूरा अनुवाद होना चाहिए - पवित्र लाल पर्वत!'

'तो यह पवित्र आकाशदीप बीच में कहाँ से आ गया?'

'साल में एक बार मंदिर के पुजारी यहाँ का मुख्य पर्व मनाते हैं। इस पर्व के दौरान पर्वत शिखर पर एक बड़ी-सी ज्वाला प्रज्ज्वलित होती है और उसमें बड़ी मात्र में मक्खन और कपूर की आहुति दी जाती है। वह कई दिनों तक चलती है और इसे यहाँ से मीलों दूर देखा जा सकता है। उसे जो भी देखता है वह उसे प्रणाम करता है। यह इस बात का प्रतीक है कि यह पवित्र है, जहाँ एक महान देवता का निवास है।'

वह पर्वत अब ठीक हमारे सिर के ऊपर है। उसका कठोर सौंदर्य और लाल एवं धूसर रंग का निर्जन शिखर आकाश में हज़ारों फ़ीट ऊँचा नज़र आता है। यह उस धार्मिक व्यक्ति के शब्दों का प्रभाव है या फिर कोई और अन्य कारण, मैं नहीं जानता, लेकिन मेरे अंदर इस विशाल पवित्र पर्वत को देखकर आश्चर्य और आदर का भाव जाग्रत हो रहा है।

'क्या आप जानते हैं,' मेरा साथ ही धीरे-से बोलता है, 'कि यह पर्वत केवल एक पवित्र धार्मिक स्थल ही नहीं है। यहाँ की स्थानीय परंपराओं के अनुसार देवताओं ने स्वयं इस पर्वत को विश्व के आध्यात्मिक केंद्र के रूप में यहाँ स्थापित किया था!'

इस दंतकथा को सुनकर मैं मुस्कराता हूँ। इस बात में कितनी सादगी है!

मुझे चलते-चलते पता लगता है कि हम महर्षि के आश्रम पहुँचने वाले हैं। हम सड़क से उतरकर कच्चे रास्ते होते हुए नारियल और राम के वृक्षों के बीच से निकलते हैं। हम उस रास्ते पर चलते रहते हैं। अचानक वह एक बंद फ़ाटक के सामने आकर समाप्त हो जाता है। बैलगाड़ी का चालक नीचे उतरता है और फ़ाटक को खोलता है और फिर भीतर चला जाता है। मैं नीचे उतरकर अपने अकड़ गए हाथ-पैरों को थोड़ा खोलता हूँ और फिर आसपास देखने लगता हूँ।

महर्षि का निवास स्थान, घने वृक्षों और एक उद्यान से घिरा हुआ है। वह पीछे से पूरी तरह ढँका है और उसके अगल-बगल में झाड़ियाँ और कैक्टस उगे हुए हैं। पश्चिम दिशा में बहुत घना जंगल दिखाई पड़ता है। पर्वत के निचले भाग में स्थित यह स्थान बहुत रमणीय है। यह बिलकुल एकांत में है और ऐसे व्यक्ति के लिए बिलकुल उपयुक्त है, जो गहरे ध्यान में डूबा रहना चाहता है।

अहाते के बाईं ओर दो छोटी इमारतें हैं जिन पर घास-फूस की छत है। उनके साथ में एक लंबा, आधुनिक ढाँचा है जिसके ऊपर लाल रंग की छत है। उसके आगे वाले हिस्से में एक छोटा-सा बरामदा है।

अहाते के मध्य में एक बड़ा कुआँ है। वहाँ मुझे एक लड़का दिखाई देता है जो कमर से ऊपर निर्वस्त्र है और कुछ ज़्यादा ही काला है। वह धीरे-धीरे कुएँ में बाल्टी की मदद से पानी निकाल रहा है।

हमारे आगमन की आवाज़ सुनकर इमारत से कुछ लोग बाहर निकल कर अहाते में आ जाते हैं। उनकी पोशाक एक-दूसरे से बिलकुल भिन्न है। एक व्यक्ति ने शरीर पर केवल लंगोट पहना है, जबकि दूसरे व्यक्ति ने सफ़ेद रंग के रेशमी वस्त्र धारण किए हैं। वे हमें प्रश्न-भरी निगाहों से देख रहे हैं। मेरा गाइड ज़ोर से हँसता है। उन्हें आश्चर्यचकित देखकर उसे बहुत मज़ा आ रहा है। वह उनके पास जाकर तमिल में कुछ कहता है। उनके चेहरे के भाव तत्काल बदल जाते हैं और वे सभी एक साथ मुस्कराने लगते हैं। मुझे उनकी हँसी देख कर अच्छा लग रहा है।

‘हम लोग अब महर्षि के कक्ष में चलेंगे,’ पीले वस्त्रों वाले योगी ने कहा। मैं बाहर पत्थर के बने बरामदे में पल-भर रुककर अपने जूते उतारता हूँ। मैं महर्षि को अर्पित करने के लिए साथ लाई फल की टोकरी लेकर अंदर प्रवेश करता हूँ।



कमरे के भीतर लगभग बैठे बीस लोग अचानक हमारी ओर देखने लगते हैं। वे लाल रंग के फ़र्श पर अर्धवृत्त बना कर बैठे हैं। उन्होंने द्वार के बाईं ओर वाले कोने से दूरी बना रखी है। ऐसा लगता है कि हमारे आने से पहले वे लोग उसी ओर मुँह करके बैठे थे। मैं कुछ देर देखता हूँ और फिर मुझे एक लंबे सफ़ेद दीवान पर एक व्यक्ति बैठा दिखाई देता है। यह कहना पर्याप्त होगा कि वही महर्षि हैं!

मेरा गाइड दीवान के पास जाकर हाथ जोड़कर महर्षि को प्रणाम करता है।

दीवार पर बनी एक ऊँची खिड़की से दीवान की दूरी बस कुछ ही क़दम की है। उसमें से बाहर का प्रकाश महर्षि के ऊपर गिर रहा है। मैं उन्हें बहुत स्पष्ट रूप से देख सकता हूँ। वे खिड़की से बाहर उसी दिशा में देख रहे हैं जहाँ से हम सुबह आए थे। वे अपना सिर नहीं हिलाते, इसलिए उनका ध्यान आकर्षित करने के लिए मैं उन्हें फल अर्पित करता हूँ। मैं खिड़की के पास जाकर फल उनके सामने रख देता हूँ और फिर दो क़दम पीछे हट जाता हूँ।

उनके दीवान के सामने एक छोटी-सी पीतल की अँगीठी जल रही है। उसमें जलते हुए कोयले भरे हैं और उसकी सुगंध बहुत बढ़िया है। पास ही, अगरबत्ती दान भी रखा है जिसमें बहुत-सी अगरबत्तियाँ लगी हैं। उनमें से नीले रंग का धुआँ उठा रहा है, परंतु उसकी तीखी सुगंध बहुत अलग है।

मैं एक पतली-सी सूती चादर को मोड़कर उसी पर बैठ जाता हूँ और आशा-भरी निगाह से महर्षि को निहारता रहता हूँ। महर्षि का शरीर लगभग निर्वस्त्र है। उन्होंने केवल एक पतला लंगोट बांधा हुआ है। उस स्थान पर यही सामान्य है। उनकी त्वचा हल्के तांबे के रंग की है, परंतु औसत दक्षिण भारतीय की तुलना में वह काफ़ी गोरे हैं। मेरे हिसाब से उनका क़द भी ऊँचा है और उनकी आयु पचास वर्ष के आसपास है। उनका सुगठित सिर सफ़ेद बालों से भरा है। उनका भाल उन्नत और चौड़ा है, जो उनके व्यक्तित्व को बौद्धिक पहचान देता है। उनके हाव-भाव भारतीय की अपेक्षा यूरोपीय अधिक लगते हैं। मेरा प्रथम आकलन यही है। उनका दीवान सफ़ेद गद्दियों से भरा है। महर्षि के पैर एक अत्यंत शानदार बाघ-चर्म पर रखे हुए हैं।

उस लंबे कक्ष में दूर तक पूर्ण शांति है। महर्षि बिना हिले-डुले चुपचाप बैठे हैं। उनका एक शिष्य दीवान के एक ओर बैठा है। वह सहसा एक रस्सी खींचकर कक्ष की शांति भंग

कर देता है। रस्सी के खींचने से बांस की लकड़ी से बना पंखा चलने लगता है। वह पंखा लकड़ी के स्तंभ पर बँधा है और महर्षि के बिलकुल सर के ऊपर झूल रहा है। मैं उस पंखे की आवाज़ सुन रहा हूँ और इसी बीच, मेरा ध्यान महर्षि की आँखों पर है। वे गहरे भूरे रंग की हैं उनका आकार मध्यम है और वह पूरी खुली हैं।

यदि उन्हें मेरी उपस्थिति का एहसास है तो भी वह इसका कोई संकेत नहीं दे रहे हैं। उनका शरीर किसी प्रतिमा की भाँति अलौकिक रूप से शांत और स्थिर है। वह एक बार भी मेरी ओर नहीं देखते और उनकी आँखें लगातार दूर शून्य में देख रही हैं। मुझे यह दृश्य अतीत के किसी संस्मरण की याद दिलाता है। मैंने ऐसा दृश्य पहले कहाँ देखा है? मैं अपने स्मृति-पटल को खँगालता हूँ तो मुझे याद आता है मौनी बाबा का, जिन्हें मैंने मद्रास की एकांत और निर्जन कुटिया में देखा था, शरीर भी इतना ही स्थिर था। वे भी किसी प्रतिमा की भाँति लगते थे। इन दोनों लोगों की शारीरिक स्थिरता में अजीब-सी समानता है।

मेरा एक बहुत पुराना सिद्धांत है। मेरा ऐसा मानना है कि मनुष्य आँखों से किसी की आत्मा को अपने साथ ले जा सकता है। परंतु महर्षि की आँखों को देखकर मुझे संकोच हो रहा है। मैं दुविधा में और आश्चर्यचकित भी हूँ।

समय बहुत धीमी गति से आगे बढ़ रहा है। धीरे-धीरे आश्रम की दीवार पर टंगी घड़ी में आधा घंटा बीत जाता है। फिर पूरा एक घंटा निकल जाता है। कक्ष में बैठा एक भी व्यक्ति हिलता नहीं है। किसी में कुछ कहने की हिम्मत नहीं है। मैं दृश्य-ध्यान की एक ऐसी अवस्था में पहुँच गया हूँ, जहाँ मुझे दीवान पर बैठे उस व्यक्ति के अलावा और किसी के होने का आभास नहीं हो रहा। मेरे द्वारा अर्पित फलों की टोकरी मेज़ पर अनछुई रखी है।

मुझे मेरे गाइड ने ऐसी कोई चेतावनी नहीं दी थी कि उसके गुरु मौनी बाबा की तरह मेरा अभिवादन करेंगे। मेरे साथ अचानक यह सब हो रहा है। मेरा अभिवादन बहुत अजीब और उपेक्षापूर्ण ढंग से हुआ है। ऐसे में किसी यूरोपीय के मन में सबसे पहले यह विचार आता है: ‘क्या यह व्यक्ति केवल अपने भक्तों के लाभ के लिए इस तरह बैठा है?’ यह विचार मेरे मन में एकाध बार उठता है, लेकिन मैं इसे नज़रअंदाज़ कर देता हूँ। महर्षि निश्चित ही, ध्यान की अत्यंत गहन अवस्था में हैं। हालाँकि मेरे गाइड ने मुझे ऐसी कोई पूर्वसूचना नहीं दी थी कि उसके गुरु इस तरह ध्यान में बैठे रहते हैं। इसके बाद अगला विचार मेरे दिमाग़ में यह उठता है, ‘क्या इस तरह रहस्यमय ध्यान की अवस्था निरर्थक शून्यता से अधिक कुछ है?’ यह विचार भी मेरे मन में कुछ देर रहता है, लेकिन मैं इसे भी नज़रअंदाज़ कर देता हूँ क्योंकि मेरे पास इसका कोई उत्तर नहीं है।

जिस प्रकार लोहे के कण, चुंबक से चिपके रहते हैं, उसी तरह इस व्यक्ति ने मेरा ध्यान अपनी ओर आकृष्ट कर रखा है। मैं उस पर से दृष्टि हटा नहीं पा रहा हूँ। धीरे-धीरे मेरे भीतर का आरंभिक आश्चर्य, मेरी दुविधा पूरी तरह लुप्त हो जाते हैं। मेरे अंतर्मन में एक विचित्र

आकर्षण उसकी जगह ले लेता है। इस असाधारण दृश्य को चलते हुए जब दूसरा घंटा पूरा होने लगता है तो मुझे अपने भीतर कुछ परिवर्तन महसूस होता है। एक-एक करके सभी प्रश्न, जो मैंने सटीकता से ट्रेन में बैठकर तैयार किए थे, मेरी पकड़ से छूटने लगते हैं। मुझे महसूस होता है कि उन्हें पूछना या न पूछना अब निरर्थक है क्योंकि मुझे किसी भी समस्या के समाधान खोजने की परवाह नहीं रह गई है। मुझे सिर्फ़ इतना पता है कि मेरे निकट असीम शांति की धारा बह रही है। मेरे भीतर असीम शांति प्रवेश कर रही है और विचारों से परेशान मेरे मस्तिष्क को आराम मिल रहा है।

वे सभी प्रश्न, जो मैं अब तक स्वयं से पूछता रहा हूँ, अचानक कितने छोटे प्रतीत हो रहे हैं! बीते वर्षों का परिदृश्य कितना तुच्छ हो गया है! मैं स्पष्ट तौर पर यह समझ सकता हूँ कि मनुष्य की बुद्धि स्वयं उसके लिए समस्याएँ पैदा करती है और उन्हें सुलझाने का प्रयास करने से मनुष्य और परेशान हो जाता है! किसी ऐसे व्यक्ति के, जो अब तक बुद्धि को बहुत महत्त्व देता रहा है, मन में इस तरह का विचार आना बड़ी अनोखी और नई बात है।

दो घंटे बाद मैं अपने भीतर जाग्रत हो रहे शांतिपूर्ण भाव के सामने समर्पण कर देता हूँ। इतना समय बीतने से मुझे चिढ़ भी पैदा नहीं हो रही क्योंकि मैं महसूस कर रहा हूँ कि मनुष्य के द्वारा अपनी पैदा की समस्याओं की शृंखला धीरे-धीरे टूटकर बिखर रही है और एक नया प्रश्न धीरे-धीरे मेरी चेतना में आकार ले रहा है।

'जिस तरह फूल की पत्तियों से सुगंध निकलती है, उसी तरह क्या आध्यात्मिक शांति की यह सुगंध इस महर्षि के भीतर से निकल रही है?'

मैं आध्यात्मिकता पर सवाल उठाने में सक्षम तो नहीं हूँ परंतु इसे लेकर मेरी निजी प्रतिक्रिया अवश्य है। मेरे मन में यह संदेह जाग्रत हो जाता है कि मेरे भीतर पैदा हुई इस रहस्यमय शांति का असली कारण उस स्थान का वातावरण है। यह संदेह महर्षि के व्यक्तित्व के प्रति मेरी प्रतिक्रिया है। मैं सोच में पड़ जाता हूँ कि मेरे भीतर मेरी परेशानियों को शांत करने वाली यह आध्यात्मिक गतिविधि, यह टेलीपैथी प्रक्रिया और यह स्थिरता, क्या सचमुच महर्षि में से ही प्रवाहित हो रही है? इसके बावजूद ऐसा प्रतीत होता है कि महर्षि मेरी उपस्थिति से पूरी तरह अनजान हैं और पूर्ण रूप से भावशून्य हैं।

वहाँ अचानक हरकत होती है। कोई मेरे पास आकर कान में धीरे से बोलता है, 'क्या आप महर्षि से कोई प्रश्न नहीं करना चाहते थे?'

मेरे इस पुराने गाइड का शायद धैर्य समाप्त हो गया है। वह यह सोच रहा है कि मैं एक अधीर यूरोपीय व्यक्ति हूँ जिसका धैर्य टूटने को है। मुझे दुःख है, मेरे उत्सुक मित्र! मैं तुम्हारे गुरु से कुछ प्रश्न पूछने आया था परंतु अब मैं भीतर से इतना शांत महसूस कर रहा हूँ तो फिर प्रश्न पूछकर दिमाग़ को क्यों परेशान करूँ? मुझे लग रहा है कि मेरी आत्मा का जहाज अपने बंदरगाह से निकल चुका है और सामने एक शानदार सागर उसकी प्रतीक्षा कर रहा है। तुम

मुझे फिर से संसार के शोरगुल-भरे उसी बंदरगाह पर वापस खींचना चाहते हो जबकि मैं इससे ज़बरदस्त रोमांचक यात्रा पर निकलने वाला हूँ!

परंतु मौन तो टूट चुका है। यह मानो किसी अनुचित दख़लअंदाज़ी एक संकेत है कि तभी वह व्यक्ति उठता है और कक्ष में घूमने लगता है। वहाँ बहुत-सी आवाज़ें सुनाई पड़ रही हैं। तभी महर्षि की गहरी भूरी आँखें एक-दो बार हिलती हैं। उनका सिर घूमता है और चेहरा धीरे-से एक दिशा में मुड़ जाता है। कुछ ही पल में मैं उन्हें नज़र आ जाता हूँ। महर्षि की रहस्यमय दृष्टि पहली बार मुझ पर पड़ी है। स्पष्ट है कि वह ध्यान साधना से बाहर आ चुके हैं।

वह बीच में बोलने वाला व्यक्ति शायद यह सोच रहा है कि मेरा प्रतिक्रिया न देना, इस बात का सूचक है कि मैंने उसका प्रश्न नहीं सुना, इसलिए वह अपने प्रश्न को दोहराता है। परंतु उन चमकदार आँखों में, जो इस समय मुझे देख रही हैं, मैं एक अव्यक्त प्रश्न पढ़ सकता हूँ।

'क्या ऐसा हो सकता है, क्या यह संभव है कि इतनी गहरी मानसिक शांति का आभास होने के बाद भी आप मन में संदेह होने के कारण कष्ट में हैं?'

शांति मुझ पर हावी है। मैं गाइड की ओर मुड़कर उत्तर देता हूँ:

'नहीं, मुझे अब कुछ नहीं पूछना। फिर कभी...'

मुझे हालाँकि महसूस हो रहा है कि मुझे यहाँ अपने आने का कोई कारण तो देना होगा। हालाँकि महर्षि तो नहीं, किंतु वहाँ बैठे लोगों को अवश्य मेरे उत्तर का इंतज़ार है। मुझे अपने गाइड द्वारा यह पता लगता है कि बहुत कम लोग वहाँ के निवासी शिष्य हैं और बाक़ी सब लोग, देश-भर की अलग-अलग जगहों से आए हुए हैं। तभी मेरा गाइड उठता है और अपना परिचय देता है। वह तमिल भाषा में बहुत ऊर्जावान ढंग से बोल रहा है। वह सभी लोगों को अपनी बात समझाता है। अब मुझे डर है कि उसकी बातों में तथ्यों के साथ कुछ मनगढ़ंत बातें भी जुड़ गई हैं जिसके कारण लोग आश्चर्यचकित हो रहे हैं।



दोपहर का भोजन समाप्त हो चुका है। सूर्य की गर्मी से दिन का तापमान इतना अधिक बढ़ गया है कि मैंने इतनी गर्मी पहले कभी महसूस नहीं की। पर एक बात और है कि हम लोग एक ऐसे स्थान पर हैं जो भूमध्य रेखा से अधिक दूरी पर नहीं है। मैं इस बात के लिए आभारी हूँ कि भारत में ऐसा मौसम भी होता है जिस समय अधिक गतिविधि नहीं होती, क्योंकि इस समय लोग दोपहर के भोजन के बाद झपकी लेने के लिए पेड़ों की छांव में गुम हो जाते हैं। मैं उस समय आसानी से महर्षि के पास जा सकता हूँ।

मैं विशाल कक्ष में प्रवेश करके महर्षि के निकट बैठ जाता हूँ। वह दीवान पर रखी सफ़ेद

गद्दियों के सहारे लेटे हुए हैं। उनका एक अनुचर उनके पास बैठकर पंखे की रस्सी खींच रहा है। रस्सी के खींचने की हल्की आवाज़ और पंखे की सरसराहट मुझे सुनने में अच्छी लग रही है।

महर्षि के हाथ में एक मुड़ी हुई पुस्तक है। वह बहुत धीमी गति से कुछ लिख रहे हैं। मेरे प्रवेश करने के कुछ मिनटों बाद, वे अपनी पुस्तक एक तरफ़ रख देते हैं और अपने एक शिष्य को बुलाते हैं। उनके बीच में तमिल में कुछ बातचीत होती है और फिर उनका शिष्य मुझे बताता है कि महर्षि को इस बात का दु:ख है कि मैं उनका भोजन चख नहीं सकता। वह बताता है कि वे लोग सादा जीवन जीते हैं इसलिए उन्हें यूरोपीय लोगों के खान-पान का बिलकुल अंदाज़ा नहीं है। मैं महर्षि को धन्यवाद देकर कहता हूँ कि मुझे उनका बिना मसाले वाला भोजन खाने में भी प्रसन्नता होगी और पेट भरने के लिए तो मैं शहर में कुछ भी खाना लूँगा। मैं यह भी कहता हूँ कि मेरे लिए भोजन का मुद्दा, अपनी महान खोज से बहुत कम महत्त्व का है जिसके लिए मैं यहाँ आश्रम तक आया हूँ।

महर्षि बहुत ध्यान से मेरी बातों को सुन रहे हैं। उनका चेहरा शांत है और उस पर कोई हलचल या प्रतिक्रिया नहीं है।

'यह अच्छा विषय है,' महर्षि बहुत देर बाद बोलते हैं।

इससे मुझे अपने विषय पर और आगे बोलने की प्रेरणा मिलती है।

'गुरुदेव, मैंने पाश्चात्य दर्शन और विज्ञान का अध्ययन किया है। मैं भीड़-भाड़ वाले शहरों में रहा हूँ। मैंने वहाँ काम किया है और वहाँ की सुख-सुविधाओं को भोगा है। मैंने वहाँ के लोगों की तरह अनेक तरह की इच्छाएँ भी की हैं, परंतु साथ ही, मैं एकांत स्थानों पर भी गया हूँ। मैं वहाँ भटका हूँ और मैंने गहन एकांत को भी महसूस किया है। मैंने पश्चिम के योगियों से प्रश्न किए हैं और अब मैं पूर्व दिशा की ओर आया हूँ। मुझे और ज्ञान चाहिए!'

महर्षि अपना सिर हिलाकर हामी भरते हैं मानो कह रहे हों, 'हाँ, मैं समझ सकता हूँ।'

'मैंने बहुत-से मत सुने हैं, अनेक सिद्धांतों को ध्यान से सुना है। मेरे चारों ओर किसी न किसी मत के बौद्धिक प्रमाण बिखरे पड़े हैं। मैं इन सबसे थक चुका हूँ। मैं अब हर उस बात पर संदेह करता हूँ जिसे निजी अनुभव द्वारा सिद्ध नहीं किया जा सकता। मुझे ऐसा कहने के लिए क्षमा कीजिए, परंतु मैं धार्मिक प्रवृत्ति का नहीं हूँ। क्या मनुष्य के भौतिक अस्तित्व से आगे भी कुछ है? यदि हाँ, तो मैं उसे कैसे प्राप्त कर सकता हूँ?'

आस-पास बैठे तीन-चार शिष्य मुझे आश्चर्य से देखते हैं। क्या मैंने इतना स्पष्ट बोलकर आश्रम के शिष्टाचार को भंग किया है? मुझे नहीं पता और शायद, मुझे इसकी परवाह भी नहीं है। कितने वर्षों की इच्छा के दबाव से शायद मेरा नियंत्रण अचानक टूट गया है और वह मेरे शब्द-रूप में फूट पड़ा है। यदि महर्षि व्यक्ति हैं, तो वे निश्चित रूप से मेरी बात को समझेंगे और मुझसे शिष्टाचार में हुई किसी भी तरह की चूक को नज़रअंदाज़ कर देंगे।

महर्षि कोई उत्तर नहीं देते, लेकिन वे विचारों की शृंखला में डूब गए हैं क्योंकि वहाँ और कुछ करने को नहीं है। मेरा मुँह अब खुल गया है। मैं तीसरी बार उनसे बात करता हूँ:

'हमारे पश्चिम के बुद्धिमान लोग अपनी चतुराई के लिए पहचाने जाते हैं और उनका आदर किया जाता है। इसके बावजूद उन्होंने इस बात को स्वीकार किया है कि वह लोग जीवन के पीछे छिपे सत्य पर अधिक प्रकाश नहीं डाल सकते। ऐसा कहा जाता है कि आपके देश में ऐसे कुछ लोग हैं जो ऐसी बातों पर रोशनी डाल सकते हैं जिसमें पश्चिम के लोग असफल हो चुके हैं। क्या यह सही है? क्या आप ज्ञान प्राप्त करने में मेरी सहायता कर सकते हैं? या फिर यह खोज ही अपने आप में एक भ्रम है?'

मैं अपने वार्तालाप के लक्ष्य तक पहुँच गया हूँ। मैं महर्षि के उत्तर की प्रतीक्षा करता हूँ। वे विचारमग्न हैं और मेरी ओर देख रहे हैं। वे शायद मेरे प्रश्नों पर विचार कर रहे हैं। इसी तरह मौन रहते हुए दस मिनट बीत जाते हैं।

आख़िर वह मुँह खोलते हैं और धीरे-से कहते हैं:

'आप कहते हैं, "मैं" जानना चाहता हूँ। मुझे बताइए "मैं" कौन है?'

इसका क्या आशय है? महर्षि ने दुभाषिये की सेवाएँ छोड़कर मुझसे सीधे अंग्रेज़ी में बात करनी आरंभ कर दी है। मेरा दिमाग़ चकरा रहा है।

'मुझे क्षमा कीजिए, लेकिन मैं आपका प्रश्न नहीं समझा।'

'क्या मेरी बात स्पष्ट नहीं है? फिर सोचिए!'

मैं एक बार फिर उनके शब्दों पर विचार करता हूँ। अचानक एक विचार मेरे मस्तिष्क में कौंधता है। मैं अपनी ओर अँगुली से संकेत करके अपना नाम बोलता हूँ।

'और क्या आप इसे जानते हैं?'

'हाँ, हमेशा से!' मैं मुस्कराकर उत्तर देता हूँ।

'परंतु यह केवल आपका शरीर है। मैं फिर पूछता हूँ, "आप" कौन हैं?'

मेरे पास इस साधारण प्रश्न का कोई उत्तर नहीं है।

महर्षि आगे कहते हैं:

'पहले उस "मैं" को जानिए, फिर आपको सत्य का आभास होगा।'

मेरा मन फिर परेशान हो गया है। मेरी दुविधा बढ़ गई है। मेरी परेशानी को मौखिक अभिव्यक्ति मिल रही है। परंतु महर्षि के लिए शायद अब और अंग्रेज़ी बोल पाना मुश्किल है। वह फिर से दुभाषिये की सहायता लेते हैं। उनकी कही हुई बात को अनुवाद करके मुझे बताया जाता है:

'आपको केवल एक काम करना है। अपने भीतर देखना है। यह सही तरीक़े से किया

जाना चाहिए। इससे आपको अपनी सब समस्याओं का समाधान मिल जाएगा!'

यह बड़ी विचित्र बात है! मैं उनसे पूछता हूँ:

'क्या किया जाना चाहिए? मुझे कौन-सा तरीक़ा अपनाना होगा?'

'आत्मा को गहराई से देखने और नियमित रूप से ध्यान द्वारा इस सत्य के प्रकाश को प्राप्त किया जा सकता है।'

'मैंने सत्य को जानने के उद्देश्य से कई बार ध्यान लगाया है परंतु मुझे इसमें विशेष प्रगति के संकेत नहीं मिले।'

'आपको कैसे पता कि आपने प्रगति नहीं की है? आध्यात्मिक क्षेत्र में प्रगति को देख पाना सरल नहीं होता।'

'क्या इसमें गुरु की सहायता आवश्यक है?'

'हो सकती है!'

'क्या कोई गुरु मनुष्य को उसके भीतर देखने में मदद कर सकता है?'

'गुरु, व्यक्ति को वह सब दे सकता है, जो उसे खोज करने के लिए चाहिए। इसे अपने व्यक्तिगत अनुभव द्वारा ही समझा जा सकता है।'

'गुरु की सहायता से ज्ञान प्राप्त करने में कितना समय लगता है?'

'यह ज्ञान की खोज करने वाले की परिपक्वता पर निर्भर करता है। बारूद को आग पकड़ने में क्षण-भर का समय लगता है परंतु कोयले को जलने के लिए काफ़ी समय चाहिए।'

मुझे ऐसा महसूस हो रहा है कि महर्षि, गुरु और उनकी पद्धतियों के विषय पर अधिक चर्चा नहीं करना चाहते। परंतु मेरी मानसिक प्रतिबद्धता इस पर हावी है और मैं उनसे फिर प्रश्न करता हूँ। वह खिड़की से बाहर पर्वतीय परिदृश्य पर नज़र डालते हैं, परंतु कोई उत्तर नहीं देते। मैं उनका संकेत समझ गया हूँ और उस विषय को वहीं छोड़ देता हूँ।

'क्या महर्षि संसार के भविष्य पर अपना मत व्यक्त कर सकते हैं, क्योंकि हम सब लोग संकट-भरे समय में जी रहे हैं?'

'आपको भविष्य की इतनी चिंता क्यों है?' महर्षि पूछते हैं। 'आप तो अभी वर्तमान के विषय में भी ठीक से नहीं जानते! अपने वर्तमान का ध्यान रखिए तो भविष्य अपने आप ठीक हो जाएगा।'

एक और झिड़की! परंतु मैं इतनी आसानी से हार मानने वाला नहीं हूँ क्योंकि मैं ऐसी जगह से आया हूँ जहाँ लोगों के जीवन में ऐसे शांतिपूर्ण वन आवास नहीं, बल्कि त्रासदियाँ और परेशानियाँ अधिक हैं।

'क्या संसार में मैत्री और आपसी सद्भाव के नए युग की शुरुआत होगी या फिर यह अव्यवस्था और युद्ध के गर्त में चला जाएगा?'

महर्षि मेरी बात से प्रसन्न नहीं है। फिर भी वह मेरी बात का उत्तर देते हैं:

'संसार को चलाने वाला ईश्वर है और संसार की देखभाल करना भी उसकी ही ज़िम्मेदारी है। उसने संसार को जीवन दिया है। वह जानता है कि उसकी देखभाल कैसे होनी चाहिए। संसार के बोझ को आप नहीं बल्कि भगवान वहन करते हैं।'

'फिर भी, यदि हम निष्पक्ष रूप से अपने आस-पास देखें तो यह समझना मुश्किल है कि ईश्वर के प्रति इतना कृपालु और सम्मानजनक दृष्टिकोण कहाँ से आता है?' मैं उठाता हूँ।

महर्षि मेरी बात से और भी अप्रसन्न हो जाते हैं, परंतु वह फिर भी उत्तर देते हैं:

'आप स्वयं जैसे हैं, वैसा ही संसार है। ख़ुद को जाने बिना संसार को जानने का क्या लाभ है? सत्य की खोज करने वाले व्यक्ति के लिए इस प्रश्न का कोई अर्थ नहीं है। लोग ऐसे प्रश्नों पर व्यर्थ अपनी ऊर्जा नष्ट करते हैं। पहले आप अपने बारे में सत्य को जानिए। उसके बाद, आप इस संसार के सत्य को समझ सकेंगे, जिसका आप एक छोटा-सा अंश हैं।'

वहाँ अचानक मौन व्याप्त हो जाता है। महर्षि का अनुचर मेरे पास आता है और एक अगरबत्ती जला देता है। महर्षि अगरबत्ती से निकलते नीले धुएँ को ऊपर जाता देखते हैं और अपनी पुस्तक उठा लेते हैं। वे उसके पन्नों को खोलते हैं और अपने काम में लग जाते हैं। मैं अचानक उनके ध्यान की परिधि से बाहर निकल गया हूँ।

उनके ऐसे उपेक्षापूर्ण व्यवहार से मानो मेरे आत्म-सम्मान पर ठंडा पानी पड़ गया है। मैं वहाँ लगभग पौन घंटा और बैठता हूँ लेकिन वह मेरे प्रश्नों का उत्तर नहीं देना चाहते। अपनी वार्तालाप को समाप्त हुआ मानकर उठ जाता हूँ। मैं हाथ जोड़कर उन्हें नमस्कार करके वहाँ से निकल जाता हूँ।



मैंने किसी को शहर से वाहन लाने के लिए भेजा है क्योंकि मैं मंदिर देखना चाहता हूँ। मैंने एक घोड़ा-गाड़ी मँगवाई है क्योंकि बैलगाड़ी देखने में अच्छी होती है लेकिन वह धीरे चलती है तथा कम सुविधाजनक होती है।

मुझे एक दुपहिया घोड़ा-गाड़ी मिल जाती है। उसमें बैठने के लिए सीट नहीं है परंतु मुझे कोई परेशानी नहीं है। वाहन चालक बहुत उग्र स्वभाव का है। उसने सिर पर एक गंदी-सी लाल पगड़ी पहनी है। उसने एक लंबा कपड़ा कमर के नीचे बांधा हुआ है जिसका एक सिरा उसकी जांघों के बीच से होकर उसकी कमर में फंसा हुआ है।

लंबे और धूल भरे रास्ते को पार करने के बाद हम लोग मंदिर के प्रवेश-द्वार तक पहुँचते

हैं, जिसकी ऊँची इमारतें हमारा अभिवादन करती हैं। मैं घोड़ा-गाड़ी से उतरकर उस स्थान को देखना शुरू कर देता हूँ।

'मैं नहीं कह सकता कि अरुणाचल का मंदिर कितना पुराना है,' मेरे प्रश्न के उत्तर में मेरा साथी जवाब देता है, 'परंतु आप देख सकते हैं कि यह सैकड़ों वर्ष पुराना अवश्य है!'

मंदिर के द्वार के आस-पास और भीतर खजूर के वृक्षों के नीचे कुछ छोटी-छोटी दुकानें बनी हैं। उन दुकानों पर साधारण कपड़े पहने लोग बैठे हैं जो धार्मिक चित्र और शिव एवं अन्य देवी-देवताओं की पीतल की मूर्तियाँ बेच रहे हैं। मैं शिव की मूर्तियों को इतनी प्रचुर मात्रा में देखकर हैरान हूँ क्योंकि मैंने उन स्थानों पर कृष्ण और राम का प्रभाव अधिक देखा है। मेरा गाइड साथी इस बात का स्पष्टीकरण देता है।

'हमारी धार्मिक कथाओं के अनुसार भगवान शिव एक बार पवित्र लाल पर्वत पर विशाल ज्वाला बन कर प्रकट हुए थे। इसलिए इस मंदिर के पुजारी, साल में एक बार, उस घटना की स्मृति में विशाल ज्वाला प्रज्ज्वलित करते हैं। ऐसा शायद हज़ारों वर्षों से चला आ रहा है। मुझे लगता है कि इस मंदिर का निर्माण भी इसी घटना की स्मृति में हुआ है और भगवान शिव आज भी इस पर्वत पर मौजूद हैं।'*

कुछ तीर्थयात्री इन दुकानों को देख रहे हैं, जहाँ न सिर्फ़ पीतल की छोटी मूर्तियों, बल्कि पवित्र कथाओं की घटनाओं को दर्शाती आकर्षक क्रोमोलिथोग्राफ़ी, धार्मिक पात्रों से संबंधित पुस्तकों, तमिल और तेलुगु भाषाओं में छपी सामग्री और किसी जाति या संप्रदाय के प्रतीक स्वरूप मस्तक पर लगाए जाने वाले चिह्न के लिए रंगीन पेंट आदि को भी ख़रीदा जा सकता है।

एक कोढ़-ग्रस्त भिखारी संकोच से मेरी ओर आता है। उसके हाथ-पैरों का मांस सड़ गया है। वह नहीं जानता कि मैं उसे दूर भगा दूँगा या वह मेरी दया जगा सकेगा। भयानक रोग से ग्रस्त होने के कारण उसका चेहरा कठोर हो गया है। मैं उसे छूने में घबरा रहा हूँ, इसलिए कुछ पैसे ज़मीन पर रख देता हूँ हालाँकि मुझे ऐसा करने में शर्मिंदगी महसूस हो रही है।

मंदिर का प्रवेश द्वार, जो खुदी हुई आकृतियों से निर्मित पिरामिड जैसा है, मेरा ध्यान आकर्षित कर लेता है। यह देखने में मिस्र के पिरामिड के समान है बस केवल इसका ऊपर का नुकीला भाग मानो काट दिया गया हो। ऐसे ही तीन और ढाँचों के साथ, यह पिरामिड उस स्थान के परिदृश्य पर पूरी तरह हावी है। ये ढाँचे कई मील दूर से दिख जाते हैं।

पगोडा का आगे वाला हिस्सा मीनाकारी से भरा है। उस पर अनूठी, छोटी-छोटी मूर्तियाँ बनी हैं। उन मूर्तियों को पौराणिक और अन्य कथाओं के आधार पर बनाया गया है। उन्हें समझ पाना मुश्किल है। वहाँ अनेक हिंदू देवी-देवताओं की ध्यान-मग्न मूर्तियाँ भी हैं। कुछ मूर्तियाँ कामुक आलिंगनबद्ध मुद्रा में भी हैं। उन्हें देखकर बहुत आश्चर्य होता है। मुझे ऐसा

लगता है कि हिंदू धर्म में सभी प्रकार के लोगों के लिए कुछ न कुछ मौजूद है और यही इस धर्म की विशेषता है कि यह सबको साथ लेकर चलता है।

मैं मंदिर के भीतर प्रविष्ट होता हूँ तो मुझे एक बड़ा चतुर्भुज दिखाई पड़ता है। उस विशाल ढाँचे के भीतर, गलियारों, मंदिरों, कक्षों, वीथिकाओं आदि से बनी भूलभुलैया है। यहाँ पत्थर की कोई ऐसी इमारत नहीं है जिसे देखकर कुछ पल के लिए व्यक्ति आश्चर्यचकित न रह जाए। यह ठीक वैसा ही है जिस तरह एथेंस के निकट देवताओं के दरबारी ढाँचे बने हुए हैं। परंतु वे सब अंधकारमय रहस्य में छिपे हैं। उनकी बड़ी-बड़ी दरारें एकांत और ठंडी हवा से भरी हैं। वह स्थान अपने-आप में एक भूलभुलैया है। परंतु मेरा साथी बहुत विश्वास के साथ आगे बढ़ रहा है।

बाहर से यह पगोडा, लाल रंग के पत्थर के कारण बहुत आकर्षक नज़र आते हैं, परंतु भीतर से यह सारा ढाँचा विवर्ण और फ़ीका है।

हम लोग ठोस दीवारों के बने लंबे गलियारे से होकर गुज़रते हैं, जिसके दोनों ओर मीनाकारी वाले स्तंभ हैं जिन पर उस गलियारे की छत टिकी है। हम अंधेरे गलियारों और रास्तों से होकर एक विशाल स्थान पर पहुँचते हैं, जो इस प्राचीन मंदिर के बाहरी अहाते में स्थित है।

'हज़ार स्तंभों वाला कक्ष!' मेरा गाइड कहता है। मैं समय के प्रभाव से फ़ीके पड़ चुके उस ढाँचे को देख रहा हूँ। मेरे सामने चपटे घुमावदार और विशाल पत्थरों के स्तंभ खड़े हैं। वह स्थान पूरी तरह एकांत और निर्जन है। इसके विशालकाय स्तंभ बड़े रहस्यमय ढंग से बने हैं। मैं थोड़ा नज़दीक जाकर उन पर की गई कारीगरी को देखता हूँ। प्रत्येक खंभा एक ही पत्थर से बना है। यहाँ तक कि उसके ऊपर बनी छत भी सपाट पत्थरों के बड़े-बड़े टुकड़ों से बनी हुई है। वहाँ भी मुझे देवी देवताओं की प्रतिमाएँ खुदी हुई दिखाई पड़ती हैं। वहाँ से कुछ आगे पशुओं के और कई अन्य अपरिचित एवं अपरिचित चेहरे दीवारों में खुदे दिखाई देते हैं।

हम इन खंभों वाली वीथिकाओं को पार करके इसके अंधकारपूर्ण रास्तों से गुज़रते हुए आगे बढ़ते हैं। दीवारों में जगह-जगह, छोटे दीपक लगे हैं। उनमें तेल में डूबी बत्तियाँ लटक रही हैं। इस तरह हम उसके मध्य में पहुँच जाते हैं। बाहर खुली धूप में आना मुझे अच्छा लग रहा है। उस स्थान से मंदिर के भीतर बने पाँच छोटे पगोडा दिखाई दे रहे हैं। वे सब भी उसी तरह के छोटे पिरामिड वाले अंदाज़ में बनाए गए हैं जैसे चतुर्भुज अहाते के प्रवेश द्वार पर बने थे। मैं एक पगोडा को नज़दीक से देखता हूँ। मेरा मानना है कि वह ईंटों से बनाया गया है। उसके ऊपर की अलंकृत सतह, पत्थरों से नहीं बल्कि, पकाई गई मिट्टी या किसी मज़बूत पलस्तर से बनाई गई है। कुछ आकृतियों को पेंट से बनाया गया है, जिनके रंग समय के साथ फ़ीके पड़ चुके हैं।

हम लोग उसके भीतर चले जाते हैं और कुछ लंबे अंधेरे गलियारों से गुज़रते हुए आगे

बढ़ते हैं। मेरा गाइड मुझे चेतावनी देता है कि हम लोग मुख्य मंदिर की ओर पहुँचने वाले हैं, जहाँ यूरोपीय लोगों को नहीं जाना चाहिए। यद्यपि उस पवित्र मंदिर में विदेशियों के लिए प्रवेश वर्जित है परंतु मुझे एक अंधेरे गलियारे से उसकी झलक देखने की अनुमति मिल जाती है। मुझे दूर से ड्रम पीटने और घंटों की ध्वनि तथा पुजारियों के मंत्र उच्चारण का स्वर साफ़ सुनाई पड़ रहा है। वह आवाज़ उस पुराने मंदिर के अंधकारपूर्ण वातावरण में बहुत डरावनी सुनाई पड़ रही है।

मैं बहुत आशा से उसकी ओर देखता हूँ। तभी मूर्ति के सामने मुझे एक स्वर्णिम ज्वाला उठती दिखाई देती है। उसके आस-पास दो या तीन मंद रोशनियाँ भी जल रही हैं। मुझे कुछ पूजा करते हुए लोग भी दिखाई दे रहे हैं। मैं वहाँ से संगीतकारों को तो नहीं देख सकता परंतु शंख की ज़ोरदार आवाज़ सुन सकता हूँ। उसके बीच में करताल की तीखी और अजीब-सी आवाज़ मिल जाती है।

मेरा साथी धीरे से कहता है कि मेरे लिए वहाँ अधिक रुकना उचित नहीं होगा क्योंकि मेरी उपस्थिति पुजारियों के लिए प्रसन्नता का विषय नहीं है। उसके बाद हम लोग मंदिर के बाहरी भाग में आ जाते हैं। मेरी उस मंदिर को देखने की इच्छा भी समाप्त हो जाती है।

हम लोग फिर मंदिर के द्वार पर पहुँचते हैं। वहाँ एक बुजुर्ग ब्राह्मण, रास्ते के बीचों-बीच ज़मीन पर बैठकर पानी से भरा पीतल का एक जग लेकर बैठा है। मुझे उसके कारण एक ओर हटना पड़ता है। वह अपने माथे पर एक बड़ा-सा चिह्न अंकित करता है।

उसने अपने बाएँ हाथ में शीशे का एक टुकड़ा पकड़ा है। उसने अपनी दोनों भँवों के बीच सफ़ेद और लाल रंग से त्रिशूल बनाया है, जो दक्षिण भारत के रूढ़िवादी हिंदुओं का चिह्न है। मेरी नज़र में उसको लगाने से वह व्यक्ति बहुत विचित्र और हास्यास्पद लग रहा है। एक दुबला-पतला बूढ़ा व्यक्ति, जो मंदिर के द्वार पर भगवान शिव की लघु प्रतिमाएँ बेचता है, मेरी ओर देखने लगता है। मैं उसके अव्यक्त अनुरोध पर वहाँ से कोई वस्तु ख़रीदने के लिए रुक जाता हूँ।

शहर के दूसरे छोर पर मुझे एक चमचमाती सफ़ेद मीनार नज़र आती है। मैं मंदिर को छोड़कर उस स्थानीय मस्जिद की ओर बढ़ जाता हूँ। मेरे अंदर कुछ है, जो वह सदा मस्जिदों के सुंदर सजीले चाप तथा उनके गुणों की शानदार सुंदरता से आकर्षित हो जाता है। मैं एक बार फिर अपने जूते उतारता हूँ और उस आकर्षक सफ़ेद इमारत में प्रवेश करता हूँ। उसे कितने सुंदर ढंग से बनाया गया है और उसकी ऊँचाई व्यक्ति के चित्त को आह्लादित कर देती है! वहाँ इबादत के लिए बहुत कम लोग मौजूद हैं।

वे घुटनों के बल झुकते हैं तथा अपनी छोटी एवं रंगीन चटाइयों पर बैठे हैं। वहाँ कोई रहस्यमय मंदिर नहीं है, कोई अलंकृत प्रतिमाएँ नहीं हैं क्योंकि पैगंबर ने लिखा है कि मनुष्य और भगवान के बीच कोई नहीं आएगा, यहाँ तक कि पुजारी भी नहीं! अल्लाह की नज़र में

इबादत करने वाले सब लोग एक समान हैं। कोई पुजारी या पंडित नहीं है। मक्का की ओर देखने वाले व्यक्ति के विचारों को प्रभावित करने के लिए किसी श्रेष्ठ व्यक्ति की आवश्यकता नहीं है।

हम लोग दोबारा मुख्य मार्ग की ओर लौटते हैं। वहाँ पैसे बदलने वाला बूथ, मिठाइयों की दुकान, कपड़ों की दुकान तथा अनाज और चावल बेचने वाले दिखाई पड़ते हैं। वे सब उस प्राचीन तीर्थ स्थान पर आने वाले लोगों की सुविधा के लिए मौजूद हैं।

हमारा वाहन चालक हमें घोड़ा-गाड़ी में बैठाकर तेज़ी से वापस ले चलता है। मैं पीछे मुड़कर अरुणाचल के मंदिर के अंतिम दर्शन करता हूँ। वहाँ के ढाँचे दूर से नज़र आ रहे हैं। वे भगवान के नाम पर किए गए धैर्यपूर्ण श्रम की कथा सुनाते हैं क्योंकि इसे बनाने में लोगों का पूरा जीवन लग गया होगा। उन्हें देखकर एक बार फिर मुझे मिस्र के पिरामिड याद आ जाते हैं। वहाँ के घरों और गलियों में भी मिस्र के ढाँचों की झलक दिखाई पड़ती है।

क्या कोई दिन आएगा जब ये मंदिर पूरी तरह परित्यक्त एवं निर्जन हो जाएँगे तथा उसी लाल एवं धूसर मिट्टी में मिल जाएँगे, जहाँ से यह उत्पन्न हुए हैं? या फिर मनुष्य नए देवी-देवताओं को खोज कर उनकी पूजा-अर्चना के लिए फिर इन्हें तैयार कर लेगा?

घोड़ा-गाड़ी हमें महर्षि के आश्रम की ओर तेज़ी से लिए जा रही है। मुझे अचानक वहाँ की सुगंध से यह एहसास होता है कि प्रकृति ने हमारे सामने बहुत सुंदर छटा बिखेरी है। मैंने कितनी बार पूर्व दिशा के इस संध्याकाल को देखने की प्रतीक्षा की है, जब सूर्य अपनी पूर्ण आभा के साथ रात्रि की शैय्या पर आराम करने के लिए रुक जाएगा! पूर्व का सूर्यास्त सचमुच बहुत सुंदर और मन को लुभाने वाला होता है। यह पूरी घटना इतनी जल्दी समाप्त हो जाती है कि इसमें आधे घंटे से भी कम का समय लगता है।

यूरोप की पतझड़ वाली लंबी शामें यहाँ नहीं होतीं। पश्चिम में सूर्य तेज़ी-से जंगल में अस्त हो जाता है। वह क्षितिज में ओझल होने से पहले गहरे नारंगी रंग का होता है। आकाश में अनेक तरह के रंग बिखरे होते हैं। उस कलात्मक दृश्य को संसार का कोई चित्रकार बना नहीं सकता। हमारे आस-पास के खेत और मैदान अद्भुत विश्रांति से भर चुके हैं। पक्षियों की चहचाहट सुनाई देनी बंद हो गई है। जंगली बंदरों का शोरगुल भी समाप्त हो गया है। लोहित अग्नि का विशाल वृत्त, तेज़ी से किसी अन्य दिशा में ओझल हो रहा है। शाम के पर्दे गिरने को हैं। जल्द ही, रंगों से भरा यह पूर्ण परिदृश्य, अंधकार की चादर में लिप्त हो जाएगा!

वहाँ फैली शांति मेरे विचारों में घुल रही है और वहाँ का सौंदर्य मेरे हृदय को छू रहा है। हमें जो क्षण सौभाग्य से देखने को मिले हैं, उन्हें कौन भूल सकता है? इस बात पर विश्वास करना मुश्किल है कि जीवन के क्रूर चेहरे के पीछे इतनी सुंदर और कृपालु शक्ति छिपी हो सकती है! शांति के कुछ ऐसे पल महसूस करके हमें साधारण दिन के समय बिताए घंटों पर दु:ख होता है। ये शांत पल, अंधकार से भरे ख़ालीपन में से उल्कापिंड की भाँति बाहर

निकलते हैं और हमारे भीतर आशा का क्षणिक आभास छोड़कर दृष्टि से ओझल हो जाते हैं।



आश्रम के बगीचे के आस-पास जुगनू उड़ रहे हैं। उनसे अंधेरे के परिदृश्य में अनूठा रोशनी का पैटर्न बन रहा है। इस बीच हम खजूर के वृक्षों वाले बगीचे से होकर गुज़रते हैं। हम महर्षि के कक्ष में प्रवेश करते हैं और फ़र्श पर बैठ जाते हैं। कक्ष में व्याप्त उदात्त शांति को हवा में महसूस किया जा सकता है।

वहाँ एकत्रित लोग कक्ष में सब जगह बैठे हैं किंतु उनके बीच कोई बातचीत या शोरगुल नहीं है। एक कोने में महर्षि बैठे हैं। उनके पैर नीचे मुड़े हुए हैं और उनके हाथ घुटनों पर रखे हैं। उनकी आकृति सादगी-भरी और विनम्र है परंतु फिर भी वह अत्यंत प्रभावशाली और गौरवमय दिख रहे हैं। उनका सिर होमेर के ऋषि की भाँति शांत और स्थिर है और उनकी आँखें बिना हिले-डुले कक्ष के दूसरे छोर तक देख रही हैं। उनकी वह अनूठी मुद्रा मुझे पहले की तरह दुविधा में डाल रही है। वह खिड़की से आकाश में धूमिल होती सूर्य की अंतिम किरण को देख रहे थे या फिर वह किसी दिवास्वप्न में इतने खोए हुए हैं कि उन्हें अपने आस-पास के सांसारिक जगत का बिलकुल आभास नहीं है?

लकड़ी के छत के बीच से अगरबत्ती में सामान्य धुआँ उठ रहा है। मैं बैठ जाता हूँ और महर्षि को देखने लगता हूँ। कुछ ही पल के बाद मेरा मन आँखें मूँदने को करने लगता है। मुझे हल्की नींद आ जाती है और महर्षि के निकट होने के प्रभाव से मेरे भीतर शांति प्रवेश कर रही है। आख़िर मेरी चेतना के बीच एक अंतराल उत्पन्न होता है और फिर मुझे एक स्वप्न दिखाई पड़ता है।

मैं देखता हूँ कि मैं पाँच वर्ष का छोटा-सा बालक हूँ। मैं अरुणाचल के पवित्र पर्वत के पास एक पथरीले मार्ग पर खड़ा हूँ और मैंने महर्षि का हाथ थामा हुआ है। परंतु वे मुझे अपने निकट खड़े एक बहुत ऊँचे व्यक्ति के रूप में दिखाई दे रहे हैं और धीरे-धीरे उनका आकार किसी विशालकाय मनुष्य जैसा हो गया है।

वह मुझे आश्रम से दूर ले जाते हैं। रात्रि के गहन अंधकार के बावजूद हम दोनों चुपचाप चल रहे हैं। कुछ देर बाद आकाश में चंद्रमा और सितारों की मंद रोशनी पड़ने लगती है। मैं देखता हूँ कि महर्षि बहुत ध्यान से पथरीली ज़मीन पर मेरा मार्गदर्शन कर रहे हैं। वे मुझे बड़े-बड़े शिलाखंडों के बीच से सावधानीपूर्वक ले जा रहे हैं। पर्वत बहुत ऊँचा है और हमारी चाल बहुत धीमी है।

हमें बड़े पत्थरों और शिलाखंडों के बीच संकरी दरारों में से छोटी-छोटी झाड़ियाँ दिखाई पड़ती हैं। वहाँ कुछ छोटे आश्रम और गुफाएँ भी बनी हैं। हम जब वहाँ से गुज़रते हैं तो वहाँ

रहने के वाले लोग बाहर निकलकर हमारा अभिवादन करते हैं। यद्यपि तारों की रोशनी में वे कुछ डरावने लग रहे हैं, मैं देख सकता हूँ कि वे विभिन्न प्रकार के योगी हैं। हम उनसे मिलने के लिए नहीं रुकते और धीरे-धीरे चलते हुए पर्वत शिखर तक पहुँच जाते हैं। हम वहाँ पहुँचकर रुक जाते हैं। मेरा हृदय किसी महत्त्वपूर्ण घटना के पूर्वाभास से ज़ोर-ज़ोर से धड़क रहा है।

महर्षि मुड़कर मेरी ओर देखते हैं। मुझे अपने हृदय और मन के भीतर बहुत तेज़ी से हो रहे परिवर्तन का आभास होता है। वह सब उद्देश्य, जिन्हें लेकर मैं अपनी खोज पर निकला था, पीछे छूट गए हैं। वे सब इच्छाएँ, जो मुझे इधर-उधर ले जा रही थीं, अविश्वसनीय तीव्रता के साथ अचानक ग़ायब हो जाती हैं। मेरे मन में व्याप्त नापसंदगी का भाव, ग़लतफ़हमियाँ, अनिच्छाएँ और स्वार्थ के भाव, जिनसे प्रेरित होकर मैं अब तक अपने क्रिया-कलाप करता रहा हूँ, किसी अनजान शून्यता में ओझल हो जाते हैं। मेरे मन में अवर्णनीय शांति छा गई है। मैं जान गया हूँ कि मुझे अब जीवन में और कुछ नहीं चाहिए।

महर्षि, मुझे पर्वत की तलहटी की ओर देखने का इशारा करते हैं। मैं उनकी बात मानकर सामने देखता हूँ तो मुझे यह देखकर आश्चर्य होता है कि हमारे सामने पश्चिमी गोलार्द्ध है। वह लाखों लोगों से खचाखच भरा है। मुझे वहाँ बस लोग ही लोग नज़र आ रहे हैं। रात्रि के अंधकार में वे सब छिपे हुए लगते हैं। तभी महर्षि की आवाज़ मेरे कानों में पड़ती है। वे धीमे स्वर में कह रहे हैं:

'तुम जब वापस लौटोगे तो जो शांति तुम्हें अभी महसूस हो रही है, वही तुम्हारे साथ बनी रहेगी। परंतु इसकी क़ीमत यह है कि तुम्हें आज से यह विचार छोड़ना होगा कि तुम शरीर या मस्तिष्क हो। जब यह शांति तुम्हारे साथ चलेगी, तो तुम स्वयं को भूल जाओगे क्योंकि तुमने अपना जीवन "उसकी" ओर मोड़ दिया है!'

ऐसा कहकर महर्षि मेरे हाथ में रजत प्रकाश की किरण का सिरा रख देते हैं।

मैं स्वप्न से जाग उठता हूँ। मुझे अपने भीतर एक अनूठा एहसास हो रहा है। उसके तुरंत बाद महर्षि मेरी ओर देखने लगते हैं।

इस स्वप्न के पीछे क्या है? मेरी इच्छाएँ और अपने व्यक्तिगत जीवन की कड़वाहट तो बहुत पहले समाप्त हो चुकी है। मैंने अपने प्रति उपेक्षा और अपने साथियों के प्रति सहानुभूति का जो भाव स्वप्न में महसूस किया है, वह जागने के बाद भी मुझसे दूर नहीं हुआ है। यह बहुत अनोखा अनुभव है!

इस स्वप्न में यदि कोई सच्चाई है तो फिर यह भाव स्थाई नहीं होगा। मैं अभी उसके लिए तैयार नहीं हूँ।

मैं स्वप्न में कितनी देर डूबा रहा हूँ? उस कक्ष में बैठे सभी लोग उठ गए हैं और सोने के लिए तैयार हैं। मुझे विवशता में उनका अनुसरण करना होगा।

मुझे उस लंबे और कम झरोखों वाले कमरे में घुटन हो रही है। मैं बाहर खुले में चला जाता हूँ। एक ऊँचे क़द का दाढ़ी वाला शिष्य मेरे लिए लालटेन लाता है और सलाह देता है कि मैं रात-भर लालटेन को जलने दूँ क्योंकि वहाँ साँप और चीते जैसे जानवरों के आने की संभावना रहती है, परंतु रोशनी के कारण वे समीप नहीं आते।

बाहर का फ़र्श बहुत सख़्त है और मेरे पास गद्दा भी नहीं है। इस कारण मैं बहुत देर तक सो नहीं पाता। मुझे इसकी कोई विशेष परवाह नहीं क्योंकि मेरे पास सोचने के लिए बहुत कुछ है। मैं यह कह सकता हूँ कि महर्षि मेरे जीवन में आने वाले अब तक के सबसे रहस्यमय व्यक्ति हैं।

महर्षि ने मुझे सचमुच एक महत्त्वपूर्ण अनुभव करवाया है हालाँकि मैं इसे सटीकता से समझ नहीं पाया हूँ। यह अस्पृश्य है, विचारों से परे है, शायद आध्यात्मिक है। मैं जब भी महर्षि के बारे में सोचता हूँ तो मुझे हर बार वही स्वप्न याद आ जाता है और एक विचित्र भाव मेरे भीतर उठने लगता है और मेरा हृदय अस्पष्ट किंतु उच्च अपेक्षाओं से भर उठता है।



मैं आगामी दिनों में महर्षि के साथ निकटता से संबंध स्थापित करने का प्रयास करता हूँ परंतु मुझे उसमें सफलता नहीं मिलती। मेरी असफलता के तीन कारण हैं। पहला कारण, उनका अपना स्वभाव है। उन्हें किसी से मिलना पसंद नहीं है। उन्हें तर्क और चर्चा करना भी पसंद नहीं है तथा वह दूसरे व्यक्ति के मतों और विचारों से अधिक संबंध नहीं रखते। इससे स्पष्ट है कि महर्षि किसी के विचारों को बदलना नहीं चाहते और उनके भीतर शिष्यों की संख्या बढ़ाने की भी इच्छा नहीं है।

दूसरा कारण विचित्र, परंतु सत्य है। मैंने उस दिन शाम को जब वह विचित्र स्वप्न देखा तो मैंने उसके बाद से उनकी उपस्थिति में विस्मय का भाव महसूस किया है। ऐसे प्रश्न जो मेरे मुँह से कभी भी निकल जाते थे अब शांत हो गए हैं। मैं समझ गया हूँ कि महर्षि से सरलतापूर्वक बात या चर्चा करना संभव नहीं है।

मेरे असफल होने का तीसरा कारण बहुत सीधा है। महर्षि के कमरे में हमेशा कुछ लोग मौजूद रहते हैं और मैं उनके सामने अपने व्यक्तिगत विचार व्यक्त करने में हिचकिचाता हूँ। मैं उन सबके लिए अजनबी और ख़ास तौर से, विदेशी हूँ। कुछ लोगों को मेरी भाषा अलग लगती है और उन्हें उसका अर्थ भी समझ में नहीं आता। मैं जब भी अपनी बात कहना चाहता हूँ तो मेरा दृष्टिकोण संशयपूर्ण होता है और मैं धार्मिक भावनाओं से अप्रभावित रहता हूँ। मैं उनकी धार्मिक भावनाओं को आहत नहीं करना चाहता परंतु यह भी सच है कि मैं ऐसे विषयों पर चर्चा नहीं करना चाहता जिनमें मेरा विश्वास नहीं है। इन कारणों से मैं चुप रहता

हूँ।

इन तीन बाधाओं को पार करना बड़ा मुश्किल है। मैंने कई बार महर्षि से प्रश्न करने का प्रयास किया परंतु हर बार इन तीन में से एक न एक बाधा, मेरी असफलता का कारण बन जाती है।

मेरा समय बहुत जल्दी बीत जाता है। मैं अपने आवास की अवधि को एक सप्ताह के लिए बढ़ा देता हूँ। मेरी पहली बार महर्षि से जो बातचीत हुई थी, वही अंतिम थी। उसके बाद एक या दो सतही चर्चाओं के अतिरिक्त मैं उनसे अधिक संवाद नहीं कर पाया हूँ।

मेरा लौटने का समय आ गया है, फिर भी मैं महर्षि से किसी तरह की निकटता स्थापित नहीं कर पाया हूँ। महर्षि के आश्रम में मेरा आवास, बदलते भावों और निराशाजनक असफलताओं का तरसाने वाला अनुभव रहा है। मैं महर्षि से व्यक्तिगत संपर्क भी नहीं बना पाया हूँ। मैं उनके कमरे में चारों ओर देखता हूँ तो मुझे निराशा महसूस होती है। यहाँ बैठे अधिकतर लोग, बाहरी और भीतरी दोनों तरह से, अलग तरह की भाषा बोलते हैं। मैं इन लोगों के निकट आने की आशा कैसे कर सकता हूँ? मैं महर्षि की ओर देखता हूँ। वह ऊँचाई पर बैठकर अलग ढंग से जीवन का परिदृश्य देखते रहते हैं। उनमें कुछ रहस्यमय गुण हैं, जो उन्हें अन्य लोगों से जिनसे मैं मिला हूँ, अलग करते हैं। फिर भी, मुझे पता नहीं क्यों, ऐसा लगता है जैसे महर्षि हम लोगों में से एक नहीं हैं वह प्रकृति के निकट हैं और आश्रम के पीछे खड़े ऊँचे पर्वत-शिखर के समान हैं। वह उस पथरीले मार्ग के राही हैं जो घने जंगलों के भीतर चला जाता है और वह ऐसे आकाश का हिस्सा हैं जो सर्वत्र व्याप्त है।

एकांत में खड़े अरुणाचल पर्वत का पथरीला और स्थिर गुण, महर्षि में समा गया है। मुझे पता है कि महर्षि ने अपने जीवन के लगभग तीस वर्ष पर्वत पर बिताए हैं। वह उसे छोड़कर किसी छोटी यात्रा पर भी बाहर नहीं जाना चाहते। किसी भी वस्तु से इतना नज़दीकी संबंध, निश्चित तौर पर व्यक्ति के चरित्र पर प्रभाव अवश्य डालता है। मैं जानता हूँ कि वह उस पर्वत से प्रेम करते हैं क्योंकि किसी ने महर्षि द्वारा लिखी करुणामय किंतु अनुपम कविता की कुछ पंक्तियाँ अनुवाद करके मुझे सुनाई थीं। उस कविता में महर्षि ने पर्वत के प्रति अपना प्रेम व्यक्त किया था। जिस प्रकार यह निर्जन पर्वत जंगल के छोर से ऊपर उठता है और इसका शिखर आकाश को छूता है, उसी तरह यह मनुष्य भी एकांत भव्यता से नहीं, बल्कि अपने अनूठेपन के कारण साधारण भीड़ से ऊपर है। जिस तरह अरुणाचल पर्वत अन्य पर्वतों की शृंखला से अलग दिखाई पड़ता है, उसी तरह महर्षि भी अपने शिष्यों से, जिन्होंने उन्हें प्रेम किया है और जो उनके साथ बहुत समय तक रहे हैं, अलग नज़र आते हैं। पता नहीं कैसे परंतु, प्रकृति का वह निजी और अभेद्य गुण, जो उस पवित्र पर्वत में भी नज़र आता है, महर्षि में भी प्रविष्ट हो गया है। उस गुण ने महर्षि को स्थाई रूप से अपने कमज़ोर साथियों से अलग कर दिया है। मेरे मन में कभी-कभी यह इच्छा होती है कि काश, महर्षि सामान्य मनुष्य जैसे,

हम जैसे साधारण ढंग के होते! यदि महर्षि ने सचमुच सामान्य लोगों से परे कुछ विशेष ज्ञान अर्जित किया है तो उनसे यह अपेक्षा कैसे की जा सकती है कि वह अपने लोगों को हमेशा के लिए पीछे छोड़ कर आगे निकल जाएँगे? ऐसा क्यों होता है कि मैं उनकी दृष्टि के सामने अजीब-सी प्रत्याशा महसूस करता हूँ, मानो मेरे सामने जल्द ही कोई महत्त्वपूर्ण रहस्य प्रकट होने वाला है?

इसके बावजूद, पूर्ण निस्तब्धता और मेरी स्मृति-पटल पर सितारे की भाँति चमकते उस एक स्वप्न के अतिरिक्त, मुझे किसी तरह का कोई रहस्य नहीं बताया गया है। मुझे कभी-कभी समय का दबाव और बहुत निराशा महसूस होती है। इसी तरह धीरे-धीरे पंद्रह दिन बीत जाते हैं। इस बीच मेरी महर्षि से केवल एक बार बातचीत हुई है! महर्षि के स्वर का रूखापन भी मुझे उनसे दूर रखता है। मुझे इस तरह के अभिवादन की बिलकुल अपेक्षा नहीं थी क्योंकि मैं पीले वस्त्रों वाले योगी द्वारा कही उन प्रेरणादायक बातों को अब तक भूला नहीं हूँ जिन्हें सुनकर मैं यहाँ आया था। मैं सबसे अधिक इस बात से परेशान हूँ कि मुझे महर्षि के अलावा किसी और से बात करने की इच्छा नहीं होती। मेरे मस्तिष्क पर केवल एक विचार हावी है। मैंने इस विचार को किसी युक्ति द्वारा अर्जित नहीं किया, बल्कि यह अनायास मेरे भीतर आया है।

'इस व्यक्ति ने स्वयं को सब समस्याओं से मुक्त कर लिया है और अब इसे कोई कष्ट छू भी नहीं सकता!'

मेरे मस्तिष्क में बस अब यही एक विचार हावी है।

मैं अपने प्रश्नों को स्वर देने का एक और प्रयास करता हूँ। मैं महर्षि के एक पुराने शिष्य के पास पहुँचता हूँ जो निकट बनी कुटिया में कुछ कार्य कर रहा है। वह मेरे प्रति स्नेह का भाव रखता है। मैं उसे अपनी इच्छा बताता हूँ कि मैं उसके गुरु से एक बार मिलना चाहता हूँ। मैं इस बात को मानता हूँ कि मुझे महर्षि के पास स्वयं जाने में हिचकिचाहट हो रही है। वह शिष्य मुझे करुणा भाव से देखकर मुस्कराता है। वह जाता है और तत्काल समाचार लेकर लौटता है कि उसके गुरु मुझसे मिलने के इच्छुक हैं।

मैं फटाफट महर्षि के कमरे में पहुँचता हूँ और उनके दीवान के पास जाकर बैठ जाता हूँ। महर्षि मुझे देखकर चेहरा घुमा लेते हैं और मेरा हँसकर अभिवादन करते हैं। मैं एकदम सहज हो जाता हूँ और उनसे प्रश्न करना आरंभ कर देता हूँ।

'योगी लोग ऐसा कहते हैं कि यदि सत्य को जानना है तो मनुष्य को संसार का त्याग करके पर्वतों में चले जाना चाहिए। इस तरह के काम पश्चिमी देशों में बहुत मुश्किल से किए जा सकते हैं। हमारा जीवन बिलकुल अलग है क्या आप उन योगियों से सहमत हैं?'

महर्षि अपने ब्राह्मण शिष्य को उत्तर देते हैं। वह उत्तर का अनुवाद मुझे बताता है: 'व्यक्ति को जीवन की गतिशीलता का त्याग करने की आवश्यकता नहीं है। यदि आप

प्रतिदिन एक या दो घंटे ध्यान करते हैं तो आप सामान्य दायित्वों का पालन करते रहिए। यदि आपका ध्यान करने का तरीक़ा सही है तो आप सामान्य कार्य करते हुए भी मानसिक प्रवाह को जारी रख सकते हैं। यह एक ही विचार को दो तरीक़ों से व्यक्त करने जैसी बात है। आप ध्यान करते समय जिस विचार का अनुसरण करेंगे, वही विचार आपके गतिविधियों में भी व्यक्त होगा।'

'ऐसा करने का परिणाम क्या होगा?'

'यदि आप इसे करते रहते हैं तो आप पाएँगे कि लोग, घटनाओं और वस्तुओं के प्रति आपका दृष्टिकोण धीरे-धीरे बदल जाएगा। आपके क्रियाकलाप, ध्यान की पद्धति का अनुसरण करेंगे और यह सब अपने आप होने लगेगा।'

'इसका मतलब, आप उन योगियों से सहमत नहीं है?' मैं महर्षि को घेरने की कोशिश करता हूँ।

परंतु महर्षि स्पष्ट उत्तर देने से बचते हैं।

'व्यक्ति को अपने निजी स्वार्थ का त्याग कर देना चाहिए, जिसके कारण वह संसार से बँधा रहता है। झूठे स्वार्थ का त्याग ही सच्चा त्याग कहलाता है।'

'सांसारिक जीवन को जीते हुए निस्वार्थ बने रहना कैसे संभव है?'

'कर्म और विवेक में परस्पर मतभेद नहीं होता।'

'क्या आप यह कहना चाहते हैं कि मनुष्य अपने सामान्य व्यवसायिक कार्य करते हुए भी ज्ञान प्राप्त कर सकता है?'

'क्यों नहीं? परंतु ऐसी स्थिति में मनुष्य को यह नहीं सोचना चाहिए कि उसका पुराना व्यक्तित्व कार्य कर रहा है क्योंकि धीरे-धीरे व्यक्ति की चेतना में परिवर्तन होता है। यह तब तक चलता है जब तक चेतना मनुष्य के भीतर छोटे-से निज से परे जाकर "उसमें" केंद्रित नहीं हो जाती!'

'यदि मनुष्य अपने कार्य में उलझा रहेगा तो उसको ध्यान करने का समय नहीं मिलेगा।'

महर्षि मेरे इस प्रश्न से बिलकुल परेशान नज़र नहीं आते।

'ध्यान के लिए अलग से समय निकालने की आवश्यकता, आध्यात्मिक मार्ग पर चलने वाले नए प्रशिक्षुओं को पड़ती है,' महर्षि उत्तर देते हैं। 'ऐसा व्यक्ति जो इस मार्ग पर आगे बढ़ चुका है, अपने भीतर शांति को हर समय महसूस करता है, चाहे वह कार्य कर रहा हो अथवा नहीं। जिस बीच उसके हाथ समाज के कार्य में योगदान दे रहे होते हैं, उसका मस्तिष्क एकांत में शांति का आनंद ले रहा होता है!'

'क्या आप योग की पद्धति नहीं सिखाते?'

'योगी अपने मस्तिष्क को लक्ष्य की ओर उसी तरह ले जाता है, जिस तरह ग्वाला छड़ी

से गाय हाँकता है। परंतु ध्यान के मार्ग पर चलने वाला व्यक्ति, हाथ में घास लेकर गाय को नियंत्रित करता है!'

'यह कैसे किया जाता है?'

'आपको स्वयं से यह प्रश्न करना होगा कि मैं कौन हूँ? आप जब इस खोज पर निकलेंगे तो इसका अंत ऐसे रहस्योद्घाटन से होगा जो आपके मस्तिष्क के परे है। आप इस समस्या को सुलझाने के बाद, अन्य सभी समस्याओं को सुलझा सकेंगे।'

मैं जिस बीच महर्षि की बात समझने का प्रयास करता हूँ, कमरे में कुछ देर के लिए शांति छा जाती है। कक्ष में बने चौरस खुले छिद्र में से, जो अधिकतर भारतीय इमारतों में खिड़की का काम करता है, मुझे पवित्र पर्वत की ढलान साफ़ नज़र आ रही है। वह ढलान सुबह की धूप में नहाई हुई है।

महर्षि मेरी बात का उत्तर देते हैं:

'मैं यदि इस बात को इस तरह कहूँ तो क्या यह अधिक स्पष्ट होगी? सभी लोग ख़ुशी चाहते हैं। वे दुखों से बचना चाहते हैं। वह ऐसी ख़ुशी चाहते हैं जिसका कभी अंत न हो। ऐसी इच्छा रखना ग़लत नहीं है परंतु क्या आपने कभी इस बात पर विचार किया है कि वे लोग सबसे ज़्यादा स्वयं से प्रेम करते हैं?'

'तो?'

'सोचिए कि वे लोग हमेशा किसी न किसी वस्तु के माध्यम से ख़ुशी प्राप्त करने की इच्छा करते हैं। वह किसी अच्छी चीज़ को खा-पीकर अथवा धर्म के माध्यम से या और किसी ज़रिए से ख़ुशी प्राप्त करना चाहते हैं। ऐसा सोचने पर आपको मनुष्य की वास्तविक प्रकृति के विषय में संकेत मिल सकता है।'

'मैं समझा नहीं।'

महर्षि का स्वर थोड़ा ऊँचा हो जाता है:

'मनुष्य की वास्तविक प्रकृति आनंद पर आधारित है। ख़ुशी की तलाश वास्तव में, मनुष्य द्वारा अचेतन रूप से की गई स्वयं की तलाश है क्योंकि स्वयं ही एकमात्र ऐसी वस्तु है जो कभी नष्ट नहीं होती इसलिए व्यक्ति को जब उसकी प्राप्ति हो जाती है तो उसे असीम आनंद का अनुभव होता है।'

'परंतु संसार इतना दुखी है?'

'हाँ, परंतु ऐसा इसलिए है क्योंकि संसार अपनी वास्तविक प्रकृति से अनजान है। प्रत्येक मनुष्य चेतन अथवा अचेतन रूप से उसकी तलाश कर रहा है।'

'दुष्ट, क्रूर और यहाँ तक कि अपराधी भी?'

'वे लोग अपराध इसलिए करते हैं क्योंकि वह उसी अपराध में ख़ुशी तलाशते हैं। यह

तलाश मनुष्य का जन्मजात गुण है, परंतु उन्हें इस बात का आभास नहीं होता कि वह इस दौरान स्वयं की तलाश कर रहे हैं। इसलिए वह आनंद प्राप्त करने के लिए ग़लत कामों में उसे ढूँढ़ने की कोशिश करते हैं। निस्संदेह, उनके तरीक़े ग़लत हैं क्योंकि मनुष्य द्वारा किए गए कर्म उसे उसी रूप में वापस मिलते हैं।'

'इसका मतलब हमें सच्ची प्रसन्नता और आनंद अभी प्राप्त हो सकता है जब हम अपने भीतर के सत्य को जान लें?'

महर्षि सिर हिलाकर हामी भरते हैं।

खिड़की से सूरज की तिरछी किरण महर्षि के चेहरे पर पड़ रही है। उनका चेहरा शांत है और उनकी चमकदार आँखों में भीतरी संतोष स्पष्ट दिखाई पड़ रहा है। उनकी भाव-भंगिमा को देखकर उनके द्वारा कहे शब्दों पर संदेह करना मुश्किल है।

इन सादगी-भरे वाक्यों से महर्षि का क्या आशय है? दुभाषिये ने मुझे अंग्रेज़ी में महर्षि की बात का शाब्दिक अर्थ तो बता दिया, परंतु उसके भीतर एक गहरा अर्थ छुपा है, जिसे वह व्यक्त नहीं कर सकता। मैं जानता हूँ कि वह अर्थ मुझे स्वयं खोजना होगा। महर्षि किसी दार्शनिक या विद्वान पंडित की तरह अपने सिद्धांतों को नहीं समझाते, बल्कि वह हृदय की गहराई से बोलते हैं। क्या ये शब्द उनके निजी अनुभव से उत्पन्न हुए हैं?

'आप जिस आत्म-तत्व की बात कर रहे हैं, वह वास्तव में क्या है? आप जो कह रहे हैं, यदि वह सत्य है तो मनुष्य के भीतर एक और व्यक्तित्व होना चाहिए!'

महर्षि धीमे-से मुस्कराते हैं।

'क्या किसी व्यक्ति के भीतर दो लोग हो सकते हैं? दो व्यक्तित्व?' महर्षि उत्तर देते हैं। 'इस आत्म-तत्व को समझने के लिए अपना विश्लेषण करना आवश्यक है क्योंकि व्यक्ति को दूसरों की तरह सोचने की आदत पड़ जाती है, इसलिए वह अपने भीतर के उस "मैं" को ठीक से नहीं जान पाता। मनुष्य भी अपने आपको सही ढंग से समझ नहीं पाता। वह हमेशा स्वयं को शरीर और मस्तिष्क के साथ जोड़कर देखता है। इसलिए मैं आपको कहता हूँ कि आप पहले "मैं कौन हूँ" का उत्तर खोजिए।'

महर्षि कुछ पल के लिए रुक जाते हैं। वे मुझे समय देते हैं कि मैं उनके कहे शब्दों को आत्मसात कर सकूँ। मैं उनकी अगली बात सुनने के लिए उत्सुक हूँ।

'आप चाहते हैं कि मैं आपको आत्म-तत्व के विषय में समझाऊँ। मैं क्या कहूँ? यह वही है, जिसके भीतर से "मैं" का भाव उठता है और जिसमें इस "मैं" को एक दिन लुप्त हो जाना है।'

'लुप्त?' मैं फिर से पूछता हूँ। 'कोई अपने व्यक्तित्व के आभास को कैसे लुप्त होने दे सकता है?'

‘प्रत्येक व्यक्ति के मस्तिष्क में सबसे पहले “मैं” का विचार उत्पन्न होता है। इस विचार के जन्म के बाद ही अन्य विचार उत्पन्न होते हैं। इस पहले व्यक्तिवाचक सर्वनाम “मैं” के मस्तिष्क में उदय होने के बाद ही दूसरा व्यक्तिवाचक सर्वनाम “तुम” प्रकट होता है। यदि आप “मैं” के इस धागे को पकड़कर आगे चलेंगे तो आप पाएँगे कि यह विचार जिस तरह सबसे पहले प्रकट हुआ था, उसी तरह यह लुप्त होने वाला अंतिम विचार होता है। इस पूरे विषय को केवल अनुभव द्वारा ही समझा जा सकता है।’

‘आपका आशय है कि स्वयं के भीतर इस तरह का मानसिक अन्वेषण करना संभव है?’

‘निश्चित तौर पर! हम अपने भीतर जा सकते हैं। हम अपने उस अंतिम विचार “मैं” के धीरे-धीरे समाप्त हो जाने तक भीतर जा सकते हैं।’

‘इसके बाद फिर क्या बचता है?’ मैं पूछता हूँ। ‘क्या इसके बाद व्यक्ति मूर्छित या पागल हो जाएगा?’

‘ऐसा कुछ नहीं होता! इसके विपरीत, उसे ऐसी चेतना प्राप्त हो जाती है, जो चिरस्थाई है। अपने भीतर के सत्य को वास्तविक प्रकृति को समझने के बाद ही मनुष्य सही अर्थों में विद्वान और विवेकशील बनता है।’

‘तो फिर “मैं” का यह भाव निश्चय ही इससे संबंधित होगा?’ मैं ज़ोर देकर पूछता हूँ।

‘यह “मैं” का भाव व्यक्ति के शरीर और मस्तिष्क से जुड़ा है,’ महर्षि शांत भाव से उत्तर देते हैं। मनुष्य को जब भीतर के आत्म-तत्व का पहली बार ज्ञान होता है तो उसके भीतर एक अलग ही चीज़ उत्पन्न होती है और वह उस पर हावी हो जाती है। यह अनंत, दिव्य और सनातन है। कुछ लोग इसे स्वर्ग कहते हैं, कुछ आत्मा कहते हैं और कुछ हिंदू लोग इसे निर्वाण या मोक्ष भी कहते हैं। इसके बाद मनुष्य स्वयं को खोता नहीं, बल्कि तब जाकर ही वह सही मायनों में स्वयं की प्राप्त करता है।’

दुभाषिया इन अंतिम शब्दों के साथ बात समाप्त करता है। मेरे मस्तिष्क में अचानक गैलीलियो के गुरु द्वारा कहे शब्द कौंध जाते हैं जो मुझे बहुत समय से परेशान करते रहे हैं: ‘जो अपने जीवन को बचाने का प्रयास करेगा वह उसे गँवा देगा और जो खुद को खोने की कोशिश करेगा, वही स्वयं को बचा सकेगा!’

ये दोनों वाक्य कितने आश्चर्यजनक रूप से एक समान हैं! परंतु यह भारतीय महर्षि अपनी स्वयं की ग़ैर-ईसाई पद्धति से यहाँ तक पहुँचा है। इसके लिए इसने मनोवैज्ञानिक मार्ग अपनाया है, जो देखने में बहुत कठिन और अपरिचित लगता है।

महर्षि के बोलने से मेरे विचारों की शृंखला टूट जाती है।

‘व्यक्ति जब तक अपने भीतर के सत्य की खोज आरंभ नहीं करता, वह जीवन भर संदेह और अनिश्चितता में उलझा रहता है। बड़े-बड़े महाराजाओं और राजनेताओं ने दूसरों पर

शासन किया है, जबकि वह मन में जानते थे कि वे ख़ुद को नियंत्रित नहीं कर सकते। जिसने अपने मन की गहराई को जान लिया उसके पास सबसे बड़ी शक्ति मौजूद है। ऐसे अनेक विद्वान लोग हैं, जो आजीवन अनेक चीज़ों के विषय में ज्ञान एकत्रित करते हैं। आप इनसे पूछिए कि क्या उन्होंने जीवन के रहस्य को सुलझा लिया है, क्या उन्होंने स्वयं पर नियंत्रण कर लिया है तो वे शर्म से अपना सिर झुका लेंगे। यदि आपने स्वयं को नहीं जाना, तो संसार के विषय में जानने से क्या लाभ होगा? लोग भीतर के सत्य को पहचानने से बचते हैं, परंतु क्या सचमुच इसके अतिरिक्त कुछ और जानने का कोई लाभ है?'

'यह तो बहुत कठिन और अलौकिक कार्य है।'

महर्षि अपने कंधों को हल्का-सा उचकाते हैं।

'इस कार्य की संभावना का प्रश्न, अपने-अपने अनुभव का विषय है। आप इसे जितना कठिन समझते हैं, यह उतना कठिन नहीं है।'

'हम अतिसक्रिय और व्यवहारिक पश्चिमवासियों के लिए इस तरह का आत्म-मंथन...?' मुझे संदेह होने लगता है और मैं अपने वाक्य को बीच में आधा छोड़ देता हूँ।

महर्षि झुककर एक अगरबत्ती जलाते हैं और आगे कहते हैं: 'भारतीय और यूरोपीय, दोनों जगह के लोगों के लिए सत्य का आधार एक जैसा है। मैं यह मान सकता हूँ कि जो लोग सांसारिक जीवन में उलझे हैं, उनके लिए इसे प्राप्त करना थोड़ा कठिन है। परंतु जो भी हो, मनुष्य को यह करना चाहिए। ध्यान के द्वारा व्यक्ति के भीतर ऊर्जा का जो प्रवाह उत्पन्न होता है, उसे अभ्यास द्वारा नियमित ध्यान करने से क़ायम रखा जा सकता है। अपने समस्त कार्यों और गतिविधियों को उसी प्रवाह की सहायता से किया जा सकता है। इसमें कोई व्यवधान उत्पन्न नहीं होता। ऐसा करने से बाहरी जगत की गतिविधियों और ध्यान में कोई विशेष अंतर नहीं रह जाता। यदि आप "मैं कौन हूँ" प्रश्न पर विचार करेंगे तथा यह सोचना आरंभ कर देंगे कि आप शरीर या मस्तिष्क अथवा इच्छाओं में से कोई भी नहीं हैं, तो आत्म-मंथन और खोज द्वारा आपको इस प्रश्न का उत्तर मिल जाएगा। यह एक गहरे बोध के रूप में स्वयं प्रकट हो जाता है।'

मैं फिर से महर्षि के शब्दों पर विचार करने लगता हूँ।

महर्षि आगे कहते हैं: 'स्वयं को जानिए और तब जीवन का सत्य, सूर्य के प्रकाश के समान आपके हृदय से स्वतः प्रकट हो जाएगा। दिमाग़ की सारी परेशानी दूर हो जाएगी और वह आनंद से भर उठेगा क्योंकि आनंद और आत्मा में कोई अंतर नहीं होता। इस आत्मबोध को प्राप्त करने के बाद आपके मन में कोई शंका नहीं रह जाती।'

महर्षि अपना सिर घुमाकर कक्ष के दूसरे छोर पर देखने लगते हैं। मैं समझ जाता हूँ कि वे वार्ता की चरम सीमा तक पहुँच चुके हैं। इसी के साथ हमारी अंतिम बातचीत समाप्त हो जाती है। मैं स्वयं को इस बात के लिए बधाई देता हूँ कि मैं वापस लौटने से पहले, महर्षि को

उनके मौन के खोल से बाहर निकालने में सफल हो गया।



मैं महर्षि को वहीं छोड़कर वन के भीतर के एक शांत स्थान पर चला जाता हूँ और पूरा दिन अपनी पुस्तकों के साथ बिताता हूँ। शाम ढलने पर मैं कक्ष में लौट आता हूँ, क्योंकि एकाध घंटे में हमें उस आश्रम से ले जाने के लिए घोड़ागाड़ी या बैलगाड़ी आने वाली होगी।

अगरबत्ती के धुएँ से हवा में सुगंध फैल रही है। महर्षि दीवान पर आधे लेटे हैं। उनके ऊपर पंखा चल रहा है। मैं जैसे ही कक्ष में प्रवेश करता हूँ, महर्षि उठकर बैठ जाते हैं। उनका बायाँ पैर उनकी दाईं जाँघ के ऊपर रखा है और दायाँ पैर, बाईं जाँघ के नीचे दबा है। मुझे उनकी वह मुद्रा देखकर ब्रह्मा की याद आ जाती है, जिसने मुझे मद्रास में वह आसन करके दिखाया था। यह अर्द्ध-बुद्धि मुद्रा है और इसे करना बहुत आसान है।

महर्षि, आदतानुसार, अपने दाएँ हाथ से अपनी ठुड्डी को पकड़े हुए हैं और उनकी कुहनी घुटने पर टिकी है। वे मुझे बहुत ध्यान से देख रहे हैं परंतु वे बिलकुल शांत हैं। उनके पास फ़र्श पर पानी का जग तथा उनकी बांस की छड़ी रखी है। उनके पहने हुए लंगोट के अतिरिक्त, उनके पास केवल यही दो वस्तुएँ हैं। हम पश्चिमवासियों की अर्जनशीलता पर महर्षि की यह क्या शानदार मौन टिप्पणी है!

उनकी आँखें हमेशा चमकती रहती हैं, तेज़ी से और चमकदार तथा स्थिर हो जाती हैं; उनका शरीर एक कठोर मुद्रा में बना रहता है। उनका सिर हल्का-सा हिलता है और फिर वह भी स्थिर हो जाता है। कुछ ही मिनटों बाद मैं देख सकता हूँ कि वह ध्यान में डूब गए हैं और अब वे उसी तरह बैठे हैं जैसे मैंने उन्हें पहली बार देखा था। यह कितना विचित्र संयोग है कि हम उसी तरह विदा हो रहे हैं, जिस तरह हम पहली बार मिले थे! कोई धीरे-से मेरे पास आकर कान में कहता है, 'महर्षि गहन ध्यान में डूब चुके हैं। अब उनसे अब बात करना व्यर्थ है!'

उनके आस-पास पूर्ण मौन व्याप्त है। समय धीरे-धीरे बीत रहा है। निस्तब्धता गहराती जा रही है। मैं धार्मिक प्रवृत्ति का नहीं हूँ, परंतु जिस प्रकार मधुमक्खी किसी पुष्प के आकर्षण से बँध जाती है, वैसे ही मेरे मन में भी महर्षि के लिए आदर उत्पन्न हो गया है। उनके आस-पास एक अलौकिक, अस्पृश्य और अवर्णनीय शक्ति मौजूद है जो मुझे प्रभावित कर रही है। मैं बिना किसी संदेह और झिझक के ऐसा महसूस कर रहा हूँ कि वहाँ व्याप्त रहस्यमय शक्ति के केंद्र में स्वयं महर्षि ही हैं।

उनकी आँखें आश्चर्यजनक ढंग से चमक रही हैं। मुझे बहुत विचित्र आभास हो रहा है। ऐसा लग रहा है कि उनकी आँखों की चमक मुझे भेद रही है। मुझे लग रहा है कि वह मेरे

हृदय में हो रही प्रत्येक गतिविधि को देख सकते हैं। उनकी रहस्यमय दृष्टि मेरे विचारों, मेरी भावनाओं और मेरी इच्छाओं को भेद रही है। मैं उनके सामने पूरी तरह असहाय महसूस कर रहा हूँ। शुरू में उनकी दृष्टि मुझे परेशान करती है और मैं असहज हो जाता हूँ। ऐसा लग रहा है मानो उन्होंने मेरे उस अतीत को भी जान लिया है, जिसे मैं भूल चुका हूँ। मुझे विश्वास है कि उन्हें मेरे बारे में सबकुछ पता है। मैं वहाँ से निकल पाने में ख़ुद को सामर्थ्यहीन महसूस कर रहा हूँ। शायद मैं स्वयं भी वहाँ से जाना नहीं चाहता। परंतु भविष्य की कोई विचित्र पूर्वसूचना मुझे उठने के लिए विवश कर देती है।

महर्षि कुछ देर मेरी आत्मा की दुर्बलता को देखते रहते हैं। वह मेरा अतीत पढ़ रहे हैं। उन्हें मेरी उन भावनाओं के बारे में पता है, जिन्होंने मुझे सामान्य मार्ग छोड़कर इस दिशा में जाने के लिए प्रेरित किया है। मुझे लगता है वह यह भी जानते हैं कि मैं कितना परेशान होकर इस मार्ग पर निकला हूँ और उनके जैसे लोगों को खोज रहा हूँ।

अचानक मेरे और महर्षि के बीच चल रहे अदृश्य प्रवाह में परिवर्तन होता है। मैं अपनी पलकों को तेज़ी से झपका रहा हूँ परंतु उनकी आँखों में कोई हरकत नहीं है। मैं स्पष्ट महसूस कर सकता हूँ कि वह अपने मस्तिष्क द्वारा मेरे मस्तिष्क से संपर्क स्थापित कर रहे हैं। वह मेरे हृदय को शांत अवस्था में ले जा रहे हैं। इस असाधारण शांति के दौरान मुझे बहुत आनंद और हल्कापन महसूस हो रहा है। समय मानो ठहर गया है। मेरे हृदय का दु:ख दूर हो चुका है। ऐसा लगता है मानो मुझे फिर कभी क्रोध और अतृप्त आकांक्षाओं का दु:ख सहन करना नहीं पड़ेगा। मुझे यह बात गहराई से महसूस हो रही है कि वह सहज बोध जो मानवजाति में अंतर्जात है, जो मनुष्य को खोज करने के लिए प्रेरित करता है, जो उसके भीतर उम्मीद पैदा करता है और जो जीवन के अंधकारपूर्ण क्षणों में उसे धीरज बँधाता है, वही उसकी वास्तविक प्रकृति है। आत्मा का सार-तत्व आनंद है। विश्रांति के उन सुंदर और मनमोहक क्षणों में जब समय ठहरा हुआ है और अतीत के सब दु:ख और ग़लतियाँ मुझसे बहुत दूर हो गए हैं, मेरा मन महर्षि में पूरी तरह डूब चुका है। मेरे भीतर आत्मबोध और ज्ञान का उदय हो रहा है। क्या इस व्यक्ति की दृष्टि, किसी जादूगर की छड़ी है जिसने मेरी अपवित्र आँखों के सामने अप्रत्याशित तेज़ से भरी दुनिया को उजागर कर दिया है?

मैंने अनेक बार स्वयं से यह प्रश्न किया कि महर्षि के ये शिष्य इतनी कम बातचीत, इतनी कम सुविधाओं और बाहरी गतिविधियों से बिलकुल दूर, महर्षि के साथ इतने वर्षों से कैसे रह रहे हैं। मैं अब इस बात को समझ सकता हूँ। यह बात गहराई से विचार करने से नहीं, बल्कि बिजली-सी कौंध द्वारा समझी जा सकती है कि उन्हें महर्षि के साथ रहने से गहरा और मौन पुरस्कार मिलता रहता है।

अभी तक कक्ष में अभूतपूर्व शांति थी। तभी कोई चुपचाप उठता है और बाहर निकल जाता है। उसके बाद अगला व्यक्ति बाहर निकलता है और फिर एक और निकलता है। ऐसे

ही धीरे-धीरे, सब लोग बाहर चले जाते हैं। मैं अब महर्षि के साथ अकेला हूँ! ऐसा पहले कभी नहीं हुआ उनकी आँखों में परिवर्तन होने लगता है। वह सँकरी होते-होते पैनी हो जाती हैं। उसका प्रभाव कुछ ऐसा है मानो किसी कैमरे का लेंस एक जगह स्थिर हो गया हो। तभी उनकी पलकों के बीच तेज़ रोशनी प्रकट होती है। मुझे अचानक महसूस होता है कि मेरा शरीर ग़ायब हो रहा है और हम दोनों बाहर आकाश में हैं!

यह बहुत महत्त्वपूर्ण क्षण है। मैं झिझकता हूँ और फिर महर्षि के सम्मोहन को तोड़ने का निश्चय करता हूँ। निर्णय लेने से शक्ति पैदा होती है। मैं फिर से अपने शरीर में लौट आता हूँ और स्वयं को कक्ष में बैठा पाता हूँ। महर्षि और मेरे बीच में कोई बातचीत नहीं होती। मैं स्वयं को संभालता हूँ और घड़ी की ओर देखता हूँ। मेरे जाने का समय हो चुका है। मैं महर्षि के समक्ष सिर झुकाता हूँ। वह चुपचाप मेरे अभिवादन को स्वीकार करते हैं। मैं उन्हें धन्यवाद के कुछ शब्द बोलता हूँ। वह बिना कुछ कहे सिर हिला देते हैं। मैं उनके दरवाज़े पर खड़ा कुछ पल प्रतीक्षा करता हूँ। मुझे बाहर घंटी का स्वर सुनाई दे रहा है। हमारी बैलगाड़ी आ चुकी है। मैं फिर से हाथ जोड़कर महर्षि को नमस्कार करता हूँ।

इस तरह हम लोग अलग हो जाते हैं।

---

* हम पश्चिमवासी, देवी-देवताओं को धार्मिक विचारों के मूर्त रूप में देखते हैं, परंतु स्वयं हिंदू इस बात को मानते हैं कि देवी-देवता सचमुच, साकार रूप में मौजूद हैं।

अध्याय 10

जादूगरों और साधुओं के बीच

मनुष्य के दोनों अवज्ञाकारी शत्रु स्थान और समय, फिर मुझे जल्दी लिखने के लिए विवश कर रहे हैं। मुझे तेज़ क़दमों से पूर्व दिशा में जाना है और इस बीच मुझे कुछ ज़रूरी चीज़ें लिखनी हैं जो लिखित वृत्तांत में दर्ज करने योग्य हैं।

यह सच है कि तरकीबें जानने वाले फ़क़ीर और गलियों के जादूगर, किसी भी सामान्य व्यक्ति की तरह मेरी भी सदा से रुचि का विषय रहे हैं। मेरी उनमें अधिक रुचि नहीं है क्योंकि ये लोग मनुष्य के जीवन से जुड़े रहस्यों पर अधिक रोशनी नहीं डाल सकते, जबकि यही वास्तव में जानने योग्य बातें हैं। तथापि इन लोगों की उपस्थिति मुझे भटकाती है और मैं बीच-बीच में, कुछ बातें जानने के लिए इनका रुख़ कर लेता हूँ।

मैं ऐसे ही कुछ लोगों के विषय में बताना चाहता हूँ जो मुझे अपनी यात्रा के दौरान मिले हैं। उनमें से एक मेरी स्मृति में है। हालाँकि वह एक छोटा-सा जादूगर है जिससे मेरी मुलाक़ात मद्रास प्रेसिडेंसी के उत्तर-पूर्वी भाग में राजामुंदरी नाम के एक शहर में हुई थी।

वहाँ चलते हुए मेरे जूते नरम मिट्टी के अंदर धंस रहे हैं। मैं आख़िरकार एक संकरी गली तक आ पहुँचा हूँ जो बाज़ार में निकलती है। मैं उमस-भरे माहौल से गुज़र रहा हूँ। मुझे रास्ते में कुछ बुजुर्ग बैठे मिलते हैं, कुछ बच्चे गंदगी और मिट्टी में खेल रहे हैं और कुछ निर्वस्त्र बालक घरों से बाहर निकल कर आते हैं और फिर एक अजनबी को देखकर दोबारा घर में घुस जाते हैं।

उस फैले हुए और भीड़-भाड़ वाले बाज़ार में बहुत-से बड़ी उम्र के दुकानदार अपनी दुकानों में बैठे हैं। वे मुझे गुज़रता देख अपनी दाढ़ी पर हाथ फेरते हैं। खाने का सामान बेचने

वाले कुछ लोग भी अपनी दुकानों के बाहर बैठे हैं और उनके सामान पर मक्खियों के एक बड़े झुंड ने हमला कर दिया है।

मैं कुछ ही देर में, एक मंदिर के पास पहुँचता हूँ। मेरे वहाँ पहुँचने पर पुरुषों और स्त्रियों का समूह अचानक तितर-बितर हो जाता है। भारत के अधिकांश स्टेशनों और मंदिरों के निकट कोढ़ी, विकलांग और असहाय लोग वहाँ आने वाले धार्मिक अजनबियों से भिक्षा प्राप्त करने की उम्मीद में घूमते रहते हैं। मंदिरों के अंदर भक्तजन घूमते हैं और उनके पैरों की मिट्टी मंदिर के पत्थरों पर गिरती रहती है। क्या मैं भी उस मंदिर में चला जाऊँ और वहाँ के पुजारियों को कार्य करता हुआ देखूँ? कुछ सोचने के बाद, मैं ऐसा न करने का निश्चय करता हूँ।

मैं घूमते हुए आगे बढ़ जाता हूँ। तभी मुझे अपने आगे एक युवक चलता दिखाई देता है। उसने यूरोपीय शर्ट पहनी हुई है और उसके दाएँ हाथ में कपड़े में लिपटी कुछ क़िताबें हैं। वह अचानक अपना सिर घुमाता है, हमारी नज़रें मिलती हैं और हमारे बीच परिचय का आरंभ हो जाता है!

मेरे व्यवसाय ने मुझे सिखाया है जहाँ तक संभव हो, व्यक्ति को उस स्थान की परंपराओं का पालन करना चाहिए और यदि वे परंपराएँ लक्ष्य के बीच बाधा बन कर खड़ी हो जाएँ तो उनसे किनारा कर लेना चाहिए। मुझे घूमना अच्छा लगता है, परंतु मैं अपरंपरागत ढंग से भ्रमण करना पसंद करता हूँ। इसलिए भारत में मेरी ये यात्राएँ किसी अंग्रेज़ या रूढ़िग्रस्त यात्री के लिए शायद ही कोई आदर्श सिद्ध हो सकें।

वह युवक एक स्थानीय कॉलेज का विद्यार्थी है। वह मुझे देखने से बुद्धिमान लगता है। इसके अतिरिक्त उसके मन में अपनी प्राचीन संस्कृति के लिए लगाव है। मैं उसको इस विषय में अपनी रुचि के बारे में बताता हूँ तो उसे भी प्रसन्नता होती है। इससे पता लगता है कि वह अभी तक शहरों में पढ़ने वाले दूसरे युवा विद्यार्थियों की तरह राजनीतिक उन्माद का शिकार नहीं हुआ है। हालाँकि भारत गोरे शासकों और भारतीय लोगों के बीच गाँधी द्वारा छेड़े गए एक लंबे संघर्ष में घिरा हुआ है।

वह युवक, आधे घंटे बाद मुझे एक खुले स्थान पर ले आता है, जहाँ कुछ लोग उत्साहजनक ढंग से जमा हैं। भीड़ के बीच एक व्यक्ति खड़ा है, जो ऊँची आवाज़ में कुछ बोल रहा है। युवक मुझे बताता है कि वह व्यक्ति अपनी योगिक शक्तियों के विषय में लोगों को बता रहा है।

स्वयं को योगी बताने वाला वह व्यक्ति बलिष्ठ है। उसका सिर बड़ा है और कंधे चौड़े हैं। उसने नीचे एक सूती कपड़ा लपेट रखा है, जिसमें से उसका पेट बाहर को निकला दिखाई दे रहा है। उसने एक लंबा और ढीला-सा सफ़ेद कपड़ा पहन रखा है। मुझे वह काफ़ी साहसी नज़र आता है। कुछ पल बाद, वह पर्याप्त धनराशि मिलने पर आम के पेड़ का तमाशा

दिखाने की बात करता है। मैं उसके पैरों में कुछ सिक्के उछाल देता हूँ।

वह अपने सामने एक मिट्टी से भरा घड़ा रखता है और फिर ज़मीन पर बैठ जाता है। वह हमें एक आम की गुठली दिखाता है और फिर उसे मिट्टी में गाड़ देता है। फिर वह अपने झोले में से एक बड़ा-सा कपड़ा निकालता है और उसे मटके के ऊपर फैला देता है। वह कुछ देर तक रहस्यमय ढंग से मंत्र-जाप करता है और फिर कपड़े को हटा देता है। मिट्टी में से आम के पेड़ का अंकुर दिखाई पड़ता है!

वह फिर से अपने पैर और घड़े को कपड़े से ढँक लेता है और एक सरिया उठाकर उसमें से ख़ास ढंग की आवाज़ निकालता है। कुछ देर बाद वह कपड़ा हटाता है तो हम देखते हैं कि आम का पौधा कुछ और इंच बड़ा हो गया है!

कपड़े को ढँकने और हटाने का यह सिलसिला चलता रहता है। वह बीच-बीच में विचित्र-सी आवाज़ निकालता है। इस बीच घड़े में भरी मिट्टी में से एक छोटा-सा आम का पौधा बाहर निकल आता है। वह लगभग नौ या दस इंच बड़ा हो चुका है! उसे वृक्ष नहीं कहा जा सकता, फिर भी उसके ऊपर एक छोटा-सा पीले रंग का आम का फल लटक रहा है।

'यह वृक्ष उसी गुठली से निकला है, जो मैंने अभी मिट्टी में गाड़ी थी,' योगी ख़ुश होकर सबको बताता है।

मैं अपनी मानसिकता के कारण इस बात को इतनी जल्दी स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं हूँ। मुझे लगता है कि यह हाथ की सफ़ाई से अधिक कुछ नहीं है।

इस बारे में युवक अपनी राय बताता है: 'यह व्यक्ति, एक योगी है। ये लोग ऐसे आश्चर्यजनक कार्य कर सकते हैं।'

मैं उसकी बात से संतुष्ट नहीं हूँ और उस रहस्य को समझना चाहता हूँ। मुझे लगता है यह व्यक्ति मस्केलाइन और देवांत जैसे जादूगरों जैसा है, फिर भी इस बात की पुष्टि कैसे की जा सकती है?

योगी अपना झोला बाँध लेता है और ज़मीन पर बैठकर धीरे-धीरे भीड़ को छँटते हुए देखता है।

मुझे तभी एक विचार सूझता है। हम लोग जब अकेले रह जाते हैं तो मैं योगी के पास जाकर पाँच रुपये का नोट निकालता हूँ और युवक से कहता हूँ: 'इसको कहो कि मैं इसे यह दे सकता हूँ, अगर यह मुझे दिखाए कि इसने यह कैसे किया?'

वह युवक मेरे अनुरोध का अनुवाद योगी तक पहुँचा देता है। योगी मेरे प्रस्ताव को अस्वीकार करने का दिखावा करता है, लेकिन मुझे उसकी आँखों में पैसे लेने की इच्छा दिखाई दे रही है।

'इसे कहो, मैं इसे सात रुपये दूँगा।'

योगी मेरे मोलभाव के प्रयास को तिरस्कार-भरी नज़र से देखता है।

'अच्छी बात है! उससे कहो कि हम जा रहे हैं।'

हम लोग वहाँ से चल पड़ते हैं परंतु मैं जान-बूझकर धीरे चल रहा हूँ। कुछ पल बाद, योगी हमें पीछे से बुलाता है।

'यदि साहब मुझे सौ रुपये दें, तो योगी सबकुछ बताने का वचन देता है।'

'नहीं! सात रुपये, अन्यथा उसे कहो कि वह अपना रहस्य अपने पास रखे। चलो यहाँ से!'

हम चल पड़ते हैं। पीछे से योगी हमें फिर बुलाता है। हम लौट आते हैं।

'योगी कह रहा है कि वह सात रुपये लेने के लिए तैयार है,' युवक बताता है।

इसके बाद उसके करतब का स्पष्टीकरण शुरू होता है।

वह अपना झोला खोलता है और उसमें से अपना सामान निकालना शुरू करता है जिसकी मदद से उसने वह चमत्कार दिखाया था। उसमें एक आम की गुठली है और आम के पौधे के तीन अलग-अलग टुकड़े हैं, जो अलग-अलग नाप के हैं।

योगी सबसे छोटे टुकड़े को मोड़कर एक खोल में घुसा देता है। वह पौधा अब खोल में बंद है तथा मिट्टी के अंदर पड़ा है। आम का पहला अंकुर उत्पन्न करने के लिए योगी को केवल अपनी अँगुलियों को मिट्टी में घुसाना है। ऐसा करके वह खोल का सिरा खोल देता है और उसमें से पौधा निकलकर बाहर आ जाता है।

आम के पौधे के दो और लंबे टुकड़े, जादूगर के सूती वस्त्र के अंदर छिपे हैं। वह प्रतीक्षा करते समय और मंत्र जाप करते हुए संगीतमय ध्वनि निकालता है। वह कपड़े को दो बार ऊपर-नीचे उठाकर देखता है कि आम का पौधा कितना बड़ा हुआ है। इस बीच वह चुपचाप आम के पौधे के लंबे टुकड़े को सूती वस्त्र में से निकालकर मिट्टी में दबा देता है और छोटे टुकड़े को वापस कपड़ों में छिपा लेता है। वहाँ मौजूद लोग उसे यह सब करते हुए नहीं देख पाते हैं। इसी बात से पौधे के बड़े होने का भ्रम पैदा होता है।

मुझे अड्यार नदी के योगी ब्रह्मा की चेतावनी याद आती है कि तुच्छ फ़क़ीर और झूठे योगी, गलियों और सड़कों में इस तरह के चमत्कार दिखाते नज़र आ जाते हैं। ऐसे ही लोगों ने सच्चे योगियों को बदनाम किया है।

यह व्यक्ति जो आम के पौधे को आधे घंटे में बड़ा कर देता है, योगी नहीं बल्कि ढोंगी है!



इसके बावजूद, कुछ ऐसे फ़क़ीर भी मौजूद हैं जो सचमुच जादू दिखाते हैं। इनमें से एक, मुझे

पुरी की ओर जाते समय बहरामपुर में मिला था।

मैंने बहरामपुर शहर में, जहाँ हिंदुओं के पुराने रीति-रिवाज और परंपराएँ आज भी बरकरार हैं, एक अतिथि-गृह में अस्थाई आवास बनाया है। मैं घर के बरामदे की छाया में बैठा हूँ। मेरे सामने अचानक एक वनवासी व्यक्ति नंगे पैर आकर खड़ा हो गया है। उसके पास एक बाँस की छोटी-सी टोकरी है। उसके बाल लंबे, काले और खुले हुए हैं तथा आँखें लाल हैं। वह मेरे निकट खड़ा होकर मुझे नमस्कार करता है। वह मुझसे स्थानीय भाषा और टूटी-फूटी अंग्रेज़ी में बात करता है। मैं पूरे विश्वास से तो नहीं कह सकता लेकिन शायद वह तेलुगु भाषा में बोल रहा है। उसकी अंग्रेज़ी इतनी ख़राब है कि मैं दो-चार शब्दों के अतिरिक्त कुछ समझ नहीं पाया हूँ। मैं अंग्रेज़ी के कुछ वाक्य बोलता हूँ परंतु भाषा पर उसकी पकड़ इतनी कमज़ोर है कि वह मेरी किसी बात को नहीं समझ सकता। मुझे तेलुगु भाषा की जानकारी नहीं है और इसलिए मुझे भी उसकी कोई बात समझ में नहीं आती। कुछ देर इसी तरह बातचीत का प्रयास करते हुए हमें इस बात का अंदाज़ हो जाता है। आख़िर वह संकेतों और भंगिमाओं की भाषा से बात करने का प्रयास करता है। मुझे तब उसकी कुछ बात समझ में आने लगती है। मुझे लग रहा है कि उसकी टोकरी में मुझे दिखाने लायक़ कुछ है।

मैं फटाफट घर के भीतर जाता हूँ और अपने नौकर को बुलाता हूँ जिसे थोड़ी अंग्रेज़ी आती है। वह नौकर स्थानीय भाषा से भी थोड़ा परिचित है। मैं उससे कहता हूँ कि वह जितना समझ सकता है, मुझे बताए।

'मालिक, यह फ़क़ीर आपको जादू दिखाना चाहता है।'

'बहुत बढ़िया! इसको कहो कि मुझे जादू दिखाए। इसे कितने पैसे चाहिए?'

'यह बोल रहा है कि आपकी जो इच्छा हो, दे दीजिए।'

'ठीक है!'

फ़क़ीर के वस्त्र मैले-कुचैले हैं। मैं उसके बारे में कुछ नहीं जानता। वह मेरा ध्यान आकर्षित भी कर रहा है और मुझे उससे दूर रहने की इच्छा भी हो रही है। उसकी भाव-भंगिमा से उसकी बात को समझ पाना बहुत कठिन है। फिर भी उसमें कुछ बात तो है। इसलिए मुझे उससे किसी तरह की हानि होने की संभावना नहीं है।

उसने मेरे घर के बरामदे पर चढ़ने का प्रयास नहीं किया बल्कि वह बरगद के वृक्ष के नीचे बैठ गया है। वृक्ष की लंबी और भरी-पूरी टहनियाँ सिर पर घनी छांव का काम कर रही हैं। कुछ टहनियों में से जड़ें फूटकर धरती में चली गई हैं। वह फ़क़ीर अचानक बांस की टोकरी में से एक विषैला बिच्छू निकालता है।

वह बिच्छू भागने का प्रयास करता है, लेकिन फ़क़ीर अचानक मिट्टी में उसके चारों ओर अंगुली से एक गोल घेरा बना देता है। इसके बाद बिच्छू उसी घेरे के अंदर गोल घूमता रहता

है। वह जब भी घेरे की परिधि को छूता है, तुरंत पीछे हट जाता है मानो वहाँ उसे कोई अवरोध महसूस हो रहा है। फिर वह अपनी दिशा बदल देता है। यह तमाशा मेरे सामने दिन की पूरी रोशनी में हो रहा है।

कुछ देर तक यह तमाशा देखने के बाद मैं हाथ ऊपर उठाकर संतोष व्यक्त करता हूँ। वह फ़क़ीर बिच्छू को फिर से अपनी टोकरी में रख लेता है।

वह अपनी लाल आँखों को बंद करता है और अपने अगले जादू को दिखाने के लिए उपयुक्त क्षण की प्रतीक्षा करता है। कुछ देर बाद वह आँखें खोलता है और फिर झोले से एक लंबी सींक निकालता है। वह उस सींक को अपने मुँह के अंदर डाल लेता है तथा उसे अपने गाल में से घुसाकर बाहर निकाल देता है। वह शायद इतने से संतुष्ट नहीं है, क्योंकि इसके बाद वह एक और सींक निकालता है और उसे भी अपने दूसरे गाल में से घुसाकर बाहर निकाल देता है। मेरे भीतर घृणा और आश्चर्य का मिश्रित भाव जाग्रत हो रहा है।

वह दोनों सींकों को गालों से बाहर निकाल लेता है और मुझे नमस्कार करता है। मैं बरामदे की सीढ़ियाँ उतरकर नीचे आता हूँ। ध्यान से उसके चेहरे को देखने से ख़ून की एकाध बूँद तथा दो छोटे छिद्रों के अतिरिक्त मुझे किसी तरह का घाव नज़र नहीं आता!

फ़क़ीर मुझे फिर से कुर्सी पर बैठने के लिए कहता है। मैं बरामदे में अपना स्थान ग्रहण कर लेता हूँ। वह दो-तीन मिनट के लिए स्वयं को शांत करता है मानो अगले चमत्कार की तैयारी कर रहा है। इसके बाद, जिस तरह कोई आराम से अपनी जैकेट का बटन खींचता है, उसी तरह वह फ़क़ीर का दायाँ हाथ ऊपर उठता है और वह अपनी दाईं पुतली को पकड़कर उसके खाँचे में से बाहर निकाल लेता है!

मैं घबराकर चौंक जाता हूँ।

कुछ पल के अंतराल के बाद, वह अपने अंग को थोड़ा और बाहर निकालता है। उसकी आँख की पुतली उसके गाल पर पेशियों और नसों के साथ बाहर लटक जाती है।

उस ख़ौफ़नाक दृश्य को देखकर मुझे उबकाई आने को है। मैं परेशान हूँ। इसके बाद वह पुतली को दोबारा उसके खाँचे में बैठा देता है।

मैं उसका काफ़ी जादू देख चुका हूँ। उसे चाँदी के कुछ सिक्के इनाम में देता हूँ। मैं आधे मन से अपने नौकर से पूछता हूँ कि क्या वह फ़क़ीर अपना डरावना शारीरिक करतब मुझे समझा सकता है।

'मैंने किसी को न बताने का वचन दिया है! यह करतब पिता केवल अपने पुत्र को सिखाता है। इसे केवल मेरा परिवार जानता है।'

उसकी रहस्य न बताने की मंशा से मुझे कोई परेशानी नहीं है। उसका करतब लेखक की अपेक्षा, किसी शल्य-चिकित्सक और डॉक्टर के लिए शोध का विषय हो सकता है।

वह फ़क़ीर हाथों को ऊपर उठाकर मुझे नमस्कार करता है और फिर मेरे पास से चला जाता है। कुछ ही पल में वह मेरी नज़रों से ओझल हो जाता है।



मैं पुरी के समुद्र की शांति लहरों का स्वर सुन सकता हूँ। वहाँ की मंद समीर को महसूस करना बहुत सुखद है। मैं समुद्र के किनारे एकांत में टहल रहा हूँ। पीली मिट्टी बहुत दूर तक फैली हुई है और वायु में व्याप्त गर्मी के पार क्षितिज को साफ़ देखा जा सकता है। समुद्र का पानी तरल नीलमणि के समान दीख रहा है।

मैं जेब से अपनी घड़ी निकालता हूँ। वह तेज़ धूप में चमचमा रही है। मैं दोबारा शहर की ओर लौट जाता हूँ। वहाँ से लौटते में मुझे एक और अवर्णनीय करतब देखने को मिलता है।

एक जगह पर सुंदर आकर्षक वस्त्रों में एक व्यक्ति भीड़ के बीच खड़ा है। उसकी पगड़ी और पायजामा बता रहा है कि वह मुसलमान है। यह बड़ी हैरानी की बात है कि हिंदू समझे जाने वाले इस शहर में कोई मुसलमान इस तरह तमाशा दिखा सकता है। वह व्यक्ति मेरी उत्सुकता और रुचि दोनों को बढ़ा रहा है। उसके पास एक छोटा-सा पालतू बंदर है जिसने रंगीन वस्त्र पहने हैं। बंदर इधर-उधर दौड़ता है तो उसका मालिक उसे निर्देश देकर वापस बुला लेता है। वह बंदर, समझदार मनुष्य की तरह अपने मालिक की बात मानता है।

मुझे देखते ही व्यक्ति बंदर से कुछ कहता है और बंदर उछलता हुआ भीड़ में से सीधा मेरी ओर लपकता है। वह अपनी टोपी उतारता है और मेरे सामने रख देता है मानो बख़्शीश माँग रहा हो। मैं उसकी टोपी में चार आने का सिक्का उछाल देता हूँ।

उसके अगले करतब में बंदर संगीत पर शानदार नाच दिखाने वाला है। यह संगीत एक पुराने वाद्य यंत्र से निकल रहा है। तमाशा समाप्त होने के बाद वह व्यक्ति अपने युवा मुसलमान सहयोगी को उर्दू में कुछ कहता है। सहयोगी मेरे पास आकर मुझे पीछे लगे एक तंबू में चलने के लिए कहता है। उसका मालिक मुझे वहाँ कुछ विशेष करतब दिखाना चाहता है।

मैं तंबू के भीतर चला जाता हूँ और इस बीच उसका सहयोगी तंबू के बाहर खड़ा रहता है। मुझे भीतर जाकर पता लगता है कि वह पूरा ढांचा केवल चार खंभों टिका है जिसे एक कपड़े के पर्दे से ढँका गया है। उसके ऊपर छत नहीं है। उसमें अंदर से बाहर और बाहर से भीतर देखा जा सकता है। तंबू के बीच में एक लकड़ी की साधारण मेज़ रखी है।

वह व्यक्ति अपने एक रेशमी थैले में से छोटी-छोटी गुड़ियाएँ निकालता है, जो क़द में लगभग 2 इंच ऊँची हैं। उन गुड़ियों के सिर रंगीन मोम से बने हैं। उनके पैरों की जगह छोटी-छोटी लकड़ी की सींकें लगी हैं जिन्हें टिकाने के लिए लोहे के बटन नीचे लगे हुए हैं। वह

व्यक्ति गुड़ियों को मेज पर रखता है। वे सब लोहे के बटन पर टिककर सीधी खड़ी हो जाती हैं।

इसके बाद वह व्यक्ति मेज़ से पीछे हट जाता है और उर्दू में कुछ कहता है। दो मिनट के बाद, वह गुड़ियाएँ हिलने लगती हैं और फिर कुछ ही देर में वे नाचना शुरू कर देती हैं! इसके बाद वह व्यक्ति एक छोटी-सी छड़ी निकालता है और संगीत-निर्देशक की भाँति उसे घुमाता है। आश्चर्यजनक रूप से, वे गुड़ियाएँ उसके निर्देश पर नाचने लगती हैं।

वे गुड़ियाएँ मेज़ की सतह पर हिलती-डुलती रहती हैं परंतु कोई भी नीचे नहीं गिरती। मैं दोपहर के लगभग चार बजे पूरी रोशनी में इस शानदार तमाशे को देख रहा हूँ। मुझे इसमें चाल नज़र आती है। मैं मेज़ के नज़दीक जाता हूँ और बहुत ध्यान से देखता हूँ। मैं गुड़ियों के ऊपर हाथ घुमाकर देखता हूँ कि कहीं वह किसी धागे इत्यादि से तो नहीं बँधी। लेकिन मुझे ऐसी कोई चीज़ नज़र नहीं आती। क्या यह व्यक्ति जादूगर ना होकर कोई फ़क़ीर है?

इसके बाद वह मुझे इशारे से बताता है और मुझे मेज़ के अलग-अलग कोनों की ओर अँगुली दिखाने के लिए कहता है मैं ऐसा करता हूँ और हर बार मुझे यह देखकर बहुत आश्चर्य होता है कि वे गुड़ियाएँ ठीक उसी दिशा में चलने लगती हैं!

अंत में वह मुझे एक रुपये का सिक्का दिखाता है और कुछ कहता है। उसे सुनकर मैं अंदाज़ा लगाता हूँ कि वह मुझसे इस तरह का एक सिक्का माँग रहा है। मैं जेब से चाँदी का एक सिक्का निकालकर मेज़ पर रख देता हूँ। इसके तुरंत बाद वह सिक्का नाचता हुआ फ़क़ीर की ओर चल पड़ता है। वह मेज़ से नीचे गिरता है और फिर लुढ़कता हुआ फ़क़ीर के पैरों तक पहुँच जाता है। वहाँ जाकर रुक जाता है। फ़क़ीर उसे उठा लेता है और अपनी जेब में रखकर मुझे सलाम करता है।

मैं जो देख रहा हूँ वह जादू है या सचमुच इसमें योग की कोई शक्ति शामिल है? मेरे मन में उठा संदेह मेरे चेहरे पर झलक रहा है क्योंकि वह फ़क़ीर तुरंत अपने युवा सहयोगी को बुलाता है। सहयोगी मुझसे पूछता है कि क्या मैं उसके मालिक की कुछ और शक्तियाँ देखना चाहता हूँ। मैं हामी भर देता हूँ। वह मुझसे अनुरोध करता है कि मैं अपनी अँगूठी उतारकर मेज़ पर रख दूँ। मैं अँगूठी उतार देता हूँ और मेज़ पर रख देता हूँ। यह वही अँगूठी है जो अड्यार नदी के ब्रह्मा योगी ने मुझे दी थी। मैं उसके सुनहरे पंजे और उनमें जड़े हरे पत्थर को देख रहा हूँ। इस बीच फ़क़ीर पीछे हट गया है। वह उर्दू भाषा में निर्देश दे रहा है। फ़क़ीर के शब्दों के साथ ही, अँगूठी हवा में ऊपर उठती है और फिर नीचे गिर जाती है! वह व्यक्ति निर्देश देते समय अपना दायाँ हाथ उसी लय में ऊपर नीचे उठाता है।

इसके बाद फ़क़ीर अपना वाद्य यंत्र बजाने लगता है। मैं हैरान हूँ कि मेरी अँगूठी संगीत की धुन पर नाच रही है! फ़क़ीर न उसके पास गया है और न ही उसने उसे छुआ है। मुझे नहीं पता कि यह कारनामा कैसे किया। किसी निर्जीव वस्तु को इस तरह हिलाना और उसे अपने

मौखिक निर्देशों पर नचाना कैसे संभव है?

फ़क़ीर का सहयोगी मुझे अँगूठी लौटा देता है। मैं उसे ध्यान देखता हूँ लेकिन मुझे उस पर कोई निशान नज़र नहीं आता।

इसके बाद फ़क़ीर फिर से अपने झोले को खोलता है। वह उसमें से एक पुरानी चपटी लोहे की पत्ती निकालता है जो लगभग ढाई इंच लंबी और आधा इंच चौड़ी है। मैं फ़क़ीर के सहयोगी से पत्ती को देखने का अनुरोध करता हूँ। उन्हें इसमें कोई आपत्ति नहीं है। मैं पत्ती को ध्यान से देखता हूँ। उसमें कोई धागा इत्यादि नहीं बँधा है। मैं उसे फ़क़ीर को लौटा देता हूँ। मुझे उस पर किसी तरह का कोई संदेह नहीं है।

लोहे की पत्ती मेज़ पर रखी है। फ़क़ीर अपने दोनों हथेलियों को लगभग एक मिनट तक बहुत तेज़ी से हिलाता है और फिर थोड़ा आगे झुककर अपने हाथों को लोहे की पत्ती से कुछ इंच ऊपर रख लेता है। मैं उसे बहुत ध्यान से देख रहा हूँ। वह हाथों को थोड़ा पीछे हटाता है। उसकी अँगुलियाँ अब पत्ती की ओर हैं और तभी वह पत्ती हिलने लगती है। वह अपने आप फ़क़ीर के इशारों पर चल पड़ती है!

फ़क़ीर की अँगुलियों और लोहे की पत्ती के बीच में क़रीब पाँच इंच की दूरी है। वह जब मेज़ के किनारे पर हाथ हिलाता है तो पत्ती भी रुक जाती है। मैं एक बार फिर पत्ती की जाँच करना चाहता हूँ। मुझे तुरंत अनुमति मिल जाती है। मैं उसे उठाकर देखता हूँ लेकिन मुझे कुछ नज़र नहीं आता। वह पहले जैसी पुरानी लोहे की पत्ती ही है।

फ़क़ीर इस बार वही करतब एक छोटे स्टील के चाकू से करके दिखाता है।

मैं उसे करतब के लिए पुरस्कार देता हूँ और फिर उससे करतब का रहस्य पूछता हूँ। फ़क़ीर मुझे बताता है कि ऐसी वस्तुओं को हिलाने के लिए उनमें थोड़ा लौह तत्व होना आवश्यक है क्योंकि लोहे में एक विशिष्ट मनोवैज्ञानिक गुण होता है। वह इस कला में अब इतना पारंगत हो गया है कि वह सोने की वस्तुओं से भी यह चमत्कार दिखा सकता है।

मैं अपने दिमाग़ में इस चमत्कार का रहस्य खोजने का प्रयास कर रहा हूँ। मुझे अचानक ख़याल आता है कि एक लंबे, पतले बाल द्वारा, जिसके एक सिरे पर फंदा बना हो, लोहे की पत्ती को फंदे में फंसाया जा सकता है। इसके बावजूद बाल नज़र नहीं आएगा। परंतु तभी मुझे ख़याल आया कि मेरी अँगूठी को नचाते समय फ़क़ीर के दोनों हाथ वाद्य यंत्र पर थे। वह मेज़ से काफ़ी दूर था। फ़क़ीर का सहयोगी भी इसमें शामिल नहीं हो सकता क्योंकि गुड़ियों का करतब दिखाते समय वह तंबू से बाहर खड़ा था। जो भी हो, मैं इस मामले की जाँच-पड़ताल करने के लिए फ़क़ीर को एक अच्छे और चतुर जादूगर की संज्ञा देता हूँ।

यह सुनकर उसकी भँवें तन जाती हैं। वह साफ़ कहता है कि वह जादूगर नहीं है।

‘तो फिर आप कौन हैं?’ मैं पूछता हूँ।

‘मैं एक सच्चा फ़क़ीर हूँ,’ वह अपने सहयोगी के माध्यम से मुझे बताता है। ‘मैं... कला का अभ्यास करता हूँ।’ मैं बीच का एक उर्दू में कहा गया शब्द सुन नहीं पाता।

मैं उसे बताता हूँ कि मेरी इन चीज़ों में काफ़ी रुचि है।

‘हाँ, मैंने आपको उस दिन भीड़ में घुसने से पहले देख लिया था,’ वह उत्तर देता है। ‘इसीलिए मैंने आपको तंबू में बुलाया था। आप यह मत सोचिए कि मैं किसी लालच से यह पैसा जमा कर रहा हूँ। यह इसलिए है क्योंकि मुझे अपने दिवंगत गुरु का मक़बरा बनाने के लिए पैसों की आवश्यकता है। मैं इस काम को दिल से करना चाहता हूँ और जब तक यह बन नहीं जाएगा, मुझे चैन नहीं मिलेगा।’

मैं उससे उसके विषय में कुछ और बातें पूछता हूँ। वह थोड़ी आनाकानी के बाद मुझसे बात करने के लिए तैयार हो जाता है।

‘मैं जब 13 वर्ष का था तो मैं अपने पिता की बकरियाँ चराया करता था। एक दिन हमारे गाँव में एक दुबला-पतला संन्यासी आया। वह इतना दुर्बल था कि उसे देखकर डर लगता था। उसकी हड्डियाँ उसकी त्वचा से बाहर निकल रही थीं। उसने एक रात के लिए भोजन और आश्रय माँगा। मेरे पिता ने हामी भर दी। वह सदा से ही साधु-संन्यासियों का बहुत आदर करते थे। परंतु एक रात रुकने के बजाय वह साधु एक वर्ष से भी अधिक हमारे घर में रहा। मेरे परिवार को उस संन्यासी से इतना स्नेह हो गया कि मेरे पिता उसे वहाँ से जाने ही देते थे। वह बहुत बढ़िया व्यक्ति था और हमने बहुत जल्दी जान लिया कि उसके पास कुछ विचित्र और रहस्यमय शक्तियाँ हैं। एक दिन शाम को हम लोग चावल और सब्ज़ी खा रहे थे। संन्यासी ने मुझे कई बार ध्यान से देखा। मैं नहीं जानता ऐसा उसने क्यों किया, परंतु उसके अगले दिन सुबह वह मेरे पास आकर बैठ गया।’

‘मेरे बच्चे,’ उसने कहा, ‘क्या तुम फ़क़ीर बनना चाहोगे?’

मुझे उस समय पता नहीं था कि फ़क़ीरों का जीवन कैसा होता है किंतु मुझे उनकी स्वतंत्रता और अनूठापन बहुत आकर्षक लगता था। मैंने उससे कहा कि मैं फ़क़ीर बनना चाहता हूँ। उसने मेरे माता-पिता से बात की और कहा कि वह तीन वर्ष बाद वापस लौटेगा और फिर मुझे अपने साथ ले जाएगा। यह बड़े आश्चर्य की बात है कि इसी बीच मेरे माता और पिता दोनों की मृत्यु हो गई। वह जब मुझसे मिलने आया तो उसे मुझे ले जाने में कोई परेशानी नहीं हुई। उसके बाद हम लोग एक गाँव से दूसरे गाँव घूमने लगे। मैं उसका शिष्य बन गया और वह मेरा गुरु! आपने आज जो भी चमत्कार देखे हैं वह सब उन्होंने ही मुझे सिखाए थे।’

‘क्या इन करतबों को आसानी से सीखा जा सकता है?’ मैं पूछता हूँ।

फ़क़ीर हँस पड़ता है।

'इन्हें सीखने के लिए कई वर्षों के कड़े अभ्यास की आवश्यकता होती है।'

मुझे लगता है उसकी कहानी सच्ची है। वह अच्छे स्वभाव का और ईमानदार व्यक्ति है। हालाँकि मुझे उसकी प्रवृत्ति को लेकर थोड़ा संदेह है, लेकिन फ़िलहाल मैं अपने संदेह को नज़रअंदाज़ कर रहा हूँ।

मैं तंबू से बाहर निकलता हूँ तो मुझे इस बात पर भरोसा नहीं होता कि मैंने कोई असाधारण सपना देखा है। तभी एक का सुहावनी हवा का मंद झोंका मुझे जाग्रत अवस्था में ले आता है। मुझे हवा के चलने से नारियल वृक्षों की सरसराहट सुनाई पड़ रही है। मैं जितना वहाँ से दूर जाता हूँ मुझे उस फ़क़ीर के दिखाए कारनामे उतने ही अविश्वसनीय लगने लगते हैं। मेरा मन फ़क़ीर के करतबों पर संदेह करने का है, परंतु मुझे वह सचमुच ईमानदार लगता है। फिर भी बिना स्पर्श या संपर्क के निर्जीव वस्तुओं को हिला पाना कैसे संभव है? मैं इस बात को समझ नहीं पाया हूँ कि कोई व्यक्ति अपनी इच्छा से प्रकृति के नियमों को कैसे परिवर्तित कर सकता है? हम शायद प्रकृति के विषय में उतना नहीं जानते, जितना हमें लगता है कि हमें उनकी जानकारी है।



पुरी भारत के प्रमुख धार्मिक और पवित्र स्थानों में से एक है। वहाँ के मठों और मंदिरों की प्राचीन समय से मान्यता रही है। वहाँ होने वाले उत्सव में दूर-दूर से लोग आते हैं और भगवान के रथ को दो मील तक खींचने में सहायता करते हैं। मैं इस अवसर पर वहाँ आने वाले धार्मिक लोगों के विषय में जानने का प्रयास करता हूँ और इसके फलस्वरूप मुझे अपनी पूर्व विचारधारा को बदलने में सहायता मिलती है।

एक ऐसा ही भ्रमणशील साधु, जो टूटी-फूटी कामचलाऊ अंग्रेज़ी बोल सकता है, मुझे बढ़िया आदमी लगा। धीरे-धीरे मेरा उससे परिचय बढ़ गया। वह लगभग चालीस वर्ष का है और उसने गले में मणियों माला पहनी है। वह तीर्थयात्रा करते हुए एक स्थान से दूसरे स्थान तथा एक मठ से दूसरे मठ में घूमता है। वह एकल वस्त्र पहनकर, भिक्षा में प्राप्त होने वाले भोजन पर निर्भर रहता है। उसकी इच्छा पूर्वी और दक्षिणी भारत के प्रमुख धार्मिक स्थलों को देखने की है। मैं पैसे देकर उसकी सहायता कर देता हूँ। वह, बदले में मुझे तमिल में छपी छोटी-सी पुस्तक दिखाता है। वह इतनी पुरानी और पीली पड़ गई है कि उसे देखकर लगता है वह कम से कम एक शताब्दी पहले छपी थी। वह उस पुस्तक में से दो चित्र काटकर मुझे देता है।

उस विद्वान साधु से मेरी मुलाक़ात बहुत रोचक रही है। मैं एक दिन समुद्र तट पर बैठकर उमर खय्याम की रुबाइयाँ पढ़ रहा था। रुबाइयों ने मुझे सदा ही आकर्षित किया है। मैंने जब

से उस युवा ईरानी लेखक की कविताओं में छुपे गहरे अर्थ को समझा है, मुझे पहले से अधिक रस और मादकता महसूस होती है। मैं उन कविताओं को पढ़ने में इतना व्यस्त हूँ कि मुझे एहसास ही नहीं होता कि कोई व्यक्ति मेरे समीप आ गया है। मैं नज़र उठा कर देखता हूँ। वह मेरे पास ही बैठ गया है।

उसने साधु जैसे पीले वस्त्र पहने हैं। पास ही उसकी छड़ी रखी है और कपड़ों की पोटली भी है। मुझे पोटली में से कुछ क़िताबें बाहर निकली हुई नज़र आ रही है।

'क्षमा करें महोदय,' वह व्यक्ति बढ़िया अंग्रेज़ी में अपना परिचय देता है, 'परंतु मैं भी विदेशी साहित्य का विद्यार्थी हूँ।' वह अपनी पोटली की गाँठ खोलने लगता है। 'कृपया बुरा ना मानें, मैं आपसे बात करने के लिए अचानक प्रेरित हो गया।'

'इसमें बुरा मानने की क्या बात है? नहीं, बिलकुल नहीं!' मैं मुस्करा कर उसे उत्तर देता हूँ।

'क्या आप पर्यटक हैं?'

'हाँ, कह सकते हैं।'

'परंतु आप ने अधिक समय तो हमारे देश में नहीं बिताया है,' वह कहता है।

मैं हामी भर देता हूँ।

वह अपनी पोटली खोलकर मुझे उसमें से तीन पुस्तकें दिखाता है। वे बहुत फटी पुरानी हालत में हैं और उसमें लिखने के लिए काग़ज़ भी रखे हैं।

'देखिए महोदय, मेरे पास लॉर्ड मैकाले के लिखे निबंध हैं। वह बहुत विद्वान व्यक्ति थे और उनका लिखने का अंदाज़ बहुत ही शानदार है। परंतु वह भौतिकवादी थे!'

तो मेरा सामना अब एक उभरते हुए साहित्य समालोचक से हुआ है!

'यह पुस्तक चार्ल्स डिकेंस ने लिखी है। इसका नाम ए टेल ऑफ़ टू सिटीज है। यह आँसू ला देने वाली पुस्तक है!'

इसके बाद वह फटाफट अपने सामान बांध लेता है और फिर मुझसे बात करने लगता है।

'यदि आपको बुरा ना लगे तो क्या मैं पूछ सकता हूँ कि आप कौन-सी क़िताब पढ़ रहे हैं?'

'मैं खय्याम की लिखी एक पुस्तक पढ़ रहा हूँ।'

'खय्याम साहब! मैंने कभी उनका नाम नहीं सुना। क्या कोई विदेशी उपन्यासकार हैं?'

मैं उसका प्रश्न सुनकर हँस पड़ता हूँ।

'नहीं, वह कवि हैं।'

हम दोनों कुछ पल के लिए चुप हो जाते हैं।

'आप बहुत सवाल करते हैं,' मैंने कहा। 'क्या आपको पैसे चाहिए?'

'मैं यहाँ पैसों के लिए नहीं आया हूँ।' वह धीमे-से उत्तर देता है। 'मुझे केवल इतनी आशा है कि मैं चाहता हूँ आप मुझे एक पुस्तक भेंट कर दें। मैं पढ़ने का बहुत शौक़ीन हूँ।'

'हाँ, आपको क़िताब अवश्य मिलेगी। मैं जब लौटकर बंगले पर जाऊँगा तो आप मेरे साथ चलिए। मैं आपको पढ़ने के लिए एक बढ़िया क़िताब दूँगा।'

'मैं आपका आभारी हूँ।'

'एक क्षण रुकिए! इससे पहले कि मैं आपको कोई क़िताब दूँ, मुझे यह बताइए कि आपके झोले में तीसरी पुस्तक कौन-सी है?'

'अरे महाशय, यह बड़ी मनोरंजक क़िताब है!'

'हो सकता है, लेकिन मैं इसका शीर्षक जानना चाहता हूँ।'

'यह बताने लायक़ भी नहीं है।'

'क्या आपको मुझसे क़िताब चाहिए?'

वह व्यक्ति अचानक घबरा जाता है।

'मुझे निश्चित तौर पर क़िताब चाहिए। आप इतना ज़ोर दे रहे हैं इसलिए आपको बता देता हूँ। इस पुस्तक का नाम मेमोनिज्म ऐंड मटीरियलिज़्म: ए स्टडी ऑफ़ द वेस्ट है। यह किसी हिंदू समालोचक ने लिखी है।'

मैं चकित होने का नाटक करता हूँ।

'ओह! आप इस तरह का साहित्य पढ़ते हैं?'

'मुझे यह पुस्तक शहर के एक व्यापारी ने दी थी,' वह दुर्बल और क्षमा-याचना वाले स्वर में कहता है।

'तो फिर, मुझे यह देखने दीजिए।'

मैं उस पुरानी पुस्तक के शीर्षक पर नज़र डालता हूँ और बीच-बीच में से एकाध पन्ना पढ़ लेता हूँ। यह किसी बंगाली बाबू की लिखी क़िताब है। यह कोलकाता में प्रकाशित हुई थी और शायद लेखक ने इसे अपने ख़र्चे से छपवाया होगा। उस लेखक ने अपने नाम के पीछे लगी डिग्रियों के बल पर, विषय के बारे में जाने बिना यूरोप और अमेरिका की ऐसी भद्दी तसवीर प्रस्तुत की है मानो ये दोनों जगह किसी तरह की भट्ठियाँ हैं। यहाँ लोगों को दुःख और कष्ट के अतिरिक्त कुछ नहीं मिलता और कामकाजी एवं श्रेष्ठ वर्ग द्वारा यहाँ के लोगों का अय्याशी के लिए शोषण किया जाता है।

मैं चुपचाप पुस्तक उसे लौटा देता हूँ। वह जल्दी से उसे झोले में रख लेता है और एक

काग़ज़ निकालकर मुझे देता है।

'यह किसी भारतीय संत की संक्षिप्त कथा है और बांग्ला में छपी है,' वह मुझे बताता है।

'अब मुझे बताइए क्या आप मेमोनिज़्म के लेखक से सहमत हैं?' मैं उसे पूछता हूँ।

'थोड़ा-सा! मेरी इच्छा है कि मैं एक दिन किसी पश्चिमी देश में जाऊँ और वहाँ जाकर स्वयं देखूँ।'

'आप वहाँ जाकर क्या करेंगे?'

'मैं वहाँ जाकर प्रवचन दूँगा और लोगों के दिमाग़ से अज्ञानता का अंधकार दूर करके उन्हें प्रकाश की ओर ले जाऊँगा। मैं महान स्वामी विवेकानंद का अनुसरण करना चाहता हूँ, जिन्होंने आपके देश के महान शहरों में आकर्षक और सम्मोहक भाषण दिए थे। यह बड़े दु:ख की बात है कि उनकी मृत्यु इतनी कम आयु में हो गई! उनकी वाणी कितनी ओजपूर्ण थी!'

'आप बड़े विचित्र क़िस्म के साधु हैं!' मैं कहता हूँ।

वह अपनी अपनी अँगुली ऊपर उठाकर कहता है:

'परमपिता ने यह मंच सजाया है। हम लोग केवल यहाँ अपनी भूमिका निभाते हैं और फिर चले जाते हैं, जैसा आपके विश्वविख्यात शेक्सपीयर ने भी कहा है!'



मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचा हूँ कि भारत के साधु और संन्यासी बहुत विविध तरीक़े के हैं। कुछ बहुत अच्छे हैं और किसी बात का बुरा नहीं मानते। यद्यापि वे सामर्थ्य और बुद्धि की दृष्टि से कमज़ोर नज़र आते हैं। कुछ ऐसे हैं जो सांसारिक जीवन में असफल रह चुके हैं या फिर जीने का कोई आसान तरीक़ा खोज रहे हैं। ऐसे ही एक व्यक्ति ने मेरे पास आकर मुझसे बख़्शीश माँगी। उसके बाल उलझे हुए हैं, शरीर पर भभूत मला है और देखने में बड़ा घृणित नज़र आता है। मैं केवल नतीजा जानने के लिए उसकी पहल का विरोध करता हूँ, लेकिन मेरे विरोध से वह अधिक प्रबलता से मुझसे बात करना चाहता है। आख़िरकार वह मुझे एक नई तरकीब में उलझाता है। वह मुझे एक माला बेचना चाहता है। वह उस गंदी-सी वस्तु को बहुत आदर दे रहा है और उसका बहुत अधिक दाम माँग रहा है।

कुछ ऐसे मूर्ख संन्यासी हैं जो स्वयं को कष्ट देकर सार्वजनिक रूप से अपनी शक्तियों का प्रदर्शन करते हैं। एक व्यक्ति बहुत लंबे समय से हवा में हाथ ऊपर उठाए यूँ ही खड़ा है। उसके नाख़ून लंबे होकर आधे गज हो चुके हैं। साथ ही एक ऐसा भी व्यक्ति है जो अनेक वर्षों से एक पैर पर खड़ा है। इस तरह की अनाकर्षक युक्तियों के चलते, उन्हें अपने भिक्षापात्र में पैसों के अतिरिक्त भी कुछ मिलता होगा, यह कह पाना आसान नहीं है।

कुछ संन्यासी सार्वजनिक रूप से सबके सामने घटिया जादू-टोना दिखाते हैं। ये लोग मुख्य रूप से गाँव में अधिक नज़र आते हैं। वे ज़रा-से पैसों के लिए आपके शत्रु को आहत कर सकते हैं, किसी की बुरी पत्नी को मरवा सकते हैं या अनजान बीमारी के बहाने आपके शत्रु को रास्ते से हटा सकते हैं। ऐसे काले जादूगरों के किस्से अक्सर सुनने को मिलते हैं। इसके बावजूद ये लोग स्वयं को योगी या फ़क़ीर कहलवाने में ख़ुशी महसूस करते हैं।

एक वर्ग और है। इसमें कुछ ऐसे साधु-संन्यासी हैं जो कई वर्षों से सत्य की खोज में भटक रहे हैं। उन्होंने इसके लिए स्वयं को बहुत कष्ट दिया है। उन्होंने संगठित समाज के परंपरागत तरीक़ों को त्याग दिया है तथा वे सत्य की खोज के मार्ग पर बहुत आगे निकल गए हैं। उनके भीतर कुछ है, जो उनसे कहता है कि सही या ग़लत कैसे भी हो, सत्य की खोज द्वारा स्थाई प्रसन्नता मिल सकती है। हम भारतीय लोगों के घिसे-पिटे धार्मिक और सांसारिक त्याग करने वाले तरीक़ों पर सवाल उठा सकते हैं, परंतु उस वह इच्छा पर जो इन्हें ऐसा करने के लिए प्रेरित करती है, प्रश्न नहीं किया जा सकता।

पश्चिमी जगत के औसत व्यक्ति के पास ऐसी खोज के लिए समय नहीं है। वह उपेक्षा द्वारा अच्छा बहाना खोज लेता है क्योंकि वह जानता है कि यदि उससे कोई भूल हुई तो वह भूल, उसके संपूर्ण उपमहाद्वीप को प्रभावित कर सकती है। आधुनिक संशयवादी युग, सत्य की खोज को महत्त्व नहीं देता, बल्कि वह अपनी समस्त ऊर्जा उन बातों पर ख़र्च करता है जिन्हें हम व्यर्थ समझते हैं। पता नहीं क्यों, हमें यह विचार कभी नहीं आता कि ऐसे गिने-चुने लोग, जिन्होंने जीवन का अर्थ खोजने में सारा समय व्यतीत कर दिया, समस्याओं के कहीं अधिक बेहतर और सही समाधान बता सकते हैं जबकि यही कार्य उन लोगों के लिए कठिन है जो अपनी उर्जा को अन्य चीज़ों में गवाँ देते हैं। उन्हें सत्य की खोज की दिशा में कुछ प्राप्त नहीं होता।

एक पश्चिमवासी किसी अन्य उद्देश्य से पंजाब के मैदान में आया था। वहाँ उसकी भेंट ऐसे व्यक्ति से हुई जिसने उसे मार्ग से पूरी तरह भटका दिया और वह विदेशी भारत आने का अपना प्रमुख उद्देश्य ही भूल गया। अलक्षेंद्र महान अपने राज्य से कहीं अधिक बड़े राज्य की तलाश में था। वह एक सैनिक की तरह यहाँ आया था परंतु लगता है, वह यहाँ से दार्शनिक बनकर लौटा था।

मैं कई बार सोचता हूँ कि अलक्षेंद्र के दिमाग़ में क्या विचार आए होंगे जब उसने बर्फ़ीले पहाड़ों और सूखे रेगिस्तानों से अपने रथ को दोबारा अपने घर की ओर मोड़ा होगा। इस बात की कल्पना करना अधिक मुश्किल नहीं है कि कैसे वह महान राजा रास्ते में मिलने वाले साधु-संन्यासियों और योगियों के चक्कर में पड़ गया और कैसे उसने उनके साथ काफ़ी समय बिताया और स्नेहपूर्वक दर्शन जैसे विषयों पर चर्चा की। कुछ और वर्ष हो जाते तो वह पश्चिमी जगत को अपनी नई नीतियों से हैरान कर देता!

आज भी कुछ ऐसे लोग हैं जिन्होंने आदर्शवाद और आध्यात्मिकता को जीवित रखा हुआ है। संभव है कि यहाँ अवांछनीय तत्वों की अधिकता हो। यदि ऐसा है तो भी, यह समय के साथ चलने वाली पतनशील गतिविधियों का परिणाम है। परंतु इसके कारण हमें अपने क्षेत्र की संस्कृति के प्रति आँखें नहीं मूँदनी चाहिए। यहाँ इतने विभिन्न प्रकार के लोग मौजूद हैं कि पूरी जाति की प्रशंसा या निंदा करना उचित नहीं होगा। मैं गर्म दिमाग़ वाले शहरी विद्यार्थियों के व्यवहार को समझ सकता हूँ, जिन्हें लगता है कि ऐसे परजीवी संन्यासियों को समाप्त कर देने से भारत का उद्धार हो जाएगा। मैं उन लोगों को भी समझता हूँ, जो आयु में बड़े हैं तथा शांत एवं छोटे शहरों में रहते हैं। वे मुझे बताते हैं कि यदि भारतीय समाज में संन्यासियों का अभाव हो जाए तो इसका पतन निश्चित है।

भारत में इस समस्या का महत्त्व अधिक है क्योंकि यहाँ की आर्थिक परेशानियाँ, समाज को स्थितियों का पुनर्मूल्यांकन करने के लिए विवश करती हैं। इस देश में संन्यासी कोई सार्थक तथा आर्थिक रूप से उपयोगी कार्य नहीं करते। अज्ञानी, अशिष्ट तथा अशिक्षित लोगों के बड़े-बड़े समूह गाँवों में घूमते रहते हैं और वहाँ होने वाले नियमित धार्मिक उत्सवों में भाग लेते हैं। वे बच्चों के लिए तमाशे का विषय और वयस्कों के लिए भिखारी बनकर रह जाते हैं। ये लोग समाज पर बोझ हैं क्योंकि उन्हें समाज से जो मिलता है, उसके बदले में यह उसे कुछ लौटा नहीं सकते। भारत में ऐसे कुलीन लोग भी हैं जिन्होंने अपना व्यवसाय और नौकरी को छोड़कर, धन-संपदा को त्यागकर ईश्वर को खोजने का मार्ग अपनाया है। ये जहाँ भी जाते हैं, अपने संपर्क में आने वाले लोगों की उन्नति में उनकी सहायता करते हैं। यदि चरित्र का कुछ महत्त्व है, तो अपना और दूसरों का उद्धार करने के बदले, उन्हें दो वक्त का खाना तो मिलना ही चाहिए।

अंत में, केवल इतना कहा जा सकता है कि वह चाहे कोई पाखंडी हो अथवा सच्चा संन्यासी, यदि हमें उसके सही महत्त्व को जानना है तो उसकी आध्यात्मिक त्वचा को उतारना होगा!



मैं पुराने कोलकाता की भीड़-भाड़ वाली गलियों में टहल रहा हूँ। इस बीच रात की काली ओढ़नी धरती के चौड़े कंधों पर उतर आती है।

मेरे दिमाग़ में सुबह वाला ख़ौफ़नाक दृश्य उभर रहा है। हमारी ट्रेन हावड़ा स्टेशन पर रुक जाती है। ट्रेन की पटरी, मीलों लंबा सफ़र तय करके घने जंगलों से गुज़रती है, जहाँ चीते खुले में घूमते हैं। रात्रि में हमारी ट्रेन के इंजन की एक चीते से टक्कर होने के कारण उसकी तत्काल मृत्यु हो जाती है। उसका क्षत-विक्षत तन गाड़ी के साथ घिसटता हुआ स्टेशन तक

आ जाता है। उसके कटे-फटे शरीर को बहुत मुश्किल से गाड़ी से अलग किया गया है।

मैंने चलती गाड़ी में अपनी खोज को आगे बढ़ाने का एक और स्रोत ढूँढ़ लिया है। अधिकांश भारतीय रेल गाड़ियों की तरह यह गाड़ी भी खचाखच भरी है। मुझे जिस डिब्बे में जगह मिली है उसमें कई तरह के लोग बैठे हैं। ये लोग इतने उन्मुक्त भाव से बातचीत कर रहे हैं कि कोई भी आसानी से जान सकता है कि वह कौन हैं और क्या करते हैं। उनमें एक मुसलमान व्यक्ति है जो लंबे काले रेशमी कोट में बैठा है। उसके सिर पर बाल कम है। उसने सोने की कारीगरी वाली काली टोपी पहनी है और सफ़ेद पायजामा पहना हुआ है। लाल और हरे रंग के धागे से बुने हुए उसके जूते पूरी पोशाक कलात्मक रूप प्रदान कर रहे हैं। उसी भीड़ में एक मराठी व्यक्ति बैठा है और सोने की पगड़ी पहने एक मारवाड़ी है जो अपनी जाति के अन्य सदस्यों की तरह ही सूदखोर है। गाड़ी में एक हट्टा-कट्टा ब्राह्मण वकील भी है। वह धनाढ्य परिवार से हैं क्योंकि उसके साथ नौकर-चाकर हैं जो तृतीय श्रेणी के डिब्बे में सफ़र कर रहे हैं और बीच-बीच में वे अपने मालिक का हाल-चाल पूछने आते हैं।

मुसलमान व्यक्ति मेरी ओर देखता है, फिर आँखें बंद करके सो जाता है। मराठी व्यक्ति भी मारवाड़ी के साथ बातचीत में व्यस्त है। ब्राह्मण वकील अभी-अभी गाड़ी में चढ़ा है और वह अभी ठीक से बैठ नहीं पाया है।

मेरा मन बातें करने का है लेकिन मुझसे बात करने वाला कोई नहीं है। पश्चिम और पूर्व के बीच के अदृश्य अवरोध ने मुझे अन्य लोगों से दूर कर रखा है। जैसे ही ब्राह्मण वकील अंग्रेज़ी क़िताब 'लाइफ़ ऑफ़ रामकृष्ण' निकालकर पढ़ने लगता है, मुझे बड़ी ख़ुशी होती है। उस क़िताब का शीर्षक इतना बड़ा है कि मैं उसे साफ़ पढ़ सकता हूँ। मैं मौक़े का फ़ायदा उठाता हूँ और बातचीत शुरू कर देता हूँ। मुझे किसी ने बताया था कि रामकृष्ण भारत के अंतिम ऋषियों में से एक थे। मैं ब्राह्मण से बातचीत आरंभ कर देता हूँ और वह भी उत्तर देने लगता है। हम लोग जल्द ही, दार्शनिक चर्चा की ऊँचाइयों तक पहुँच जाते हैं और फिर भारतीय जीवन के घरेलू पक्षों पर बात कर लगते हैं।

वह जब भी किसी ऋषि का नाम लेता है, उसके स्वर में प्रेम और आँखों में उत्साह झलकने लगता है। इसमें कोई संदेह नहीं कि वह रामकृष्ण के प्रति अत्यंत निष्ठावान है। मैं दो घंटे के भीतर जान लेता हूँ कि उस ब्राह्मण वकील के एक गुरु हैं, जो रामकृष्ण परमहंस के जीवित शिष्यों में से एक हैं। उसके गुरु की आयु लगभग अस्सी वर्ष है और वे एकांत स्थान पर नहीं, बल्कि कोलकाता में किसी प्रमुख स्थान पर रहते हैं।

मैं उसके गुरु का पता माँगता हूँ। वह मुझे आसानी से मिल जाता है।

'आपको परिचय की आवश्यकता नहीं पड़ेगी; उनसे मिलने की इच्छा ही पर्याप्त है,' वकील मुझसे कहता है।

मैं अब कोलकाता में हूँ और रामकृष्ण के वृद्ध शिष्य, महाशय गुरु का घर खोज रहा हूँ।

गली के पास खुले अहाते में से सीढ़ियाँ ऊपर एक पुराने बड़े मकान की ओर जा रही हैं। मैं सीढ़ियाँ चढ़कर मकान के द्वार तक पहुँच जाता हूँ। वहाँ एक छोटा-सा कमरा है, जो एक मकान में खुलता है। उसकी दो दीवारों के साथ दो दीवान रखे हैं। एक लालटेन है तथा कुछ क़िताबों और काग़ज़ों के अतिरिक्त कमरा बिलकुल ख़ाली है। एक युवक वहाँ आता है और मुझे गुरु की प्रतीक्षा करने के लिए कहता है।

10 मिनट बीत जाते हैं। तभी मुझे नीचे के कक्ष से किसी की आवाज़ आती है फिर मुझे सीढ़ियों से किसी के ऊपर आने की आवाज़ आती है। वह आख़िरकार धीमी चाल से कमरे में प्रवेश करता है। किसी को उसका नाम बताने की आवश्यकता नहीं है। ऐसा लगता है मानो बाइबल के पन्नों से प्राचीन मूसा के समय वाला कोई वृद्ध आचार्य सजीव हो उठा है। उस व्यक्ति का सिर गंजा है, लंबी सफ़ेद दाढ़ी है, सफ़ेद मूँछें हैं और बड़ी व आकर्षक आँखें हैं। उसके कंधे, अस्सी वर्षों के लंबे जीवन के बोझ से झुक गए हैं। यह निश्चित है कि यह व्यक्ति महाशय गुरु के अतिरिक्त और कोई नहीं हो सकता!

वे दीवान पर बैठ जाते हैं और मेरी ओर देखने लगते हैं। उनकी उपस्थिति में मुझे एहसास है कि वहाँ हल्के क़िस्म के हँसी-मज़ाक़ या निंदापूर्ण शब्दों अथवा संदेह के लिए स्थान नहीं है। उन्हें देखने से ही महसूस होता है कि ईश्वर में उनकी अटूट निष्ठा है और उनका चरित्र अत्यंत उदार और उन्नत है।

वे बहुत साफ़ और बढ़िया अंग्रेज़ी में मुझसे बात करते हैं।

‘आपका स्वागत है!’

वे मुझे समीप बुलाकर अपने साथ दीवान पर बैठने के लिए कहते हैं। वे कुछ देर मेरे हाथों को पकड़े रखते हैं। मुझे लगता है मुझे अपना परिचय देना चाहिए और आने का कारण भी बताना चाहिए। मेरी बात समाप्त होने के बाद वे फिर से स्नेहपूर्वक मेरा हाथ दबाकर कहते हैं:

‘किसी अज्ञात और शक्तिशाली ताक़त ने आपको भारत आने के लिए प्रेरित किया है और वही आपको हमारे योगियों और संन्यासियों से मिलवा रही है। इन सबके पीछे एक उद्देश्य है और आने वाले भविष्य में आपको इस उद्देश्य का ज्ञान हो जाएगा। कृपया धैर्य से उसकी प्रतीक्षा करें।’

‘क्या आप मुझे अपने गुरु रामकृष्ण के विषय में कुछ बता सकते हैं?’

‘अब आपने वह कहा है जिसके विषय में मुझे बात करना बेहद पसंद है। वे हमें लगभग आधी शताब्दी पहले छोड़कर चले गए थे परंतु उनकी शानदार स्मृति आज भी हमारे साथ है। वह सदा मेरे हृदय में मौजूद रहती है। मेरी जब उनसे पहली बार मुलाक़ात हुई तो मैं सत्ताइस वर्ष का था। मैं जीवन के अंतिम पाँच वर्षों तक उनके साथ रहा। इसका परिणाम यह हुआ कि मैं पूरी तरह बदल गया। जीवन के प्रति मेरा दृष्टिकोण बिलकुल परिवर्तित हो गया।

रामकृष्ण का व्यक्तित्व इतना ज़बरदस्त था कि उनसे जो भी मिलता, आध्यात्मिक रूप से प्रभावित हो जाता था। वह स्पष्ट तौर पर व्यक्ति को मोहित कर लेते थे। यहाँ तक कि भौतिकता में लिप्त लोग और उनका मज़ाक़ उड़ाने वाले भी उनकी उपस्थिति में चुप हो जाते थे।'

'परंतु ऐसे लोग, जो उसमें विश्वास ही नहीं करते, आध्यात्मिकता का सम्मान कैसे कर सकते हैं?' मैं अपनी बात रखता हूँ।

महाशय गुरु के चेहरे पर हल्की-सी मुस्कान आ जाती है। फिर वे उत्तर देते हैं:

'दो लोग लाल मिर्च खाते हैं। एक को उसका नाम नहीं पता और उसने पहले कभी उसे देखा नहीं है, दूसरा व्यक्ति लाल मिर्च से भली-भाँति परिचित है और वह उसे देखते ही पहचान लेता है। क्या इससे मिर्च का स्वाद दोनों के लिए बदल जाएगा? मिर्च खाने से दोनों की जीभ नहीं जल जाएगी? इसी प्रकार भौतिकतावादी लोगों को, जिन्हें रामकृष्ण की आध्यात्मिक महानता का बोध नहीं है, उनसे प्राप्त होने वाली आध्यात्मिक रोशनी से दूर नहीं रखा जा सकता।'

'इसका मतलब है, वे सचमुच आध्यात्मिक तौर पर महामानव थे?'

'हाँ, बल्कि मेरी नज़र में उससे कहीं ज्यादा! रामकृष्ण अत्यंत सीधे-सरल और अशिक्षित व्यक्ति थे। वह इतने अनपढ़ थे कि उन्हें अपना नाम तक लिखना नहीं आता था। वह देखने में अत्यंत विनम्र थे। अधिकांश शिक्षित और सुसंस्कृत लोग भी उनका ज़बरदस्त आदर करते थे। वे लोग रामकृष्ण की आध्यात्मिकता के सामने नतमस्तक होने पर विवश हो जाते थे। उन्होंने हमें सिखाया कि आध्यात्मिकता की तुलना में अहंकार, धन-वैभव, सांसारिक सम्मान और सुख-सुविधाएँ तुच्छ हैं तथा लोगों को भ्रमित करती हैं। वे सचमुच कितने शानदार दिन थे! वह इतनी गहन समाधि में चले जाते थे कि उनके इर्द-गिर्द बैठे लोगों को लगता था कि वे मनुष्य न होकर भगवान हैं! इससे भी अधिक हैरान करने वाली बात यह है कि वह स्पर्श द्वारा अपने शिष्यों को भी ध्यान की उसी गहन अवस्था में ले जाने में समर्थ थे क्योंकि उसी अवस्था में मनुष्य को ईश्वर के दिव्य रहस्यों की जानकारी हो पाती है। मैं अब आपको बताता हूँ कि रामकृष्ण ने मुझे कैसे प्रभावित किया।'

'मेरी शिक्षा पाश्चात्य पद्धति से हुई थी और मैं बौद्धिक अहंकार से भरा हुआ था। मैंने कोलकाता के कॉलेजों में अंग्रेज़ी साहित्य, इतिहास और राजनीतिक अर्थशास्त्र पढ़ाया है। रामकृष्ण उन दिनों दक्षिणेश्वर के एक मंदिर में रहते थे जो कोलकाता में नदी से कुछ मील की दूरी पर स्थित है। मैंने एक दिन उन्हें देखा और उनके अनुभव-जनित आध्यात्मिक विचारों को सुना। मैंने उनसे तर्क करने का दुर्बल प्रयास भी किया, लेकिन उनकी पवित्र उपस्थिति के समक्ष मैं अधिक तक नहीं टिक सका। मैं बार-बार उनके पास जाता था क्योंकि मैं उस निर्धन किंतु विनम्र व्यक्ति से दूर नहीं रह पाता था। एक दिन रामकृष्ण ने मज़ाक़ में

मुझसे कहा कि एक मोर को चार बजे अफ़ीम खिलाई गई थी। वह अगले दिन ठीक उसी समय पर फिर आ गया। वह अफ़ीम के नशे से प्रभावित होकर आया था।'

'उनकी बात सांकेतिक रूप से बिलकुल सच थी। मुझे जो आनंद रामकृष्ण की उपस्थिति में मिलता था, मैंने वह आनंद पहले कभी अनुभव नहीं किया था। इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं कि मैं उनके पास बार-बार आता था और इस तरह धीरे-धीरे मैं उनके अंतरंग शिष्यों में शामिल हो गया। एक दिन उन्होंने मुझसे कहा कि मैं तुम्हारी आँखें, भाव और चेहरा देखकर बता सकता हूँ कि तुम एक योगी हो। अपना काम इसी तरह करते रहो लेकिन अपना ध्यान सदा ईश्वर में रखना। अपनी पत्नी, बच्चों और माता-पिता के साथ रहो और उनकी पूरी देखभाल करो। कछुआ जब पानी में तैरता हुआ जाता है तो भी उसका ध्यान तट पर रखे अपने अंडों में ही लगा रहता है। इसी तरह संसार के समस्त कार्य करते रहो, किंतु अपना ध्यान सदा ईश्वर में लगाए रखो।'

'यही कारण था कि रामकृष्ण के देहांत के बाद, अन्य सदस्यों ने संसार का त्याग कर दिया तथा वे लोग भगवा वस्त्र धारण करके रामकृष्ण के संदेश को भारत भर में फैलाने के लिए निकल पड़े। परंतु मैंने अपना व्यवसाय नहीं छोड़ा और शिक्षा के क्षेत्र में अपना कार्य जारी रखा। मैंने दृढ़ निश्चय किया था कि मैं संसार में रहते हुए भी संसार से विरक्त रहूँगा। इसी कारण मैं कई बार रात को बाहर निकलकर शहर के बेघर भिखारियों के बीच सो जाया करता था। ऐसा करने से मुझे अस्थाई तौर पर, कुछ देर के लिए महसूस होता था कि मेरे पास संसार की कोई सुख-सुविधा नहीं है।'

'रामकृष्ण तो चले गए परंतु आप भारत में कहीं भी जाएँगे तो आपको हर जगह, उनके शिष्यों का, जिनमें से अधिकांश अब दिवंगत हो चुके हैं, किसी न किसी तरह का सामाजिक अथवा चिकित्सकीय या शिक्षा का कार्य चलता हुआ मिलेगा। आपको जो चीज़ आसानी से देखने को नहीं मिलेगी, वह परिवर्तित हृदय और परिवर्तित जीवन है, जिसके पीछे रामकृष्ण की प्रेरणा रही थी। उनका संदेश एक शिष्य से दूसरे शिष्य तक आगे बढ़ता गया और उन लोगों ने उसका यथासंभव प्रचार-प्रसार किया। यह मेरा सौभाग्य है कि मैंने रामकृष्ण की अनेक उक्तियों को बांग्ला भाषा में तैयार किया और उन्हें प्रकाशित करके बंगाल के लगभग प्रत्येक घर तक पहुँचाया। उन उक्तियों के अन्य भाषाओं में हुए अनुवाद, भारत के अनेक भागों तक पहुँच चुके हैं। इस तरह, आप देख सकते हैं कि रामकृष्ण का प्रभाव उनके शिष्यों से भी कहीं आगे तक फैल गया!'

महाशय इस लंबे भाषण के बाद चुप हो जाते हैं। मैं उनके चेहरे को देख रहा हूँ। मुझे उस पर ग़ैर-हिंदू रंग और छवि देखकर आश्चर्य होता है। मेरा ध्यान एशिया के उस छोटे-से प्रदेश पर चला जाता है, जहाँ इज़राइली बच्चे मुश्किल समय में राहत के कुछ क्षण पाते हैं।

मुझे उन लोगों के बीच महाशय, पैगंबर के समान दिखाई पड़ते हैं। यह व्यक्ति कितना

नेक और उच्च श्रेणी का दिख रहा है! इनकी सदाशयता, ईमानदारी, सद्गुण और निष्ठा स्पष्ट झलक रही है। इनके भीतर आत्म-सम्मान झलकता है क्योंकि इन्होंने आजीवन अपनी चेतना की आज्ञा को माना है।

'मैं सोच रहा हूँ, रामकृष्ण ऐसे व्यक्ति को क्या कहते जो केवल आस्था पर निर्भर न करके, तर्क और बुद्धि से काम लेता है?'

'वे उस व्यक्ति से प्रार्थना करने के लिए कहते। प्रार्थना में ज़बरदस्त शक्ति है। रामकृष्ण स्वयं ईश्वर से प्रार्थना करते थे कि उनके पास आध्यात्मिक लोग आएँ और इसके तुरंत बाद उनके पास ऐसे ही शिष्य और अनुयायी आने लगे।'

'परंतु यदि किसी ने जीवन में कभी प्रार्थना नहीं की, तो क्या होगा?'

'प्रार्थना मनुष्य का अंतिम सहारा है। यह व्यक्ति के पास उपलब्ध अंतिम संसाधन है। प्रार्थना मनुष्य की उस समय सहायता करती है जब उसकी बुद्धि उसका साथ नहीं देती।'

'परंतु तब क्या, यदि कोई आपके पास आए और कहे कि प्रार्थना उसकी सहज प्रवृत्ति का हिस्सा नहीं है। आप उसे क्या सलाह देंगे?' मैं धीमे से पूछता हूँ।

'ऐसी स्थिति में, उस व्यक्ति को सच्चे साधु-संन्यासियों की संगति में रहना चाहिए, जिन्हें आध्यात्मिक अनुभव हुए हैं। ऐसे लोगों के नियमित संपर्क में रहने से भीतर की आध्यात्मिकता बाहर आएगी। आध्यात्मिक लोग, हमें और हमारे मस्तिष्क और एवं इच्छा-शक्ति को दिव्यता की ओर मोड़ते हैं। वे हमारे भीतर आध्यात्मिक जीवन जीने की तीव्र इच्छा जाग्रत करते हैं और ऐसे लोगों का समूह होना बहुत महत्त्वपूर्ण है। रामकृष्ण के अनुसार व्यक्ति के लिए यही पहला और अंतिम क़दम होना चाहिए।'

यही कारण है कि हम लोग आध्यात्मिक बातों पर चर्चा करते हैं और सोचते हैं कि मनुष्य भौतिक पदार्थों द्वारा शांति प्राप्त क्यों नहीं कर सकता। इसी तरह पूरा दिन महाशय से मिलने लोग आते रहते हैं और उनका कमरा भारतीय शिष्यों से भरा रहता है। वे लोग रात में भी आते रहते हैं और चार मंज़िला मकान की सीढ़ियाँ चढ़कर अपने गुरु के प्रत्येक शब्द को बड़े ध्यान से सुनते हैं।

मैं भी कुछ समय के लिए उनके साथ जुड़ जाता हूँ। मैं रोज़ रात को वहाँ आता हूँ और उनकी कही धार्मिक बातों को सुनता हूँ। उनके आसपास का वातावरण बहुत सौम्य और सुंदर है तथा स्नेह से परिपूर्ण है। उन्हें निश्चित तौर पर भीतरी आनंद की प्राप्ति हो चुकी है। उनसे निकलने वाला प्रकाश इस बात का साक्षी है। मैं उनके कहे शब्दों को भूल सकता हूँ किंतु उनके सौम्य व्यक्तित्व को कभी नहीं भुला सकता। जिस शक्ति ने महाशय को बार-बार रामकृष्ण के पास जाने के लिए प्रेरित किया, वही शक्ति मुझे भी महाशय के पास आने बुलाती है। अब मैं धीरे-धीरे समझने लगा हूँ कि शिष्य को यदि अपने गुरु से लगाव हो जाए तो गुरु की उपस्थिति का शिष्य पर कितना शक्तिशाली प्रभाव पड़ सकता है।

आख़िरी दिन, मुझे समय का बोध नहीं रहता और मैं अत्यंत आनंदपूर्वक महाशय के साथ दीवान पर बैठा हूँ। इस तरह कई घंटे बीत जाते हैं हमारे बीच बातचीत लगातार जारी रहती है। उसके बाद वह मेरा हाथ अपने हाथ में लेते हैं तथा मुझे अपने घर की छत पर ले जाते हैं। मैं रात्रि के जगमगाते प्रकाश में छत पर रखे गमलों में लगे ऊँचे पौधे देख सकता हूँ। वहाँ से नीचे, कोलकाता के घरों में हज़ारों घरों की रोशनी चमचमा रही है।

चंद्रमा का प्रकाश पूरा है। महाशय चंद्रमा की ओर इशारा करते हैं और फिर प्रार्थना में डूब जाते हैं। मैं प्रार्थना समाप्त होने तक धैर्यपूर्वक प्रतीक्षा करता हूँ। वह फिर अपना हाथ आशीर्वाद की मुद्रा में उठाते हैं और मेरे सिर का धीमे-से स्पर्श करते हैं। मैं उस दिव्य पुरुष के आगे नतमस्तक हूँ हालाँकि मैं धार्मिक प्रवृत्ति का नहीं हूँ। कुछ क्षण के मौन के बाद वह धीरे से कहते हैं:

‘मेरा कार्य लगभग समाप्त हो चुका है। मुझे ईश्वर ने जिस कार्य के लिए भेजा गया था, मैंने इस शरीर के माध्यम से उसे पूरा कर दिया है। मेरे जाने से पहले मेरा आशीर्वाद स्वीकार करो!’*

महाशय ने मेरे भीतर आश्चर्यजनक ढंग से किसी शक्ति को जाग्रत कर दिया है। मेरी नींद उड़ गई है और मैं कोलकाता की गलियों में भटक रहा हूँ। घूमते हुए मैं एक बड़ी-सी मस्जिद के सामने पहुँचता हूँ और मुझे उनकी अजान ‘अल्लाह-हू-अकबर’ सुनाई देती है। उस प्रार्थना से अर्द्धरात्रि का मौन टूट जाता है। मैं इस बीच सोच रहा हूँ कि यदि कोई व्यक्ति मुझे बौद्धिक संशयवाद से मुक्त करके, आस्था की ओर प्रेरित कर सकता है तो वह निस्संदेह, महाशय गुरु ही हैं।



‘आपने उन्हें खो दिया है। शायद नियति को यही मंजूर था कि आप दोबारा न मिलें! कौन कह सकता है?’

कोलकाता के अस्पताल के एक चिकित्सक बंदोपाध्याय यह बात कह रहे हैं। वह इस शहर के कुछ सबसे योग्य चिकित्सकों में से एक है। उन्होंने अब तक अपने जीवन में 6000 से अधिक ऑपरेशन किए हैं। उनके नाम के साथ बहुत सारी डिग्रियाँ लगी हैं। मैंने शारीरिक नियंत्रण योग के विषय में उनसे काफ़ी ज्ञान प्राप्त किया है। औषधि के क्षेत्र में उनका वैज्ञानिक प्रशिक्षण और शरीर विज्ञान के विषय में उनकी विशेषज्ञता मेरे इस प्रयास में बहुत लाभकारी सिद्ध हुई है। मैंने उसकी सहायता से योग के विषय को विशुद्ध तार्किक स्तर तक पहुँचा दिया है।

‘मैं योग के विषय में कुछ नहीं जानता,’ उन्होंने स्वीकार किया। ‘आपने मुझे जो कुछ

बताया है, वह सब मेरे लिए नया है। मैंने नरसिंह स्वामी के अलावा, जो कुछ समय पहले कोलकाता आए थे और एक सच्चे योगी हैं, आज तक किसी योगी से मुलाक़ात नहीं की।'

नरसिंह योगी के विषय में पूछने पर मुझे वह निराशाजनक उत्तर मिला था।

'नरसिंह स्वामी अचानक कोलकाता आए थे और उन्होंने खलबली मचा दी थी। मुझे नहीं पता फिर अचानक वे कहाँ चले गए। मुझे लगता है कि वह दोबारा उसी एकांत स्थान पर चले गए, जहाँ से आए थे।'

'मैं जानना चाहता हूँ कि क्या हुआ था।'

'वे बहुत कम समय के लिए शहर में चर्चा का विषय रहे थे। उन्हें कोलकाता यूनिवर्सिटी के प्रेसिडेंसी कॉलेज में रसायन विज्ञान के प्रोफ़ेसर नियोगी ने खोजा था। उनकी मुलाक़ात नरसिंह स्वामी से मधुपुर में हुई थी। नियोगी ने नरसिंह स्वामी को विषैले एसिड की कुछ बूंदें चाटते हुए और मुँह में जलते हुए कोयले को डालते देखा था। यह देखकर प्रोफ़ेसर नियोगी की रुचि अचानक योग में जाग्रत हो गई और उन्होंने स्वामीजी को कोलकाता आने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने विश्वविद्यालय में नरसिंह स्वामी की शक्तियों के सार्वजनिक प्रदर्शन के लिए प्रबंध किए और उसे देखने के लिए बहुत-से वैज्ञानिक और चिकित्सा क्षेत्र के लोग भी आए थे। मैं भी वहाँ मौजूद था। यह कार्यक्रम प्रेसिडेंसी कॉलेज के भौतिकी थिएटर में हुआ था। हम लोग शुरू में इसका काफ़ी विरोध कर रहे थे और जैसा कि आपको मालूम है मैं धर्म, योग आदि बातों पर ध्यान नहीं देता क्योंकि मेरी रुचि सदैव व्यवसायिक अध्ययन पर केंद्रित रही है।'

'योगी मंच के बीच में खड़े हो गए। उन्हें कॉलेज की प्रयोगशाला से कई तरह के विषैले पदार्थ दिए गए। सबसे पहले उन्हें सल्फ़्यूरिक एसिड की बोतल दी गई। उन्होंने उसकी कुछ बूंदें अपनी हथेली पर लेकर उन्हें अपनी जीभ से चाट लिया। इसके बाद उन्हें अत्यंत शक्तिशाली कार्बोलिक एसिड दिया गया। उन्होंने वह भी चाट लिया। इसके बाद हमने नरसिंह स्वामी को एक अत्यंत घातक विष, जिसे पोटेशियम साइनाइड कहते हैं, दिया परंतु उन्होंने वह भी बिना किसी परेशानी के खा लिया। यह कारनामा आश्चर्यजनक और अविश्वसनीय था। परंतु उसे हमने अपनी आँखों से देखा इसलिए हमें विश्वास करना पड़ा। उन्होंने इतना पोटेशियम साइनाइड खा लिया जिससे किसी भी व्यक्ति की अधिक से अधिक तीन मिनट में मौत हो सकती है। परंतु वे वहाँ खड़े मुस्करा रहे थे।'

'इसके बाद एक काँच की बोतल तोड़ी गई और उसके टुकड़ों को पीसकर चूरा बना दिया गया। नरसिंह स्वामी ने उस चूरे को गले से नीचे उतार लिया। उसे खाने के तीन घंटे बाद कोलकाता के चिकित्सकों ने योगी नरसिंह स्वामी के पेट की जाँच की और उसमें से वह सब पदार्थ वापस निकाल लिए। उनके पेट में विष भी यथावत मौजूद था। अगले दिन उनके मल में काँच के चूरे के अवशेष भी निकले।'

‘हमने बहुत ध्यान से उस परीक्षण को किया था और उस पर संदेह करना मुश्किल था हमने सल्फ़्यूरिक एसिड की विघटनकारी शक्ति को एक तांबे के सिक्के पर पहले दिखाया था। उस कार्यक्रम में विख्यात वैज्ञानिक और नोबेल पुरस्कार विजेता सर सी. वी. रमण भी मौजूद थे। उन्होंने नरसिंह स्वामी के कारनामे को आधुनिक विज्ञान के लिए चुनौती बताया। हमने जब नरसिंह स्वामी से पूछा कि वह अपने शरीर के साथ इस तरह का खिलवाड़ कैसे करते हैं तो उन्होंने हमें बताया कि घर जाने के तुरंत बाद वे योग द्वारा ध्यान में लीन हो जाते हैं और फिर अपने मस्तिष्क को एकाग्रचित करके घातक विष के प्रभाव से स्वयं को बचा लेते हैं।’*

‘क्या आप अपने चिकित्सकीय ज्ञान के आधार पर इसका स्पष्टीकरण दे सकते हैं?’ मैंने पूछा।

डॉक्टर ने सिर हिलाकर मना कर दिया।

‘नहीं! मेरे पास इसका कोई उत्तर नहीं है। मैं दुविधा में हूँ।’

मैं घर लौटकर अपनी पुस्तकें और काग़ज़ खोजता हूँ जिनमें मैं कभी-कभी अपने नोट्स लिखता रहा हूँ। उनमें अड्यार नदी के योगी ब्रह्मा के साथ वार्तालाप भी था। मैंने कुछ पृष्ठ जल्दी-जल्दी पलटे तो मुझे यह टिप्पणी दिखाई पड़ी:

‘जिस व्यक्ति ने यह महान अभ्यास सीख लिया, उसे किसी तरह का विष हानि नहीं पहुँचा सकता चाहे वह कितना भी शक्तिशाली हो। इसमें कुछ विशेष आसन, श्वास का नियंत्रण, इच्छाशक्ति एवं मस्तिष्क को एकाग्रचित करने के अभ्यास किए जाते हैं। हमारी परंपरा के अनुसार इसका अभ्यास करने वाला व्यक्ति, विष समेत किसी भी वस्तु को बिना परेशानी के अपने शरीर में आत्मसात कर सकता है। यह बहुत कठिन अभ्यास है और इसे नियमित रूप से किया जाना चाहिए। मुझे एक वृद्ध व्यक्ति ने बनारस में रहने वाले एक योगी के विषय में बताया था। वह बड़े आराम से बड़ी मात्र में विष पी सकता था। उस योगी का नाम त्रैलंग स्वामी था। वे उन दिनों बनारस में विख्यात थे परंतु कुछ वर्षों के बाद उनकी मृत्यु हो गई। त्रैलंग ने अपने शारीरिक नियंत्रण योग में महारत हासिल कर ली थी। वे गंगा के तट पर अनेक वर्षों तक निर्वस्त्र बैठे रहे परंतु कोई उनसे बात नहीं कर सका क्योंकि उन्होंने मौन व्रत धारण किया था।’

ब्रह्मा ने मेरे सामने जब पहली बार विष पीकर जीवित रहने वाली बात कही थी तो मुझे वह अविश्वसनीय और असंभव लगी थी। परंतु अब शारीरिक नियंत्रण के क्षेत्र की सीमाओं को लेकर मेरे पूर्वाग्रह बदल रहे हैं। मुझे योगियों द्वारा किए अविश्वसनीय और लगभग असंभव लगने वाले कार्यों को देखकर हैरानी होती है। परंतु कौन जाने, हो सकता है कि उनके पास कुछ ऐसे रहस्य हों, जो हम पश्चिमवासी प्रयोगशालाओं में किए हज़ारों प्रयोगों के बावजूद जानने में असमर्थ हैं?

* मुझे उनकी मृत्यु का आभास हो गया था।

* नरसिंह स्वामी कुछ समय बाद फिर से कोलकाता आए थे और वहाँ से रंगून, बर्मा चले गए। उन्होंने वहाँ वही प्रदर्शन फिर किया परंतु अचानक किसी आगंतुक के आ जाने के कारण, वह घर जाकर योगिक ध्यान का नियमित अभ्यास नहीं कर पाए थे और इसी कारण उनकी कुछ ही पल में मृत्यु हो गई थी।

अध्याय 11

बनारस का करामाती संन्यासी

मुझे बंगाल की अपनी यात्राओं को बिना दर्ज किए छोड़ना होगा। मैंने बोध गया के पास तीन तिब्बती लामाओं से हुई मुलाक़ात का विवरण भी छोड़ दिया है।

उन्होंने मुझे पहाड़ों में स्थित अपने मठ पर आमंत्रित किया था, क्योंकि मुझे बनारस के पवित्र शहर पहुँचने की जल्दी है।

हमारी रेलगाड़ी धड़धड़ाती हुई शहर के निकट बड़े-से लोहे के पुल को पार कर जाती है। इस तरह बाहर के लोग यदि गंगा नदी के स्वच्छ जल के ऊपर से अग्नि-रथ दौड़ाते रहेंगे, तो गंगा नदी अधिक समय तक पवित्र नहीं रह सकती। बनारस शहर की भी यही स्थिति है!

मैं स्टेशन से निकलकर बाहर प्रतीक्षा कर रही एक गाड़ी में बैठ जाता हूँ। तीर्थ यात्रियों का एक बड़ा झुंड इधर-उधर धक्का-मुक्की करता हुआ निकल रहा है। हम लोग धूल-भरी सड़क से गुज़रते हैं। मैं वातावरण में एक नए तत्व की उपस्थिति महसूस कर सकता हूँ। मैं उसे नज़रअंदाज़ करने का प्रयास करता हूँ परंतु यह उतनी ही तीव्रता से मेरा ध्यान अपनी ओर आकर्षित कर रहा है।

यह भारत का सबसे पवित्र शहर है! यहाँ की गंध सबसे ख़राब है! बनारस, भारत के प्राचीनतम और भरी-पूरी जनसंख्या वाले शहर के रूप में विख्यात है। यहाँ की दुर्गंध इसकी पुष्टि करती है। यहाँ वायु इतनी गंदी है कि ठहर पाना मुश्किल है। मैं हिम्मत हार रहा हूँ। क्या मुझे अपने वाहन चालक को स्टेशन वापस चलने के लिए कहना चाहिए? हर क़ीमत चुकाकर धर्म निष्ठा अर्जित करने की अपेक्षा क्या परले दर्जे का नास्तिक बने रहना और साफ़ हवा में साँस लेना बेहतर नहीं होगा? मुझे फिर यह विचार आता है कि कुछ ही समय में

व्यक्ति, जिस तरह इस गंदे शहर यहाँ की अन्य चीज़ों का अभ्यस्त हो जाता है, उसी तरह यहाँ की वायु का भी अभ्यस्त हो जाता है। बनारस हिंदू संस्कृति का केंद्र है, तो रहे फिर भी हमारे जैसे नास्तिक गोरे लोगों से कुछ तो सीखो और धार्मिकता में थोड़ी साफ़-सफ़ाई भी लेकर आओ!

मैं समझ रहा हूँ कि वहाँ दुर्गंध का कुछ कारण सड़क पर फैला गोबर और मिट्टी है और उसका एक मुख्य कारण शहर के बाहर से बहने वाला एक पुराना नाला भी है, जिसे कई पीढ़ियों से कूड़ाघर के रूप में प्रयोग किया जा रहा है।

यदि भारतीय इतिवृत्त को देखा जाए तो ईसा पूर्व 1200 वर्ष के आसपास, बनारस अपने आप में एक अच्छा नगर था। जिस तरह अंग्रेज़ धार्मिक लोग मध्यकालीन युग के समय सेंट्रल ब्यूरो के शहर जाया करते थे, उसी तरह भारत के लोग भी विभिन्न क्षेत्रें से बनारस के पवित्र शहर आते थे। धनाढ्य अथवा ग़रीब हिंदू लोग इस शहर से आशीर्वाद लेने आते थे जबकि बीमार लोग अपने अंतिम दिनों को बिताने आते थे क्योंकि ऐसा माना जाता था कि यहाँ प्राण त्यागने से मनुष्य को सीधे स्वर्ग की प्राप्ति होती है।

अगले दिन मैं पुरानी काशी नगरी - इसे लोग यहाँ इसी नाम से पुकारते हैं - में घूमने निकलता हूँ और वहाँ की भूलभुलैयादार गलियों में भटकता हूँ। इस तरह भटकने के पीछे मेरा एक उद्देश्य है। मेरी जेब में एक काग़ज़ है जिस पर एक करामाती योगी के घर का पता लिखा है। मैं उसके शिष्य से मुंबई में मिला था।

मैं अत्यंत संकरी और घुटन भरी गलियों से होकर गुज़र रहा हूँ। बीच में कुछ भीड़-भाड़ वाले बाज़ार पड़ते हैं, जहाँ विभिन्न जातियों के लोग नज़र आते हैं। रास्ते में खुजली वाले कुत्ते और मक्खियाँ भी भिनक रही हैं। उन्हीं गलियों में दुर्बल एवं वृद्ध औरतें तथा भरे-पूरे शरीर वाली युवा महिलाएँ भी मिलती हैं। कुछ तीर्थयात्री हैं जो माला जप रहे हैं और साथ में मंत्रोच्चारण भी करते जाते हैं। वह मंत्रें को लगभग पचास हज़ार बार दोहराते हैं। रास्ते में मुझे भभूत लपेटे कुछ बूढ़े संन्यासियों के दर्शन होते हैं। इस तरह मैं अनेक घुमावदार गलियों से तथा शोरगुल और भीड़-भाड़ को पार करता हुआ अचानक स्वर्ण मंदिर तक पहुँच जाता हूँ, जो भारत में रूढ़िवादी लोगों के बीच प्रसिद्ध है। उसके द्वार पर राख लपेटे हुए एक संन्यासी, जिन्हें मेरे जैसे पश्चिमवासी फूटी आँखें देखना भी नहीं चाहते, बैठा हुआ है। मंदिर में अनगिनत श्रद्धालु हर समय आते-जाते रहते हैं। कुछ लोग सुंदर फूलों की माला लेकर आते हैं। उससे वहाँ का दृश्य बड़ा मनोरम दिखाई पड़ता है। वे सब श्रद्धालु मंदिर से निकलते हुए द्वार पर माथा टेकते हैं और फिर वहाँ खड़े मुझ गोरे नास्तिक को देखकर आश्चर्यचकित हो जाते हैं। मैं उन लोगों और स्वयं के बीच मौजूद अदृश्य अवरोध से अवगत हूँ।

सोने की मोटी चादरों से बने दो बड़े गुंबद धूप में चमचमा रहे हैं। पास की इमारत पर असंख्य तोते बैठे शोरगुल कर रहे हैं। वह मंदिर भगवान शिव का धाम माना जाता है। मैं

सोच रहा हूँ कि इनका वह ईश्वर, जिसके सामने हिंदू लोग रोते हैं तथा प्रार्थना करते हैं और वह इष्टदेव, जिसकी पत्थर की मूर्तियों पर सुगंधित पुष्प एवं पके हुए चावल चढ़ाते हैं, कहाँ है?

मैं आगे बढ़कर एक और मंदिर के द्वार पर खड़ा हो जाता हूँ, जहाँ भगवान कृष्ण की पूजा की जाती है। कृष्ण की स्वर्ण प्रतिमा के सामने कपूर जल रहा है। मंदिर की घंटियाँ और शंखनाद, वहाँ मौजूद श्रद्धालुओं का ध्यान सहज ही आकर्षित कर लेते हैं। एक पतला और दुर्बल पुजारी, मंदिर से बाहर निकलता है और प्रश्नवाचक निगाहों से मुझे देखने लगता है।

उन बनारस के मंदिरों और घरों में स्थापित अनगिनत प्रतिमाओं को कौन गिन सकता है? कभी दार्शनिक तो कभी गंभीर दिखने वाले हिंदुओं को कौन समझ सकता है?

मैं अंधेरे रास्तों पर अकेले पैदल चलता हुआ करामाती संन्यासी का घर खोज रहा हूँ। मैं घुमावदार गलियों से गुज़रता हुआ चौड़ी सड़कों पर निकल आता हूँ। कुछ छोटे लड़के, कुछ पतले-दुबले युवक और कुछ बड़ी उम्र के लोग मेरे समीप से झुंड बनाकर गुज़र रहे हैं। उनके नेता के हाथ में एक बैनर है, जिस पर झंडा बना हुआ है और उस पर कुछ लिखा है। वे लोग किसी गीत की पंक्तियाँ गाते हुए जा रहे हैं। वे मुझे विद्रोही ढंग से देखते हैं और फिर घूरते हुए निकल जाते हैं। उन्हें देखकर मुझे समझ में आ रहा है कि यह राजनीतिक लोगों का झुंड है। पिछली रात, एक भरे पूरे बाज़ार में, जहाँ कोई यूरोपीय व्यक्ति अथवा पुलिस वाला नहीं था, किसी ने पीछे से आकर मुझे मारने की धमकी दी थी। मैं पीछे मुड़कर देखता हूँ तो उन युवा कट्टरपंथी लोगों का झुंड अंधकार में कहीं ग़ायब हो गया है। मुझे उस झुंड को देखकर उन लोगों पर दया आ रही है। राजनीति ने, जो सबको सबकुछ देने का वादा करती है, कुछ लोगों को अपना शिकार बना लिया है!

आख़िरकार, मैं एक गली में आ पहुँचता हूँ जहाँ घर बड़े आकार के, साफ़-सुथरे और अच्छे ढंग से बने हुए हैं। मैंने अपनी चाल तेज़ कर दी है और मैं जल्द ही एक फ़ाटक के सामने पहुँच गया हूँ। उसके सामने 'विशुद्धानंद' लिखा है। मैं घर के भीतर प्रवेश करता हूँ। यही वह घर है जिसकी मुझे तलाश थी। मैं बरामदे में पहुँचता हूँ। वहाँ एक व्यक्ति बैठा है वह युवा है और वह देखने में बुद्धिमान नहीं लगता। मैं उससे हिंदुस्तानी भाषा में पूछता हूँ: 'गुरु जी कहाँ हैं?' परंतु वह सिर हिलाकर बताता है कि वहाँ ऐसा कोई व्यक्ति नहीं रहता। मैं गुरु का नाम बताता हूँ परंतु फिर भी वह मुझे नकारात्मक उत्तर देता है। मैं निराश हो गया हूँ परंतु जल्दी हार मानने वाला नहीं हूँ। मेरे भीतर की आवाज़ मुझसे कह रही है कि इस युवक के मन में यह विचार चल रहा है कि यूरोपीय व्यक्ति को यहाँ क्या काम हो सकता है। वह इस निष्कर्ष पर पहुँच गया है कि मैं शायद कोई और घर खोज रहा हूँ। मैं उसे अनदेखा कर सीधा घर के भीतर प्रवेश कर जाता हूँ।

वहाँ कुछ लोग अर्धवृत्ताकार में बैठे हैं। कुछ अच्छे घरों के भारतीय लोग भी फ़र्श पर बैठे

हैं। एक बूढ़ा दाढ़ी वाला व्यक्ति कमरे के एक कोने में दीवान पर बैठा हुआ है। उसकी भाव-भंगिमा और अन्य बातों से देखकर यह स्पष्ट है कि मैं इसी व्यक्ति की तलाश में यहाँ आया हूँ। मैं उसे हाथ जोड़कर प्रणाम करता हूँ।

मैं परंपरागत हिंदुस्तानी अंदाज़ में उसका अभिवादन करता हूँ।

मैं अपना परिचय आरंभ करता हूँ और उसे बताता हूँ कि मैं एक लेखक हूँ और भारत में घूमने आया हूँ। साथ ही, यहाँ के दर्शनशास्त्र और रहस्यवाद को समझने का प्रयास कर रहा हूँ। मैं उसे यह भी बता देता हूँ कि जिस शिष्य से मेरी मुलाक़ात हुई थी, उसने मुझे समझा दिया था कि गुरुदेव अपनी शक्तियों का सार्वजनिक प्रदर्शन नहीं करते। यहाँ तक कि वह अकेले में भी अजनबियों के सामने अपनी शक्तियों का प्रदर्शन नहीं करते। भारत के प्राचीन ज्ञान में मेरी गहरी रुचि को देखते हुए मैं उनसे प्रार्थना करता हूँ कि वह मुझे अपवाद स्वरूप देखें।

गुरुदेव के शिष्य एक दूसरे की ओर ताकने लगते हैं फिर वह अपने गुरु को देखते हैं तथा उनके उत्तर की प्रतीक्षा करते हैं। विशुद्धानंद की आयु सत्तर वर्ष के क़रीब है। उनकी नाक छोटी तथा चेहरे पर लंबी दाढ़ी है। मैं उनकी बड़ी आँखें देखकर हैरान हूँ। उनके गले में जनेऊ भी है।

वह वृद्ध पुरुष मेरी ओर ऐसे देखता है मानो मैं कोई जीव हूँ और माइक्रोस्कोप के नीचे मेरी जाँच की जा रही है। मुझे हृदय में एक अजीब-सा आभास हो रहा है। सच कहूँ तो उस कक्ष में मुझे एक विचित्र शक्ति स्पष्ट महसूस हो रही है। मैं असहज महसूस कर रहा हूँ।

कुछ पल बाद गुरुजी कुछ बोलते हैं। वह शायद बांग्ला भाषा में बात कर रहे हैं। उन्होंने अपनी बात अपने शिष्य को कही है। वह मुझे बताता है कि यदि मुझे गुरुदेव से बात करनी है तो मुझे गवर्नमेंट संस्कृत कॉलेज के प्रधानाचार्य पंडित कविराज को अपने साथ लाना होगा, जो हमारे बीच दुभाषिये का काम करेंगे। पंडितजी का अंग्रेज़ी का ज्ञान बहुत बढ़िया है और वह विशुद्धानंद के पुराने शिष्य भी हैं इसलिए वह हम दोनों के बीच अच्छे माध्यम का कार्य कर सकेंगे।

'आप कल दोपहर में उनके साथ आइए,' गुरुदेव ने कहा। 'मैं चार बजे आपकी प्रतीक्षा करूँगा।' मुझे विवश होकर वहाँ से लौटना पड़ता है। मैं सड़क से एक वाहन लेता हूँ और संस्कृत कॉलेज की ओर चल पड़ता हूँ। वहाँ पहुँचने पर पता लगता है कि प्रधानाचार्य मौजूद नहीं है। कोई मुझे बताता है कि वह शायद अपने घर पर हो सकते हैं। मैं आधा घंटा आगे चलकर उनके घर पहुँचता हूँ। उनका घर इटली की मध्यकालीन इमारत जैसा है।

पंडितजी ऊपर के कमरे में फ़र्श पर बैठते हैं। उनके आसपास क़िताबों और काग़ज़ों का ढेर लगा है। उनकी भाव-भंगिमा और रूप रंग बिलकुल ब्राह्मणों जैसा है और चेहरे पर ज्ञान का तेज़ है। मैं उन्हें अपने आने का कारण बताता हूँ। वह कुछ हिचकिचाते हैं पर फिर अगले

दिन मेरे साथ चलने के लिए हामी भर देते हैं। उनके साथ मुलाक़ात का समय तय हो जाता है और मैं वहाँ से लौट आता हूँ। मैं गंगा किनारे तक गाड़ी में जाता हूँ और फिर उसे छोड़ देता हूँ। मैं कुछ देर नदी के किनारे टहलता हूँ। नदी के किनारे तीर्थयात्रियों के स्नान की सुविधा के लिए पत्थर की सीढ़ियाँ बनी हुई हैं। अनेक शताब्दियों के उपयोग से यह खुरदरी और ऊँची-नीची हो गई हैं। बनारस का पानी कितना गंदा और अस्थिर है! बहुत-से मंदिर पानी में डूबे हुए हैं। उनके चमचमाते गुंबद नज़र आते हैं। उनमें से कोई ऊँचा, कोई नीचा है। वहाँ प्राचीन तथा आधुनिक इमारतों का अस्त-व्यस्त मिश्रण दिखाई पड़ता है।

चारों ओर पुजारी और तीर्थयात्री घूम रहे हैं। मुझे छोटे और खुले कमरों में बहुत-से पंडित नज़र आते हैं जो शिष्यों को पढ़ा रहे हैं। कमरों की दीवारें सादी हैं। शिक्षक दरियों पर बैठते हैं और उनके शिष्य भी उनके सामने फ़र्श पर बैठते हैं और अपने गुरुओं द्वारा बताए सिद्धांतों को रटे-रटाए ढंग से आत्मसात करते जाते हैं।

एक दाढ़ी वाले संन्यासी को देखकर मेरी उत्सुकता जाग्रत होती है। वह मिट्टी में लोटते हुए चार सौ मील का सफ़र तय कर चुका है! बनारस की तीर्थयात्रा का यह बहुत विचित्र तरीक़ा है। वहाँ से आगे चलकर मुझे एक व्यक्ति नज़र आता है। उसने अपना एक हाथ कई वर्षों से हवा में उठा रखा है। उसके हाथ की मांसपेशियाँ और तंत्र सिकुड़ चुके हैं तथा ऊपर का मांस भी सिकुड़कर बिलकुल सूख चुका है। ऐसी व्यर्थ साधनाओं के बारे में क्या कहा जा सकता है? शायद बस इतना ही कि यहाँ की तेज़ गर्मी और धूप ने इन लोगों का दिमाग़ ख़राब कर दिया है। छाया के नीचे भी तापमान 120 डिग्री तक रहता है। इतनी गर्मी से शायद इन लोगों का दिमाग़ी संतुलन बिगड़ गया है। यह सब लोग किसी धार्मिक उन्माद का शिकार हैं।



अगले दिन मैं और पंडित कविराज, ठीक चार बजे गुरुदेव के घर पहुँच जाते हैं। हम लोग उनके कक्ष में प्रवेश करके अभिवादन करते हैं। वहाँ लगभग छह और शिष्य मौजूद हैं।

विशुद्धानंद मुझे अपने समीप आने का संकेत करते हैं। मैं उनसे कुछ फ़ीट की दूरी पर फ़र्श पर बैठ जाता हूँ।

'क्या आप मेरा कोई चमत्कार देखना चाहते हैं?' उनका पहला प्रश्न है।

'यदि गुरुदेव मुझ पर यह कृपा करें तो मैं बहुत आभारी रहूँगा।'

'मुझे अपना रूमाल दीजिए। यदि रेशम का हो तो और भी अच्छा!' पंडितजी अनुवाद करके बताते हैं। 'आपको जो भी सुगंध पसंद है, वही इस रूमाल में आ जाएगी। इसके लिए केवल एक लेंस तथा सूर्य की किरणों की आवश्यकता होती है।'

सौभाग्य से, मेरे पास एक रेशमी रूमाल है। मैं वह रूमाल करामाती साधु को दे देता हूँ। वे अपने पास से एक छोटा-सा लेंस निकालते हैं और फिर मुझे बताते हैं कि वे सूर्य की किरणों को उस रूमाल पर केंद्रित करेंगे, परंतु सूर्य की मौजूदा स्थिति के कारण कमरे में छाया है इसलिए इसे सीधे नहीं किया जा सकता। इस परेशानी को दूर करने के लिए वह अपने एक शिष्य को बाहर भेजते हैं। वह एक छोटे शीशे का प्रयोग करके सूर्य की किरणों को खिड़की से भीतर परावर्तित कर देता है।

'अब मैं आपके लिए हवा में से एक सुगंध पैदा करूँगा,' विशुद्धानंद कहते हैं। 'आपको कौन-सी सुगंध पसंद है?'

'क्या आप सफ़ेद मोगरे की सुगंध पैदा कर सकते हैं?'

वह रूमाल को अपने बाएँ हाथ में पकड़ते हैं और उसके ऊपर लेंस रखते हैं। केवल दो सेकेंड के लिए सूर्य की किरण रेशमी रूमाल पर पड़ती है। फिर वह लेंस को हटा लेते हैं और रूमाल मुझे थमा देते हैं। मैं उसे नाक के पास ले जाता हूँ। मुझे सफ़ेद मोगरे की सुगंध आ रही है!

मैं रूमाल को ध्यान से देखता हूँ लेकिन मुझे उस पर किसी तरह की नमी अथवा तरल इत्र का प्रमाण नहीं मिलता। मैं दुविधा में हूँ और उस वृद्ध पुरुष की ओर संदेह की दृष्टि से देखता हूँ। वह इस प्रदर्शन को दोहराने की बात करते हैं।

दूसरी बार, मैं गुलाब की सुगंध की फ़रमाइश करता हूँ। मैं उन्हें प्रयोग दोहराते देख रहा हूँ। मेरी नज़र उनकी प्रत्येक हरकत पर है। मैं उनके हाथों को भी ध्यान से देख रहा हूँ। उनके निर्मल वस्त्रों पर भी मेरी पैनी निगाह है परंतु मुझे कुछ संदेहास्पद नहीं दिखाई पड़ता। वह पहले की तरह प्रक्रिया दोहराते हैं और रूमाल में गुलाब की सुगंध आने लगती है।

मेरी तीसरी पसंद बनफशा का फूल है। इसमें भी गुरुदेव पूरी तरह सफल हो जाते हैं।

विशुद्धानंद को अपनी सफलता पर अहंकार नहीं है। वह पूरे प्रदर्शन को बहुत सामान्य ढंग से देखते हैं। यह उनके लिए बहुत छोटी घटना है। उनका चेहरा सहज अवस्था में नहीं है।

'अब मैं एक सुगंध का चुनाव करूँगा,' वह अचानक बोलते हैं। 'मैं ऐसे फूल की सुगंध चाहता हूँ जो केवल तिब्बत में उगता है।' ऐसा कहकर वह सूर्य की किरणों को रूमाल के एक और कोने पर केंद्रित करते हैं। और लो! यह हो भी गया। उन्होंने एक चौथी सुगंध पैदा कर दी है परंतु मैं उसे पहचानने में असमर्थ हूँ।

मुझे अब आश्चर्य हो रहा है। मैं अपना रूमाल जेब में रख लेता हूँ। वह कारनामा सचमुच चमत्कार जैसा था। क्या उस वृद्ध व्यक्ति ने कोई सुगंध अपने पास छुपा कर रखी है? क्या वह उसके वस्त्रों में छिपी हो सकती है? परंतु ऐसा करने के लिए उसे कई तरह की सुगंध बड़ी मात्र में अपने पास रखनी पड़ेंगी क्योंकि मेरे कहे बिना उन्हें नहीं पता कि मैं कौन-सी

सुगंध की माँग करूँगा। उनके वस्त्र इतने सादे हैं कि उनमें इतना सामान रख पाना मुश्किल है। इसके अतिरिक्त उन्होंने एक भी बार अपने हाथ को कपड़ों के भीतर नहीं डाला है।

मैं लेंस की जाँच करने की अनुमति चाहता हूँ। वह आराम से मुझे लेंस पकड़ा देते हैं। मैं उसे ध्यान से देखता हूँ लेकिन मुझे उसे देखकर भी किसी तरह का संदेह नहीं होता।

इसके अतिरिक्त वहाँ एक और सुरक्षा कवच है। विशुद्धानंद को केवल मैं ही नहीं, बल्कि उनके इर्द-गिर्द बैठे लगभग छह शिष्य देख रहे हैं। पंडितजी ने मुझे पहले बता दिया था की वहाँ बैठे सब लोग शिक्षित और ज़िम्मेदार लोग हैं।

सम्मोहन द्वारा इसका स्पष्टीकरण देना संभव है। इसे आसानी से जाँचा भी जा सकता है। मैं अपने घर लौटकर उससे रूमाल को कुछ अन्य लोगों को भी दिखाऊँगा।

मुझे दिखाने के लिए विशुद्धानंद के पास एक और ज़बरदस्त कारनामा है। इसे वह बहुत कम करते हैं। वह मुझे बताते हैं कि उन्हें अपने दूसरे करतब के लिए तेज़ धूप की आवश्यकता होगी। चूँकि सूर्य अस्त होने वाला है, तो करतब को दिखा पाना संभव नहीं होगा। मुझे सप्ताह के किसी अन्य दिन तेज़ धूप के समय आने के लिए कहा गया है। उनका कहना है कि वे मुझे मृत जीव को अस्थाई तौर पर जीवित करने का अद्भुत कारनामा करके दिखाएँगे!

मैं घर लौटकर अपना रूमाल तीन अन्य लोगों को दिखाता हूँ। वह तीनों लोग रूमाल में सभी सुगंधों के होने की पुष्टि करते हैं। इसलिए इस करामात को सम्मोहन का नाम नहीं दिया जा सकता और न ही इस करतब को हाथ की सफ़ाई अथवा चाल की संज्ञा दी जा सकती है।



मैं एक बार फिर गुरुजी के घर में पहुँच गया हूँ। वे कहते हैं कि वे फ़िलहाल किसी छोटे जानवर को जीवित कर सकते हैं। वे प्रायः किसी पक्षी के साथ यह प्रयोग करते हैं।

एक चिड़िया को पकड़कर मार दिया जाता है और उसे हमारे सामने एक घंटे के लिए यूँ ही रहने दिया जाता है ताकि हमें इस बात का संतोष हो जाए कि वह सचमुच मर चुकी है। उसकी आँखें स्थिर हैं और शरीर अकड़ चुका है। मुझे इसमें ज़रा भी संदेह नहीं कि उसे छोटे-से जीव के शरीर में अब प्राण नहीं हैं।

जादूगर लेंस उठाता है और सूर्य की किरणों को पक्षी की आँखों पर केंद्रित करता है। मैं कुछ मिनट प्रतीक्षा करता हूँ। वह वृद्ध व्यक्ति अपने कार्य में लीन है।

उसकी बड़ी आँखें और गंभीर चेहरा भावहीन दिखाई देते हैं। अचानक उसके होंठ खुलते हैं और वह कुछ अजीब-सी आवाज़ निकालता है। कुछ पल बाद पक्षी का शरीर हिलने लगता है। मैंने सामान्य तौर पर कुत्तों को ऐसे हिलते देखा है जब उनकी मृत्यु निकट होती है।

इसके बाद चिड़िया अपने पंख हिलाती है और उठकर पैरों पर खड़ी हो जाती है। वह फ़र्श पर फुदकना शुरू कर देती है। सचमुच वह मृत जीव दोबारा जीवित हो चुका है!

अगले चरण में वह चिड़िया थोड़ी ताक़त जमा करके हवा में उड़ने का प्रयास करती है और फुदककर नई जगह बैठ जाती है। फिर वह कमरे के भीतर उड़ने लगती है। यह कारनामा इतना अविश्वसनीय है कि मुझे ख़ुद को संभालना पड़ता है ताकि मैं यह मान सकूँ कि मेरे आस-पास जो कुछ हो रहा है, वह भ्रम नहीं बल्कि सच्चाई है!

इसी तरह लगभग आधा घंटा बीत जाता है। मैं देखता हूँ कि पक्षी लगातार इधर-उधर उड़ रहा है। अचानक मुझे एक नया आश्चर्य देखने को मिलता है। वह पक्षी नीचे गिरता है और फ़र्श पर निश्चेष्ट पड़ जाता है। वह बिना हिले-डुले यूँ ही ज़मीन पर पड़ा रहता है। जाँच करने पर पता लगता है कि उसके प्राण निकल चुके हैं और उसकी मृत्यु हो गई है!

'क्या आप इसके जीवन को थोड़ा और लंबा कर सकते थे?' मैं जादूगर से पूछता हूँ।

'मैं फ़िलहाल मैं इतना ही करके दिखा सकता हूँ,' वह उत्तर देते हैं। इसके बाद पंडितजी मुझे धीरे-से कहते हैं कि भविष्य में होने वाले प्रयोगों के बाद हमें कुछ और शानदार चीज़ें देखने को मिलेंगी। उनके गुरुदेव बहुत कुछ कर सकते हैं परंतु मुझे उसके लिए ज़ोर नहीं देना चाहिए। मुझे उनके साथ सड़क पर तमाशा दिखाने वाले की तरह व्यवहार नहीं करना चाहिए। मैंने जो कुछ देखा है मुझे उससे संतुष्ट रहना होगा। मुझे एक बार फिर उस जगह पर रहस्यमय शक्ति का आभास हो रहा है। विशुद्धानंद की रहस्यमय शक्तियों की कथाओं के कारण यह आभास बढ़ गया है।

मुझे बताया गया है कि गुरुदेव हवा में से ताज़े अंगूर और मिठाई पैदा कर सकते हैं। वे यदि अपने हाथ में मुरझाए हुए फूल को पकड़ें, तो वह दोबारा ताज़ा हो सकता है!



इन चमत्कारों के पीछे कौन-सा रहस्य है? मैं इसके संकेत प्राप्त करने का प्रयास कर रहा हूँ। मैं उनसे कोई असाधारण उत्तर चाहता हूँ, परंतु इनका कोई स्पष्ट उत्तर नहीं है। इसका असली रहस्य बनारस के इस करामाती संन्यासी के दिमाग़ में छिपा है। उसने वह रहस्य अभी तक अपने सबसे प्रिय और निकटतम शिष्य को भी नहीं बताया है।

वह मुझे बताता है कि उसका जन्म बंगाल में हुआ था। उसे तेरह वर्ष की आयु में किसी ज़हरीले जानवर ने काट लिया था। उसकी स्थिति इतनी ख़राब हो गई कि उसकी माँ को उसके जीवित बचने की उम्मीद नहीं थी। वह उसे गंगा के पास ले गई। हिंदू धर्म के अनुसार इस नदी के समीप होने वाली मृत्यु से अधिक पवित्र कुछ नहीं है। उसका परिवार अंतिम-क्रिया के लिए वहाँ उपस्थित था। उसके शरीर को धीरे-धीरे पानी में उतारा गया कि अचानक

एक चमत्कार हुआ। वह उसे पानी में जितना डुबाते थे, पानी उसके शरीर से उतना ही नीचे उतर जाता था। उसे दोबारा ऊपर उठाया गया तो पानी भी ऊपर उठकर सामान्य स्तर पर आ गया। कई बार यह प्रयास किया गया किंतु बार-बार पानी नीचे उतर जाता था और फिर ऊपर आ जाता था। संक्षेप में, गंगा नदी ने उस लड़के को अपनी गोद में लेना स्वीकार नहीं किया!

उसी समय नदी के तट पर एक योगी बैठा यह तमाशा देख रहा था। वह उठा और उसने भविष्यवाणी की कि यह लड़का जीवित बच जाएगा और महान बनेगा। इसका भविष्य बहुत उज्ज्वल है क्योंकि यह एक प्रसिद्ध योगी बन जाएगा। उसके बाद उस योगी ने अपने पास से कुछ जड़ी-बूटियाँ पीसकर बच्चे के घाव पर लगा दीं और चला गया। सात दिन बाद वह लौटा तो बालक पूरी तरह ठीक हो चुका था। परंतु इस बीच उस बच्चे के साथ एक विचित्र बात हुई। उसका मानसिक स्वभाव और चरित्र बदल गया। वह घर में अपने माता-पिता के साथ नहीं रहना चाहता था। उसका मन योगी की तरह भटकने लगा। उसकी माता को सदैव उसकी चिंता रहती थी। एक दिन कुछ वर्षों बाद उसकी माता ने उसे घर त्यागने की अनुमति दे दी। वह बालक योगियों की तलाश में घर छोड़कर चला गया।

वह हिमालय पार करके तिब्बत पहुँच गया जिसे रहस्यों की भूमि माना जाता है। इस बालक को आशा थी कि उसे वहाँ चमत्कार करने वाले प्रख्यात संन्यासी अवश्य मिलेंगे और उसकी मुलाक़ात अपने गुरु से हो जाएगी। भारतीय लोगों का इस बात में अटूट विश्वास है कि यदि कोई व्यक्ति योग विद्या में पारंगत होना चाहता है तो उसे एक अच्छे योग गुरु का शिष्य बनकर रहना पड़ता है। वह युवा बंगाली लड़का भी ऐसे ही व्यक्ति की तलाश में था। उसने कुटिया, गुफाओं और पहाड़ों में रहने वाले बहुत-से साधु संन्यासियों की खोज की परंतु वह निराश होकर घर लौट आया।

इसी तरह अनेक वर्ष बीत गए परंतु उसकी इच्छा पूरी नहीं हुई। उस युवक ने एक बार फिर सीमा पार की तथा दक्षिणी तिब्बत के ख़ाली मैदानों में भटकने के लिए निकल पड़ा। पहाड़ों में एक स्थान पर उसे एक व्यक्ति मिला जो उसका गुरु बन गया।

इसके बाद मुझे जो बात सुनने को मिली, वह सुनकर किसी को भी ज़ोर-से हँसी आ सकती है परंतु मैं उसे सुनकर बहुत आश्चर्यचकित हूँ। मुझे बताया गया है कि उस तिब्बती गुरु की आयु कम से कम 1200 वर्ष है! यह बात इतनी सादगी भरे ढंग से कही गई थी मानो कोई पश्चिमवासी बता रहा हो कि उसकी आयु 40 वर्ष है।

मैं दीर्घायु का यह अद्भुत किस्सा पहले भी दो बार सुन चुका हूँ। अड्यार नदी के योगी ब्रह्मा मुझे बताया था कि नेपाल में उसके गुरु की आयु 400 वर्ष से अधिक थी। दूसरा, जब मैं पश्चिमी भारत में एक व्यक्ति से मिला तो उसने मुझे बताया कि हिमालय पर्वत पर एक योगी है जिसकी आयु एक हज़ार वर्ष से भी अधिक है। मैंने उस समय उन दोनों बातों को

नज़रअंदाज़ कर दिया था, परंतु अब मुझे फिर से वही बात सुनकर विचित्र लग रहा है क्योंकि मेरे सामने जो व्यक्ति बैठा है, वह भी अमर होने के मार्ग पर चल रहा है।

तिब्बती गुरु ने युवा विशुद्धानंद को योग के सिद्धांतों और पद्धतियों का ज्ञान दिया। कठोर प्रशिक्षण के बाद शिष्य विशुद्धानंद ने शरीर एवं मन पर नियंत्रण की अलौकिक शक्तियाँ अर्जित कर लीं। उसे सौर विज्ञान नाम की एक अनूठी कला की शिक्षा भी दी गई। बारह वर्ष तक बर्फ़ीले स्थान में कठोर जीवन के बावजूद विशुद्धानंद ने तिब्बती गुरु के चरणों में रहकर सेवा की। प्रशिक्षण पूरा हो जाने पर उसे भारत भेज दिया गया। उसने पहाड़ों को पार किया और मैदान से होता हुआ वह योगगुरु बन गया। वह बंगाल की खाड़ी के निकट पुरी में रहने लगा, जहाँ आज भी उसका एक बड़ा मकान है। उसके पास बैठे शिष्य उच्च हिंदू घरों के लोग हैं। उनमें धनाढ्य व्यापारी, भूमिपति, सरकारी अफ़सर, यहाँ तक कि राजा भी शामिल हैं। मुझे लगता है -हो सकता है मैं ग़लत हूँ- वहाँ सामान्य लोगों को आने की अनुमति नहीं है।

‘आपने जो चमत्कार मुझे दिखाए, वह आपने कैसे किए?’ मैं पूछता हूँ।

विशुद्धानंद अपने हाथ मोड़कर बैठ जाते हैं।

‘आपने जो अभी दिखाया, वह योग का परिणाम नहीं है। यह वास्तव में सौर विज्ञान का नतीजा है। योग से इच्छाशक्ति और मस्तिष्क को केंद्रित करने की क्षमता का विकास होता है। परंतु सौर विज्ञान के लिए इन सबकी आवश्यकता नहीं है। सौर विज्ञान केवल कुछ रहस्यों का संग्रह है और इसके लिए किसी विशेष प्रशिक्षण की आवश्यकता नहीं होती। इसे किसी भी अन्य विज्ञान की तरह ही पढ़ा और समझा जाता है।’

पंडित कविराज कहते हैं कि यह अद्भुत कला विद्युत और चुंबक विज्ञान के जैसी है। मेरी दुविधा पहले की तरह अब भी बरकरार है। गुरुदेव कुछ अधिक जानकारी प्रदान करते हैं।

‘तिब्बत से प्राप्त हुए सौर विज्ञान में नया कुछ नहीं है। यह ज्ञान भारत के योगियों के पास पहले से था, परंतु अब कुछ लोगों को छोड़कर यह लगभग लुप्त हो गया है। सूर्य की किरणों में जीवन प्रदान करने वाले तत्व मौजूद होते हैं और यदि आप उन तत्वों को चुनकर उन्हें अलग करने का रहस्य जानते हैं तो आप इस तरह के चमत्कार कर सकते हैं। सूर्य की किरणों में विशेष शक्तियाँ होती हैं और आप अभ्यास द्वारा उन्हें नियंत्रित करना सीख सकते हैं।’

‘क्या आप अपने शिष्यों को यह विज्ञान सिखाते हैं?’

‘मैंने अभी तक नहीं सिखाया है लेकिन मैं ऐसा करने की सोच रहा हूँ। इसके लिए कुछ शिष्यों को चुना जाएगा और उन्हें इन रहस्यों का प्रशिक्षण दिया जाएगा। हम लोग एक बड़ी प्रयोगशाला बना रहे हैं, जहाँ अध्ययन के लिए कक्षाएँ होंगी और प्रयोग आदि किए जाएँगे।’

‘फ़िलहाल आपके शिष्य क्या सीख रहे हैं?’

‘अभी इन्हें योग सिखाया जाता है।’

पंडितजी मुझे एक प्रयोगशाला दिखाने ले जाते हैं। इसका ढाँचा आधुनिक है और यह कई मंज़िला ऊँची है। यह विशिष्ट तौर पर यूरोपीय डिजाइन में बनी हुई है। इसकी दीवारें लाल ईंटों की है और इसकी दीवारों में खिड़कियों के लिए ख़ाली स्थान बने हैं। इन जगहों पर काँच की बड़ी-बड़ी चादरें लगाई जाएँगी क्योंकि यहाँ होने वाले शोधकार्य के लिए सूर्य की किरणों की आवश्यकता होती है। उन्हें लाल, नीले, हरे, पीले तथा सादे शीशे द्वारा परावर्तित किया जाता है।

पंडितजी ने मुझे बताया कि भारत में कोई ऐसा व्यक्ति नहीं है जो इन विशाल खिड़कियों के लिए इतने बड़े शीशे बना सके और इसलिए यह ढाँचा पूरा नहीं हो पाया है। वह मुझसे कहते हैं कि मैं इस विषय में इंग्लैंड में भी पता करूँ। वह इस बात पर भी ज़ोर देते हैं कि शीशा ठीक वैसा ही होना चाहिए जैसा विशुद्धानंद चाहते हैं। शर्त यह है कि शीशा निर्माता को यह गारंटी देनी होगी कि शीशे में हवा के बुलबुले बिलकुल नहीं होंगे और रंगीन शीशा पूरी तरह पारदर्शी होगा। शीशे का प्रत्येक टुकड़ा बारह फ़ुट लंबा, आठ फ़ीट चौड़ा और एक इंच मोटा होना चाहिए।*

प्रयोगशाला के आस-पास बड़े-बड़े उद्यान हैं। उसे खजूर के वृक्षों की कतार द्वारा बाहर के लोगों की नज़रों से दूर रखा गया है।

मैं करामाती साधु के पास लौट आता हूँ। कुछ शिष्य कम हो गए हैं। अब वहाँ केवल दो या तीन बाक़ी हैं। पंडित कविराज मेरे साथ बैठे हैं और बहुत ध्यान से अपने गुरु को देख रहे हैं।

विशुद्धानंद एक पल के लिए मेरी ओर देखते हैं और फिर फ़र्श को देखने लगते हैं। उनके व्यवहार में प्रतिष्ठा और संकोच का मिश्रण है। उनका चेहरा सदा गंभीर रहता है। उनके शिष्यों के चेहरों पर भी गंभीरता झलकती है। मैं इस गंभीर मुखौटे के पीछे झाँकने का प्रयास कर रहा हूँ लेकिन मुझे कुछ नज़र नहीं आता। मेरा पाश्चात्य दिमाग़ इस व्यक्ति के मस्तिष्क को भेद पाने में असमर्थ है। यह व्यक्ति पूर्व के जादू में पूरी तरह डूबा हुआ है। हालाँकि इसने मुझे मेरे बिना कहे चमत्कार करके दिखाए हैं, फिर भी इसने स्वयं और मेरे बीच में एक मानसिक अवरोध खड़ा कर रखा है जिसे मैं कभी पार नहीं कर सकूँगा। मेरा स्वागत भी ऊपरी तौर पर ही हुआ है। आमतौर पर पश्चिम से आने वाले अण्वेषक तथा शिष्यों की यहाँ आवश्यकता महसूस नहीं की जाती है।

विशुद्धानंद अचानक एक अप्रत्याशित बात कहते हैं:

‘मैं तब तक आपको अपना शिष्य नहीं बना सकता, जब तक मुझे अपने तिब्बती गुरु से अनुमति न मिल जाए। मैं इसी शर्त पर यहाँ काम करता हूँ।’

क्या इन्होंने मेरे दिमाग़ के विचार पढ़ लिए हैं? मैं उनकी ओर देखता हूँ। उनके उभरे हुए मस्तक पर विचित्र रेखाएँ हैं। मैंने उनका शिष्य बनने की कोई इच्छा व्यक्त नहीं की है। मैं जल्दी किसी का शिष्य बनने के लिए तैयार नहीं होता। मुझे एक बात का विश्वास है कि यदि मैं ऐसा कोई अनुरोध करूँगा तो मुझे उसका नकारात्मक उत्तर ही मिलेगा।

'परंतु आप इतनी दूर तिब्बत में अपने गुरु से संपर्क कैसे स्थापित कर सकते हैं?' मैं पूछता हूँ।

'हम लोग भीतरी तौर पर हमेशा संपर्क में रहते हैं,' वे उत्तर देते हैं। मैं उनकी बात ध्यान से सुनता हूँ परंतु समझने की चेष्टा नहीं करता। उनकी इस अप्रत्याशित बात ने एक पल के लिए मेरा दिमाग़ उनके चमत्कारों से हटा दिया है। मैं गंभीर मुद्रा में उनसे पूछता हूँ:

'गुरुदेव, व्यक्ति को ज्ञान कैसे प्राप्त होता है?'

विशुद्धानंद मेरी बात का उत्तर नहीं देते, बल्कि वह मुझसे एक और प्रश्न करते हैं:

'आप योगाभ्यास किए बिना ज्ञान कैसे प्राप्त कर सकते हैं?'

मैं उनकी बात पर विचार करता हूँ।

'मुझे बताया गया है कि बिना गुरु के योग को समझना और उसका अभ्यास करना बहुत मुश्किल है और सच्चे गुरु भी बड़ी मुश्किल से मिलते हैं।'

उनके चेहरे पर शांत भाव है।

'शिष्य जब तैयार हो जाता है तो गुरु स्वयं प्रकट हो जाता है।'

मैं इस बात पर संशय व्यक्त करता हूँ। वे अपने हाथों को आगे फैला देते हैं।

'व्यक्ति को पहले स्वयं तैयार होना पड़ता है। उसके बाद वह जहाँ भी हो, उसे गुरु अवश्य मिल जाता है। यदि सचमुच कोई गुरु न दिखे तो भी वह मन की आँखों से अवश्य नज़र आता है।'

'तो इस कार्य को कैसे आरंभ करना चाहिए?'

'प्रतिदिन कुछ समय इस आसन में बैठना चाहिए, जो मैं आपको अभी दिखाऊँगा। इससे आपको तैयारी करने में सहायता मिलेगी। आपको क्रोध और उन्माद को नियंत्रित करने का अभ्यास भी करना होगा।'

विशुद्धानंद पद्मासन में बैठ जाते हैं जिसे मैं पहले से जानता हूँ। मुझे नहीं पता उन्होंने यह आसन क्यों लगाया है।

'कौन वयस्क यूरोपीय व्यक्ति इस तरह के उलझे हुए आसन में बैठ सकता है!' मैं बोल पड़ता हूँ।

'शुरू में इस आसन को करने में थोड़ी कठिनाई होती है। परंतु प्रतिदिन सुबह और शाम

अभ्यास करने से यह आसान हो जाता है। एक महत्त्वपूर्ण बात यह है कि योगाभ्यास के लिए प्रतिदिन समय निश्चित करना ज़रूरी है और फिर उस समय पर अभ्यास करना भी आवश्यक है। शुरू में पाँच मिनट काफ़ी होते हैं। एक महीने के अभ्यास के बाद आप इस अवधि को बढ़ाकर दस मिनट कर सकते हैं और फिर तीन महीने बाद बीस मिनट। इस तरह आप इसे बढ़ा सकते हैं। योगाभ्यास करते समय रीढ़ को सीधा रखना ज़रूरी है। इससे शारीरिक और मानसिक दोनों स्तरों पर शांति मिलती है जो योगाभ्यास के लिए बहुत आवश्यक है।'

'क्या आप शारीरिक नियंत्रण योग भी सिखाते हैं?'

'हाँ। आप यह मत समझिए कि मस्तिष्क के नियंत्रण वाला योग अधिक श्रेष्ठ होता है। मनुष्य दिमाग़ और शरीर दोनों से काम लेता है इसीलिए दोनों चीज़ों का प्रशिक्षण आवश्यक है। शरीर, मस्तिष्क पर प्रभाव डालता है और मस्तिष्क भी शरीर को नियंत्रित करता है। हम व्यवहारिक विकास के संदर्भ में दोनों को अलग करके नहीं देख सकते।'

मुझे फिर आभास होता है कि यह व्यक्ति भी अधिक प्रश्नों के उत्तर देने का इच्छुक नहीं है। वातावरण में मानसिक ठंडक व्याप्त हो जाती है। मैं पीछे हटने का निश्चय करता हूँ। वहाँ से लौटने से पूर्व एक अंतिम प्रश्न करता हूँ:

'क्या आपने जीवन का उद्देश्य पा लिया है?'

वहाँ बैठे शिष्य मेरी सादगी पर मुस्कराने लगते हैं। मेरे जैसा नास्तिक और अज्ञानी पश्चिमवासी ही ऐसा प्रश्न पूछ सकता है! 'क्या सभी धार्मिक हिंदू पुस्तकें इस ओर इशारा नहीं करतीं कि ईश्वर ने इस संसार को अपने हाथों में उठा रखा है और वह अपने उद्देश्य से कार्य करता रहता है?'

गुरुदेव मेरे प्रश्न का उत्तर नहीं देते। वह मौन हो जाते हैं और कविराज की ओर देखने लगते हैं। कविराज मुझे इस प्रश्न का उत्तर देते हैं:

'निश्चित रूप से! जीवन का उद्देश्य है परमात्मा से मिलन। इसके लिए हमें आध्यात्मिक रूप से आदर्श बनना होगा।'

इसके बाद लगभग एक घंटे तक कमरे में शांति रहती है। विशुद्धानंद एक मोटी पुस्तक की ओर इशारा कर रहे हैं, जिस पर बांग्ला भाषा में छपा काग़ज़ चढ़ा हुआ है। उनके शिष्य उन्हें देखते रहते हैं या फिर वे सो जाते हैं अथवा ध्यान में डूब जाते हैं। मेरे ऊपर भी सम्मोहक प्रभाव और विश्रांति छाने लगी है। मुझे ऐसा महसूस हो रहा है कि मैं यदि वहाँ कुछ और समय रुका तो या तो मैं सो जाऊँगा अथवा ध्यान में डूब जाऊँगा। इसलिए मैं स्वयं को संभालता हूँ तथा गुरुदेव को धन्यवाद देकर वहाँ से निकल जाता हूँ।



मैं हल्का भोजन करने के बाद फिर शहर के भीड़भाड़ वाले घुमावदार रास्तों से गुज़रता हुआ आगे बढ़ता हूँ। वहाँ दूर-दूर से धार्मिक लोग इकट्ठे होते हैं लेकिन साथ ही कुछ दूषित प्रवृत्ति के गंदे और बुरे लोग भी मौजूद हैं।

गंगा-तट पर बने मंदिर की घंटियाँ संध्या-पूजन का संकेत दे रही हैं। धीरे-धीरे रात्रि निकट आ रही है और आसमान काला होने लगा है। सूर्यास्त ने अपनी छटा बिखेर दी है।

मैं प्राचीन गंगा नदी के तट पर बैठा खजूर के वृक्षों की सरसराहट सुन रहा हूँ जो हवा से धीरे-धीरे हिल रहे हैं।

तभी शरीर पर राख मले एक भिखारी मेरे पास आता है। वह निकट आकर रुक जाता है। मैं उसे देखता हूँ। वह साधु लग रहा है क्योंकि उसकी आँखों में कुछ अलौकिक है। मुझे लगता है कि मैं प्राचीन भारत को समझने में असमर्थ रहा हूँ। मैं जेब से कुछ सिक्के निकालता हूँ और सभ्यता की खाई को पार करने की कोशिश करता हूँ। वह प्रतिष्ठा के साथ सिक्के ले लेता है और हाथ हवा में उठाकर मुझे आशीर्वाद देता है और वहाँ से चला जाता है।

मैंने उस करामाती संन्यासी के रहस्य पर काफ़ी देर विचार किया जो कारनामे दिखाकर मृत पक्षियों को अस्थाई तौर पर जीवित कर देता है। सूर्य विज्ञान के विषय में उसका प्रदर्शन अच्छा है लेकिन उसने मुझे अधिक आकर्षित नहीं किया। कोई अज्ञानी ही इस बात से इंकार करेगा कि आधुनिक विज्ञान ने सूर्य की किरणों में मौजूद संभावनाओं को पहचाना नहीं है। इस मामले में कुछ बातें ऐसी हैं जिनसे प्रेरित होकर मैं स्पष्टीकरण के लिए किसी अन्य दिशा में देखने को विवश हूँ।

पश्चिमी भारत में मुझे ऐसे दो योगियों का पता है जो विशुद्धानंद वाले कारनामे कर सकते हैं। दुर्भाग्य से, दोनों व्यक्तियों की पिछली शताब्दी में मृत्यु हो गई थी, किंतु मुझे सूचना देने वाला स्रोत काफ़ी विश्वसनीय था। इन दोनों ही मामलों में योगी के हाथ पर सुगंधित तैलीय पदार्थ प्रकट हो जाता था। संभव है, वह पदार्थ उसकी त्वचा में से निकलता हो। कभी-कभी तो इत्र की सुगंध इतनी तेज़ होती थी कि वह पूरे कमरे में फैल जाती थी।

यदि विशुद्धानंद को भी वह कला आती है तो हो सकता है कि वह सुगंध को हथेली से रूमाल पर स्थानांतरित कर देता हो और लेंस वाला खेल केवल दिखाने के लिए हो। संक्षेप में सूर्य की रोशनी पर ध्यान केंद्रित करने का प्रदर्शन केवल एक नाटक है ताकि वह हथेली में उत्पन्न सुगंध को रूमाल पर महसूस करवा सके। एक अन्य बात इसका समर्थन करती है कि उस करामाती संन्यासी ने अपने किसी भी शिष्य को उस कारनामे का रहस्य नहीं सिखाया है। उन्हें केवल आशा बँधाई जाती है और महँगी प्रयोगशालाएँ बनवाने का नाटक किया जाता है। यहाँ तक कि प्रयोगशाला बनाने का कार्य भी रोक दिया गया है क्योंकि भारत में उतनी बड़े शीशे बनाना असंभव है इसलिए वे सब केवल झूठी आशा के भरोसे पर प्रतीक्षा

कर रहे हैं।

यदि सूर्य की रोशनी पर ध्यान केंद्रित करने वाली बात केवल दिखावा है तो फिर विशुद्धानंद ने वास्तव में कौन-सी प्रक्रिया का प्रयोग किया होगा? यह हो सकता है कि सुगंध पैदा करना एक तरह की योग शक्ति हो, जिसे अपने व्यक्तिगत प्रयास द्वारा विकसित किया जाता है। परंतु इसके विषय में मुझे जानकारी नहीं है। हालाँकि मैं उस साधु द्वारा दिखाए कारनामे के पीछे का सिद्धांत नहीं बता सकता, फिर भी मुझे उसने सौर विज्ञान का जो सिद्धांत समझाने का प्रयास किया है मुझे जल्दी उस पर विश्वास नहीं करना चाहिए। मुझे इतना परेशान होने की क्या आवश्यकता है? मेरा दायित्व केवल लेखन तक सीमित है। मुझे इन घटनाओं को दर्ज करना है, न कि अवर्णनीय चीज़ों के स्पष्टीकरण देने हैं। यह भारतीय जीवन का ऐसा पक्ष है जो सदा छिपाकर रखा जाएगा। वह करामाती साधु या उसका कोई शिष्य यदि उन अद्भुत कारनामों को संसार के सामने प्रदर्शित करता है और वह वैज्ञानिकों का ध्यान आकर्षित करने में कामयाब हो जाता है, तो भी इस बात की कोई संभावना नहीं है कि उस रहस्य को कभी कोई जान पाएगा। मुझे लगता है कि मैं उस व्यक्ति का चरित्र समझ गया हूँ।

मेरे भीतर की आवाज़ पूछ रही है: उसने मृत पक्षी को जीवित कैसे किया होगा? उसके अमर होने वाली कथा का क्या होगा? क्या पूर्व जगत के कुछ लोगों ने दीर्घायु होने का रहस्य जान लिया है?

मैं अपना ध्यान भीतर की आवाज़ से हटाकर ऊपर ले जाता हूँ। मैं तारों से भरे आसमान को देखकर विस्मित हूँ। उष्णकटिबंधीय स्थानों में कोई ऐसी जगह नहीं, जहाँ आकाश में एक साथ इतने तारे नज़र आते हों। मैं उन टिमटिमाते तारों को काफ़ी देर देखता रहता हूँ। मेरी निगाह जैसे ही आसपास के लोगों और घरों पर पड़ती है तो मुझे संसार के उलझे हुए रहस्य का फिर से आभास होने लगता है। स्पृश्य और साधारण वस्तुएँ, तेज़ी से असत्यता के पर्दे में छिप जाती हैं। छायादार आकृतियाँ धीमी गति से चलने लगती हैं। कुछ टिमटिमाती लालटेनें रात्रि के वातावरण को सुहावने स्वप्निल संसार में परिवर्तित कर देती हैं। भारतीय दर्शन का सिद्धांत मेरे मस्तिष्क में तैर रहा है कि यह सृष्टि वास्तविक स्वरूप में सिर्फ़ भ्रम है। यह विचार धीरे-धीरे सत्यता के आभास को नष्ट कर रहा है। मैं इस ग्रह के अद्भुत अनुभवों के लिए तैयार हूँ।

परंतु तभी पृथ्वी का कोई प्राणी बड़े रूखे अंदाज़ में मेरे नैसर्गिक स्वप्न को तोड़कर, भारतीय गीत की एक नीरस धुन सुनाने लगता है। मैं उन्हीं अनिश्चित सुखों एवं अप्रत्याशित दुखों की ओर लौट पड़ता हूँ, जिसे लोग जीवन कहते हैं।

---

* मैंने इंग्लैंड के कुछ बड़े शीशा निर्माताओं को चिट्ठी लिखी थी परंतु उन सबने उस कार्य को करने से मना कर दिया क्योंकि

विशुद्धानंद द्वारा निर्धारित तकनीकी शर्तों को पूरा कर पाना असंभव था। उन्होंने बताया कि इस प्रक्रिया को कोई भी शीशा निर्माता पूरा नहीं कर सकता। वह ऐसी गारंटी नहीं दे सकता कि शीशे में हवा के बुलबुले बिलकुल नहीं होंगे। उन्होंने कहा कि शीशे को रंगीन बनाते समय उसकी पारदर्शिता कुछ कम अवश्य हो जाती है। उनके अनुसार शीशे को एक चौथाई इंच से अधिक मोटा नहीं बनाया जा सकता और बनारस तक सुरक्षित पहुँचाने के लिए शीशे का आकार निर्धारित से आधे आकार का ही होना चाहिए।

अध्याय 12

नक्षत्रों में लिखा!

चमचमाती धूप में गुम्बद झिलमिला रहे हैं। वातावरण में नदी में स्नान कर रहे श्रद्धालुओं का शोरगुल भरा है और मेरे सामने बनारस के गंगा घाट पर पूर्वी भारत के लोगों का मेला एक नए रूप में प्रस्तुत है। मैं एक छोटे-से कमरे की छत पर बैठा हूँ। इस बीच तीन नाविक नाव चलाते हुए वहाँ से गुज़र रहे हैं।

मेरे साथ मुंबई का एक व्यापारी है। वह मेरे पास ही बैठा है और मुझे बता रहा है कि वह बनारस से लौटकर अपना व्यवसाय छोड़ देगा। वह बहुत धार्मिक तथा व्यवहारिक व्यक्ति है। वह स्वयं की जमा निधि के अतिरिक्त, बैंक में पूँजी जमा करना भूला नहीं है। मैं उसे क़रीब एक सप्ताह से जानता हूँ। मुझे वह बहुत सौम्य व्यक्ति लगता है।

'मैं ठीक उसी समय सेवानिवृत्त हो रहा हूँ जिस समय सुधेई बाबू ने ऐसा होने की भविष्यवाणी की थी,' वह मुझे बताता है।

मुझे उसकी अजीब-सी बात सुनकर झटका लगता है।

'सुधेई बाबू! यह कौन है?'

'आपको नहीं पता, वह बनारस के सबसे समझदार ज्योतिषी है?'

'ओह, केवल ज्योतिषी!' मैं तिरस्कारपूर्ण ढंग से उसकी बात दोहराता हूँ। मैंने ऐसे बहुत-से ज्योतिषी मुंबई के मैदान में धूल में बैठे देखे हैं। वे लोग कोलकाता में भी बैठे रहते हैं। वे लगभग भारत के प्रत्येक छोटे शहर में यात्रियों का ध्यान आकर्षित करते मिल जाते हैं। उनमें से अधिकांश मैले-कुचैले दिखते हैं, उनके बाल भी बहुत गंदे रहते हैं। उनके चेहरे पर अंधविश्वास और अज्ञान साफ़ नज़र आता है। सामान के नाम पर उनके पास प्रायः गंदी व

पुरानी क़िताबें और स्थानीय भाषाओं में छपे कुछ पंचांग होते हैं जिनमें पढ़ने योग्य कुछ नहीं होता। मुझे उनकी यह बात बहुत अजीब लगती है कि वे लोग दूसरे लोगों का भविष्य बताने के लिए इतने उत्सुक रहते हैं जबकि उन्हें स्वयं अपने भविष्य का कुछ पता नहीं होता।

'मुझे आपकी बात सुनकर हैरानी हो रही है। क्या यह किसी व्यापारी के लिए सही है कि वह स्वयं को टिमटिमाते तारों के भरोसे छोड़ दे? क्या आपको ऐसा नहीं लगता कि आपका विवेक आपका बेहतर मार्गदर्शन कर सकता है?' मैं सलाह देने के अंदाज़ में अपने व्यापारी मित्र से कहता हूँ।

वह हल्का-सा सिर हिलाकर धैर्यपूर्वक मुस्कराता है।

'अगर ऐसा है तो आप मेरी सेवानिवृत्ति के विषय में की गई भविष्यवाणी के बारे में क्या कहेंगे? कौन इस बात का अंदाज़ा लगा सकता था कि मैं इतनी कम आयु में अचानक अपना काम छोड़ दूँगा? आप तो जानते ही हैं कि मेरी आयु अभी केवल 41 वर्ष है।'

'शायद, यह संयोग है।'

'अच्छी बात है। मैं आपको एक छोटी-सी कहानी सुनाता हूँ। कुछ वर्ष पहले मेरी मुलाक़ात लाहौर में एक बहुत बड़े ज्योतिषी से हुई थी और मैंने उसकी सलाह पर बहुत बड़ा व्यापार समझौता किया था। मैं उस समय एक वृद्ध व्यक्ति के साथ पार्टनरशिप में काम करता था। मेरे पार्टनर ने मुझे कहा कि यह नया काम जोखिम भरा है। उसने मेरे साथ सहमति नहीं जताई क्योंकि वह भागीदारी के लिए तैयार नहीं था। इसलिए हमने अपनी पार्टनरशिप ख़त्म कर दी। मैंने अकेले ही वह कार्य आरंभ किया। मुझे उसमें ज़बरदस्त सफलता मिली और मैंने उस दौरान काफ़ी पैसा भी कमाया। अगर मैंने उस लाहौर वाले ज्योतिषी की बात न मानी होती तो मैं भी काम शुरू करने से पहले भयभीत रहता।'

'तो आपका ऐसा मानना है कि...'

मेरा व्यापारी मित्र इस वाक्य को पूरा कर देता है।

'हमारा जीवन क़िस्मत के भरोसे चलता है और हमारी क़िस्मत, सितारों और ग्रह-नक्षत्रों की स्थिति से पता लगाई जा सकती है।'

मैं अधीर हो उठता हूँ। मेरी मुद्रा से उसे मेरी आपत्ति का अंदाज़ा हो जाता है। 'मैंने भारत में जितने भी ज्योतिषी देखे हैं वह सब निहायत ही अनपढ़ और बेवकूफ़ लगते हैं। मैं इस बात की कल्पना भी नहीं कर सकता कि वह किसी को कोई लाभदायक सलाह दे सकते हैं। आपको उन अज्ञानी लोगों की तुलना, जिनसे आप मिले हैं, सुधेई बाबू जैसे विद्वान व्यक्ति से नहीं करनी चाहिए। यह सच है कि उनमें से अधिकांश लोग ढोंगी होते हैं लेकिन सुधेई बाबू बहुत ही विद्वान ब्राह्मण हैं। वे अपने मकान में रहते हैं। उन्होंने इस विषय पर अनेक वर्ष अध्ययन किया है और उनके पास ऐसी अनेक बहुमूल्य पुस्तकें भी मौजूद हैं।'

मुझे अचानक इस बात का एहसास होता है कि मेरा मित्र बेवक़ूफ़ नहीं है। वह ऐसे आधुनिक हिंदू घराने से ताल्लुक़ रखता है जो बहुत व्यवहारिक है। वह पाश्चात्य आविष्कारों द्वारा प्राप्त संसाधनों का प्रयोग करने से हिचकिचाता नहीं है। वह कुछ मामलों में मुझसे भी काफ़ी आगे है। उसके पास बहुत शानदार चलचित्र वाला कैमरा है, जबकि मेरे पास एक छोटा-सा पुराना कोडक का कैमरा है। उसके नौकर के पास एक थर्मस भी है जिसमें वह ठंडा पानी रखता है, जबकि मेरे पास यात्रा में साथ रखने के लिए ऐसा कोई बंदोबस्त नहीं है। मुझे यह भी पता है कि वह जब मुंबई में होता है तो टेलीफ़ोन का इस्तेमाल करता है, जबकि मैंने यूरोप में रहते हुए भी कभी ऐसा नहीं किया। इसके बावजूद वह ज्योतिष विज्ञान में विश्वास रखता है। मुझे उसके चरित्र में इन असंगत तत्वों को देखकर दुविधा हो रही है।

'हमें एक-दूसरे को समझना चाहिए। आप इस सिद्धांत को पूरी तरह मानते हैं कि प्रत्येक व्यक्ति का व्यवसाय और उसके जीवन की सभी घटनाएँ नक्षत्रों द्वारा नियंत्रित होती हैं, जिनकी दूरी हमारे ग्रह से इतनी ज़्यादा है कि उसकी शायद कल्पना भी नहीं की जा सकती।'

'हाँ, मैं ऐसा मानता हूँ,' वह धीरे-से उत्तर देता है।

मैं कंधे उचका देता हूँ। मुझे नहीं पता कि मुझे आगे क्या कहना चाहिए।

उसकी मुद्रा भी क्षमायाचना वाली है।

'महाशय, आप स्वयं चलकर इस बात की जाँच क्यों नहीं कर लेते? आपके यहाँ एक कहावत है कि खीर का प्रमाण, उसे खाने से ही मिलता है। आप स्वयं इस बात का पता लगा सकते हैं कि सुधेई बाबू आप के विषय में क्या जानते हैं। मैं स्वयं भी ढोंगियों पर विश्वास नहीं करता, लेकिन मुझे उस व्यक्ति की असलियत पर पूरा भरोसा है।'

'मुझे भविष्यवक्ताओं के काम को लेकर संदेह होता है। परंतु फिर भी मैं आपकी बात पर विश्वास कर लेता हूँ। क्या आप मुझे उससे ज्योतिषी के पास लेकर चलेंगे?'

'अवश्य! आप कल आइए। हम लोग साथ में भोजन करेंगे और उसके बाद उनके पास चलेंगे।'

हम लोग मकानों और प्राचीन मंदिरों के बीच से होते हुए अपनी यात्रा आरंभ करते हैं। मैं गंगा-तट पर बनी चौड़ी पत्थर की सीढ़ियों पर नहाते हुए तीर्थयात्रियों को उपेक्षा से देख रहा हूँ और सोचता हूँ कि यद्यपि विज्ञान इस बात के लिए अपनी पीठ ठोंकता है कि उसने अंधविश्वास को काफ़ी हद तक नियंत्रित किया है, मुझे अभी यह सीखना बाक़ी है कि वैज्ञानिक स्वभाव जाँच-पड़ताल को भी नियंत्रित कर सकता है। यदि मेरा व्यापारी दोस्त, भाग्यवाद को लेकर प्रमाण प्रस्तुत कर सकता है तो मैं अवश्य खुले दिमाग़ से उनका अध्ययन करूँगा। अगले दिन मेरा साथी मुझे पतली और संकरी प्राचीन गलियों में ले आता है। हम लोग एक पुराने पत्थर के जर्जर ढाँचे के पास आकर रुक जाते हैं। वह आगे चलकर मुझे

अंधेरे रास्ते से ले जाता है। फिर हम पत्थर की सीढ़ियाँ चढ़ते हैं जिनकी चौड़ाई मनुष्य के शरीर से अधिक नहीं है। हम लोग फिर एक संकरे कमरे से गुज़रते हुए बरामदे में आ जाते हैं।

जंजीर से बंधा एक कुत्ता हमें देख लेता है और बहुत ज़ोर से हमारे ऊपर भौंकता है। बरामदे में चारों ओर बड़े-बड़े मटकों में बिना फूल वाले पौधे लगे हैं। मैं अपने साथी के साथ एक और अंधेरे कमरे में प्रवेश करता हूँ। मेरा पैर कहीं अटककर लड़खड़ा जाता है। मैं झुककर देखता हूँ तो मुझे कमरे में मिट्टी बिखरी नज़र आती है मानो वह बरामदे के फ़र्श पर जानबूझकर बिखेरी गई हो। क्या यह ज्योतिषी नक्षत्रों के अध्ययन के बाद बागवानी का शौक़ भी रखता है?

मेरा साथी ज्योतिषी को पुकारता है। प्राचीन दीवारों से उसका नाम गूँजकर वापस लौट आता है। हम लोग दो-तीन मिनट वहाँ प्रतीक्षा करते हैं फिर ज्योतिषी को बार-बार पुकारते हैं। मुझे लग रहा है कि हम लोग निरर्थक प्रयास कर रहे हैं। इसी बीच मुझे ऊपरी मंज़िल से किसी के नीचे उतरने की आवाज़ आती है और शीघ्र ही कमरे में किसी के क़दमों की आहट सुनाई पड़ती है।

मुझे एक व्यक्ति नज़र आता है। उसके एक हाथ में मोमबत्ती और दूसरे में चाबियों का गुच्छा है। उसके साथ संक्षिप्त बातचीत होती है और फिर वह एक और दरवाज़ा खोलता है जिसमें से हम भीतर प्रवेश कर जाते हैं। वह खिड़की के दो बड़े पर्दे खींच देता है और पल्ले भी ऊपर उठा देता है।

खिड़की से आने वाली रोशनी में ज्योतिषी का चेहरा दमक उठता है। मेरे सामने एक ऐसा व्यक्ति बैठा है जो मांस-मज्जा से निर्मित प्रेत लग रहा है। मैंने इतने दुर्बल व्यक्ति को पहले कभी नहीं देखा। वह इतना कमज़ोर है कि उसे देखकर डर लग रहा है। उसकी काली आँखों के बीच से उभरती सफ़ेदी इतनी ज़्यादा बाहर आ गई है कि मेरा भय बढ़ता जा रहा है।

वह काग़ज़ों से भरी एक बड़ी-सी मेज़ पर बैठ जाता है। वह अच्छी अंग्रेज़ी बोल सकता है और काफ़ी समझाने के बाद मैं उसे इस बात के लिए तैयार कर लेता हूँ कि हम लोग सीधी बातचीत कर सकते हैं।

'कृपया यह जान लीजिए कि मैं केवल एक उत्सुक व्यक्ति के रूप में आया हूँ और मेरी इसमें कोई आस्था नहीं है,' मैं इस तरह अपनी बात शुरू करता हूँ।

वह अपना पतला-सा सिर हिला देता है।

'मैं आपकी जन्म कुंडली बनाऊँगा और फिर आप मुझे बताइए कि क्या आप संतुष्ट हैं।'

'आप इसके लिए कितना पैसा लेते हैं?'

‘मेरी कोई निश्चित फ़ीस नहीं है कुछ लोग मुझे साठ रुपये देते हैं, कुछ लोग बीस रुपये! मैं राशि आपके ऊपर छोड़ता हूँ।’

मैं उसे यह स्पष्ट कर देता हूँ कि इससे पहले कि हम लोग भविष्य की ओर बढ़ें, मैं अतीत के विषय में उसके ज्ञान को जाँचना चाहूँगा। वह इसके लिए तैयार हो जाता है।

वह थोड़ी देर मेरी जन्म तिथि को लेकर कुछ गणना करता है। दस मिनट बाद वह अपनी कुर्सी के पीछे फ़र्श पर नीचे झुककर कुछ पुराने पीले काग़ज़ और पत्तों पर लिखी पांडुलिपियाँ खोजने लगता है। आख़िरकार, वह काग़ज़ की पुरानी पर्चियों का एक छोटा-सा पुलिंदा उठाता है और एक काग़ज़ पर एक विचित्र रेखाचित्र बनाता है। फिर वह कहता है:

‘यह उस समय का नक्षत्र-चित्र है, जब आपका जन्म हुआ था। यह संस्कृत में लिखी सामग्री इस रेखाचित्र के प्रत्येक अंश का अर्थ बताती है। मैं अब आपको बताऊँगा कि आपके सितारे क्या कहते हैं!’

वह उस रेखा-चित्र को ध्यान से कुछ पल देखता है फिर उन पर्चियों में कुछ ढूँढ़ता है और बोलना शुरू करता है:

‘आप एक पाश्चात्य लेखक हैं! क्या मैं सही हूँ?’

मैं सिर हिलाकर हामी भरता हूँ।

उसके बाद वह मेरे युवाकाल के विषय में कुछ बातें बताता है और जल्दी-जल्दी मेरे जीवन के आरंभिक वर्षों की कुछ घटनाओं का उल्लेख भी करता है। कुल मिलाकर, वह मेरे अतीत के बारे में सात महत्त्वपूर्ण बातें बताता है जिनमें से पाँच बिलकुल ठीक हैं और दो बिलकुल ग़लत हैं। इस तरह मैं उसकी शक्तियों और उसके ज्ञान को समझने का प्रयास करता हूँ। इस व्यक्ति की ईमानदारी बहुत पारदर्शी है। मैं इस बात से पूरी तरह आश्वस्त हूँ कि यह मुझे जान-बूझकर धोखा नहीं दे सकता। आरंभिक परीक्षा में पचहत्तर प्रतिशत सफलता आश्चर्यजनक है और इससे मुझे हिंदू ज्योतिष विज्ञान पर थोड़ा भरोसा हो सकता है परंतु यह इस बात का भी संकेत है कि यह पूरी तरह सटीक और त्रुटिहीन विज्ञान नहीं है।

एक बार फिर सुधेई बाबू बिखरे हुए काग़ज़ों में घुस जाते हैं। वह मेरे चरित्र के विषय में भी कुछ बातें बताते हैं जो काफ़ी हद तक ठीक हैं। इसके बाद वह मेरी मानसिक क्षमताओं का भी उल्लेख करता है जिनके सहारे मैं अपने अनुकूल व्यवसाय पर चलने के लिए प्रेरित हुआ हूँ। वह फिर अपना सिर ऊपर उठाता है और पूछता है, ‘क्या मैंने सही बताया है?’ मैं उसकी बात को ग़लत नहीं कह सकता।

वह फिर से रेखा चित्र का अध्ययन करता है और मेरे भविष्य के बारे में बात करने लगता है:

‘यही दुनिया अब आपका घर बन जाएगी। आप बहुत दूर-दराज इलाक़ों में यात्रा करेंगे,

लेकिन आपकी क़लम आपके साथ रहेगी और आप लिखते रहेंगे। वह काफ़ी देर तक मेरे भविष्य के बारे में बताता है परंतु मैं उसकी भविष्यवाणियों पर जाँच-पड़ताल का कोई नियम नहीं लगा सकता इसलिए मैं उसकी कही बातों को वहीं सितारों में लिखी छोड़ देता हूँ!*

अपनी बात समाप्त करने के बाद वह फिर से पूछता है कि क्या मैं संतुष्ट हूँ। उसने इस पृथ्वी पर बिताए मेरे पिछले चालीस वर्षों का काफ़ी सटीक विवरण दिया है। उसने मेरी मानसिक अवस्था और मेरे चरित्र के विषय में भी लगभग सही बातें बताई हैं और इन सबके चलते मैं उसका विरोध नहीं कर पाया हूँ हालाँकि मैं उसका विरोध करने के लिए तैयार होकर आया था!

मैं स्वयं से पूछना चाहता हूँ: क्या यह व्यक्ति केवल बुद्धिमानी से कुछ अनुमान नहीं लगा रहा? मुझे लेकिन यह भी स्वीकार करना होगा कि इसकी कुछ भविष्यवाणियों ने मुझे सचमुच प्रभावित किया है हालाँकि उनमें कितना दम है यह तो आने वाला समय ही बताएगा।

भविष्य से संबंधित प्रश्नों को लेकर मेरा पाश्चात्य रवैया क्या केवल ताश के पत्तों का बनाया घर है? मैं इस विषय में अभी क्या कह सकता हूँ? मैं खिड़की के पास खड़ा होकर सामने एक मकान को देख रहा हूँ। मेरी जेब में चाँदी के सिक्के खनक रहे हैं। मैं फिर अपनी कुर्सी पर आकर बैठ जाता हूँ।

'आपको यह असंभव क्यों लगता है कि इतनी दूरी पर स्थित सितारे लोगों के जीवन को प्रभावित कर सकते हैं?' वह धीमे-से पूछता है। 'क्या सुदूर चंद्रमा के प्रभाव से नदी में ज्वार-भाटा नहीं आते? क्या प्रत्येक महीने में स्त्री के शरीर में परिवर्तन नहीं होते? क्या सूर्य के अनुपस्थिति में लोग निराशा अनुभव नहीं करते?'

'हाँ, यह सही है। परंतु यह ज्योतिष-विज्ञान द्वारा किए जाने वाले दावों से बहुत अलग है। मंगल अथवा बुध ग्रह को इस बात से क्या फ़र्क़ पड़ता है कि मेरा जहाज डूबेगा अथवा नहीं?'

वह मेरी ओर शांत भाव से देखता रहता है।

'यह हो सकता है कि आप इन ग्रहों को केवल आकाश में स्थित प्रतीकों के रूप में देखते हैं। यह सिर्फ़ हमारे स्वभाव को ही नहीं, बल्कि हमारे अतीत को भी प्रभावित करते हैं,' वह उत्तर देता है। 'आप ज्योतिष विज्ञान को तब तक सही ढंग से नहीं समझ सकते जब तक आप इस सिद्धांत को स्वीकार न करें कि व्यक्ति का

बार-बार जन्म होता है और उसकी नियति प्रत्येक जन्म में उसका पीछा करती है। यदि वह अपने दुष्कर्मों के परिणाम से किसी जन्म में बच निकलता है तो वह उसे अगले जन्म में अवश्य दंडित करते हैं और यदि उसे किसी जन्म में अपने अच्छे कर्मों का फल नहीं मिल पाता तो उसे वह फल अगले जन्म में अवश्य मिलता है। मनुष्य की आत्मा का पूर्ण परिष्कार

हो जाने तक कर्म का यह सिद्धांत नियमित रूप से चलता रहता है। लोगों के भाग्य में होने वाले परिवर्तन हमें संयोग मात्र प्रतीत होते हैं। इंसाफ़-पसंद ईश्वर ऐसा कैसे होने दे सकता है? नहीं! हमें विश्वास है कि किसी व्यक्ति की मृत्यु हो जाने पर उसका स्वभाव, उसकी इच्छाएँ, उसके विचार फिर से एक नवजात शिशु के रूप में नए शरीर में प्रवेश करते हैं। हमें अपने पिछले जन्म में किए अच्छे और बुरे कर्मों का फल अपने वर्तमान अथवा आने वाले जन्मों में अवश्य मिलता है। भाग्य को समझने का यही तरीक़ा है। मैं जब कहता हूँ कि किसी दिन आपके जहाज के दुर्घटनाग्रस्त होने की आशंका है तो यह ईश्वर के विधान के अनुसार लिखा हुआ नियम है। यह उसने आपके लिए तय किया है क्योंकि आपने पिछले जन्म में कुछ ग़लत किया होगा। आपके जहाज को दुर्घटनाग्रस्त करने में ग्रह-नक्षत्रों का कोई योगदान नहीं है बल्कि यह आपके पूर्वजन्मों के कर्मों का फल है। आप इससे बच नहीं सकते। ग्रह-नक्षत्रों की स्थिति केवल आपकी नियति का लेखा-जोखा रखती है। परंतु ऐसा क्यों है, यह मैं नहीं कह सकता। किसी मनुष्य का मस्तिष्क ज्योतिष-विज्ञान की रचना नहीं कर सकता। यह हमें प्राचीन समय से प्राप्त हुआ ज्ञान है। इसे हमारे प्राचीन तपस्वियों ने मनुष्य के लाभ के लिए प्रकट किया था।'

मैं जो सुन रहा हूँ, वह संभव हो सकता है। मुझे नहीं पता कि मैं इसके आगे क्या कहूँ। यह व्यक्ति किसी की आत्मा और उसके वैभव को नियति के साथ जोड़ सकता है लेकिन कोई पढ़ा-लिखा पश्चिमवासी इस बात को कभी स्वीकार नहीं करेगा कि उसके किसी कार्य के पीछे उसकी अपनी इच्छा नहीं, बल्कि उसकी नियति है। मैं दुर्बल स्वप्नदृष्टा सुधेई को आश्चर्य से देख रहा हूँ, जो राशियों के संकेतों को पढ़ने का प्रयास कर रहा है। 'क्या आप जानते हैं कि कुछ दक्षिणी इलाक़ों में ज्योतिषियों को पुजारियों के समकक्ष रखा जाता है और कोई भी बड़ा कार्य करने से पहले उनसे सलाह ली जाती है?' वह कहता है। हम यूरोप के लोग ऐसी बातों पर हँसते हैं परंतु हम लोगों को भविष्य बताने वाली पद्धतियों में बिलकुल भरोसा नहीं है। हम लोगों का ऐसा मानना है कि हम स्वतंत्र हैं और इसलिए नियति के हाथों असहाय होकर उसका शिकार नहीं हो सकते।

ज्योतिषी अपने कंधे उचकाकर कहता है।

'हितोपदेश नामक हमारी एक प्राचीन पुस्तक में लिखा है: कोई व्यक्ति भाग्य के निर्देश का विरोध नहीं कर सकता। यह सबके मस्तक पर लिखा रहता है।' वह मुझे इन शब्दों को आत्मसात करने का समय देता है फिर आगे बोलता है:

'आप क्या कर सकते हैं? हमें अपने कर्मों का फल तो भोगना ही होगा।'

परंतु मुझे इस बात पर संदेह है। मैं अपनी भावनाओं को व्यक्त कर देता हूँ।

ज्योतिषी अपनी कुर्सी से उठ जाता है। मैं उसका इशारा समझकर वहाँ से चलने के लिए तैयार हो जाता हूँ। वह धीरे से बोलता है:

'ईश्वर सर्वशक्तिशाली है, उससे कोई नहीं बच सकता। हम में से कौन सचमुच स्वतंत्र है? हम जहाँ भी जाते हैं, ईश्वर वहाँ पर मौजूद है!'

द्वार तक पहुँचने के बाद वह थोड़ा हिचकिचाकर कहता है:

'यदि आप फिर आना चाहें, तो हम लोग इस विषय पर आगे बात कर सकते हैं।'

मैं धन्यवाद देकर उसका निमंत्रण स्वीकार कर लेता हूँ।

'बहुत अच्छा! मैं कल शाम को सूर्यास्त के बाद छह बजे आपकी प्रतीक्षा करूँगा।'



मैं अगले दिन ज्योतिषी के घर पहुँच जाता हूँ। वह जो कुछ बताता है, मेरा उसे स्वीकार करने का कोई इरादा नहीं है। परंतु मैंने उसे अस्वीकार करने की भी कोई योजना नहीं बनाई है। मैं यहाँ उसे सुनने और कुछ सीखने आया हूँ। हालाँकि उसकी यह जानने में रुचि है कि उसकी बातों को प्रयोग द्वारा कितना सत्य माना जा सकता है। मैं इस समय कुछ प्रयोग करने के लिए तैयार हूँ, परंतु यह तभी हो पाएगा यदि मुझे उन प्रयोगों के ठोस कारण दिए जाएँगे। सुधेई बाबू द्वारा बनाई मेरी जन्मपत्री ने अवश्य मुझे थोड़ा रोमांचित किया है और मुझे यह मानना पड़ेगा कि हिंदू ज्योतिष विज्ञान पूरी तरह अंधविश्वास पर आधारित नहीं है। उसमें कुछ अधिक जाँच पड़ताल की आवश्यकता है। इससे मेरी वर्तमान सोच की सीमा दिखाई पड़ रही है।

हम लोग मेज़ पर एक-दूसरे के सामने बैठे हैं। एक छोटी-सी लालटेन जल रही है। भारत के लाखों घर रात में इसी रोशनी से काम चलाते हैं।

ज्योतिषी मुझे बताता है कि उसके घर में चौदह कमरे हैं। वे सब प्राचीन पांडुलिपियों से भरे हुए हैं जिनमें से अधिकांश संस्कृत में लिखी हैं। 'इसी कारण मुझे इतने बड़े घर की आवश्यकता है जबकि मैं यहाँ अकेला रहता हूँ। आइए, मैं आपको अपना संग्रह दिखाता हूँ।'

वह लालटेन उठाकर मुझे एक दूसरे कमरे में ले जाता है। दीवारों के पास बहुत-से खुले बक्से रखे हैं। मैं उनमें से एक में झाँककर देखता हूँ। वे सब संदूक क़िताबों और काग़ज़ों से भरे हैं। यहाँ तक कि कमरे का फ़र्श भी काग़ज़ों से भरा है। वहाँ पत्तों पर लिखी पांडुलिपियाँ पड़ी हैं और कुछ ऐसी क़िताबें हैं जिनके ऊपर का काग़ज़ पीला पड़ चुका है।

मैं काग़ज़ के एक पुलिंदे को उठाता हूँ। प्रत्येक पत्ते पर धुंधले अक्षरों में कुछ लिखा है जिसे मैं पढ़ नहीं सकता। हम एक कमरे से दूसरे कमरे में जाते हैं। सब जगह वही दृश्य दिखाई पड़ता है।

ज्योतिषी का पुस्तकालय बहुत ही अस्त-व्यस्त अवस्था में है किंतु वह मुझे आश्वस्त करता है कि उसे प्रत्येक पुस्तक और काग़ज़ की जानकारी है। मुझे लगता है कि उसने अपने

घर में पूरे हिंदुस्तान का ज्ञान एकत्रित कर रखा है। भारत की अनूठी कहानियाँ इन्हीं पांडुलिपियों और संस्कृत में लिखी पुस्तकों के अपठनीय प्रश्नों में छुपी हैं।

हम लोग अपने स्थान पर लौट आते हैं। ज्योतिषी मुझे बताता है:

‘मेरा लगभग सारा पैसा इन क़िताबों और पांडुलिपियों को ख़रीदने में चला जाता है। इनमें से कुछ तो बहुत ही दुर्लभ हैं और मैंने उन्हें बहुत महँगे दामों में ख़रीदा है। इसलिए मैं आज दिन तक इतना ग़रीब हूँ।’

‘ये पुस्तकें किस विषय पर हैं?’

‘इनमें से अधिकांश पुस्तकें, मनुष्य जीवन और दिव्य रहस्यों पर आधारित हैं, जबकि बहुत-सी अन्य क़िताबें ज्योतिष-विज्ञान पर हैं।’

‘तो आप दार्शनिक भी हैं?’

ज्योतिषी धीमे-से मुस्कराकर कहता है, ‘अच्छा ज्योतिषी होने के लिए अच्छा दार्शनिक होना आवश्यक है!’

‘मुझे क्षमा करें, परंतु मुझे लगता है कि आप इन क़िताबों को कुछ ज़्यादा ही पढ़ते हैं। मैं शुरू में आपकी दुर्बल काया देखकर चकित रह गया था।’

‘इसमें आश्चर्य की कोई बात नहीं है,’ वह शांतिपूर्वक उत्तर देता है। ‘मैंने पिछले छह दिन से कुछ नहीं खाया है।’

मैं ऐसा करने का कारण पूछता हूँ।

‘इसमें पैसे की कोई बात नहीं है। जो स्त्री मेरे लिए खाना पकाती है, वह बीमार है और पिछले छह दिनों से आई नहीं है।’

‘तो आप किसी और स्त्री को क्यों नहीं बुला लेते?’

वह सर हिलाकर मना कर देता है।

‘नहीं! मैं किसी नीच जाति की स्त्री के हाथ का खाना नहीं खा सकता। इसके लिए मैं एक महीने तक भूखा रह सकता हूँ। मुझे उस स्त्री की प्रतीक्षा करनी होगी। मुझे उम्मीद है कि वह एक-दो दिन में लौट आएगी।’

मैं उसे ध्यान से देखता हूँ। मेरा ध्यान उसके जनेऊ पर है। उसकी ठुड्डी के नीचे से तीन धागों वाला जनेऊ जा रहा है। यह प्रत्येक ब्राह्मण को जन्म से लेकर मृत्यु तक पहनना होता है। यह स्पष्ट है कि वह एक ब्राह्मण है।

‘आप इन जातिगत अंधविश्वासों में क्यों उलझे हैं?’ मैं पूछता हूँ। ‘निश्चय ही, इनसे अधिक महत्त्वपूर्ण आपका स्वास्थ्य है।’

‘यह अंधविश्वास नहीं है। प्रत्येक व्यक्ति का चुंबकीय प्रभाव होता है। हालाँकि आपके

पाश्चात्य विज्ञान के पास अभी ऐसे उपकरण नहीं है जिनसे आप उस प्रभाव का पता लगा सकें। जो महिला मेरा खाना पकाती है, उसका प्रभाव भी भोजन में आ जाता है। यदि निम्न जाति की कोई महिला खाना पकाएगी तो उसके बुरे चुंबकीय प्रभाव से मेरा भोजन भी दूषित हो जाएगा।'

'यह कितना विचित्र सिद्धांत है!'

'परंतु यह सत्य है।'

मैं विषय बदल देता हूँ।

'आप कितने समय से ज्योतिषी का कार्य कर रहे हैं?'

'उन्नीस वर्षों से! मैंने अपने विवाह के बाद यह व्यवसाय चुना था।'

'अच्छा, मैं समझ गया।'

'नहीं मैं विधुर नहीं हूँ। मैं जब तेरह साल का था तो ईश्वर से ज्ञान-प्राप्ति की प्रार्थना किया करता था। मेरी मुलाक़ात बहुत-से लोगों से हुई जिन्होंने मुझे विभिन्न पुस्तकों का ज्ञान दिया। मैं अध्ययन से इतना प्रभावित हुआ कि मैं दिन-रात बैठकर पढ़ता रहता था। मेरे माता-पिता ने मेरा विवाह तय कर दिया। कुछ दिन के बाद मेरी शादी हो गई। मेरी पत्नी मुझपर बहुत ग़ुस्सा रहती थी। उसे लगता था कि उसका विवाह एक मानव रूपी पुस्तक से हो गया है। वह आठवें दिन ही मुझे छोड़कर मेरे वाहनचालक के साथ भाग गई।'

सुधेई बाबू रुक जाते हैं। मैं उसकी पत्नी के विषय में कही गई बात पर मुस्कराने से ख़ुद को रोक नहीं सकता। हालाँकि इतनी कम उम्र में विवाह के तुरंत बाद भाग जाना उस समय के रूढ़िवादी भारत में बड़ी बात रही होगी। परंतु स्त्रियों का व्यवहार विचित्र होता है। पुरुष के लिए उसे समझ पाना बहुत कठिन है।

'मुझे उस सदमे से उबरने में थोड़ा समय लगा,' सुधेई बाबू ने कहा। 'फिर मैं उसे भूल गया। मेरी समस्त भावनाएँ लुप्त हो गई। मैंने धीरे-धीरे स्वयं को ज्योतिष-विज्ञान के अध्ययन में व्यस्त कर लिया और मैं दिव्य रहस्यों की खोज में लग गया। मैंने इसके बाद ब्रह्म-चिंता नाम की पुस्तक का अध्ययन आरंभ किया।'

'क्या आप मुझे बता सकते हैं कि यह पुस्तक किस विषय पर है?'

'इस पुस्तक का यदि अनुवाद करें तो इसे 'डिवाइन मैडिटेशन' या फिर 'ब्रह्म की तलाश' अथवा 'ईश्वर-विद्या' कहा जा सकता है। इस पुस्तक में कई हज़ार पृष्ठ हैं, परंतु मैंने केवल इसका एक अंश पढ़ा है। मुझे उसे प्राप्त करने में लगभग बाईस वर्ष लगे क्योंकि यह कई जगह बिखरी हुई थी। मैंने भारत के विभिन्न स्थानों पर रहने वाले एजेंटों के माध्यम से इसे धीरे-धीरे प्राप्त किया है। इसमें उल्लिखित विषयों को बारह प्रमुख भागों में विभाजित किया गया है और उनके भी फिर अनेक उपभाग हैं। इसके मुख्य विषय दर्शन, ज्योतिष-विज्ञान,

योग, मृत्यु पश्चात जीवन, और कई अन्य गहन विषय हैं।'

'क्या मुझे इस पुस्तक का अंग्रेज़ी अनुवाद मिल सकता है?'

वह मना कर देता है।

'मैंने इसके अंग्रेज़ी अनुवाद के विषय में नहीं सुना। बहुत कम हिंदू लोग इस पुस्तक के विषय में जानते हैं। आज तक इसे छिपाकर और रहस्यमय बनाकर रखा गया है। यह मूल रूप से तिब्बत से आई पुस्तक है, जहाँ इसे अत्यंत पवित्र माना जाता है और केवल विद्यार्थियों को ही इसे पढ़ने की अनुमति है।'

'यह पुस्तक कब लिखी गई थी?'

'इसे महर्षि भृगु ने हज़ारों वर्ष पहले लिखा था। यह इतनी पुरानी बात है कि मैं आपको इसकी तिथि भी नहीं बता सकता। इसमें योग की जो पद्धतियाँ बताई गई हैं, वे भारत में मौजूद आधुनिक पद्धतियों से बिलकुल अलग हैं। आपकी योग में भी रुचि है, है ना?'

'आपको कैसे पता?'

इसके उत्तर में सुधेई बाबू वही रेखा-चित्र निकालते हैं जो उन्होंने मेरी जन्मतिथि के अनुसार बनाया था। वह उसके ऊपर पेंसिल घुमाते हैं जिससे उन्हें ग्रह-नक्षत्रों की स्थिति और राशियों का पता लगता है।

'आपका राशिफल देखकर मुझे हैरानी हो रही है। यह यूरोपीय व्यक्ति के लिए असाधारण है। यहाँ तक कि भारतीय व्यक्ति के संदर्भ में भी यह कोई साधारण जन्मपत्री नहीं है। यह बताती है कि आपकी योग के प्रति बहुत रुचि है और यह कि आप संतों-महात्माओं की कृपा प्राप्त करेंगे जो आपको इस विषय को और अधिक समझने में सहायक होंगे। इसके बाद आप योग तक सीमित नहीं रहेंगे, बल्कि अन्य दर्शन सिद्धांतों में भी पारंगत हो जाएँगे।'

वह रुककर सीधे मेरी ओर देखता है। मुझे आभास होता है कि यह कोई ऐसी बात कहने वाला है जो इसके अपने जीवन के किसी रहस्य से संबंधित है। 'दो तरह के संन्यासी होते हैं। एक वह, जो ज्ञान अपने पास ही रखते हैं और दूसरे, वे जो ज्ञान प्राप्त होने के बाद उसे दूसरे लोगों में बाँटते हैं। आपकी जन्मपत्री बताती है कि आप ज्ञान-प्राप्ति के द्वार तक लगभग पहुँच चुके हैं। इसलिए मेरे कहे शब्द बेकार नहीं जाएँगे। मैं अपना ज्ञान आपको देने के लिए तैयार हूँ!'

मैं इस घटनाक्रम के अचानक मुड़ जाने से चकित हूँ। मैं सुधेई बाबू के पास केवल भारतीय ज्योतिष-विज्ञान के दावों की जाँच करने आया था। मैं यहाँ फिर से उनकी बातों को सुनने आया हूँ किंतु अब वे अचानक मेरे गुरु बनना चाहते हैं!

'यदि आप ब्रह्म-चिंता की पद्धतियों का अभ्यास करेंगे तो आपको किसी गुरु की

आवश्यकता नहीं पड़ेगी। आपकी अंतरात्मा ही आपकी गुरु बन जाएगी।'

मुझे अचानक अपनी भूल का अहसास होता है। मैं सोचने लगता हूँ कि क्या इसने मेरे विचारों को पढ़ लिया है।

'आप मुझे हैरान कर देते हैं!' मैं बस इतना ही कह पाता हूँ।

'मैंने पहले भी कुछ लोगों को यह विद्या सिखाई है लेकिन मैं स्वयं को उनका गुरु नहीं मानता। मैं केवल उन्हें अपना भाई या मित्र समझता हूँ। इसलिए मैं आपका भी गुरु नहीं बनना चाहता। महर्षि भृगु की आत्मा केवल मेरे शरीर और मस्तिष्क का उपयोग करके आप तक ज्ञान पहुँचाने का काम करेगी।'

'मुझे समझ नहीं आ रहा कि आप ज्योतिष-विज्ञान के व्यवसाय को योग-पद्धति की शिक्षा से कैसे जोड़ सकते हैं?'

वह अपने हाथ मेज़ पर फैलाकर कहता है: 'इसका स्पष्टीकरण इस तरह दिया जा सकता है कि मैं संसार में रहता हूँ और ज्योतिष-विज्ञान द्वारा लोगों की सेवा करता हूँ। दूसरी बात, मैं ख़ुद को योग-गुरु नहीं मानता क्योंकि ब्रह्म-चिंता में केवल ईश्वर को ही गुरु माना जाता है। केवल वही एकमात्र गुरु हैं जो हम सबके भीतर मौजूद परमात्मा है। वही हमें सब कुछ सिखाते हैं। आप मुझे अपने भाई की तरह मानें और आध्यात्मिक गुरु न समझें। जिन लोगों के गुरु होते हैं, वह उन पर ज़रूरत से ज़्यादा भरोसा करते हैं और अपनी अंतरात्मा की उपेक्षा करते हैं।ू'

'क्या आप अपनी अंतरात्मा के बजाय, ज्योतिष विज्ञान पर अधिक भरोसा करते हैं?' मैं पूछता हूँ।

'आपकी यह बात ग़लत है। मैं अपनी जन्मकुंडली नहीं देखता, बल्कि मैंने उसे कई साल पहले फाड़कर फेंक दिया था।'

मुझे उसकी बात पर बहुत आश्चर्य होता है। वह उत्तर देता है:

'मैं ज्ञान प्राप्त कर चुका हूँ और मुझे मार्गदर्शन के लिए ज्योतिष-विज्ञान की आवश्यकता नहीं है। परंतु जो लोग अब भी अंधकार में भटक रहे हैं, उनके लिए यह लाभदायक है। मैंने अपना जीवन ईश्वर के हाथों में सौंप दिया है। मैं भविष्य अथवा अतीत की परवाह किए बिना अपना कार्य करता हूँ। ईश्वर मुझे जो कुछ देते हैं, मैं सहर्ष स्वीकार कर लेता हूँ। मैंने अपना शरीर, मन, कर्म और भावनाएँ, सबकुछ ईश्वर को अर्पित कर दिए हैं।'

'मान लीजिए, कोई हत्यारा या बदमाश आपको मारने की धमकी दे, तो क्या आप कुछ नहीं करेंगे? आप उसे भी ईश्वर की इच्छा मानकर स्वीकार कर लेंगे?'

'मेरे ऊपर जब भी कोई संकट आता है तो मैं समझ जाता हूँ कि मुझे सिर्फ़ प्रार्थना करनी है। मुझे तत्काल ईश्वर सुरक्षा प्रदान करते हैं। प्रार्थना बहुत आवश्यक है परंतु मनुष्य को

डरना नहीं चाहिए। मैं काफ़ी प्रार्थना करता हूँ और मुझे ईश्वर ने कई बार चमत्कारिक ढंग से बचाया भी है। मैंने बहुत-सी समस्याएँ झेली हैं, परंतु उस दौरान भी मुझे ईश्वर से सहायता मिलती रही है और मैं हर समय ईश्वर पर भरोसा करता हूँ। एक दिन आप भी भविष्य की चिंता करना छोड़ देंगे।'

'इससे पहले मुझे काफ़ी बदलना होगा।'

'आपके भीतर वह परिवर्तन अवश्य आएगा।'

'क्या आपको भरोसा है?'

'हाँ। आप अपनी नियति से भाग नहीं सकते। आध्यात्मिक पुनर्जन्म ऐसी घटना है जो हमें देखनी ही है, चाहे आप इसकी तलाश करें या ना करें।'

'सुधेई बाबू आप बड़ी विचित्र बातें करते हैं।'

ईश्वर की अवधारणा एक ऐसा अज्ञात कारक है जो इस देश में हुई मेरी कई वार्ताओं में घुस ही जाता है। हिंदू लोग निश्चय ही बहुत धार्मिक होते हैं और मैं इस बात से प्रभावित भी होता हूँ। वे जिस तरीक़े से ईश्वर का नाम लेते हैं, क्या उन लोगों के लिए मेरे जैसे संशयवादी पश्चिमवासी का दृष्टिकोण स्वीकार करना संभव है? मुझे लगता है कि ज्योतिषी के साथ ईश्वर के संदर्भ में तर्क करना या कोई प्रश्न करना व्यर्थ होगा। मुझे उसके द्वारा दी गई सैद्धांतिक खुराक की आवश्यकता नहीं है। इसलिए मैं अपनी बात बदलकर, विवादास्पद विषय से हट जाता हूँ। 'हम लोग कुछ और बात करते हैं क्योंकि मेरी भगवान से कभी मुलाक़ात नहीं हुई है।'

वह बड़े ध्यान से मेरी ओर देख रहा है। उसकी काली आँखें मानो मेरी अंतरात्मा की तलाशी ले रही हैं। 'आपकी जन्मपत्री ग़लत नहीं हो सकती, या मुझे अपना ज्ञान किसी अयोग्य व्यक्ति से साझा नहीं करना चाहिए। परंतु नक्षत्र की चाल में कोई त्रुटि नहीं होती। आपको जो बात आज समझ में नहीं आ रही है, वह कुछ समय बाद आपके विचारों का हिस्सा बन जाएगी और फिर दुगुनी तीव्रता के साथ लौटेगी। मैं आपको फिर कहना चाहता हूँ कि मैं आपको ब्रह्म-चिंता का ज्ञान देने के लिए तैयार हूँ।'

'मैं भी वह विद्या सीखने के लिए तैयार हूँ।'



मैं प्रतिदिन शाम को ज्योतिषी के पुराने घर पहुँचता हूँ और ब्रह्म-चिंता का ज्ञान लेना आरंभ कर देता हूँ। वह मुझे लालटेन की मंद और झिलमिलाती रोशनी में प्रतिदिन प्राचीन तिब्बती योग पद्धति का ज्ञान देना शुरू कर देता है।* वह ज्योतिषी मुझे ज्ञान देने के दौरान किसी भी समय आध्यात्मिक श्रेष्ठता अथवा अहंकार से ग्रस्त नहीं दिखाई पड़ता। वह अत्यंत विनम्र है

और हमेशा प्रवचन आरंभ करने से पहले कहता है, 'ब्रह्म-चिंता के इस अध्याय में ऐसा कहा गया है...'

मैंने एक दिन शाम को पूछा कि ब्रह्म-चिंता योग का परम उद्देश्य क्या है?

'इसके द्वारा हम ध्यान की गहन अवस्था में जाने का प्रयास करते हैं क्योंकि वही एकमात्र ऐसी स्थिति है जब मनुष्य को इस बात का पक्का प्रमाण मिल जाता है कि वह वास्तव में एक आत्मा है। यह जान लेने के बाद ही वह आसपास की चीज़ों से अपने मस्तिष्क को मुक्त कर सकता है। ऐसा होने के बाद, वे वस्तुएँ लुप्त होने लगती हैं और बाहर का संसार ओझल होने लगता है। मनुष्य यह जान लेता है कि उसकी अंतरात्मा, उसके भीतर सजीव एवं चेतन रूप में मौजूद है। उससे मिलने वाले आनंद, शांति एवं शक्ति अवर्णनीय हैं। मनुष्य को केवल प्रमाण की आवश्यकता होती है कि उसके भीतर दिव्य और अमर जीवन मौजूद है और फिर वह इस बात को कभी नहीं भूलता।'

मेरे मन में एक संशय उठ रहा है:

'आपको इस बात पर पूर्ण विश्वास है कि यह सब स्व-निर्देश का रूप नहीं है?'

ज्योतिषी के होंठों पर मुस्कान आ जाती है।

'माँ जब बच्चे को जन्म देती है तो क्या उसे एक पल के लिए भी यह संदेह हो सकता है कि उसके साथ क्या हो रहा है? वह चेतना में लौटकर जब अपने उस अनुभव को देखती है तो क्या वह यह सोच सकती है कि वह सिर्फ़ एक स्व-निर्देश था? वह जब बच्चे को साल-दर-साल अपने सामने बड़ा होता देखती है तो क्या उसे उसके अस्तित्व पर अविश्वास होता है? इसी तरह, आध्यात्मिक पुनर्जन्म की प्रसव पीड़ा भी मनुष्य के जीवन में एक महत्त्वपूर्ण घटना है, जिसे वह भूल नहीं सकता। वह व्यक्ति को स्थाई रूप से बदल देती है। कोई व्यक्ति जब उस गहन अवस्था में प्रवेश करता है तो दिमाग़ के भीतर एक तरह का ख़ालीपन बन जाता है। उस ख़ाली स्थान को ईश्वर या - चूँकि आप इस शब्द को नहीं समझते - कहें, आत्मा या कोई अन्य सर्वोच्च शक्ति भर देती है और तब व्यक्ति परम आनंद से भर जाता है। उसके मन में संपूर्ण सृष्टि के प्रति अथाह प्रेम जाग्रत हो जाता है। ऐसे में किसी देखने वाले को शरीर ध्यान में मग्न नहीं, अपितु मृत लगता है क्योंकि उस सर्वोच्च अवस्था में कुछ पल के लिए श्वास भी रुक जाती है।'

'क्या यह ख़तरनाक नहीं है?'

'नहीं। यह अवस्था पूर्ण एकांत में प्राप्त होती है या किसी मित्र को नज़दीक रखा जा सकता है। मैं इस तरह के गहन ध्यान में कई बार चला जाता हूँ और अपनी इच्छा से ही बाहर निकलता हूँ। मैं उस अवस्था में दो या तीन घंटे तक रह सकता हूँ और उसमें प्रवेश करने से पहले मैं उस समय सीमा को निर्धारित कर लेता हूँ यह बहुत शानदार अनुभव है क्योंकि आप जिस संसार को बाहर से देखते हैं, मैं उसे अपने भीतर देखता हूँ। इसलिए मैं कहता हूँ कि

आप जो सीखना चाहते हैं, वह अपनी अंतरात्मा द्वारा सीख सकते हैं। आपको ब्रह्म-चिंता का ज्ञान लेने के बाद किसी गुरु की आवश्यकता नहीं पड़ेगी। आपको किसी अन्य के मार्गदर्शन की ज़रूरत नहीं होगी।'

'आपने कभी किसी को गुरु नहीं बनाया?'

'नहीं। मैंने जबसे ब्रह्म-चिंता का रहस्य जाना है, तब से मैंने किसी गुरु की तलाश नहीं की। हालाँकि समय-समय पर मेरे पास कुछ बड़े गुरु आते रहे हैं। ऐसा तब होता है जब मैं ध्यान में लीन होता हूँ। महान संत और तपस्वी उस समय मानसिक रूप में मेरे सामने प्रकट होते हैं और सिर पर हाथ रखकर मुझे आशीर्वाद देते हैं। मैं फिर कहता हूँ कि आप अपनी अंतरात्मा की आवाज़ सुनिए और आपका गुरु आपके भीतर स्वयं प्रकट हो जाएगा।'

अगले दो मिनट तक हम शांत रहते हैं। ज्योतिषी विचारों में खोया है। वह फिर धीमे-से और विनम्र भाव से मुझसे कहता है:

'एक बार मुझे ध्यान में यीशु मसीह ही नज़र आए थे।'

'आप मुझे चकित कर देते हैं।'

ज्योतिषी मुझे यह बात समझाने का प्रयास नहीं करता। वह अचानक अपने आँखों के सफ़ेद हिस्से को ऊपर की ओर मोड़ लेता है। मैं उसे देखकर घबरा जाता हूँ। हम फिर एक मिनट तक शांत रहते हैं। वह अपनी आँखों को फिर सामान्य कर लेता है। मुझे राहत मिलती है।

वह फिर से कुछ बात करता है। उसके चेहरे पर मुस्कान है।

'यह गहन ध्यान इसलिए महान है क्योंकि जब व्यक्ति इस अवस्था में होता है तो मृत्यु भी उसका कुछ नहीं बिगाड़ सकती। हिमालय के तिब्बती क्षेत्र में कुछ योगी हैं जिन्होंने ब्रह्म-चिंता में महारत हासिल कर ली है। उन्होंने अपनी इच्छा से स्वयं को पर्वत की गुफ़ाओं तक सीमित कर लिया है। वे सदा उसी अवस्था में रहते हैं। उस स्थिति में उनकी धड़कन रुक जाती है, उनका हृदय शांत हो जाता है और उनके शरीर में रक्त का प्रवाह भी रुक जाता है। व्यक्ति उन्हें देखकर मृत समझ सकता है। उन्हें देखकर आप यह मत सोचिए कि यह गहरी निद्रा में सो गए हैं क्योंकि वे, आपकी और मेरी तरह पूरी चेतना में हैं। वह भीतरी संसार में प्रवेश कर जाते हैं जहाँ उन्हें श्रेष्ठ जीवन की प्राप्ति होती है। उनका मस्तिष्क, शरीर द्वारा निर्धारित सीमाओं के पार चला जाता है और उन्हें अपने भीतर संपूर्ण सृष्टि का एहसास होता है। एक दिन वे अपने ध्यान से बाहर निकलेंगे परंतु तब तक उनकी आयु सैकड़ों वर्ष की हो चुकी होगी!'

मैं एक बार फिर अमर जीवन की अविश्वसनीय परंपरा के बारे में सुन रहा हूँ। मुझे लगता है कि मैं पूर्व दिशा में जहाँ भी जाऊँगा, यह बात मेरा पीछा करती रहेगी। क्या मेरा सामना

कभी सचमुच किसी अमर व्यक्ति से हो पाएगा? क्या तिब्बती वातावरण की गोद में विकसित इस प्राचीन जादू को वैज्ञानिक और मनोवैज्ञानिक योगदान के रूप में पाश्चात्य जगत कभी स्वीकार कर पाएगा? कौन जानता है?



ब्रह्म-चिंता योग में मेरा अंतिम सबक़ समाप्त हो गया है। मैं एकांत में रहने वाले उस ज्योतिषी को प्रेरित करने की कोशिश कर रहा हूँ कि वह घर से बाहर निकले और अपने हाथ-पैरों को थोड़ा हिलाए। हम लोग भीड़-भाड़ वाले बाजार से बचने के लिए संकरी गलियों में टहलते हैं। अपने ज़बरदस्त भीड़-भाड़ और गंदे माहौल के बावजूद, बनारस में लोगों को देखने के लिए रंगीन और तरह-तरह के नज़ारे उपलब्ध हैं।

दोपहर हो चुकी है। ज्योतिषी छतरी खोल लेता है क्योंकि धूप तेज़ है। उसकी दुर्बल काया के कारण हम जल्दी नहीं चल पा रहे हैं और इसलिए हम अपना रास्ता बदलकर यात्रा को छोटा कर देते हैं।

हम पीतल के कारीगरों की गली में प्रवेश करते हैं। वहाँ हमारे आसपास कारीगरों के हथौड़ों की आवाज़ गूँज रही है और उनके बनाए हुए पीतल के छोटी-छोटी चीज़ें तेज़ धूप में चमचमा रही हैं। यहाँ भी मैं देख सकता हूँ कि हिंदू देवी-देवताओं की बहुत-सी पीतल की मूर्तियाँ बेचने के लिए रखी हुई हैं।

एक गली में सड़क के किनारे एक बूढ़ा व्यक्ति बैठा है। वह मुझे दुर्बल आँखों से दयनीय चेहरा बनाकर देख रहा है। वह मुझसे पैसे माँगता है।

इसके बाद हम अनाज के व्यापारियों की गली से गुज़रते हैं। वहाँ लकड़ी के चबूतरों पर लाल और सुनहरे रंग के अनाज का ढेर लगा है। दुकानदार पैर मोड़कर सामान बेचने के लिए बैठे हैं। वह हम लोगों को एक नज़र देखते हैं और फिर अपने ग्राहकों की प्रतीक्षा करने लगते हैं।

वहाँ की गलियों में तरह-तरह की मिलीजुली गंध महसूस हो रही हैं। हम लोग नदी के निकट आ जाते हैं और फिर सीधा उस स्थान पर पहुँचते हैं जो भिखारियों का मानो गढ़ है। वहाँ बैठे दुर्बल भिखारी स्वयं को सड़कों पर घसीटते रहते हैं। उनमें से एक मेरे पास आकर मुझे देखने लगता है। उसके चेहरे पर अवर्णनीय दु:ख अंकित है। उसे देख कर मेरा हृदय द्रवित हो गया है।

वहाँ से आगे अचानक मेरी नज़र एक वृद्ध महिला पर पड़ती है। उसका शरीर लटकी हुई खाल और बाहर निकलती हड्डियों का ढाँचा बनकर रह गया है। वह मुझे देख रही है। मैं अपना पर्स निकालता हूँ तो वह सक्रिय हो जाती है और अपना दुबला हाथ आगे बढ़ाकर

मुझसे पैसे ले लेती है।

मैं उन लोगों को देखकर अपने सौभाग्य से संतुष्ट हूँ कि मेरे पास खाने के लिए पर्याप्त भोजन, अच्छे कपड़े, अच्छा घर और सभी सुख-सुविधाएँ हैं। मुझे उन दुर्भाग्यपूर्ण लोगों की आँखें देखकर ग्लानि महसूस होती है। मैं किस अधिकार से इतने पैसों का हक़दार हूँ? मेरे पास इतने पैसे हैं जबकि उन ग़रीबों के पास तन पर लपेटने के लिए चिथड़ों के अतिरिक्त कुछ नहीं है। मान लीजिए, नियतिवश मैं उनमें से किसी की जगह पैदा हुआ होता! मुझे कुछ देर ये भयानक विचार परेशान करते हैं पर फिर मेरा डर धीरे-धीरे समाप्त हो जाता है।

संयोग का क्या अर्थ है, जिसके चलते एक व्यक्ति गंदे चिथड़ों में सड़क के किनारे बैठा है और दूसरा व्यक्ति, नदी के पास रेशमी वस्त्रों में आराम कर रहा है? जीवन सचमुच एक पहेली है! मैं इसे समझ नहीं सकता।

'चलिए, हम यहाँ बैठते हैं,' ज्योतिषी मुझसे कहता है। हम गंगा किनारे छायादार स्थान पर बैठ जाते हैं और नदी के प्रवाह को देखने लगते हैं। वहाँ तीर्थयात्री आते-जाते रहते हैं। हमें वहाँ से दो पतली मीनारें नज़र आ रही हैं जो लगभग तीन सौ फ़ीट ऊँची हैं। वे औरंगजेब की मस्जिदें हैं। ये इस हिंदू शहर में स्थित अत्यंत प्राचीन समय का मुस्लिम ढाँचा है।

ज्योतिषी ने भिखारियों के संदर्भ में मेरी उदास भावनाओं को देख लिया है। वह मुझसे कहता है: 'भारत एक ग़रीब देश है। यहाँ के लोग निष्क्रियता की अवस्था में डूब चुके हैं। विदेशी जाति के लोगों में कुछ बहुत अच्छी बातें हैं और मैं मानता हूँ कि ईश्वर ने उन्हें हमारे हित के लिए यहाँ भेजा था। उनके आने से पहले जीवन बहुत असुरक्षित था, न्याय-व्यवस्था नहीं के बराबर थी। मुझे उम्मीद है कि विदेशी भारत को छोड़कर नहीं जाएँगे। हमें उनकी सहायता की आवश्यकता है। परंतु हमें उनकी सहायता, बलपूर्वक नहीं अपितु मैत्रीपूर्ण ढंग से मिलनी चाहिए। दोनों ही देशों की नियति एक-दूसरे की पूरक है।'

'ओह, आपका भाग्यवाद फिर लौट आया!'

वह मेरी टिप्पणी को नज़रअंदाज़ कर देता है और चुप हो जाता है। वह कुछ देर बाद फिर बोलता है:

'ये लोग ईश्वरीय इच्छा से कैसे बच सकते हैं? दिन के बाद रात और रात के बाद दिन का आना निश्चित है। इसी तरह राष्ट्रों के इतिहास के साथ भी होता है। विश्व में महान परिवर्तन होते हैं। भारत निष्क्रियता में डूबा हुआ देश है, परंतु यदि उसमें आकांक्षाओं और इच्छाओं के साथ सक्रियता का संचार हो जाए तो वह बदल सकता है। यूरोप में व्यवहारिक गतिविधियाँ अधिक हैं परंतु उसका भौतिक बल समाप्त हो जाएगा। उसे दोबारा श्रेष्ठ आदर्शां का रुख करना होगा। वह भीतरी सुख की तलाश में निकलेगा और एक दिन यही अमेरिका के साथ भी होगा।'

मैं चुपचाप उसकी बात सुन रहा हूँ।

'यही कारण है कि हमारे देश के दार्शनिक और आध्यात्मिक ज्ञान का प्रभाव, समुद्र की लहरों की तरह पश्चिम दिशा की ओर बढ़ेगा। अनेक विद्वानों ने हमारी संस्कृत पांडुलिपियों और अन्य धार्मिक पुस्तकों का अनुवाद पहले ही कई विदेशी भाषाओं में कर दिया है। आज भी भारत, नेपाल और तिब्बत के पुस्तकालयों में बहुत-से मूल्यवान ग्रंथ छिपे पड़े हैं। उन सबको भी संसार के सामने लाने की आवश्यकता है। जल्द ही, समय आएगा जब भारत का प्राचीन दर्शनशास्त्र और गूढ़ ज्ञान, पाश्चात्य जगत के व्यवहारिक विज्ञान के साथ मिल जाएगा। प्राचीन रहस्यों का स्थान अब आवश्यकताओं को लेना होगा। मुझे ख़ुशी है कि किसी दिन यह सब अवश्य होगा।'

मैं गंगा के पानी में मौजूद हरेपन को देख रहा हूँ। वह नदी इतनी शांत है, ऐसा लगता है मानो वह रुकी हुई है। उसकी सतह पर सूर्य की रोशनी चमचमा रही है।

ज्योतिषी फिर बोलना शुरू करता है:

'प्रत्येक जाति के लोगों के भाग्य का बहुत महत्त्व है। इसी तरह प्रत्येक व्यक्ति की नियति को भी पूर्ण किया जाना चाहिए। ईश्वर सर्वशक्तिमान है। लोग और राष्ट्र अपने स्व-अर्जित भाग्य से बच नहीं सकते, परंतु वे स्वयं को समस्याओं और संकटों से अवश्य बचा सकते हैं।'

'यह सुरक्षा किस तरह प्राप्त की जा सकती है?'

'प्रार्थना के द्वारा! व्यक्ति जब बालक की भाँति ईश्वर का ध्यान करता है और किसी भी कार्य को करने से पहले केवल हांठों से नहीं परंतु हृदय से ईश्वर को याद करता है तो उसे यह सुरक्षा प्राप्त हो जाती है। अपने अच्छे दिनों को ईश्वर का आशीर्वाद मानकर आनंद लेना चाहिए तथा संकट के समय को भीतरी रोग के उपचार हेतु औषधि के समान समझना चाहिए। ईश्वर से डरना नहीं चाहिए क्योंकि वह बहुत दयालु हैं।'

'क्या आप नहीं मानते कि ईश्वर इस दुनिया से बहुत दूर रहता है?'

'नहीं! ईश्वर आत्मा के रूप में लोगों के भीतर ही विद्यमान है। वह इस सृष्टि में सर्वत्र मौजूद है। आप जब भी प्रकृति के सौंदर्य को देखें और किसी सुंदर परिदृश्य पर नज़र डालें तो केवल यह न समझें कि वह अपने आप सुंदर है, बल्कि आपको याद रखना चाहिए कि उसमें ईश्वर मौजूद है इसलिए वह सुंदर है! आपको प्रत्येक वस्तु और व्यक्ति में ईश्वर का दर्शन करना चाहिए। किसी के बाहरी रूप में इतना मत उलझिए कि आप उसके भीतरी स्वरूप को ही भूल जाएँ।'

'सुधेई बाबू, आप नियति, धर्म और ज्योतिष-विज्ञान के सिद्धांतों को बड़े अजीब ढंग से मिला देते हैं।'

वह मेरी ओर देखने लगता है और फिर कहता है:

'ऐसा क्यों? यह सिद्धांत मैंने नहीं बनाए। यह हमें पुराने काल से प्राप्त हुए हैं। नियति की

शक्ति, सृष्टिकर्ता की पूजा तथा ग्रह-नक्षत्रों का प्रभाव, ये सब अपने पूर्वजों से ज्ञात हुआ है। वे लोग उतने असभ्य नहीं थे, जितना आप पश्चिमवासी सोचते हैं। परंतु क्या मैंने यह भविष्यवाणी नहीं की कि इसी शताब्दी से पहले, पाश्चात्य जगत लोगों के जीवन को प्रभावित करने वाली इन अदृश्य शक्तियों की वास्तविकता को समझ लेगा?'

'पाश्चात्य जगत के लिए यह बहुत कठिन है कि वह अपनी जन्मजात अवधारणा छोड़ दे। वे यही मानते हैं कि व्यक्ति अपनी इच्छा से अपने जीवन का निर्माण और विध्वंस करता है।'

'जो कुछ होता है वह ईश्वर की इच्छा से होता है। हम जिसे अपनी इच्छा समझते हैं, वह वास्तव में ईश्वर की इच्छा होती है। ईश्वर, हम मनुष्यों को पूर्वजन्मों के कर्मों के हिसाब से अच्छे और बुरे फल देता है। इसलिए उसकी इच्छा को स्वीकार करना ही श्रेष्ठ है। यदि हम कठिनाई और दु:ख के समय, ईश्वर का ध्यान करें तो हमें कोई परेशानी नहीं होगी और इससे हमें कष्ट को झेलने की शक्ति भी मिलती है।'

'हम अभी जिन दुर्भाग्यपूर्ण भिखारियों से मिले हैं, उनके भरोसे हम मान लेते हैं कि आप सही कह रहे हैं!'

'मेरे पास आपकी बात का बस यही उत्तर है। यदि आप मेरी सिखाई ब्रह्म-चिंता के मार्ग का अनुसरण करेंगे और अपनी अंतरात्मा के बताए रास्ते पर चलेंगे तो आपकी समस्याएँ अपने आप समाप्त हो जाएँगी।'

मुझे लगता है कि ज्योतिषी अब अपनी तार्किक संभावनाओं की चरम सीमा तक पहुँच चुका है। मुझे यहाँ से आगे अपना मार्ग स्वयं खोजना होगा। मेरे कोट की एक जेब में एक तार है, जिसके अनुसार मुझे जल्द ही बनारस से बाहर निकलकर ट्रेन पकड़नी है। मेरे कोट की दूसरी जेब में कोडक कैमरा पड़ा है। मैं ज्योतिषी का फ़ोटो लेने का आग्रह करता हूँ, परंतु वह विनम्रतापूर्वक मना कर देता है।

मैं फिर से ज़ोर देता हूँ।

'परंतु क्यों?' वह विरोध करता है। 'मेरा चेहरा गंदा और कपड़े बहुत मैले हैं।'

'मैं आपसे विनती करता हूँ। आपका फ़ोटो मुझे कई वर्ष बाद भी आपकी याद दिलाएगा।'

ज्योतिषी विनम्र भाव से उत्तर देता है कि उसे याद करने का सबसे अच्छा तरीक़ा धार्मिक विचार और निस्वार्थ कर्म हैं।

मुझे अनिच्छापूर्वक उसकी बात माननी पड़ती है। मैं कैमरा जेब वापस रख लेता हूँ।

वह उठकर जाने लगता है तो मैं उसके पीछे चल पड़ता हूँ। तभी मेरी नज़र एक व्यक्ति पर पड़ती है जो धूप से बचने के लिए बांस की गोल छतरी के नीचे बैठा है। उसके चेहरे पर

ध्यान का तेज़ है और उसके भगवा वस्त्रों से मैं अंदाज़ लगा सकता हूँ कि वह कोई उच्च कोटि का संत है।

वहाँ से मैं पैसे बदलने की दुकान पर पहुँचता हूँ। फिर एक गाड़ी लेता हूँ और फिर हमारे रास्ते अलग हो जाते हैं।



मैं अगले कुछ दिनों तक लगातार यात्रा करता रहता हूँ। मैं रास्ते में सरकारी अधिकारियों तथा भ्रमण-प्रेमियों के लिए आरक्षित एक अतिथि-गृह में रात बिताता हूँ।

इनमें से एक अतिथि-गृह में कोई सुविधा उपलब्ध नहीं है। वहाँ बड़ी संख्या में चीटियाँ घूम रही हैं। दो घंटे कष्ट सहने और उनसे बचने का प्रयास करने के बाद, मैं बिस्तर से उतरकर कुर्सी पर रात बिताने का फ़ैसला करता हूँ।

समय धीरे-धीरे बीत रहा है। मेरा ध्यान अपने आसपास की चीज़ों से हटकर बनारस के ज्योतिषी के ज़बरदस्त भौतिकवादी दर्शन पर रुक गया है।

मुझे वे भिखारी भी याद आ रहे हैं जो सड़क किनारे भूखे बैठे थे। उनका जीवन इतना कठोर है कि वह न तो ठीक से जी पाते हैं और न ही मर सकते हैं। कोई धनाढ्य मारवाड़ी सेठ उनके निकट से बड़ी और सजीली गाड़ी में गुज़रता है, परंतु वे लोग उसे भी ईश्वरीय इच्छा मानकर स्वीकार कर लेते हैं, जैसे उन्होंने अपने कष्टों को स्वीकार कर लिया है। गर्मी-भरे इस स्थान पर दयनीय हालत में बैठा हर कोई अपनी स्थिति से संतुष्ट नज़र आता है। यह भाग्यवाद अधिकांश भारतीय लोगों के भीतर कितना गहरा उतर चुका है!

मुझे एहसास होता है कि किसी पाश्चात्य व्यक्ति के लिए, जो स्वतंत्रता का पक्षधर है, पूर्व के किसी भाग्यवादी व्यक्ति के साथ तर्क करना व्यर्थ है। भाग्यवादी व्यक्ति के लिए समस्या का केवल एक पक्ष है कि उसने बिना प्रश्न किए यह स्वीकार कर लिया है कि उसे कोई समस्या नहीं है! भाग्य पूरी तरह उस पर हावी है और इससे अधिक वह कुछ नहीं कह सकता।

कौन आत्म-निर्भर विदेशी यह सुनना पसंद करेगा कि हम लोग भाग्य की डोरी से बंधी कठपुतलियाँ हैं जिन्हें कोई अदृश्य हाथ, ऊपर-नीचे या दाएँ-बाएँ हिलाता है? मुझे आज भी नेपोलियन की सेना द्वारा ऐल्प्स के पर्वतों को पार करने से पहले कही गई उसकी शानदार बात याद है:

'असंभव? ऐसा कोई शब्द, मेरे शब्दकोश में नहीं है!'

मैंने नेपोलियन का जीवन बहुत ध्यान से पढ़ा है। मुझे उसके द्वारा सेंट हेलेना पर लिखी पंक्तियाँ याद आ रही हैं:

‘मैं हमेशा से भाग्यवादी रहा हूँ। मेरी नियति में जो लिखा है, वही लिखा है। मेरे सितारे गर्दिश में थे, मेरे हाथों से शासन की बागडोर छूट रही थी और फिर भी मैं कुछ नहीं कर सका।’

ऐसे विरोधाभासी विचार रखने वाला व्यक्ति उस रहस्य को नहीं सुलझा सका। मुझे संदेह है कि कोई भी इसे पूरी तरह सुलझा पाएगा। मुझे लगता है जब से मनुष्य के मस्तिष्क ने कार्य करना आरंभ किया है, इस प्राचीन समस्या पर उत्तरी ध्रुव से दक्षिणी ध्रुव तक के लोगों ने इसपर चर्चा की है। कुछ समाजशास्त्रियों ने हमेशा की तरह इस समस्या को अपने ढंग से सुलझा लिया होगा, परंतु दार्शनिक लोग अभी इसके दोनों पक्षों पर विचार कर रहे हैं और वे इसमें संतुलन नहीं बना पाए हैं।

मुझे ज्योतिषी द्वारा अपने विषय में किया सटीक विश्लेषण याद है। मैंने कई बार उस पर विचार किया और मुझे महसूस हुआ कि पूर्वी जगत की कुछ भाग्यवादी और मूर्खतापूर्ण बातें, मेरे सिर में भी थोड़ी-थोड़ी घुस गई हैं। उस ज्योतिषी ने मेरे अतीत के विषय में सटीक विवरण दिए थे तो मुझे संकोच हुआ था। मेरी इच्छा, भाग्य एवं कर्म की समस्या पर एक मोटी पुस्तक तैयार करने की है, परंतु मैं जानता हूँ कि भाग्यवादी विचारधारा पर लिखना बेकार है। ऐसा करने से हो सकता है मैं उसी अंधकार में वापस लौट जाऊँ, जहाँ से निकला था। इसके लिए ज्योतिष विज्ञान की समस्याओं पर भी चर्चा करनी होगी और इससे मेरा कार्य अधिक जटिल हो जाएगा। हालाँकि वह दिन दूर नहीं जब आधुनिक आविष्कारों के माध्यम से हम लोग सुदूर ग्रहों की यात्रा कर सकेंगे! उस समय शायद यह जानना संभव होगा कि क्या नक्षत्रों की आकृतियाँ सचमुच हमारे जीवन को प्रभावित करती हैं। इस बीच हम एकाध और ज्योतिषियों की शक्ति की जाँच कर सकते हैं। हमें यह ध्यान रखना होगा कि सुधेई बाबू ने हमें इन चीज़ों की कमियों के विषय में चेतावनी दी थी और ज्योतिष-विज्ञान के उस अंश पर भी रोशनी डाली थी जो संसार को फ़िलहाल ज्ञात है।

यदि हम मान लें और स्वीकार भी कर लें कि भविष्य नाम का कोई चौथा आयाम मौजूद है, तो क्या अपने भाग्य के उन रहस्यों को जानना उचित होगा, जो हमारी आँखों से फ़िलहाल छिपे हुए हैं?

इस प्रश्न के साथ मेरे विचार ख़त्म हो रहे हैं और मुझे नींद आ रही है।

कुछ दिन बाद, मैं बनारस से सैकड़ों मील दूर किसी अन्य शहर में चला जाता हूँ। तभी मुझे बनारस में हुए दंगों की सूचना मिलती है। मुझे पता लगा है कि हिंदू मुसलमानों के बीच दंगे भड़क गए हैं। उनके बीच बहुत छोटी बात हुई थी लेकिन कुछ बदमाश लोग उसे बढ़ा-चढ़ाकर धार्मिक रूप दे देते हैं और उसकी आड़ में लोग लूट और हत्या को अंजाम देते हैं।

शहर में कई दिनों तक आतंक व्याप्त रहता है। उस दौरान बहुत लोगों के सिर फूटते हैं, उन्हें चोटें आती हैं और बिना सोचे-समझे लोगों को मार डाला जाता है। मुझे ज्योतिषी की

चिंता हो रही है परंतु उससे संपर्क स्थापित करना असंभव है। डाकिए भी उन गलियों में जाने से घबराते हैं। किसी निजी चिट्ठी अथवा तार का वहाँ पहुँचना संभव नहीं है।

मैं बनारस में दंगे शांत होने की प्रतीक्षा करता हूँ और फिर तत्काल उस शहर के लिए एक तार भेजता हूँ। उसके उत्तर में मुझे ज्योतिषी ने धन्यवाद का सादा ख़त भेजा है, जिसमें उसने लिखा है कि ईश्वर की कृपा से वह सुरक्षित है। उसी काग़ज़ के पीछे, ज्योतिषी ने ब्रह्म-चिंता योग के अभ्यास के दस नियम भी लिख कर दिए हैं!

---

* उसकी अनेक भविष्यवाणियों में से एक, जिसे मैंने उस समय मज़ाक़ में उड़ा दिया था और उसे असंभव करार दिया था, आज सत्य होती नज़र आ रही है। परंतु एक और घटना उसकी बताई हुई तिथि पर नहीं हुई। सुधेई बाबू की अन्य भविष्यवाणियों को जाँचने के लिए हमें अभी कुछ समय प्रतीक्षा करनी होगी।

* मैं उस पद्धति का विस्तृत विवरण इस पुस्तक में शामिल नहीं कर रहा हूँ। किसी पाश्चात्य पाठक को उससे कोई लाभ भी नहीं होने वाला है। उस विद्या का सार यह है कि उसमें ध्यान लगाने की ऐसी पद्धतियाँ हैं, जिनका उद्देश्य दिमाग़ को ख़ाली करना है। उस अभ्यास को करने के छह तरीक़े हैं और उस मार्ग पर आगे बढ़ने के दस चरण हैं। किसी भी औसत यूरोपीय के लिए यह न सही है और न ही आवश्यक कि वह किसी ऐसी पद्धति का अभ्यास करे, जो केवल वन अथवा पर्वतों में स्थित मठों में की जा सकती हैं और हानिकारक भी सिद्ध हो सकती हैं। जो लोग इस तरह के अभ्यासों को अपरिपक्व ढंग से करने का प्रयास करते हैं, उनके पागल हो जाने की पूरी संभावना रहती है।

अध्याय 13

दयालबाग: ईश्वर की वाटिका

मैं उत्तरी भारत के मैदानों से होता हुआ एक अनूठी छोटी-सी जगह पर पहुँच गया हूँ। इस शहर का नाम बड़ा काव्यात्मक है। इसे दयालबाग यानी ईश्वर की वाटिका कहते हैं।

दयालबाग पहुँचने वाला एक मार्ग लखनऊ से आरंभ होता है, जहाँ मुझे सुंदरलाल निगम नाम का एक गाइड, दार्शनिक और मित्र मिला है। हम लोग शहर में टहलते हुए दर्शनशास्त्र पर बात करते हैं। मेरे अनुमान से उसकी आयु इक्कीस या बाईस वर्ष से अधिक नहीं है, परंतु वह अपने अन्य भारतीय भाइयों की भाँति जल्दी परिपक्व हो गया है।

हम लोग पुराने मुगल महलों को देखते हुए चल रहे हैं। हम उस नियति के विषय में भी चर्चा कर रहे हैं जिसने मुगल राजाओं का साम्राज्य मिटा दिया। मैं एक बार फिर गौरवशाली भारत की प्राचीन वास्तुशिल्प कला से प्रभावित हुआ हूँ। कलाकृतियाँ और बारीक रंग-बिरंगे चित्र उस समय के रचनाकारों के परिष्कृत रुचि को दर्शाते हैं। मैं इन सुनहरे दिनों को कैसे भूल सकूँगा, जो मैंने यहाँ लखनऊ के गौरवशाली शाही बागों में टहलकर बिताए हैं?

हम लोग रंगीन इमारतों को भी देख रहे हैं, जहाँ कभी अवध के वृद्ध राजाओं की कामुक स्त्रियों ने अपनी सुंदर त्वचा का प्रदर्शन किया होगा। अब यह सब महल शाही मांस-मज्जा और पुरानी यादों के प्रतीक बन कर रह गए हैं।

मैं बार-बार उस सुंदर मस्जिद के पास लौट आता हूँ जो यहाँ के पुल के निकट है। इसका नाम बड़ा विचित्र है। इसे वानर पुल कहते हैं। इस मस्जिद का बाहरी रंग सफ़ेद है और यह सूरज की रोशनी में परियों के महल के समान चमकती है। यहाँ की मीनारें आकाश को छूती प्रतीत होती हैं। मैंने उसके अंदर झाँका तो देखा कि बहुत-से लोग ज़मीन पर बैठकर अल्लाह

का नाम पुकार रहे हैं। रंग-बिरंगी छोटी-छोटी दरियों पर बैठे लोगों से वहाँ का दृश्य और सुंदर लगता है। मोहम्मद पैगंबर के इन अनुयायियों के उत्साह पर कोई संदेह नहीं कर सकता क्योंकि इनका धर्म इनको जीवंत रखता है। इन सबके बीच मुझे अपने युवा गाइड की कुछ बातें बहुत प्रभावित कर रही हैं। उसकी चतुर टिप्पणियाँ और उसका असाधारण ज्ञान तथा छोटी-छोटी बातों के प्रति उसका सटीक रवैया, योग के विद्यार्थी के भीतर मौजूद गूढ़ ज्ञान और उसकी गहराई से मेल खाता है। उसके साथ कई बार मिलने और बातचीत करने के बाद मुझे पता लगता है कि वह मेरे विश्वासों और विचारों को जानने का प्रयास कर रहा है। वह मुझे बाद में बताता है कि वह राधास्वामी नाम की अर्द्ध-गोपनीय संस्था का सदस्य है।



दयालबाग तक जाने वाले एक अन्य मार्ग का नाम किसी मलिक नाम के व्यक्ति पर है। वह भी उसी संस्था का सदस्य है। वह अन्य भारतीय लोगों की तरह दिखने में अच्छा, गोरा और बलिष्ठ है। अनेक शताब्दियों से कुछ जंगली सीमांत जातियाँ हमेशा से अपने पड़ोसियों की चीज़ों पर लालच भरी निगाह रखती हैं, परंतु अंग्रेज़ सरकार इन अशांत उपद्रवियों पर नियंत्रण पाने का प्रयास कर रही है। इसके लिए वह लड़ाई के पुराने अंतहीन तरीक़ों का प्रयोग नहीं करते, अपितु उनसे सेवा लेते हैं और बदले उन्हें पैसा देते हैं।

मलिक कुछ ऐसे जुझारू लोगों के काम की देख-रेख करता है जिन्होंने अपने पुराने तरीक़े छोड़कर शांत और उपयोगी व्यवसाय अपना लिए हैं। वे लोग पहाड़ों और रेगिस्तानों में सड़क, पुल आदि बनाते हैं तथा अपनी सुरक्षा के लिए गुफाओं आदि का निर्माण करते हैं। जंगली दिखने वाले ये लोग अपने साथ बंदूक रखते हैं, परंतु ऐसा करने की कोई आवश्यकता नहीं है, बल्कि यह उनकी पुरानी आदत है। वे लोग उत्तर-पश्चिमी सीमा मार्ग पर कार्यरत हैं और व्यापारियों के लिए नई सड़कें तथा सैनिकों के लिए रक्षा प्रणालियाँ विकसित कर रहे हैं।

मलिक नाम का व्यक्ति डेरा इस्माइल खान नामक अंग्रेज़ी साम्राज्य की सीमांत चौकी पर कड़ी मेहनत करता है। उसके स्वभाव में मेहनत, आत्म-निर्भरता के साथ-साथ व्यवहारिकता उच्च-चरित्र और श्रेष्ठ विचारधारा का बेहतरीन मिश्रण है। मैं इन गुणों और उसके संतुलित व्यक्तित्व से बहुत प्रभावित हूँ।

बहुत लंबे मौन के उपरांत वह अनिच्छापूर्वक मेरी बात का उत्तर देता है और यह स्वीकार करता है कि उसका एक गुरु है। वह कभी-कभी फ़ुर्सत मिलने पर उसके पास जाता है। उसके गुरु साहब जी महाराज, राधास्वामी संप्रदाय के मुखिया हैं। मुझे यह बात दूसरी बार बताई जा रही है कि उसके गुरु योग की रोचक अवधारणा को पाश्चात्य पद्धतियों पर आधारित नैतिक जीवन के साथ जुड़ना चाहते हैं।



निगम और मलिक नामक के इन दो लोगों के मित्रतापूर्ण प्रयासों का आख़िर फल मिल गया है। मुझे दयालबाग में स्थित राधास्वामी संस्था के अघोषित राजा परमपूज्य साहबजी महाराज का अतिथि होने का सौभाग्य मिला है।

मैं आगरा से धूल भरी सड़क पर कुछ देर गाड़ी चलाकर उस स्थान तक पहुँच जाता हूँ।

दयालबाग - ईश्वर का उद्यान! यदि मेरी आरंभिक धारणा सही है तो यहाँ का संस्थापक इस शहर को इसके नाम के अनुरूप सुंदर रखने का प्रयास कर रहा है।

मुझे एक इमारत में ले जाया जाता है जहाँ गुरु का व्यक्तिगत कार्यालय है। उनका प्रतीक्षालय आकर्षक यूरोपीय अंदाज़ से सजा हुआ है। मैं आराम कुर्सी पर बैठकर दीवारों तथा फ़र्नीचर की परिष्कृत सादगी का आनंद ले रहा हूँ।

यहाँ पाश्चात्यकरण, पूर्ण प्रतिशोध ले रहा है! मेरी मुलाक़ात अब तक के सभी योगियों से पुराने बंगलों, वीरान पर्वतों की गुफाओं और नदी किनारे स्थित उदासीन कुटियाओं में हुई हैं। मैंने इस तरह के आधुनिक वातावरण में किसी योगी से मिलने की उम्मीद नहीं की थी। इस साधारण संस्था का यह मुखिया कैसा व्यक्ति है?

मुझे अधिक समय प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ती। कमरे का द्वार धीरे-से खुलता है और गुरुजी स्वयं प्रवेश करते हैं। वह मध्यम क़द के हैं, उनके सिर पर निर्मल सफ़ेद पगड़ी रखी है। उनके नैन-नक़्श अच्छे हैं, हालाँकि वे देखने से भारतीय नहीं लगते। यदि उनका रंग थोड़ा और साफ़ होता तो वह अमेरिकी व्यक्ति के समान दिखते। उनकी आँखों पर बड़ा-सा चश्मा है और होंठ के ऊपर छोटी-सी मूँछ है। उन्होंने ऊँचे गले वाला बटनयुक्त लंबा कोट पहना है जो हमारे पाश्चात्य अंदाज़ का भारतीय रूप लगता है।

उनकी भाव-भंगिमा, विनम्र और सौम्य है। वह मेरा अभिवादन करते हैं।

उसके बाद मैं उनके कुर्सी पर बैठने की प्रतीक्षा करता हूँ और फिर आगे बढ़कर कमरे की कलात्मक साज-सज्जा की प्रशंसा करता हूँ।

उनके शानदार चमचमाते दाँत दिखाई देने लगते हैं। वह कहते हैं:

'ईश्वर प्रेम ही नहीं, बल्कि सौंदर्य का भी रूप है। मनुष्य जैसे-जैसे अपने भीतर ईश्वर की अभिव्यक्ति महसूस करता है, सौंदर्य के प्रति उसकी अभिव्यक्ति में वृद्धि हो जाती है। यह बात स्वयं पर ही नहीं, अपितु अपने वातावरण पर भी लागू होती है।'

गुरुजी बढ़िया अंग्रेज़ी बोल रहे हैं। उनका स्वर आत्म-विश्वास से भरा हुआ है।

संक्षिप्त चुप्पी के बाद, वे फिर से बोलते हैं:

'इस कमरे की दीवारों और यहाँ के सामान पर एक और सजावट है जो नज़र नहीं आ

रही किंतु वह बहुत महत्त्वपूर्ण है। क्या आपको पता है कि इन सब चीज़ों पर लोगों के विचारों और उनकी भावनाओं का प्रभाव है? प्रत्येक कमरे और प्रत्येक कुर्सी पर उन सब लोगों प्रभाव मौजूद है जिन्होंने इस सामान को इस्तेमाल किया है। हो सकता है, आपको नज़र ना आ रहा हो परंतु वह मौजूद है। जो लोग यहाँ आते हैं, वे भी अचेतन रूप से यहाँ के वातावरण द्वारा प्रभावित अवश्य होते हैं।'

'क्या आपका कहने का आशय है कि वस्तुओं के आसपास विद्युत-चुंबकीय तरंगें होती हैं, जो मनुष्य के स्वभाव और उसके चरित्र को दर्शाती हैं?'

'बिलकुल, यह सही बात है। वास्तव में विचार ही वह चीज़ है जो हमारे द्वारा प्रयोग की जाने वाली वस्तुओं में जुड़ जाती है।'

'यह बड़ा रोचक सिद्धांत है!'

'यह सिद्धांत ही नहीं, अपितु तथ्य है! मनुष्य का अपने शारीरिक अस्तित्व के अलावा एक सूक्ष्म शरीर भी होता है। इस सूक्ष्म शरीर के भीतर क्रिया-कलापों के केंद्र होते हैं जो शारीरिक अंगों का प्रतिनिधित्व करते हैं। इन केंद्रों की मदद से मनुष्य अदृश्य शक्तियों को पहचान सकता है क्योंकि ये केंद्र ऊर्जान्वित होते हैं और मनुष्य को मानसिक और आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि प्रदान करते हैं।'

इसके बाद कुछ देर हम लोग चुप रहते हैं। साहबजी मुझसे पूछते हैं कि भारत की स्थिति पर मेरा क्या विचार है। मैं उन्मुक्त भाव से भारत द्वारा जीवन शैली के आधुनिक तरीक़ों की उपेक्षा की, सुख-सुविधाओं तथा मनुष्य के जीवन को सरल बनाने वाले आविष्कारों के प्रयोग में ढीलेपन, साफ़-सफ़ाई और स्वास्थ्य के विषय में लापरवाही तथा मूर्खतापूर्ण सामाजिक एवं क्रूर प्रथाओं के प्रति निष्ठा की निंदा करता हूँ। मैं उनसे यह भी कहता हूँ कि यहाँ के पुजारियों के प्रति अत्यधिक निष्ठा के कारण भारत की ऊर्जा मंदी के दौर से गुज़र रही है, जिसके कारण बुरे परिणाम देखने को मिल रहे हैं। मैं धर्म के नाम पर हो रही असंगत चीज़ों का उदाहरण भी देता हूँ, जिनसे यह सिद्ध होता है कि लोग ईश्वर द्वारा प्रदत्त बुद्धि का किस तरह दुरुपयोग करते हैं। मेरी इस टिप्पणी पर साहबजी महाराज हामी भरते हैं।

'आपने उन्हीं बिंदुओं को छुआ है जो मेरे सुधार-कार्यक्रम का भी हिस्सा हैं!'

'कुल मिलाकर ऐसा लगता है कि भारत के अधिकतर लोग ईश्वर से यह अपेक्षा करते हैं कि जो कार्य वह स्वयं कर सकते हैं उन्हें ईश्वर करे।'

'बिलकुल, सही बात है। हम हिंदू लोग धर्म की आड़ में ऐसी अनेक बातों को छुपाने का प्रयास करते हैं जिनका धर्म से वास्तव में कोई सरोकार नहीं है। समस्या यह है कि पहले पचास साल तक कोई भी धर्म, शुद्ध रहता है। उसके बाद वह विघटित होकर मात्र दर्शनशास्त्र बनकर रह जाता है। उसके अनुयाई वक्ता बन जाते हैं, परंतु वह लोग सही मायनों में धार्मिक रूप से नहीं जी पाते। फिर उस धर्म का पतन हो जाता है और वह अपने अंतिम चरण के

दौरान पाखंडी पुजारियों के हाथों में पड़ जाता है। आख़िर में, इसी ढोंगीपन को लोग धर्म के रूप में स्वीकार कर लेते हैं।'

मैं यह सीधी बात उनके मुँह से सुनकर हैरान हूँ।

'स्वर्ग और नरक तथा ईश्वर आदि के विषय में लड़ने-झगड़ने और बातचीत करने से क्या लाभ होगा? मानवता तो यहीं भौतिक रूप में हमारे सामने विद्यमान है। हमें इस लोक के विषयों की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए। हमें यहीं रहकर जीवन को सुंदर और ख़ुशहाल बनाने का प्रयास करना चाहिए।'

'मैं इसीलिए आपकी खोज में यहाँ आया हूँ। आपके शिष्य सुसंस्कृत नज़र आते हैं। यह लोग व्यवहारिक होते हुए भी आधुनिक हैं। कुछ लोग यूरोपीय लोगों की तरह रहते हैं। ये धर्म का दिखावा नहीं करते, परंतु अच्छा जीवन जी रहे हैं और इसके बावजूद पूरी निष्ठा और ईमानदारी के साथ योगाभ्यास भी करते हैं।'

साहबजी इस बात को स्वीकार करते हुए मुस्कराते हैं।

'मुझे ख़ुशी है कि आपने इन सब बातों पर ग़ौर किया है,' वह उत्तर देते हैं। 'मैं दयालबाग में इन सब गतिविधियों का आरंभ करके संसार को यही बताना चाहता हूँ कि मनुष्य गुफाओं और कंदराओं में बैठे बिना भी आध्यात्मिक हो सकता है और सांसारिक कार्यों को करते हुए भी योग के उच्च शिखर को प्राप्त कर सकता है।'

'यदि आप अपने प्रयास में सफल हो जाते हैं तो भारतीय ज्ञान और शिक्षा के विषय में अवश्य सुधार होगा।'

'हमें अवश्य सफलता मिलेगी,' साहबजी विश्वास के साथ उत्तर देते हैं। 'मैं आपको एक कथा सुनाता हूँ। मैं जब यहाँ आया था और मैंने इस स्थान का निर्माण आरंभ किया था तो मेरी प्रमुख इच्छाओं में से एक इच्छा यह थी कि मैं यहाँ बहुत-से वृक्ष लगाऊँ। यहाँ के लोगों ने मुझे बताया कि इस स्थान की ऊसर और रेतीली मिट्टी में वृक्ष लगाना लगभग असंभव है। यहाँ से यमुना नदी अधिक दूर नहीं है। यहाँ कोई विशेषज्ञ नहीं था और हमें लगातार कई तरह के प्रयोग और असफलताओं के बाद यह मालूम पड़ा कि यहाँ की बंजर मिट्टी में किस तरह के वृक्ष उग सकते हैं। हमने पहले साल में यहाँ पर एक हज़ार से अधिक वृक्ष लगाए थे। एक वृक्ष को छोड़कर शेष सभी वृक्ष मर गए। हमने उस एक वृक्ष की देखभाल की और अपने प्रयासों को जारी रखा। अब दयालबाग में नौ हज़ार वृक्ष हैं। मैं आपको यह बात इसलिए बता रहा हूँ कि यह हमारी लगन का प्रतीक है। हमें यहाँ बंजर धरती मिली थी और इसे कोई ख़रीदने को तैयार नहीं था। अब देखिए, हमने इसे किस तरह बदल दिया है!'

'क्या आपका उद्देश्य आगरा के समीप आर्केडिया का निर्माण करना है?'

साहबजी हँस पड़ते हैं।

मैं उन्हें उस शहर को देखने की अपनी इच्छा बताता हूँ।

'अवश्य। मैं अभी आपके लिए प्रबंध कर देता हूँ। पहले आप दयालबाग देख लीजिए और फिर हम इसके विषय में और बातचीत करेंगे। इसे व्यवहारिक रूप से देखने के बाद आपको मेरे विचार अधिक बेहतर ढंग से समझ में आएँगे।'

साहब जी घंटी बजाते हैं। मैं कुछ मिनट देर बाद वहाँ की गलियों को देख रहा हूँ। वहाँ अनेक फ़ैक्ट्रियाँ भी लगी हैं। कैप्टन शर्मा मेरे गाइड हैं, जो पहले भारतीय सेना चिकित्सा सेवा में कार्य करते थे। अब वह इसी सकारात्मक प्रयास में अपनी सेवाएँ दे रहे हैं। कैप्टन शर्मा में मुझे एक बार फिर पाश्चात्य जीवनशैली और निष्ठावान आध्यात्मिकता का एक सफल मिश्रण देखने को मिलता है।

दयालबाग का प्रवेश द्वार बहुत शानदार है। उसके अंदर एक साफ़-सुथरा छोटा शहर बसा है। वहाँ की गलियों के किनारे पर छायादार वृक्ष लगे हैं। उसके केंद्र में सुंदर फूलों का एक बगीचा है। मुझे बताया जाता है कि यह सबकुछ लगातार अनेक बार प्रयास करने के बाद तैयार हो पाया है।

उसी उद्यान में एक शहतूत का वृक्ष लगा है, जो साहब जी महाराज ने स्वयं 1915 में लगाया था जब उन्होंने इस स्थान का निर्माण करना आरंभ किया था। वह आज भी उनकी प्रशंसा का प्रतीक बनकर खड़ा है। यहाँ के औद्योगिक हिस्से की विशेषता यह है कि यहाँ कारख़ानों का एक समूह है, जिसे आदर्श उद्योग कहते हैं। इन्हें बहुत सोच-समझकर बनाया गया है। इनमें पर्याप्त रोशनी और हवा है और ये बहुत साफ़-सुथरे और खुले हैं।



मुझे सबसे पहले चप्पलों की फ़ैक्ट्री में ले जाया जाता है। यहाँ मशीनें लगातार काम कर रही हैं और चप्पल बनाने का काम तेज़ी से चल रहा है। यहाँ के मिस्त्री बहुत बढ़िया काम करने में माहिर हैं। ये ठीक उसी तरह कार्य कर रहे हैं जैसे नॉर्थएम्पटन की अंग्रेज़ी फ़ैक्ट्रियों में लोग कार्य करते हैं। कारख़ाने का मैनेजर मुझे बताता है कि उसने यह तकनीक यूरोप में ही सीखी थी जब वह चमड़े की चीज़ें बनाने के तरीक़े सीखने के लिए बीसवीं शताब्दी में यूरोप गया था।

मशीनों के शोरगुल भरे माहौल में जूते, चप्पल, सैंडल, हाथ के पर्स और बेल्ट तेज़ी से बन रहे हैं। उन मशीनों पर काम करने वाले लोगों ने अपने काम की शुरुआत प्रशिक्षु के रूप में की थी और उन्हें मैनेजर ने ही काम सिखाया और प्रशिक्षण दिया था। वहाँ बनने वाला सामान दयालबाग की एक स्थानीय दुकान पर भी उपलब्ध है। आगरा के अतिरिक्त अधिकांश सामान दूरदराज के शहरों में बेचने के लिए भेज दिया जाता है। अन्य स्थानों पर

दुकानें खोली जा रही हैं और आधुनिक तरीक़ों पर आधारित बिक्री की पूरी संस्था का भी निर्माण किया जा रहा है।

मैं अगली इमारत में पहुँचता हूँ। यहाँ कपड़े की फ़ैक्ट्री है। ये लोग कपड़ा और रेशम बनाते हैं, जिससे फिर और कई तरह की चीज़ें बनाई जाती हैं।

एक अन्य इमारत में इंजीनियरिंग की मशीनें हैं। यहाँ एक लोहारख़ाना है जहाँ से हथौड़ों की ज़ोरदार आवाज़ें आती रहती हैं। उसके पास वाले कारख़ाने में वैज्ञानिक उपकरण प्रयोगशाला के कुछ उपकरण जैसे तराजू और भार आदि बनाए जाते हैं। उसे यूनाइटेड प्रोविंस की सरकार का संरक्षण भी प्राप्त है। मैं वहाँ सोने, गिलट और तांबे पर चल रहे काम को ध्यान से देख रहा हूँ।

वहाँ ऐसे कई और कारख़ाने हैं, जहाँ बिजली के पंखे, ग्रामोफ़ोन, चाकू तथा फ़र्नीचर बनाया जाता है। यहाँ के एक कारीगर ने एक विशेष तरह का साउंड-बॉक्स बनाया है। इसे भविष्य में अधिक मात्र में बनाया जाएगा।

मुझे यहाँ पर फ़ाउंटेन पेन का कारख़ाना देखकर बहुत हैरानी हो रही है। मुझे बताया गया है कि भारत का यह पहला फ़ाउंटेन पेन का कारख़ाना है। पहले पेन को बनाने से पहले बहुत-से प्रयोग करने पड़ते हैं। यहाँ उद्योग जगत के लोगों को एक बात ने बहुत हैरान किया है: पेन की सोने की नोक पर इरिडियम तत्व कैसे लगाया जाता है? इन्हें उम्मीद है कि एक दिन यह उस रहस्य को जान लेंगे। फ़िलहाल, पेनों की नोक को इरिडियम लगाने के लिए यूरोप की एक कंपनी में भेजा जाता है।

दयालबाग की प्रेस में छपाई का पूरा बंदोबस्त है। यहाँ इस समय पूरे शहर की छपाई की आवश्यकता को पूरा किया जाता है। यह व्यापारिक और साहित्यिक दोनों क्षेत्रें में काम करता है। मैं हिंदी, उर्दू और अंग्रेज़ी भाषाओं में किए काम को देख रहा हूँ। इन मशीनों पर एक छोटा साप्ताहिक अख़बार प्रेम-प्रचारक भी निकाला जाता है। उसे भारत में दूर-दूर के इलाक़ों में रहनेवाले राधास्वामी के अनुयायियों को भेजा जाता है।

प्रत्येक इमारत में ऐसे कारीगर हैं, जो न केवल संतुष्ट हैं बल्कि सकारात्मकता और उत्साह से भरे हुए हैं। ऐसी जगह पर मजदूरों की यूनियन के विषय में सोचना भी असंगत होगा। प्रत्येक व्यक्ति यहाँ अपना कार्य करता है। चाहे छोटा हो या बड़ा, वह उस कार्य को काम समझकर नहीं, अपितु आनंददायक मान कर करता है।

इस शहर में बिजली पैदा करने का अपना बंदोबस्त है। यहाँ से फ़ैक्ट्रियों की मशीनों और बड़े घरों की छतों पर लगे पंखों के लिए बिजली उपलब्ध करवाई जाती है। इसके अतिरिक्त, यहाँ के प्रत्येक घर में बिजली है और उसे सामुदायिक ख़र्चे पर प्रयोग किया जाता है। इससे महँगे मीटरों को लगाने की आवश्यकता नहीं रहती।

उस छोटी-सी जगह में खेती के लिए छोटे परंतु आधुनिक खेत भी हैं, जो अभी विकास

की आरंभिक अवस्था में नज़र आते हैं। उपकरणों के नाम पर यहाँ फ़िलहाल भाप से चलने वाला एक ट्रैक्टर तथा भाप से चलने वाला हल मौजूद है। यहाँ मुख्य रूप से ताज़ी सब्ज़ियाँ और गाय के लिए चारा पैदा किया जाता है। यहाँ सबसे अधिक सुव्यवस्थित दुग्ध फ़ार्म है। मैंने ऐसी चीज़ भारत में कहीं और नहीं देखी। इस आदर्श डेयरी को प्रदर्शन के लिए भी प्रयोग किया जाता है। वहाँ के मवेशी बहुत बढ़िया और चुने हुए हैं। वहाँ के प्रत्येक स्थान में ज़बरदस्त साफ़-सफ़ाई है और मुझे बताया गया है कि दूध के उत्पादन को बढ़ाने के लिए ये लोग वैज्ञानिक पद्धतियों का प्रयोग करते हैं। यहाँ दूध का उत्पादन औसत भारतीय डेयरी से कहीं अधिक होता है। यहाँ पर दूध को पाश्चुरीकृत करना और ठंडा करने के लिए भी संयंत्र लगा है, जिसके कारण दयालबाग और आगरा के निवासियों को बढ़िया और कीटाणु मुक्त दूध मिल जाता है। यहाँ बाहर से आयात किया हुआ एक उपकरण भी है। यह बिजली से चलने वाली मक्खन बनाने की मशीन है। इसका सारा श्रेय साहबजी महाराज के सुपुत्र को जाता है। उस जोशीले और कार्यकुशल युवक ने मुझे बताया कि वह इंग्लैंड, हॉलैंड, डेनमार्क और अमेरिका के मुख्य दुग्ध केंद्रों पर घूमकर देख चुका है और उसने अपने काम में उपयोग करने के लिए वहाँ की आधुनिक पद्धतियों को सीख लिया है।

वहाँ के खेतों और शहर के अन्य घरों के लिए जल की व्यवस्था शुरू में एक मुश्किल समस्या थी। इसके समाधान हेतु वहाँ एक नहर खोदी गई तथा पानी का प्रबंध किया गया। परंतु बढ़ती हुई माँग को देखते हुए साहबजी महाराज को जल की आपूर्ति के लिए कुछ अतिरिक्त संसाधनों की व्यवस्था करनी पड़ी थी। इसके लिए महाराज ने सरकारी अभियंताओं की सहायता ली और एक गहरा ट्यूबवेल खुदवाया जिसके बहुत बढ़िया और सफल परिणाम प्राप्त हुए। वहाँ एक बैंक उपलब्ध है। वह मज़बूत इमारत है तथा उसमें लोहे की सलाखों वाली खिड़कियाँ लगी हैं जिन पर लिखा है: राधा स्वामी जनरल ऐंड एश्योरेंस बैंक लिमिटेड। बैंक में दो लाख रुपये की पूँजी उपलब्ध है। वह बैंक न केवल निजी बैंकिंग का कार्य करता है अपितु शहर की सभी वित्तीय आवश्यकताओं को भी नियंत्रित करता है।

दयालबाग के बीचों-बीच राधास्वामी शिक्षण संस्थान है। यह बहुत उपयुक्त जगह बनाया गया है। यह वहाँ की बेहतरीन इमारतों में से एक है। इसमें दो सौ फ़ीट लाल ईंटों का प्रयोग किया गया है। यह देखने में बहुत सुंदर है। इसकी खिड़कियाँ जर्मन वास्तु शिल्पकला के अनुसार बनी हैं और उनके चारों ओर सफ़ेद संगमरमर लगा है। इसके ठीक सामने फूलों का बहुत सुंदर बगीचा है।

इस आधुनिक हाईस्कूल में सैकड़ों बच्चे पढ़ते हैं। उनकी देखभाल के लिए यहाँ एक प्रधानाचार्य तथा बत्तीस योग्य और कुशल शिक्षक उपलब्ध हैं। ये सब युवा उत्साह से भरे हुए हैं और इन सबमें अपने शिष्यों को तथा अपने गुरु साहब जी महाराज की सेवा करने की उत्कट इच्छा मौजूद है। इस विद्यालय में सामान्य शिक्षा का अच्छा स्तर देखने को मिलता है।

यहाँ औपचारिक रूप से कोई धार्मिक शिक्षा नहीं दी जाती, परंतु बच्चों में अच्छा चरित्र-निर्माण करने का प्रयास अवश्य किया जाता है। इसके अतिरिक्त साहबजी महाराज स्वयं बच्चों से समय-समय पर मिलते हैं और प्रत्येक रविवार को पूरे विद्यालय के समक्ष आध्यात्मिक प्रवचन देते हैं।

लड़कों को हॉकी, फ़ुटबाल, क्रिकेट और टेनिस आदि खेलों के लिए भी प्रोत्साहित किया जाता है। वहाँ एक पुस्तकालय है, जिसमें लगभग सात हज़ार पुस्तकें हैं। संस्था को पूर्णता प्रदान करने के लिए एक छोटा-सा संग्रहालय भी मौजूद है।

एक और इमारत में लड़कियों का कॉलेज है। वह भी इसी पद्धति पर चलता है। यह कॉलेज साहबजी महाराज के दृढ़ प्रयासों का प्रतीक है। उन्होंने इसके माध्यम से अपने निजी प्रभाव से अशिक्षा की समस्या का, जिसे प्राचीन काल से भारतीय स्त्रियों पर ज़बरदस्ती थोपा गया था, उन्मूलन करने का प्रयास किया है।

यहाँ का तकनीकी कॉलेज, शिक्षण संस्थाओं में सबसे बाद में बनाया गया है। इसमें मैकेनिकल, इलेक्ट्रिकल और ऑटोमोबाइल इंजीनियरिंग आदि के कोर्स उपलब्ध हैं। यहाँ उत्पादन जगत के लिए मिस्त्रियों और कारीगरों को भी प्रशिक्षण दिया जाता है। इन कारख़ानों में ऐसी विशेष मशीनें और कार्यस्थल बनाए गए हैं, जहाँ कॉलेज के विद्यार्थी, कक्षा में पढ़ी चीज़ों का व्यवहारिक प्रयोग करके देख सकते हैं।

इन तीनों कॉलेजों में पढ़ने वाले सैकड़ों विद्यार्थियों के लिए बहुत-से आकर्षक होस्टल भी उपलब्ध हैं। प्रत्येक होस्टल में भरपूर रोशनी और हवा है तथा ये हर मायने में आधुनिक हैं।

इस शहर का आवासीय हिस्सा दयालबाग निर्माण विभाग के निरीक्षण में रहता है, जो यहाँ योजनाएँ बनाते हैं तथा अन्य मकानों का निर्माण करते हैं। यहाँ की प्रत्येक गली और सड़क पर अलग ढंग की शिल्पकला देखने को मिलती है। उसे देखकर यह स्पष्ट है कि यहाँ के शहरी विकास कर्ताओं के मन में कलात्मकता की भावना विद्यमान है।

कुछ इमारतें देखने में भद्दी और त्रुटिपूर्ण हैं इसलिए उन्हें बंद कर दिया गया है। यहाँ रहने वाले किरायेदारों को अपनी पसंद से मकान चुनने का पूरा अधिकार दिया जाता है। यहाँ मुख्य रूप से चार आकार के घर उपलब्ध हैं। ये सब अलग-अलग दामों पर मिलते हैं। इन्हें ख़रीदने के इच्छुक लोग, वास्तविक क़ीमत के अतिरिक्त कुछ और प्रतिशत धनराशि देकर इन्हें ख़रीद सकते हैं।

यहाँ एक छोटा किंतु बढ़िया अस्पताल और प्रसूति गृह भी है। इसने स्वयं को आत्म-निर्भर बनाने का लक्ष्य निर्धारित किया है। मुझे यह देखकर बहुत आश्चर्य हो रहा है कि यहाँ वर्दीधारी पुलिस के लोग भी राधास्वामी संस्था के सदस्य हैं। पुलिस वाले की उपस्थिति देखकर मेरे मन में दिलचस्प सवाल उठ रहा है क्योंकि जिस तरह का नैतिकतापूर्ण वातावरण

दयालबाग में देखने को मिलता है, ऐसी स्थिति में वहाँ किसी तरह के अपराध की कोई आशंका मुझे नज़र नहीं आती। पुलिस दरअसल, यहाँ अवांछित लोगों को भीतर घुसने से रोकने का कार्य करती है।



साहब जी महाराज जब अपने कार्यों को पूरा करके मेरे साथ समय बिताते हैं तो मैं उनकी प्रशंसनीय उपलब्धियों के लिए उन्हें बधाई देता हूँ। मैं उन्हें बताता हूँ कि मुझे पिछड़े हुए भारत में ऐसा गतिशील शहर देखकर बहुत आश्चर्य हो रहा है।

'परंतु आप इन सब कार्यों के लिए धन का इंतज़ाम कैसे करते हैं? इसमें बहुत धनराशि ख़र्च हुई है।'

'आपको शायद कुछ समय में यह देखने का अवसर भी मिलेगा। राधास्वामी संस्था के सदस्य ही यहाँ का सब ख़र्च उठाते हैं। वे ऐसा करने के लिए बाध्य नहीं हैं और न ही उनसे नियमित रूप से कोई धनराशि ली जाती है। परंतु वे दयालबाग को उन्नत बनाने में योगदान देने को अपना धार्मिक कर्तव्य समझते हैं। हालाँकि हमें आरंभिक चरण में इसके लिए लोगों से सहयोग लेने की आवश्यकता पड़ी थी। परंतु मेरा उद्देश्य है कि मैं इस पूरी संस्था को आत्म-निर्भर बनाया जाए। मैं जब तक पूर्ण आत्म-निर्भरता की अवस्था तक नहीं पहुँच जाऊँगा, मुझे चैन नहीं मिलेगा।'

'तो आपको समर्थन देने वाले लोग बहुत धनवान होंगे?'

'बिलकुल नहीं! राधास्वामी में बहुत कम लोग धनवान हैं। उन्हें अँगुलियों पर गिना जा सकता है। हमारे लगभग सभी सदस्य बहुत सामान्य परिस्थितियों वाले हैं। हमने जो प्रगति की है, उसके लिए बहुत लोगों ने बलिदान दिया है। हम परमपिता परमेश्वर का धन्यवाद करते हैं कि हम लोग इतने कम समय में लाखों रुपये एकत्रित करके ख़र्च कर सके हैं। इस स्थान का भविष्य सुरक्षित है क्योंकि इसकी आय हमारी सदस्यता के साथ बढ़ती जाएगी। इसलिए हमें कभी पैसों की कमी महसूस नहीं होगी।'

'आपकी संस्था में कुल कितने सदस्य हैं?'

'हमारी सदस्यता यूँ तो 110,000 से अधिक है परंतु यहाँ कुछ हज़ार लोग ही रहते हैं। राधास्वामी वालों की संस्था लगभग सत्तर वर्ष पुरानी है। इसमें सबसे ज़्यादा तरक्की और प्रगति पिछले बीस वर्षों में हुई है। आपको ध्यान रखना होगा कि यह प्रगति बिना प्रचार-प्रसार के हुई है क्योंकि हम एक तरह से अर्द्ध-गोपनीय संस्था के रूप में काम करते हैं। हम लोग आम जनता के सामने आ जाएँ और अपनी शिक्षा और ज्ञान का खुले में प्रचार-प्रसार करें तो हमारी सदस्यता कई गुणा बढ़ सकती है। हमारे सदस्य पूरे भारतवर्ष में फैले हुए हैं,

परंतु वे दयालबाग को अपना मुख्यालय मानते हैं और यहाँ आते रहते हैं। वे लोग छोटे-छोटे समूह में संगठित होकर प्रतिदिन रविवार को मिलते हैं। उसी समय हम लोग दयालबाग में भी विशेष बैठक का आयोजन करते हैं।'

साहब जी रुककर अपना चश्मा पोंछते हैं।

'कल्पना कीजिए, हमने जब इस कॉलोनी के निर्माण का कार्य आरंभ किया था तो हमारे पास 5000 रुपये से अधिक धनराशि उपलब्ध नहीं थी। हमारे पास भूमि के नाम पर केवल चार एकड़ ज़मीन थी। अब दयालबाग हज़ारों एकड़ में फैल चुका है। क्या इससे यह नहीं लगता कि हम लोग प्रगति कर रहे हैं?'

'आप दयालबाग को और कितना बड़ा बनाना चाहते हैं?'

'मैं यहाँ दस से बारह हज़ार लोगों को स्थापित करना चाहता हूँ। फिर हम लोग रुक जाएँगे। 12,000 लोगों की व्यवस्था अच्छे ढंग से हो जाए तो यह शहर काफ़ी बड़ा बन जाएगा। मैं आपके देशों की तरह बहुत विशाल शहर नहीं बनाना चाहता। वहाँ के शहर बहुत भीड़-भाड़ वाले होते हैं और इसलिए वहाँ बहुत-से अवगुण भी पनप जाते हैं। मैं एक सुंदर शहर बनाना चाहता हूँ, जहाँ लोग आराम से काम कर सकें और ख़ुशी-ख़ुशी रह सकें, जहाँ उनके पास पर्याप्त मात्र में जल और वायु उपलब्ध हो। दयालबाग के विकास को पूरा करने के लिए कुछ और वर्ष लगेंगे और फिर यह एक आदर्श समुदाय बन जाएगा। मैंने जब पहली बार प्लेटो की पुस्तक रिपब्लिक पढ़ी थी तो मुझे यह देखकर सुखद आश्चर्य हुआ कि उस पुस्तक में अनेक ऐसे विचार थे, जिन्हें मैं यहाँ अपनाने का प्रयास कर रहा हूँ। दयालबाग बनकर पूरा हो जाएगा तो मैं चाहता हूँ कि यह भारत भर में ऐसे कई समुदायों के निर्माण और विकास के लिए आदर्श साबित हो सके और प्रत्येक प्रांत में कम से कम एक ऐसा शहर अवश्य बने। मेरी नज़र में यह बहुत-सी समस्याओं का समाधान सिद्ध हो सकता है।'

'आप भारत को औद्योगिक विकास की ओर मोड़ना चाहते हैं?'

'निश्चय ही! यही भारत की इस समय सबसे बड़ी ज़रूरत है, परंतु मैं यह नहीं चाहता कि भारत औद्योगिक विकास की दौड़ में स्वयं को खो बैठे जैसा आप लोगों ने पश्चिम में किया है। हमें स्वयं को औद्योगिक सभ्यता के रूप में अवश्य निर्मित करना चाहिए क्योंकि ग़रीबी उसी से दूर होगी, परंतु यह निर्माण ऐसी व्यवस्था पर होना चाहिए जहाँ पूँजी और श्रम के बीच कोई विरोध नहीं हो।'

'ऐसा कैसे किया जा सकता है?'

'यह समाज की क़ीमत पर नहीं हो सकता। इसके लिए व्यक्तिगत सुख और कल्याण को लक्ष्य बनाना होगा। हम सहयोग के सिद्धांत पर काम करते हैं। दयालबाग की सफलता को लोग अपनी निजी सफलता से अधिक महत्त्व देते हैं। यहाँ काम करने वाले लोग, किसी अन्य स्थान की अपेक्षा बहुत कम वेतन पर यहाँ काम करते हैं। मैं अनपढ़ मजदूरों को नहीं, बल्कि

प्रशिक्षित और शिक्षित लोगों को काम पर रखता हूँ। वे यहाँ का काम स्वेच्छा और ख़ुशी से करते हैं। यह सिद्धांत इसलिए अच्छी तरह कारगर हो पाता है क्योंकि हम लोग आध्यात्मिक उद्देश्य से प्रेरित हैं और यही हम सबके प्रयासों के पीछे की प्रेरणा और लक्ष्य है। कुछ लोग अपनी सेवाएँ निशुल्क भी देते हैं। आप देख सकते हैं कि हमारे यहाँ लोगों में कितना उत्साह है। दयालबाग जब पूरी तरह विकसित और आत्म-निर्भर हो जाएगा, तो मुझे लगता है कि फिर हमें त्याग और बलिदान की आवश्यकता नहीं पड़ेगी। बहरहाल, आध्यात्मिक उन्नति के लिए यह अच्छा मार्ग है। इसी कारण यह लोग यहाँ आए हैं क्योंकि यही हमारी संस्था का मूल उद्देश्य है। आपको बाहर शायद एक हज़ार रुपये प्रतिमाह वेतन मिलता हो किंतु यदि आप यहाँ आकर इस स्थान में योगदान देंगे तो आपको एक तिहाई वेतन ही मिल पाएगा क्योंकि हम लोग ज़्यादा वेतन नहीं दे सकते। धीरे-धीरे हो सकता है, आप यहाँ घर बना लें, आपका विवाह हो जाए और फिर आपके बच्चे हो जाएँगे। परंतु यदि इस दौरान आप अपने जीवन और व्यवसाय के केवल भौतिक पक्ष पर ध्यान देंगे और वास्तविक आध्यात्मिक लक्ष्य को नज़रअंदाज़ कर देंगे तो आपको असफल माना जाएगा। हम लोग यहाँ भौतिक कार्य अवश्य करते हैं परंतु हम अपने मुख्य लक्ष्य को नज़रअंदाज़ नहीं करते, जिसके लिए हमारी इस संस्था की स्थापना हुई थी।'

'अच्छा, मैं समझ गया।'

'हम लोगों के पास शक्ति है। हम समाजवादी नहीं है, परंतु यह सच है कि हमारे यहाँ के उद्योग, खेत और शिक्षण संस्थान इसी समुदाय की संपत्ति हैं। इसके अतिरिक्त, स्वामित्व भूमि और मकानों पर भी लागू होता है। आप यहाँ घर बना सकते हैं, लेकिन वह आपका तभी तक रहेगा जब तक आप उसका किराया देंगे। इन सीमाओं से परे, यहाँ हर कोई अपनी इच्छा से जितना चाहे धन और संपत्ति जमा कर सकता है। यही कारण है हम लोग समाजवाद के कष्टों से दूर हैं। हमारी समस्त सामुदायिक संपत्ति तथा सदस्यों द्वारा स्वेच्छा से दी गई धनराशि ट्रस्ट में जमा कर दी जाती है और धार्मिक भाव से ही उसका प्रबंधन किया जाता है। हमारे आध्यात्मिक आदर्श श्रेष्ठ हैं और बाक़ी सब उसके बाद आता है। हमारे यहाँ के कार्य और प्रशासन के निरीक्षण के लिए पैंतालीस सदस्यों का एक समूह बनाया गया है। वे सब भारत के विभिन्न प्रांतों के प्रतिनिधि हैं। ये लोग साल में दो बार बैठक करते हैं और लेखा-जोखा तथा बजट आदि का प्रावधान देखते हैं। यहाँ का शेष सामान्य कार्य और नियंत्रण, ग्यारह सदस्यों की एक कार्यकारिणी समिति के पास है।'

'आपने पहले कहा था कि आप दयालबाग को अनेक समस्याओं के समाधान के रूप में प्रस्तुत करना चाहते हैं। मैं समझ नहीं पा रहा हूँ कि दयालबाग, आज की सबसे बड़ी आर्थिक समस्या के समाधान के रूप में कैसे उभर सकता है?'

साहब जी महाराज आत्म-विश्वास के साथ मुस्कराते हैं।

‘भारत भी इस दृष्टि से योगदान दे सकता है। मैं आपको एक योजना के विषय में बताता हूँ जिसे हमने कुछ ही समय पहले क्रियान्वित करने का प्रयास किया है ताकि अगले पाँच सालों में हमारी विकास दर तेज़ी से बढ़ सके। मेरे अनुसार इस योजना में महत्त्वपूर्ण आर्थिक और सामाजिक सिद्धांत समाहित हैं। हमने एक पैतृक कोष की स्थापना की है। इसमें हमारे कुछ सदस्य एक हज़ार रुपये और उससे ऊपर की धनराशि देते हैं। ऐसे प्रत्येक सदस्य को हमारी प्रशासनिक समिति की ओर से कम से कम 5 प्रतिशत वार्षिक भत्ता मिलता है। सदस्य की मृत्यु होने पर यह भत्ता उसकी पत्नी, बच्चों अथवा जिसे भी उसने पहले नामित किया है, उसे दे दिया जाता है। उसके अगले व्यक्ति को भी उस भत्ते का हक़दार नामित करने का अधिकार होता है। परंतु तीसरी पीढ़ी की मृत्यु के पश्चात सभी भुगतान रोक दिए जाते हैं। यदि मूल सदस्य किसी परेशानी या कठिन परिस्थिति में पड़ जाता है अथवा उसे आवश्यकता होती है तो उसकी राशि या उसका अंश उसे वापस कर दिया जाता है। इस प्रकार हमारे पैतृक कोष में कुछ ही समय में लाखों रुपये जमा हो जाते हैं। इसके बाद बावजूद हमारे सदस्यों पर इसका कोई बोझ नहीं पड़ता। उनका योगदान उन्हें कुछ हद तक आय के रूप में वापस मिल जाता है।’*

‘मुझे लगता है कि आप पूँजीवाद की बुराइयों और समाजवाद की अच्छाइयों के बीच की कोई साफ़ जगह तलाश रहे हैं। जो भी हो मुझे विश्वास है, आपको अवश्य सफलता मिलेगी और जल्दी ही मिलेगी।’

मुझे यह बात तो स्पष्ट हो गई है कि दयालबाग के पास काफ़ी संसाधन हैं और वह आने वाले समय में सफलतापूर्वक विकसित हो जाएगा। उसके बढ़ते हुए पैतृक कोष को स्वैच्छिक दान तथा उद्योगों से होने वाले बड़े फ़ायदे का लाभ अवश्य मिलेगा।

‘भारत में बहुत-से विख्यात नेता हमारे इस प्रयोग को ध्यान से देख रहे हैं। वे इसके परिणामों की प्रतीक्षा कर रहे हैं। बहुत-से लोग यहाँ आकर दयालबाग देख चुके हैं। यहाँ तक कि हमारे विचारों का विरोध करने वाले समीक्षक भी यहाँ आ चुके हैं। आप तो जानते ही हैं कि भारतीय लोग बहुत दुर्बल और ग़रीब हैं तथा यहाँ के राजनेता परस्पर विरोधी समाधान प्रस्तुत करते हैं। गांधी एक बार यहाँ आए थे और उन्होंने मेरे साथ लंबी बातचीत की थी। वह चाहते थे कि मैं उनके राजनीतिक अभियान में शामिल हो जाऊँ, परंतु मैंने मना कर दिया। हमारा राजनीति से कोई लेना-देना नहीं है। हम लोग पुनर्विकास के व्यवहारिक माध्यमों पर अपना ध्यान केंद्रित रखते हैं। हालाँकि गांधी के राजनीतिक योजनाओं से मेरा कोई सरोकार नहीं है, मुझे लगता है कि उनके आर्थिक विचार अव्यवहारिक हैं।’

‘गांधी चाहते हैं कि भारत अपनी मशीनों को समुद्र में फेंक दे।’

साहब जी अपना सर हिलाते हैं।

‘भारत अतीत की ओर नहीं लौट सकता। उसे आगे जाना होगा और भौतिक सभ्यता की

श्रेष्ठता को विकसित करना होगा। ऐसा करके ही वह समृद्ध हो सकता है। मेरे देश के लोगों को अमेरिका और जापान से सबक़ लेना चाहिए। हाथ से बुनाई करने और चरखा चलाने वाले लोग आधुनिक मशीनी पद्धतियों के हमले और अधिक बर्दाश्त नहीं कर सकते।'

साहब जी महाराज अपने विचारों को मेरे साथ साझा कर रहे हैं। मैं एक ऐसे हिंदू व्यक्ति के सामने बैठा हूँ जो बहुत ही कार्यकुशल है और काम करने का उसका तरीक़ा पूरी तरह व्यवसायिक है। वह अपने विचारों को सटीक ढंग से अभिव्यक्त करने में समर्थ है। मैं साहब जी महाराज के सामान्य ज्ञान, संतुलन और उनकी बुद्धिमत्ता से काफ़ी प्रभावित हुआ हूँ क्योंकि यह चीज़ें इस देश में देखने को बहुत कम मिलती हैं।

मुझे साहब जी महाराज के व्यक्तित्व में अनूठा विरोधाभास भी नज़र आ रहा है। वह एक लाख से अधिक लोगों के गुरु हैं। वे योग के रहस्यमय तरीक़ों का अभ्यास करते हैं और दयालबाग नाम के इस स्थान पर विभिन्न प्रकार की भौतिक गतिविधियों का संचालन करते हैं। इन्हें देखकर मैं कह सकता हूँ कि साहब जी महाराज अत्यंत बुद्धिमान और विलक्षण व्यक्ति हैं। भारत और पूरे विश्व में मुझे ऐसा कोई व्यक्ति शायद दोबारा नहीं मिलेगा।

साहब जी महाराज की आवाज़ मेरे विचारों की श्रृंखला को भंग कर देती है।

'आपने दयालबाग में हमारे जीवन के केवल दो पहलुओं को देखा है, जबकि हमारी गतिविधियाँ तीन तरह की हैं। व्यक्ति के स्वभाव के भी तीन पक्ष होते हैं - आत्मा, मन और शरीर। इसीलिए हमारे पास शारीरिक श्रम के लिए कारख़ाने और खेत हैं, मानसिक विकास के लिए शिक्षण संस्थान हैं और आध्यात्मिक गतिविधियों के लिए सामूहिक बैठकों का प्रावधान है। इस प्रकार, हम लोग सामंजस्य के साथ व्यक्ति के संपूर्ण विकास के लिए कार्यरत हैं। परंतु हमारे यहाँ सबसे अधिक ज़ोर आध्यात्मिक पक्ष को दिया जाता है और हमारी संस्था का प्रत्येक सदस्य नियमित रूप से योगाभ्यास करता है।'

'क्या मैं आपकी सामूहिक बैठक में हिस्सा ले सकता हूँ?'

'बहुत ख़ुशी से! आपके आने से हमें बहुत प्रसन्नता होगी।'



दयालबाग की गतिविधियाँ सुबह छह बजे पहली सामूहिक बैठक के साथ आरंभ हो जाती हैं। सुबह का सवेरा, रात्रि के अंधकार को दूर कर देता है। चिड़ियों की मीठी चहचहाहट कर्कश शोर के साथ मिल गई है। पक्षी मिलकर सूर्योदय का स्वागत कर रहे हैं। मैं अपने गाइड के साथ लकड़ी के खंभों पर टिके एक विशाल कैनवास के ढाँचे के निकट पहुँचता हूँ।

वहाँ भारी भीड़ प्रवेश द्वार पर खड़ी है। प्रत्येक व्यक्ति अपने चप्पल-जूते उतारकर प्रतीक्षा कर रहे अनुचरों को देता है। मैं भी उस परंपरा का अनुसरण करता हूँ और फिर

विशाल पंडाल में प्रवेश कर जाता हूँ।

पंडाल के बीच में एक ऊँचा मंच है तथा परमपूज्य साहब जी महाराज उस पर एक कुर्सी लगाकर विराजमान हैं। सैकड़ों शिष्य उनके इर्द-गिर्द फ़र्श पर नीचे बैठे हैं और वह पूरा स्थान लोगों से भरा है। सबकी आँखें गुरुदेव की ओर हैं और सब बिलकुल चुपचाप बैठे हैं।

मैं भी रास्ता बनाकर मंच के निकट पहुँच जाता हूँ और ख़ुद को समेट कर छोटी-सी जगह में बैठ जाता हूँ। कुछ ही देर में, दो लोग खड़े होते हैं और धीमे-धीमे मंत्रोच्चारण करने लगते हैं। वह हिंदी भाषा में है तथा उसकी धुन मधुर है। यह लगभग पंद्रह मिनट चलता है। उन शब्दों के प्रभाव से सब शांत हो जाते हैं और धीरे-धीरे वहाँ पूर्ण मौन व्याप्त हो जाता है।

मैं आसपास देखता हूँ। उस पंडाल में बैठा प्रत्येक व्यक्ति बिलकुल चुप और स्थिर है। सब ध्यान अथवा प्रार्थना में डूबे हैं। मैं मंच पर विनम्र और सादी वेशभूषा में बैठे व्यक्ति को देखता हूँ। उसके होंठों से अब तक एक शब्द भी नहीं निकला है। उसका चेहरा हमेशा की भाँति गंभीर है। उसका सतर्क और सक्रिय अंदाज़ अचानक ग़ायब हो गया है तथा इस समय उसके मन में केवल शांति और ध्यान व्याप्त है। मैं सोच रहा हूँ कि सफ़ेद पगड़ी के नीचे उसके सिर में कौन से विचार उथल-पुथल मचा रहे हैं? साहबजी के कंधों पर कितनी बड़ी ज़िम्मेदारी है क्योंकि वहाँ एकत्रित इतने लोग, उन्हें श्रेष्ठ जीवन के साथ स्थापित पवित्र संपर्क के रूप में देखते हैं!

वह मौन लगभग आधा घंटा रहता है। किसी के खाँसने की आवाज़ भी नहीं आती। क्या इन सब लोगों ने अपने विचारों को किसी ऐसे जगत में केंद्रित कर लिया है जो मुझ जैसे संशयी पश्चिमवासी की पहुँच से परे हैं? कौन जानता है? परंतु इतना निश्चित है कि यह मौन किसी शक्तिशाली गतिविधि से पहले का मौन है।

हम लोग अपने जूते-चप्पल पहनकर चुपचाप अपने घर लौट आते हैं।

सुबह के समय, बहुत-से राधास्वामी अनुयायियों - कुछ वहाँ के आवासी हैं और कुछ बाहर से आए सदस्य हैं - के साथ वार्तालाप आरंभ करता हूँ। उनमें से कुछ लोग बढ़िया अंग्रेज़ी बोल सकते हैं। कुछ लोग उत्तर पश्चिम से आए हैं। उन्होंने पगड़ी पहनी है। कुछ चोटी वाले तमिल लोग दक्षिण से आए हैं। कुछ पूर्व दिशा से आए हुए छोटे क़द के बंगाली हैं और कुछ दाढ़ी वाले लोग हैं जो मध्य प्रांतों से वहाँ पहुँचे हैं। मैं उनके आत्म-सम्मान से काफ़ी प्रभावित हूँ। वे लोग आध्यात्मिक आकांक्षाओं को लेकर भी काफ़ी व्यवहारिक हैं। यदि उनकी इच्छाएँ किसी अन्य लोक में विचरती हैं तो भी उनके पैर धरती पर ही टिके रहते हैं। मुझे लगता है कि इन लोगों पर किसी भी शहर को गर्व होना चाहिए। मुझे ये लोग बहुत पसंद आए हैं क्योंकि इनमें बहुत दुर्लभ सत्चरित्र का गुण मौजूद है!

दोपहर में, एक और छोटी बैठक होती है। यह संक्षिप्त तथा अनौपचारिक है। इसका आयोजन बाहर से आए हुए सदस्यों के लाभार्थ किया गया है। इसमें व्यक्तिगत समस्याओं पर

चर्चा की जाती है। प्रश्नोत्तर भी होते हैं और कुछ सामान्य मुद्दे भी उठाए जाते हैं। साहब जी महाराज में एक असाधारण शक्ति है जिससे वह अपने सामने वाले की किसी भी समस्या का सरलता से निदान कर देते हैं। किसी भी सूक्ष्म प्रश्न का बड़ी चतुराई और हाज़िरजवाबी से उत्तर देते हैं तथा उनके सभी उत्तर आत्म-विश्वास से भरे हुए होते हैं। वह किसी भी आध्यात्मिक तथा भौतिक समस्या पर बोल सकते हैं। उनका व्यवहार विनम्रता और आत्म-विश्वास का अद्भुत मिश्रण है। उन्हें देखकर साफ़ पता लगता है कि उनके भीतर हास्य और वाक्पटुता प्रचुर मात्र में भरी है और उसी आधार पर वह बड़े हल्के अंदाज़ में लोगों के प्रश्नों के उत्तर देते रहते हैं।

शाम को एक और बैठक होती है। उस समय तक सभी कारख़ानों, दुकानों और खेतों का काम समाप्त हो जाता है। पंडाल में फिर से भारी भीड़ एकत्रित होती है। साहब जी महाराज भी फिर मंच पर अपनी कुर्सी पर बैठे हैं। उनके अनुयायी उनके आसपास बैठे हैं तथा उनके चरणों में स्वेच्छा से कोष के लिए धनराशि और अपना सहयोग अर्पित कर रहे हैं। समिति के दो सदस्य, उस धनराशि को जमा करते हैं और सभी लोगों द्वारा दिए सहयोग का हिसाब रखते हैं।

वहाँ होने वाला मुख्य कार्यक्रम साहब जी महाराज का एक लंबा प्रवचन है। उनके हज़ारों शिष्य उन्हें हिंदी में बोलता हुआ सुनते हैं। वे सब बड़े ध्यान से उनके प्रवचन सुन रहे हैं। साहब जी महाराज बहुत बढ़िया वक्ता हैं। वह प्रत्येक बात को अत्यंत सजीव ढंग से और हृदय की गहराई से कहते हैं। वह इतने उत्साह और जोश के साथ अपनी बात कहते हैं कि उनके उन्हें सुनने वाले श्रोताओं पर उनके प्रवचन का प्रेरणापूर्ण प्रभाव साफ़ देखा जा सकता है।



प्रतिदिन वही कार्यक्रम दोहराया जाता है। शाम को होने वाली बैठक सबसे लंबी होती है और लगभग दो घंटे तक चलती है। उस कार्यक्रम से साहबजी महाराज के मानसिक सामर्थ्य का पता लगता है क्योंकि वह इतनी लंबी अवधि तक प्रतिदिन उस कार्यक्रम को बिना किसी परेशानी के आयोजित कर लेते हैं। किसी को इस बात का पता नहीं होता कि वह शाम को किस विषय पर प्रवचन देंगे। मैं इस बात पर उनसे प्रश्न करता हूँ, तो वह उत्तर देते हैं:

'मैं जब शाम को कुर्सी पर बैठता हूँ तो मुझे स्वयं विषय का पता नहीं होता। मैं बोलना शुरू कर देता हूँ। उसके बाद भी मुझे नहीं पता होता कि मेरा अगला वाक्य क्या होगा और मैं उसे कैसे समाप्त करूँगा। इसके लिए मैं पूरी तरह अपने परमपिता परमात्मा पर निर्भर हूँ। वही मुझे बताते हैं कि मुझे क्या बोलना है। मैं उन्हीं से आदेश लेता हूँ। सच कहूँ तो मैं पूरी

तरह उनकी शरण में हूँ।'

साहबजी महाराज के पहले प्रवचन में कहे गए शब्द मुझे ध्यान हैं। गुरु के प्रति समर्पण, उनके प्रवचन का मुख्य विषय था। हम लोग दयालबाग के बीच स्थित मैदान में एक दरी पर बैठे हैं। वह स्थान हरे-भरे गाँव जैसा लगता है।

वह उसी बात को दोहराते हैं और फिर कहते हैं:

'गुरु नितांत आवश्यक है। आध्यात्मिक क्षेत्र में आत्म-निर्भरता जैसी कोई चीज़ नहीं होती।'

मैं उनसे हिम्मत करके पूछता हूँ, 'क्या आपको किसी गुरु की आवश्यकता पड़ी थी?'

'निस्संदेह! मैंने चौदह साल गुरु की तलाश की है।'

'चौदह वर्ष! आपके जीवन का पाँचवाँ हिस्सा! क्या इतना समय प्रतीक्षा करना उचित है?'

'सच्चे गुरु की तलाश में बिताया समय व्यर्थ नहीं जाता, चाहे इसमें बीस वर्ष क्यों न लग जाएँ,' वह तत्काल उत्तर देते हैं। 'मैं भी आपकी तरह पहले संशयवादी था। मैं फिर गुरु की तलाश के लिए बेचैन हो गया, जो मुझे आध्यात्मिक प्रकाश तक पहुँचा सके। मैं उस समय युवा था और मुझे सत्य जानने की बेचैनी थी। मैंने पेड़ों, घास और यहाँ तक कि आसमान से भी सत्य जानने का प्रयास किया। मैं बच्चों की तरह रोता था और ज्ञान की तलाश में भटकता रहता था। आख़िरकार, काफ़ी प्रयास के बाद, मुझसे जब दर्द बर्दाश्त नहीं हुआ तो मैंने एक दिन खाना-पीना छोड़कर भूखे मरने का विचार कर लिया और गुरु मिलने तक ऐसे ही भूखा रहने का प्रण ले लिया। मैं कोई काम नहीं कर पाता था। अगली रात, मुझे एक सपना दिखाई दिया। उसमें मेरे सामने एक गुरु प्रकट हुए। मैंने जब उनका पता पूछा तो उन्होंने कहा, "इलाहाबाद! तुम्हें मेरा पूरा पता बाद में लग जाएगा।" मैंने अगले दिन इलाहाबाद में रहने वाले अपने एक मित्र से बात की और उसे अपने सपने के बारे में बताया। वह कुछ चित्र लेकर लौटा और मुझसे पूछा कि क्या मैं उन चित्रें में से उस गुरु का चेहरा पहचान सकता हूँ। मैंने तुरंत स्वप्न में आए गुरु को पहचान लिया। मेरे मित्र ने तब बताया कि वह इलाहाबाद के एक अर्द्ध-गोपनीय समुदाय का सदस्य है और जिस व्यक्ति के चित्र को मैंने पहचाना था, वही उस समुदाय का गुरु भी है। मैं तत्काल उस व्यक्ति के पास पहुँचा और उसका शिष्य बन गया।'

'यह बड़ा रोचक है!'

'आप यदि अकेले योगाभ्यास करें और अपनी ही शक्तियों पर निर्भर रहें, तो भी आपकी प्रार्थना सुनी तभी जाती है जब आपको गुरु मिल जाता है। इससे बचने का कोई उपाय नहीं है। आपको गुरु अवश्य बनाना होगा। निष्ठावान और समर्पित व्यक्ति को सच्चा गुरु अवश्य

मिल जाता है।’

‘हम उसे पहचान कैसे सकते हैं?’ मैंने धीरे-से प्रश्न किया।

साहबजी का चेहरा सहज हो गया और उनकी आँखों में एक अजीब-सी चमक जाग उठी।

‘गुरु को पहले ही पता लग जाता है कि उसके पास कौन आने वाला है। वह स्वयं अपने शिष्य को अपनी ओर आकर्षित कर लेता है। उसी की शक्ति से दोनों का मिलन होता है।’

साहबजी महाराज के पास कुछ लोग और एकत्रित हो गए हैं और धीरे-धीरे भीड़ बढ़ती जा रही है। जल्द ही उनके पास एक नहीं, बल्कि बीस से तीस श्रोता हो जाएँगे।

‘मैं राधास्वामी सिद्धांतों को समझने का प्रयास कर रहा हूँ,’ मैंने कहा। ‘परंतु ये बड़े कठिन हैं। आपके एक शिष्य ने मुझे आपकी संस्था के किसी आरंभिक गुरु द्वारा लिखे गए लेख पढ़ने के लिए दिए हैं। उनका नाम परमपूज्य ब्रह्म शंकर मिश्रा था।’

साहबजी हँस पड़ते हैं।

‘यदि आप राधास्वामी की शिक्षा के सत्य को जानना चाहते हैं तो आपको हमारे योगाभ्यास करने होंगे। हम अपने सिद्धांतों के क़िताबी ज्ञान से अधिक इन अभ्यासों को महत्त्व देते हैं। मैं आपसे क्षमा चाहता हूँ कि मैं आपको हमारी ध्यान पद्धतियों के विषय में विस्तार से नहीं बता सकता क्योंकि उन्हें जानने के लिए गोपनीयता की शपथ लेनी होती है। ये वही लोग कर सकते हैं जो हमारी संस्था के सदस्य बनते हैं और जिन्हें यहाँ स्वीकार कर लिया जाता है। परंतु इन अभ्यासों का आधार ध्वनि-योग है।’

‘मैं जिन आलेखों को पढ़ रहा हूँ उनमें लिखा है कि ध्वनि ही वह शक्ति है, जिसके द्वारा ब्रह्मांड की सृष्टि हुई है।’

‘भौतिक दृष्टि से आप इस बात को ठीक से समझें हैं, परंतु मैं कहूँगा कि सृष्टि के आरंभ में परमपिता ने सबसे पहले ध्वनि तरंग को ही पैदा किया था। इस सृष्टि का निर्माण अनजान शक्तियों ने नहीं किया। दिव्य ध्वनि को अब हमारी संस्था ने जान लिया है और इसे ध्वन्यात्मक रूप से लिपिबद्ध किया जा सकता है। हमारा ऐसा मानना है कि ध्वनि में उसके स्रोत के संकेत छिपे होते हैं। उन शक्तियों के बारे में जाना जा सकता है जिनसे ध्वनि पैदा होती है। इसलिए हमारा कोई सदस्य जब शरीर, मन और इच्छा को नियंत्रित करने वाली दिव्य ध्वनि को अपने भीतर सुनना चाहता है तो उसे निश्चित रूप से उस ध्वनि को सुनते ही आनंद और ज्ञान की प्राप्ति होती है।’

‘क्या ऐसा कह सकते हैं कि हमारी नसों में रक्त-प्रवाह की आवाज़ भी एक दिव्य ध्वनि है? कौन-सी और ऐसी आवाज़ें हैं जिसे हम अपने भीतर सुन सकते हैं?’

‘हमारा मतलब भौतिक आवाज़ से नहीं, बल्कि आध्यात्मिक ध्वनि से है। हमें भौतिक

स्तर पर सुनाई देने वाली ध्वनि केवल सूक्ष्म शक्ति का एक परिवर्तित रूप है जिसने इस सृष्टि का निर्माण किया है। आपके वैज्ञानिकों ने जैसे पदार्थ को विघटित करके उसमें से बिजली पैदा की है, उसी तरह हम लोग भी भौतिक स्तर पर सुनाई देने वाली आवाज़ को उच्च कंपन से जोड़कर देख लेते हैं। वह हमें अपने बाहरी कानों से सुनाई नहीं देती परंतु वह आध्यात्मिक स्तर पर अवश्य मौजूद होती है। प्रत्येक ध्वनि में स्थान का प्रभाव भी मौजूद होता है जहाँ से वह पैदा होती है। यदि आप अपना ध्यान केंद्रित करेंगे तो आपको एक दिन आदिकालीन शोरगुल के बीच पैदा हुई वह दिव्य ध्वनि सुनाई देगी। उन शब्दों की गूँज, मनुष्य के आध्यात्मिक स्वभाव में लौटकर आती है। हमारे गोपनीय योगाभ्यास द्वारा उस गूँज को पकड़कर और उस के सहारे उसके स्रोत तक पहुँचकर आप सीधे स्वर्ग तक जा सकते हैं। जो व्यक्ति राधास्वामी पद्धतियों का निष्ठापूर्वक अनुसरण करता है, वह परम आनंद को अवश्य प्राप्त करता है।'

'आपकी शिक्षा सचमुच आश्चर्यजनक रूप से नई है।'

'यह पाश्चात्य जगत के लिए नवीन हो सकती है, किंतु भारत के लिए नहीं! कबीर ने पंद्रहवीं शताब्दी में बनारस शहर में ध्वनि योग की शिक्षा दी थी।'

'परंतु उसके विषय में शायद ही कोई ठीक से जानता हो।'

'इसे समझने में क्या परेशानी है? आप इतना तो मानते हैं कि संगीत, मनुष्य को भावनात्मक परम आनंद की ओर ले जा सकता है। तो फिर सोचिए, नैसर्गिक संगीत, व्यक्ति को किस हद तक प्रभावित कर सकता है!'

'मैं मानता हूँ परंतु उसके लिए पहले यह सिद्ध करना होगा कि भीतर कोई संगीत सचमुच मौजूद है।'

साहब जी अपने कंधे उचकाते हैं।

'मैं आपको ऐसे बहुत-से तर्क दे सकता हूँ जिससे आप संतुष्ट हो जाएँगे परंतु मुझे लगता है कि आप इससे कुछ अधिक खोज रहे हैं। मैं आपको केवल तर्क के माध्यम से अलौकिक चीज़ों का अस्तित्व कैसे सिद्ध कर सकता हूँ? जो व्यक्ति इन चीज़ों को समझने के लिए तैयार ही नहीं है, वह भौतिक संसार से आगे कुछ नहीं देख सकता। यदि आप स्वयं इन आध्यात्मिक तथ्यों का प्रमाण देखना चाहते हैं तो आपको नियमित रूप से योगाभ्यास करना होगा। मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि मनुष्य का शरीर बहुत-से ऐसी श्रेष्ठ कार्य करने में सक्षम है, जिनके विषय में हम जानते भी नहीं हैं। यह हमारे मस्तिष्क के भीतरी भाग के सूक्ष्म तत्वों से संबंधित है और उचित प्रशिक्षण के बाद इन केंद्रों को ऊर्जान्वित करके उन तत्वों के बारे में जानकारी प्राप्त की जा सकती है। अपने सबसे महत्त्वपूर्ण केंद्र के माध्यम से दिव्य चेतना को भी प्राप्त किया जा सकता है।'

'क्या आप मस्तिष्क के उन केंद्रों की बात कर रहे हैं, जिनके विषय में शरीर विज्ञानी

बताते हैं?'

'आंशिक रूप से। वे सब शरीर के अंग हैं, जिनके द्वारा सूक्ष्म केंद्र अपना काम करते हैं। असली गतिविधि सूक्ष्म केंद्रों में ही होती है। इनमें सबसे महत्त्वपूर्ण केंद्र हमारी पीनियल ग्रंथि है, जिसके बारे में आप जानते हैं। वह दोनों भौहों के बीच स्थित होती है। यही मनुष्य के प्राण-तत्व का मुख्य स्थान है। यदि किसी को इस स्थान पर गोली मार दी जाए तो उसकी मृत्यु तत्काल और निश्चित है। हमारे श्रवण संबंधी, दृश्य संबंधी और अन्य कई नसों के माध्यम से होने वाला प्राणवायु का प्रवाह, इसी ग्रंथि में आकर मिलता है।'

'चिकित्सा जगत के लोग, अभी पीनियल ग्रंथि के मुख्य कार्यों को लेकर दुविधा में हैं।'

'हाँ, ऐसा हो सकता है क्योंकि मनुष्य के प्राण तत्व का यही केंद्र, मस्तिष्क और शरीर को प्राण उपलब्ध करवाता है। पीनियल ग्रंथि में प्राण-तत्व की कमी होने पर मनुष्य, गहरी निद्रा अथवा गहन ध्यान की अवस्था में चला जाता है। जब प्राणतत्व, इस ग्रंथि से पूरी तरह निकल जाता है तो शरीर निष्प्राण हो जाता है। मनुष्य का शरीर संपूर्ण ब्रह्मांड का प्रतिमान रूप है और उसके भीतर के सभी तत्व, सृष्टि के तत्वों का छोटे स्तर पर प्रतिनिधित्व करते हैं। इसी में भीतर के सभी सूक्ष्म क्षेत्रें का संपर्क सूत्र भी मौजूद है। इसलिए यह संभव है कि हमारे भीतर मौजूद प्राण-तत्व, उच्चतम आध्यात्मिक स्तर तक पहुँच सकता है। जब प्राणतत्व, पीनियल ग्रंथि से निकलकर ऊपर की ओर बढ़ता है और हमारी बुद्ध के संपर्क में आता है तो उसके माध्यम से वह ब्रह्मांडीय क्षेत्र के संपर्क में भी आ जाता है और फिर श्वेत ऊतकों से स्पर्श होने पर इसकी चेतना शक्ति आध्यात्मिक स्तर की ऊँचाइयों को छू लेती है। परंतु इस स्तर की आध्यात्मिक चेतना प्राप्त करने के लिए समस्त इंद्रियों को स्थिर करना पड़ता है, अन्यथा इसे बाहरी वातावरण से मुक्त करना संभव नहीं है। इसलिए हमारी योग पद्धतियों का सार तत्व यही है कि हम ध्यान को पूरी तरह भीतर की ओर केंद्रित करते हैं और बाहर के वातावरण से दूर ले जाते हैं ताकि संपूर्ण ध्यान की स्थिति पैदा हो सके।'

मैं उन सूक्ष्म और विद्वतापूर्ण विचारों को आत्मसात करने का प्रयास कर रहा हूँ। हमारे आस-पास भारी संख्या में लोग बैठे हैं और हमारी बातचीत को ध्यान से सुन रहे हैं। उनके गुरु का अंतर्निहित शांत आश्वासन मुझे आकर्षित कर रहा है।

'आप कहते हैं कि आपके इन वक्तव्यों की प्रामाणिकता को जानने के लिए आपके बताए ध्वनि योग का अभ्यास करना होगा। परंतु आप उन अभ्यासों को गुप्त रखते हैं,' मैं शिकायत भरे लहजे में कहता हूँ।

'जो व्यक्ति हमारी संस्था का सदस्य बनता है और जिसे हम स्वीकार कर लेते हैं, उसे मौखिक तौर पर इन आध्यात्मिक बातों का ज्ञान दिया जाता है।'

'क्या आप मुझे कोई निजी अनुभव या संतोषजनक प्रमाण दे सकते हैं? आप जो कुछ कह रहे हैं वह सत्य हो सकता है और मैं सचमुच उस पर विश्वास करना चाहता हूँ।'

‘उसके लिए आपको हमारी संस्था का सदस्य बनना होगा।’

‘मैं क्षमा चाहता हूँ किंतु मैं ऐसा नहीं कर सकता। मैं इसी तरह बड़ा हुआ हूँ और बिना प्रमाण के किसी बात पर विश्वास करना मेरे लिए कठिन है।’

साहब जी असहाय मुद्रा में अपने हाथों को फैलाते हैं।

‘तो मैं इसमें क्या कर सकता हूँ? मैं तो परमपिता परमात्मा के शरण में हूँ!’



मैं प्रतिदिन उनकी सामूहिक बैठक में भाग लेता हूँ। मैं चुपचाप उनके बीच बैठकर ध्यान करता हूँ और उनके प्रवचनों को सुनता हूँ। मैं खुलकर उनसे प्रश्न करता हूँ और राधास्वामी संप्रदाय की शिक्षाओं के उन अंशों को ध्यान से अध्ययन करता हूँ जो ब्रह्मांड और मनुष्य के विषय में मुझे उपलब्ध कराए जा रहे हैं।

एक दिन दोपहर के समय, मैं एक शिष्य के साथ घूमते हुए दयालबाग से क़रीब एक मील आगे निकल आया हूँ। यहाँ से जंगल आरंभ होता है। हम लोग यमुना नदी की ओर मुड़ जाते हैं और फिर नदी के तट पर बैठ जाते हैं। वहाँ की ढलानदार और रेतीली ऊँचाई से हम लोग नीचे धीमी गति से बहती जलवायु को महसूस कर रहे हैं।

यमुना नदी! इन्हीं तटों के आसपास कहीं कृष्ण, उन्मुक्त भाव से ग्वालिनें के साथ घूमते थे और उन्हें अपनी बाँसुरी की धुन और प्रेम-कलाओं से आह्लादित करते थे। आज उन्हें शायद हिंदू देवी-देवताओं में सबसे अधिक पूजा और माना जाता है।

‘हाल के कुछ वर्षों तक इस जगह को वन्य पशुओं का निवास माना जाता था,’ मेरा साथी मुझे बता रहा है। ‘रात में वे पशु कभी कभी घूमते हुए दयालबाग भी आ जाते थे। परंतु अब वे यहाँ से दूर रहते हैं।’

हम लोग चुपचाप कुछ देर बैठे रहते हैं और फिर वह कहता है:

‘आप पहले यूरोपीय व्यक्ति हैं, जो हमारे साथ सामूहिक बैठकों में भाग ले रहे हैं। हालाँकि आप ऐसा करने वाले अंतिम व्यक्ति नहीं होंगे। हम आपकी रुचि की क़द्र करते हैं। आप हमारी संस्था का हिस्सा क्यों नहीं बन जाते?’

‘ऐसा इसलिए क्योंकि विश्वास में मेरी आस्था नहीं है। मैं ऐसा समझता हूँ कि मेरे लिए उन सब बातों को मान लेना आसान है जिनका आप मुझे विश्वास दिलाना चाहते हैं।’

वह घुटने ऊपर मोड़कर उन पर अपनी ठुड्डी टिका लेता है।

‘हमारे गुरु के साथ हुए संपर्क से आपको लाभ होगा। मैं आपको संस्था का सदस्य बनने के लिए ज़ोर नहीं दूँगा। हम किसी को अपने साथ मिलाने का प्रयास नहीं करते। हमारे अपने

सदस्यों को भी इस तरह के प्रवचन देने की अनुमति नहीं है।'

'आपको इस संस्था के विषय में कैसे पता लगा?'

'यह आसान था। मेरे पिता कई वर्षों से इस संस्था के सदस्य थे। वे दयालबाग में नहीं रहते हैं परंतु यहाँ कभी-कभी आते हैं। वह मुझे एक बार अपने साथ लाए थे, परंतु उन्होंने मुझे कभी इसका सदस्य बनने के लिए प्रेरित नहीं किया। क़रीब दो साल पहले, मैं कुछ विषयों पर सोच रहा था तथा मैंने उन पर अपने मित्रों के साथ विचार-विमर्श भी किया। मैंने अपने पिता से भी प्रश्न पूछे। उन्होंने मुझे जो कुछ बताया, मैं उससे प्रभावित होकर राधास्वामी की शिक्षाओं की ओर प्रेरित हुआ हूँ। मुझे इस संस्था के सदस्य के रूप में स्वीकार किया गया। समय के साथ, मेरी आस्था पुष्ट हुई है। शायद मैं सौभाग्यशाली था क्योंकि बहुत-से लोग जीवन भर उलझन में रहने के बाद हमारे पास आते हैं।'

'यदि मैं अपने संदेह, आपकी तरह आसानी और शीघ्रता से दूर कर लूँ, तो?' मैं उत्तर देता हूँ।

हम दोनों फिर चुप हो जाते हैं। यमुना का गहरा नीला पानी मुझे आकर्षित कर रहा है। मैं आदर भाव में गोते लगाने लगता हूँ।

भारतीय लोगों की चेतन और अचेतन विचारधारा, आस्था से प्रेरित है। इन्हें किसी न किसी धर्म, संप्रदाय अथवा संस्था के साथ संबद्ध होना आवश्यक महसूस होता है। भारत में निकृष्ट से लेकर सर्वश्रेष्ठ विचारधाराओं का प्रतिनिधित्व होता है।

मैं एक बार गंगा के निकट स्थित एक मंदिर में गया था। उसके खंभों पर पुरुषों और स्त्रियों के कामुक दृश्य और मुद्राएँ बनी हुई थीं। उसकी दीवारों पर भी कामुक दृश्य बने थे, जिन्हें देखकर कोई भी पाश्चात्य जगत का इंसान घबरा सकता है। भारतीय धर्म में इस तरह की चीज़ों के लिए भी जगह है! यह भी हो सकता है कि वे गंदगी में गिरने की अपेक्षा, संभोग के प्रति धार्मिक स्वीकृति को बेहतर समझते हों, परंतु फिर भी यहाँ व्यक्ति के पास श्रेष्ठ और शुद्ध आस्था की अवधारणाओं के लिए भी स्थान है। भारत ऐसा ही देश है!

इस देश में मुझे राधास्वामी जैसा कोई आश्चर्यजनक और अद्भुत संप्रदाय नज़र नहीं आया है। यह निस्संदेह बड़ा विशिष्ट है। साहबजी महाराज के अतिरिक्त, कौन इतना बुद्धिमान हो सकता है जो संसार के सबसे प्राचीनतम ज्ञान योग को यूरोपीय या अमेरिकी शहर के आधुनिक एवं मशीनी युग के साथ मिला सके?

क्या दयालबाग के लिए वर्तमान स्थिति से ऊपर उठकर, भारतीय इतिहास में अपनी एक अलग जगह बनाना संभव होगा? यदि भारत ऐसी वर्ग पहेली है, जिसका सही हल अभी तक कोई खोज नहीं पाया है, तो ऐसा नहीं है कि आने वाले वर्षों में भी कोई इसका उत्तर नहीं खोज पाएगा।

साहबजी ने गांधी द्वारा प्रचारित मध्यकालीनवाद के विषय पर हँसकर मज़ाक़ किया था। मैं गांधी के अपने मुख्यालय अहमदाबाद में, उस हँसी की गूँज सुन सकता हूँ। साबरमती नदी के तट से, कोई व्यक्ति आसानी से लगभग पचास फ़ैक्ट्रियों की चिमनियों से उठता धुआँ देख सकता है। वह दृश्य, सफ़ेद लकड़ी के उन बंगलों को चुनौती देता है, जहाँ से हथकरघा उद्योग को प्रेरणा मिलती है।

पाश्चात्य जीवनशैली का शक्तिशाली प्रभाव, धीरे-धीरे भारत के परंपरागत तरीक़ों को तोड़ रहा है। भारत के समुद्र तट पर पहली बार आने वाले यूरोपीय लोग अपने साथ केवल सामान नहीं, बल्कि विचार भी लाए थे। वास्को-डि-गामा जब कालिकट के बंदरगाह पर उतरा था, तभी से पाश्चात्यकरण की प्रक्रिया आरंभ हो गई थी। वह आज तीव्र गति से आगे बढ़ रही है। भारत में औद्योगिकीकरण का सिलसिला अभी धीमा है, परंतु वह शुरू हो चुका है। इसकी अपेक्षा यूरोप में बौद्धिकता का पुनर्जन्म, धार्मिक पुनर्गठन और औद्योगिक क्रांति हो चुकी है और यूरोप ने इन सब चीज़ों को पीछे छोड़ दिया है। भारत में जाग्रति का समय अब आरंभ हुआ है और ये सब चीज़ें उनके मार्ग में अब आ रही हैं। ये भारत की समस्याएँ हैं। क्या भारत आँख बंद करके यूरोपीय लोगों का अनुसरण करेगा या फिर वह इन समस्याओं से निपटने का कोई बेहतर मार्ग निकालेगा? क्या साहबजी महाराज का विशिष्ट योगदान भारत के लिए किसी दिन आकर्षक साबित हो सकता है?

मुझे एक बात पर विश्वास है कि भारत में बहुत जल्दी, अतुलनीय और विभिन्न विचारधाराओं पर चर्चा शुरू हो जाएगी। हज़ारों वर्ष पुराने रीति-रिवाजों और धार्मिक परंपराओं में उलझा समाज अधिक से अधिक दो या तीन दशक में इनसे मुक्ति पा लेगा। यह किसी चमत्कार जैसा प्रतीत होता है, परंतु यह अवश्य होगा!

साहबजी महाराज ने शायद इस स्थिति को बहुत पहले भाँप लिया है। उन्हें पता है कि हम एक नए युग में जी रहे हैं। पुरानी चीज़ों और व्यवस्थाओं को बदला जा रहा है और यह सिलसिला भारत की तरह, अन्य देशों में भी चल रहा है। क्या एशियाई और पाश्चात्य व्यवहारिकता का कभी मिलन नहीं हो सकेगा? उन्हें ऐसा नहीं लगता। कोई योगी सांसारिक वस्त्र क्यों नहीं पहन सकता? इसलिए साहब जी का ऐसा मानना है कि योगियों को एकांत से बाहर निकलना चाहिए तथा लोगों के साथ घुलना-मिलना चाहिए। उनको लगता है कि यह समय है जब योगियों को फ़ैक्ट्री में, ऑफ़िस में, और यहाँ तक कि स्कूलों में भी जाकर आध्यात्मिक शिक्षा का ज्ञान देना चाहिए। परंतु यह ज्ञान केवल प्रवचन या प्रचार-प्रसार द्वारा नहीं, बल्कि प्रेरणापूर्ण कार्यों द्वारा दिया जाना चाहिए। उनके अनुसार स्वर्ग का मार्ग, रोज़मर्रा की गतिविधियों और शोरगुल के बीच से होकर ही निकलता है। योग की तरह अध्यात्म पर आधारित तरीक़े को लोग शायद मूर्खतापूर्ण कार्य समझ सकते हैं। यदि योग केवल कुछ साधु-संन्यासियों तक सीमित रह गया तो आधुनिक संसार को उसका लाभ नहीं मिलेगा और

यह लुप्त होता विज्ञान, एक दिन पूरी तरह समाप्त हो जाएगा। यदि योग केवल दुबले-पतले संन्यासियों के लिए आनंददायक बनकर रह जाएगा तो हम लोग, जो क़लम चलाते हैं, हल चलाते हैं, मशीनों पर काम करते हैं, स्टॉक एक्सचेंज के शोरगुल को सहते हैं, दुकानों से सामान ख़रीदते हैं, इस विज्ञान से मुँह मोड़ लेंगे। इस तरह पाश्चात्य जगत का स्वभाव ही आधुनिक भारत का चरित्र बनकर रह जाएगा।

साहबजी महाराज ने चतुराई से इस अपरिहार्य प्रवृत्ति को देख लिया है और वह इस प्राचीन योग विधि और विज्ञान को आधुनिक उपयोग के लिए बचाकर रखने का हरसंभव प्रयास कर रहे हैं। वे बहुत प्रेरणाशील और मेहनती व्यक्ति हैं। वह भारतवर्ष में अपना कोई चिह्न अवश्य छोड़कर जाएँगे। इन्होंने यह समझ लिया है कि यह देश आलस्य में डूबा हुआ है और इन्हें पता है व्यापार एवं आधुनिक कृषि के क्षेत्र में उन्नत पाश्चात्य जगत क्यों और कैसे अधिक ख़ुशहाल और संपन्न है। साहबजी को यह भी पता है कि योग की संस्कृति, भारत की मूल्यवान धरोहरों में से एक है, जो उसे प्राचीन ऋषि-मुनियों से प्राप्त हुई है। उन्हें यह इस बात का भी ध्यान है कि एकांत में रहने वाले गिने-चुने गुरु, जिन्होंने अपनी संस्कृति को अभी तक जीवित रखा है, अब धीरे-धीरे लुप्त हो रहे हैं और उनकी मृत्यु के साथ, योग के वास्तविक रहस्य भी मिट जाएँगे। यही कारण है कि साहबजी महाराज विचारों की ऊँचाइयों से नीचे उतरकर हमारे समय में आ गए हैं। उन्होंने बीसवीं शताब्दी में अपने ऊर्जान्वित प्रयासों से यह कर दिखाया है और वह इन दोनों के बीच सामंजस्य स्थापित करने का प्रयास कर रहे हैं।

साहब जी महाराज का प्रयास बहुत ही प्रशंसनीय है। हम ऐसे समय में जी रहे हैं, जब अरब में स्थित मोहम्मद के मक़बरे पर बिजली जगमगाती है और मोरक्को के रेगिस्तान से सामान को मोटरगाड़ियों द्वारा खींचा जाता है। ऐसे में भारत का क्या होगा? इस विशाल देश को, जो सैकड़ों वर्षों की नींद से अचानक जाग उठा है और जिस पर अपनी विपरीत संस्कृति का ज़बरदस्त आघात लगा है, अपनी आँखें खोलनी होंगी। अंग्रेज़ों ने यहाँ रहकर रेतीले रेगिस्तान को उर्वर मैदानों में तब्दील किया है। उन्होंने बड़ी-बड़ी नहरों का निर्माण किया है और कृषि के लिए बाँध बनाए हैं। इसकी मदद से उन्होंने बड़ी नदियों में आने वाली बाढ़ को भी नियंत्रित किया है। उन्होंने उत्तर-पश्चिमी सीमा पर शांति व संपत्ति को सुरक्षित रखने के लिए कार्यकुशल सैनिकों का अभेद्य दस्ता भी तैयार किया है। इसके अतिरिक्त उन्होंने भारत में अत्यंत बुद्धिमत्तापूर्ण और तर्कसंगत विचारों की हवा चलाई है। उत्तर में और सुदूर पश्चिम से, अंग्रेज़ लोग यहाँ आए और नियति ने भारत को उनके चरणों में बैठा दिया तथा बहुत कम प्रयासों के बाद ही, यह देश उनका अपना बन गया।

ऐसा क्यों?

शायद एशियाई ज्ञान और पाश्चात्य विज्ञान के सहारे पनपते संसार से एक दिन ऐसी

सभ्यता जन्म लेगी, जिसके सामने पुरातनता शर्मसार हो जाएगी। वह सभ्यता आधुनिकता का उपहास उड़ाएगी और उसे देखकर वंशज चकित रह जाएँगे। यहाँ आकर मेरे विचारों की श्रृंखला थम जाती है।

मैं ऊपर देखकर अपने साथी से एक प्रश्न पूछता हूँ किंतु मुझे नहीं लगता कि वह मेरी बात सुन रहा है। वह लगातार नदी से परावर्तित होती सूर्यास्त की अंतिम किरण को देख रहा है। यह संध्या का समय है। सूर्य तेज़ी से अस्त हो रहा है। आसपास की स्थिरता का वर्णन करना कठिन है। समस्त प्रकृति उस अद्भुत दृश्य को देखकर निःशब्द है और सबकुछ एक पल के लिए ठहर गया है। मेरा हृदय भी अद्भुत शांति का आनंद ले रहा है। मैं एक बार फिर अपने साथी को देखता हूँ। उसकी आकृति तेज़ी से घिरते अंधकार में गुम हो रही है। हम लोग चुपचाप कुछ देर और वहाँ बैठकर सूर्य के पूरी तरह अस्त हो जाने की प्रतीक्षा करते हैं।

मेरा साथी धीरे-से उठता है और मुझे दयालबाग वापस लिए चलता है। हम लोग असंख्य तारों से जगमगाते आकाश के नीचे आकर एक जगह रुक जाते हैं।



साहबजी महाराज ने दयालबाग छोड़कर कुछ समय के लिए मध्य प्रांत में जाकर आराम करने का निश्चय किया है। मैं उनके जाने को विदाई का समय मान रहा हूँ और मैं भी उसी दिशा में आगे बढ़ने की सोच रहा हूँ। हम लोग टिमरनी तक साथ जाएँगे और फिर वहाँ से अलग मार्ग पर चल पड़ेंगे।

हम लोग आधी रात में लगभग एक घंटा बीत जाने पर आगरा स्टेशन पर उतरते हैं। साहबजी महाराज के क़रीब बीस शिष्य उनके साथ हैं। हम लोगों का समूह काफ़ी बड़ा हो गया है। कोई व्यक्ति साहबजी के लिए कुर्सी ले आता है और वह अपने अनुयायियों के बीच में कुर्सी लगा कर बैठ जाते हैं।

मैं दयालबाग में अपने आवास पर दिनभर विचारों में खोया हूँ। मुझे इस बात का दुःख है कि मुझे कोई याद रखने योग्य अनुभव नहीं हुआ है। मुझे जीवन के गूढ़ रहस्य से संबंधित कोई सार्थक दृश्य देखने को नहीं मिला है। मैंने आशा की थी कि किसी शानदार योगिक क्रिया द्वारा मेरी चेतना में कुछ परिवर्तन होगा और कुछ समय के लिए मेरे मानसिक दुःख दूर हो जाएँगे ताकि मैं योग के मार्ग पर आस्था के साथ आगे बढ़ सकूँ। परंतु यह आशीर्वाद मुझे नहीं मिला है। शायद मैं इसके योग्य नहीं हूँ। मुझे लगता है कि मैं कुछ ज़्यादा ही अपेक्षा कर रहा हूँ; मुझे नहीं पता!

मैं बीच-बीच में साहबजी के बारे में सोचता हूँ। उनका व्यक्तित्व सचमुच चुंबकीय है। वह बहुत आकर्षक हैं और उनके भीतर अमेरिकियों जैसी सतर्कता और व्यवहारिकता, अंग्रेज़ों

जैसा आचरण और भारतीयों जैसी निष्ठा और विचारप्रभुता का अद्भुत मिश्रण है। उनके समान व्यक्तित्व आधुनिक जगत में ढूँढ़ना बहुत मुश्किल है। एक लाख से अधिक पुरुष और स्त्रियों ने अपना संपूर्ण विश्वास इस व्यक्ति को अर्पित कर दिया है और फिर भी यह कितना शांत और विनम्र है!

आख़िरकार हमारी गाड़ी स्टेशन में प्रवेश करती है। उसकी तेज़ रोशनी से आगे का मार्ग प्रकाशमान हो जाता है। साहबजी अपने आरक्षित डिब्बे में चढ़ जाते हैं और बाक़ी लोग भी अन्य डिब्बों में चढ़ जाते हैं। मैं कुछ घंटे सोकर निकाल देता हूँ। मैं सुबह सोकर उठता हूँ तो मेरा गला बिलकुल सूखा हुआ है।

हमारी गाड़ी जहाँ भी रुकती है, वहाँ साहबजी के ढेरों अनुयायी उनके डिब्बे की खिड़की के आसपास एकत्रित हो जाते हैं। उन्हें अपने गुरु की यात्रा का पहले ही समाचार मिल जाता है और वे सब उस अवसर पर अपने गुरु से संपर्क स्थापित करने की उम्मीद लिए वहाँ पहुँच जाते हैं। भारत में ऐसा कहा जाता है कि अपने गुरु के साथ क्षणभर का भी संपर्क, आध्यात्मिक और भौतिक फल देता है।

मुझे अपनी यात्रा के अंतिम तीन घंटे साहबजी के साथ उनके डिब्बे में बिताने की अनुमति मिल जाती है। हम लोग संसार की स्थिति, पश्चिमी जगत के राष्ट्रों और भारत के भविष्य पर लंबी बातचीत करते हैं। अंत में वह मुझे अपने मधुर और स्नेही अंदाज़ में कहते हैं:

'मैं आपको विश्वास दिलाना चाहता हूँ कि मुझे भारत को अपना देश मानने के प्रति कोई विशेष लगाव नहीं है। मैं विश्व बंधुत्व में विश्वास रखता हूँ और संसार के सभी लोगों को अपना भाई मानता हूँ।'

मैं साहबजी की इस अद्भुत उन्मुक्तता से प्रसन्न हूँ। उनके सभी संवादों में मुझे यह स्वच्छंदता देखने को मिलती है। वह सीधे बात पर आते हैं और उनकी हर बात का एक निश्चित लक्ष्य होता है। उन्हें अपनी कही बात पर पूर्ण विश्वास है। उनके साथ बातचीत करना और उनके विचारों को जानना सुखद अनुभव है। वह हमेशा कुछ नया और अप्रत्याशित कहते हैं जिससे चीज़ों को देखने का नया दृष्टिकोण मिलता है।

हमारी गाड़ी आगे बढ़ रही है। सूरज की तेज़ रोशनी सीधी मेरी आँखों पर पड़ रही है। गर्मी बहुत तेज़ है और सूरज की तेज़ धूप से मेरा दिमाग़ थक रहा है। मैं लकड़ी की खिड़की को नीचे गिरा देता हूँ और पंखा चालू कर देता हूँ। हमें दोपहर की धूप से कुछ आराम मिलता है। साहबजी महाराज मेरी असुविधा देख रहे हैं। वह मेरे लिए अपने थैले में से संतरे निकालते हैं और छोटी-सी मेज़ पर रखते हैं। वे मुझे संतरा खाने को कहते हैं।

'इससे आपके गले को ठंडक मिलेगी।'

वह चाकू से धीरे-धीरे संतरे का छिलका उतार रहे हैं। इस बीच वे कहते हैं:

‘आप किसी को भी गुरु बनाने से पहले बहुत सावधान रहते हैं। यह अच्छी बात है। किसी को गुरु बनाने से पहले संशय करना लाभदायक होता है, परंतु बाद में आपको पूर्ण विश्वास हो जाना चाहिए। आपको जब तक अपना गुरु न मिल जाए, आप आराम मत कीजिए। यह बहुत ही ज़रूरी है!’

तभी गाड़ी के रुकने की आवाज़ आती है और कोई ज़ोर से चिल्लाता है: ‘टिमरनी!’

साहबजी महाराज चलने के लिए उठ जाते हैं। इससे पहले कि उनके शिष्य आकर उन्हें अपने साथ ले जाएँ, मेरे भीतर कुछ हलचल हो रही है। मैं संकोच छोड़कर और पाश्चात्य अहंकार की उपेक्षा करते हुए तथा अपने धर्म-विरोधी स्वभाव को छोड़कर अचानक बोल पड़ता हूँ:

‘परमपूज्य, क्या मुझे आपका आशीर्वाद मिलेगा?’

साहबजी महाराज मुस्कराते हुए पीछे मुड़ते हैं और अपने चश्मे से मुझे स्नेहपूर्वक देखकर मेरे मेरा कंधा थपथपाते हैं।

‘मेरा आशीर्वाद सदा आपके साथ है!’ वह मुझे आश्वस्त करके वहाँ से चले जाते हैं।

मैं लौटकर अपने डिब्बे में आ जाता हूँ और हमारी गाड़ी तेज़ी से आगे चल पड़ती है। मैं खिड़की से अपने सामने फैले विशाल मैदान को देख रहा हूँ। खेतों में बहुत-सी गाएँ छोटे-छोटे झुंड बनाकर बैठी घास खा रही हैं। मैं उन्हें देख अवश्य रहा हूँ परंतु मेरे मस्तिष्क में उसी एक व्यक्ति की छवि है, मैं जिसका प्रशंसक बन गया हूँ। साहबजी महाराज, सचमुच एक प्रेरणादायक स्वप्नदृष्टा हैं। वे अत्यंत शांत योगी हैं। वे संसार में रहने वाले व्यवहारिक होने के साथ-साथ अत्यंत परिष्कृत मनुष्य हैं!

---

* यूरोपीय अर्थशास्त्रियों को बहुत पहले से ऐसी एक योजना के बारे में पता है जो इटली के प्रोफ़ेसर रिनानो ने विकसित की थी। उन्होंने यह सुझाव दिया था कि पैतृक क़ानून को इस तरह संशोधित किया जाए ताकि उसका कम से कम विरोध हो और उसके लिए बलिदान देने की आवश्यकता भी कम हो जाए।

अध्याय 14

पारसी मसीहा के मुख्यालय पर

आगरा से नासिक का रास्ता लंबा है परंतु मैं इससे छोटे-से अध्याय में उसका उल्लेख नहीं करूँगा ताकि मेरा यह यात्रा-वृत्तांत अपने उचित मुक़ाम तक जल्दी पहुँच सके।

समय का चक्र अपने अवश्यंभावी मार्ग पर चल रहा है और मैं उसके साथ भारत की यात्रा पर निकला हुआ हूँ। एक बार फिर मुझे पारसी साधु एवं स्वघोषित पैगंबर मेहर बाबा से मिलना है।

मुझे उनके पास दोबारा जाने की विशेष इच्छा नहीं है। उनके विषय में संदेहों ने मुझे अपने घेरे में लपेट रखा है। मेरा यह भाव दृढ़ हो चुका है कि उस व्यक्ति के पास रुकना समय की बर्बादी होगी। मेहर बाबा हालाँकि अच्छा व्यक्ति है और सादा जीवन जीता है, परंतु दुर्भाग्य से, उसे अपनी महानता के विषय में बहुत भ्रांतियाँ हैं। मैंने संयोग से, अपनी यात्राओं के दौरान, उसके द्वारा किए उन चमत्कारिक उपचार के मामलों की जाँच-पड़ताल की थी, जिनके विषय में मुझे मेहर बाबा ने स्वयं बताया था। उसमें से एक मामला अपेंडिसाइटिस का है। उस रोगी को लगता है कि मेहर बाबा में सिर्फ़ आस्था रखना से ही वह ठीक हो गया। परंतु उसके बारे में खोजबीन करने पर मुझे पता लगा कि उसका उपचार करने वाले चिकित्सक को उस व्यक्ति के पेट में सिवाय अपच के और कुछ नहीं मिला! एक अन्य मामले में, एक अच्छे स्वभाव वाले वृद्ध व्यक्ति के विषय में यह बताया गया था कि उसे बहुत सारी बीमारियाँ थीं और वह एक ही रात में ठीक हो गया था। परंतु जानकारी लेने पर पता चला कि उनके एक पैर के टखने में सिर्फ़ थोड़ी सूजन थी! संक्षेप में कहूँ तो मेहर बाबा के शिष्यों ने उपचार करने की उनकी शक्तियों को ज़्यादा ही बढ़ा-चढ़ाकर बताया था। उन लोगों का

उत्साह इसलिए समझ में आता है क्योंकि वे ऐसे देश में रहते हैं, जहाँ कहानियाँ, तथ्यों से भी तेज़ फैलती हैं।

मुझे नहीं लगता कि वह पारसी पैगंबर अपने असाधारण वादों को पूरा कर सकता है। चूँकि मैंने एक महीना उसके साथ रहने का वादा किया था, मुझे अपना वचन नहीं तोड़ना चाहिए। इसलिए अपने भीतर की प्रेरणा और समस्त तर्क एवं निर्णयों के बावजूद, मैं नासिक के लिए गाड़ी पकड़ लेता हूँ ताकि मुझे यह दोष न दिया जाए कि मैंने उसे शक्तियों को सिद्ध करने का मौक़ा नहीं दिया।



मेहर बाबा ने शहर के बाहरी इलाक़े पर स्थित आधुनिक घरों में अपना मुख्यालय बनाया है। वहाँ लगभग चालीस शिष्यों का एक समूह बिना किसी लक्ष्य के घूमता रहता है।

'आप क्या सोच रहे हैं?' मेहर बाबा ने पहला प्रश्न किया। हमारी मुलाक़ात के समय मैं यात्रा के कारण थका हुआ हूँ और उन्हें मेरी थकान-भरी भाव भंगिमा देखकर शायद ऐसा ग़लतफ़हमी हो रही है कि मैं कुछ सोच रहा हूँ। परंतु मैं तत्काल ही उत्तर दे देता हूँ।

'मैं उन दर्जन-भर पैगंबरों के विषय में सोच रहा हूँ, जिनसे मैं इस बीच भारत में मिल चुका हूँ।'

मेहर बाबा को मेरी बात सुनकर आश्चर्य नहीं होता।

'हाँ,' मेहर बाबा लकड़ी के बोर्ड पर अँगुलियों को चलाते हुए कहते हैं। 'मैंने उनमें से कुछ लोगों के विषय में सुना है।'

'आपका उनके विषय में क्या मानना है?' मैं पूछता हूँ।

उनके माथे पर लकीरें, परंतु चेहरे पर मुस्कान है।

'यदि वे ईमानदार बन रहे हैं, तो यह उनकी भूल है। यदि वे ईमानदार नहीं हैं तो फिर दूसरों को धोखा दे रहे हैं। ऐसे बहुत-से साधु हैं, जिन्होंने काफ़ी प्रगति की है और अपना आध्यात्मिक आभामंडल तैयार कर लिया है। इस तरह की दुखद स्थिति तब होती है जब उन्हें सलाह देने या उनका मार्गदर्शन करने वाला कोई उचित गुरु नहीं मिलता। इस मार्ग पर एक ऐसा बिंदु आता है, जिसे पार करना बहुत मुश्किल होता है। ऐसा प्रायः होता है कि निष्ठा के सहारे इस अवस्था तक पहुँचने वाले व्यक्ति को यह भ्रम हो जाता है कि वह अपने उच्चतम लक्ष्य को प्राप्त कर चुका है। परंतु स्वयं को मसीहा सिद्ध करने के लिए इससे अधिक करने की आवश्यकता होती है!'

'आपने बहुत बढ़िया और तर्कसंगत स्पष्टीकरण दिया है, परंतु दुर्भाग्य यह है कि मैं लगभग यही बात उन सब लोगों से सुन चुका हूँ जो ख़ुद को मसीहा या पैगंबर मानते हैं। हर

कोई यही कहता है कि वही श्रेष्ठ है और वे सब अपने प्रतिद्वंद्वियों को कम आँकते हैं!'

'आप इसकी चिंता मत कीजिए। सब अचेतन रूप से मेरे काम में मेरी सहायता कर रहे हैं। मैं जानता हूँ मैं कौन हूँ। मेरा अभियान पूरा होने का समय नज़दीक आ जाएगा, तो संसार को पता लग जाएगा कि मैं कौन हूँ।'

इस तरह के वातावरण में तर्क करना संभव नहीं है, इसलिए मैं इस बात को छोड़ देता हूँ। मेहर बाबा मेरे अभिवादन की औपचारिकताओं को पूरा करके फिर मुझे वापस लौटने को कहते हैं।

मैं एक बंगले में ठहरा हूँ, जो मेहर बाबा के मुख्यालय से दो मिनट की दूरी पर है। मैं यह निश्चय कर चुका हूँ कि मैं अपनी भावनाओं को एक तरफ़ रख, आने वाले आगामी चार सप्ताह तक सभी घटनाओं को खुले दिमाग़ से देखूँगा। मैं मेहर बाबा से किसी तरह का मानसिक वैमनस्य नहीं रखूँगा, उनकी बातों पर संदेह नहीं करूँगा और अच्छे मन से आगे बढ़ने की कोशिश करूँगा।

मैं प्रतिदिन मेहर बाबा के शिष्यों के साथ बातचीत करता हूँ, उनके रहन-सहन आदि को ग़ौर से देखता हूँ। मैं उनके मानसिक स्वभाव का अध्ययन कर रहा हूँ और मेहर के साथ-साथ उनके आध्यात्मिक इतिहास को भी जानने की कोशिश कर रहा हूँ। प्रतिदिन मेहर बाबा मुझे समय देते हैं। हम लोग बातचीत करते हैं और वे मेरे बहुत-से सवालों के उत्तर भी देते हैं, परंतु एक बार भी उन्होंने अपने अनूठे वादों का उल्लेख नहीं किया जो उन्होंने मेरे साथ अहमदनगर में किए थे। मैं भी उनकी स्मृति को टटोलने का प्रयास नहीं करता और उस मामले को ठंडे बस्ते में ही रहने देता हूँ।

मैंने मेहर बाबा पर प्रश्नों की झड़ी लगा दी है और उनके शिष्यों से भी बहुत-से प्रश्न पूछे हैं। यह आंशिक तौर पर, मेरे पत्रकार स्वभाव का नतीजा है। इसका एक कारण यह भी है कि मैं सचमुच तथ्यों को समझना चाहता हूँ ताकि किसी निष्कर्ष तक पहुँच सकूँ। मैं किसी निर्णय पर पहुँचना चाहता हूँ। मेरा यहाँ आना व्यर्थ सिद्ध हो जाए या फिर मेरे संदेहों के उत्तर मिल जाएँ। मेरे प्रश्नों का परिणाम यह मिला है कि मेहर बाबा ने मुझे अपनी बहुत-सी गोपनीय डायरियाँ दे दी हैं, जो पिछले कई वर्षों से उनके पास रखी थीं। उन डायरियों में मेहर बाबा और उनके शिष्यों से संबंधित मुख्य घटनाओं का इतिहास दर्ज है। प्रत्येक डायरी में मेहर बाबा के महत्त्वपूर्ण शिक्षाओं और उनकी भविष्यवाणियों का भी उल्लेख है। इनमें कुल मिलाकर लगभग दो हज़ार पृष्ठ हैं। ये सब हाथ से लिखे हैं और अधिकतर अंग्रेज़ी में हैं।

इन डायरियों को अंधभक्ति से प्रेरित होकर तैयार किया गया है। मुझे इनसे मेहर बाबा के चरित्र और उनकी शक्तियों के विषय में काफ़ी जानकारी मिली है। यदि इनकी सच्चाई को छोड़ दें तो इन पृष्ठों में ईमानदारी से जो कुछ दर्ज किया गया है वह किसी बाहरी व्यक्ति के लिए छोटी बात हो सकता है, लेकिन उनसे मुझे बहुत मदद मिली है क्योंकि इन्हें पढ़कर मुझे

ऐसे अनेक छोटे-छोटे सूत्र मिले हैं जो यह बताते हैं कि मेहर बाबा का दिमाग़ किस दिशा में चल रहा है। मेहर बाबा के दो शिष्य इन डायरियों को संभालकर रखते हैं। वे दोनों युवा हैं और उन्हें जीवन का अभी कोई अनुभव नहीं है। उनका मिलने-जुलने का दायरा भी बहुत सीमित है, परंतु अपनी सादगी और अपने गुरु के प्रति आस्था के चलते, उन्होंने डायरियों में कुछ ऐसी बातें लिख दी हैं जो वास्तव में मेहर बाबा के लिए प्रशंसनीय नहीं है।

उन्होंने डायरी में यह क्यों लिखा है कि मेहर बाबा ने एक बार ट्रेन में यात्रा करते समय अपने एक शिष्य के कान पर इतनी ज़ोर से मारा था कि उस बेचारे को अपना उपचार करवाना पड़ा? उन्होंने डायरी में अपने गुरु की कही यह असंतोषजनक बात क्यों दर्ज की है कि कोई गुरु जब अपने शिष्य के प्रति क्रोध व्यक्त करता है तो इससे उस शिष्य के पाप कम हो जाते हैं? उन्होंने डायरी में एक शिष्य का वह हास्यास्पद किस्सा क्यों दर्ज किया है जो एक बार किसी गाँव में खो गया था? मेहर बाबा ने उसे खोजने के लिए कुछ लोगों को भेजा, जो काफ़ी खोजबीन के बाद ख़ाली हाथ लौट आए। बाद में, वह शिष्य अपने आप लौट आया और उसने बताया कि वह कई रातों से सोया नहीं था, जिसके कारण उसे पास की एक पुरानी इमारत में नींद आ गई। वह इमारत संयोग से, मेहर के अपने ही घर के निकट थी! ऐसे गुरु को, जो ईश्वर के निकट होने का दावा करता है और जो संपूर्ण मानवजाति का भविष्य बताता है, यह भी नहीं पता कि उसका शिष्य उसके ही निकट किसी स्थान पर सो रहा था!

इस तरह मुझे उन डायरियों में पर्याप्त सामग्री मिल गई है, जिनसे मेरे भीतर दबे हुए संदेह की पुष्टि हो रही है। मुझे यह भी जानने को मिला है कि मेहर बाबा से ग़लतियाँ होती रहती हैं। उनका स्वभाव जल्दी-जल्दी बदलता है। वे इतने स्वार्थी हैं कि उन्होंने अपने शिष्यों के दिमाग़ों को पलटकर उन्हें अपना ग़ुलाम बना लिया है। आख़िर में, मुझे डायरियों से यह भी पता लगा है कि इन लोगों ने पारसी पैगंबर की भविष्यवाणियों की सत्यता को जाँचने का कभी प्रयास नहीं किया। अहमदनगर में हुई हमारी पहली मुलाक़ात के दौरान मेहर बाबा ने भविष्यवाणी की थी कि विश्व युद्ध होने वाला है, परंतु उन्होंने यह नहीं बताया कि युद्ध कब होगा। उन्होंने यह भी कहा कि उन्हें तिथि पता है! इन डायरियों को पढ़कर मुझे पता लगा है कि उन्होंने यही भविष्यवाणी अपने नज़दीकी शिष्यों के समक्ष, एक बार नहीं, कई बार की है। प्रत्येक मौक़े पर उन्होंने उस घटना की अलग तिथि बताई, क्योंकि हर बार जब वे कोई तिथि बताते हैं तो उस दिन युद्ध नहीं होता। एक बार, मेहर बाबा ने एशिया में कुछ घटित होने की भविष्यवाणी की थी, तो वह घटना पूर्व दिशा में कहीं हुई। दोबारा, उन्होंने जब यूरोप में किसी गंभीर घटना की भविष्यवाणी की तो वह अपनी ही भविष्यवाणी को भूल गए और बाद में उन्होंने उसे पश्चिम दिशा में कहीं बताया था। मुझे अब यह समझ में आ गया है कि उन्होंने अहमदनगर में मुझे युद्ध की तिथि बताने में इतना संकोच क्यों किया। मैंने जब उनके एक बुद्धिमान शिष्य से कुछ सवाल किए और मेहर बाबा की ग़लत सिद्ध हुई भविष्यवाणियों

के विषय में पूछा तो उसने खुलकर यह स्वीकार किया कि उसके गुरु द्वारा की गई अधिकतर भविष्यवाणियाँ ग़लत साबित हुई हैं। 'मुझे नहीं लगता कि वह युद्ध कोई साधारण युद्ध होगा, बल्कि वह शायद आर्थिक युद्ध होगा,' वह शिष्य बड़े सीधेपन-से कहता है।

हालाँकि इन आश्चर्यजनक डायरियों के अंतिम पृष्ठ को पढ़ते हुए मेरे चेहरे पर मुस्कान है, मैं इस बात को स्वीकार करता हूँ कि मैंने इन डायरियों में आत्मा के उत्थान से संबंधित बड़े-बड़े प्रवचन पढ़े हैं और मुझे यह मानना होगा कि मेहर बाबा धार्मिक रूप से सचमुच बुद्धिमान हैं। उन्हें जीवन में जो सफलता मिलेगी, वह अपने इसी गुण के कारण मिलेगी। परंतु मुझे आज भी उनकी एक बात याद है जो डायरियों के इन्हीं पृष्ठों में कहीं लिखी है, 'सद्गुणों के विषय में दूसरे लोगों को सलाह देने की क्षमता न तो साधुता का प्रमाण है और न ही यह बुद्धिमान होने का लक्षण है।'



मेरे लिए शेष समय चुपचाप काट देना ही बेहतर होगा। यदि मैं विश्व के संरक्षक और मानवजाति के उद्धारक की संगति में हूँ तो मेरे लिए इससे अच्छी बात क्या हो सकती है! मैं पौराणिक कथाओं की अपेक्षा ठोस तथ्यों में अधिक रुचि रखता हूँ। मैं बचकानी कहानियों, किस्सों और असत्य भविष्यवाणियों, शिष्यों द्वारा अंधभक्ति से भरे आदेश और पैगंबरी सलाह का हिस्सा नहीं बनूँगा क्योंकि इससे इन चीज़ों का अनुसरण करने वालों की समस्याएँ केवल बढ़ती हैं।

मेरा जाने का समय जैसे-जैसे निकट आ रहा है, मेहर बाबा का संपर्क मुझसे कम हो गया है। हो सकता है, यह मेरा भ्रम हो परंतु वह मुझसे दूर रहते हैं। मैं जब भी उन्हें देखता हूँ वह हमेशा जल्दी में होते हैं और कुछ ही देर में वहाँ से चले जाते हैं। प्रतिदिन मुझे इस स्थिति का आभास हो रहा है और शायद मेहर बाबा को भी मेरी असहजता के विषय में पता लग गया है।

मैं अब भी उन शानदार अनुभवों की प्रतीक्षा कर रहा हूँ जिसका वादा मेहरबाबा ने मुझसे किया था हालाँकि मुझे अब कोई उम्मीद नहीं है। मैंने उनसे जो आशा की थी, वास्तव में वही पूरी हो रही है! मुझे इस बीच कोई असाधारण अनुभव नहीं हुआ और न ही मुझे दूसरे लोगों में कोई असाधारण बात महसूस हो रही है। मैं मेहर बाबा से अब कोई प्रश्न नहीं करता क्योंकि मुझे इसकी निरर्थकता समझ में आ गई है। समय समाप्त होने पर जब मैं अपने जाने की घोषणा करता हूँ तो मेहर बाबा मेरी इस बात से अवश्य परेशान हो गए हैं कि उन्होंने मुझसे जो वादा किया था वह पूरा नहीं हुआ। उन्होंने अपने वादों को पूरा करने की तिथि को आगे बढ़ा दिया है। वे मुझसे कहते हैं कि वह कुछ महीनों के बाद अपना वचन पूरा करेंगे

और फिर अपनी बात समाप्त कर देते हैं! यह शायद मेरी भूल हो, परंतु मुझे लगता है कि मेहर बाबा अंदर से घबराए हुए हैं और मेरी उपस्थिति से बेचैन हैं क्योंकि मैं उनकी असहजता को अपनी आँखों से देख सकता हूँ। मैं उनसे बहस करने का कोई प्रयास नहीं करता क्योंकि मुझे पता है कि इस तरह के चालाक और टालमटोल करने वाले व्यक्ति से सीधा सवाल करना व्यर्थ है।

यहाँ तक कि जाते समय अंतिम क्षण में भी, मैं मेहर बाबा से बड़ी सादगी और विनम्रतापूर्वक विदाई ले रहा हूँ। वह अब भी इसी तरह बात कर रहे हैं मानो वही इस संसार के एकमात्र गुरु हैं, लोग जिनकी प्रतीक्षा कर रहे हैं। वह यह भी कहते हैं कि वह अपने कार्य का प्रचार-प्रसार करने के लिए जिस दिन पाश्चात्य जगत जाने को तैयार हो जाएँगे तो वह अवश्य मुझे याद करेंगे और मुझे उनके साथ चलना होगा!*

मेहर बाबा की बातों पर विश्वास करने के मेरे मूर्खतापूर्ण प्रयास का बस यही परिणाम हुआ। ऐसे तथाकथित दिव्य गुरुओं के विषय में क्या कहा जा सकता है, जो आत्मा के परम आनंद का वादा करें और उसके बदले दिमाग़ में परेशानी और झुंझलाहट पैदा कर दें?



क्या मेहर बाबा की इस अनूठे जीवन यात्रा और उनके विचित्र स्वभाव का स्पष्टीकरण देना संभव है? ऊपरी तौर पर, उस व्यक्ति को कपटी कहा जा सकता है और ऐसा किया भी जा चुका है, परंतु इससे उसके जीवन की बहुत सारी बातों को समझाया नहीं जा सकता इसलिए ऐसा करना शायद उचित नहीं होगा। इस बारे में मुझे मुंबई के वृद्ध न्यायाधीश खंडालावाला का मत सही लगता है, जिन्होंने मेहर बाबा को बचपन से देखा है। उनका कहना है कि वह पारसी मसीहा, ईमानदार है परंतु वह भ्रम में जी रहा है। यह स्पष्टीकरण ठीक हो सकता है परंतु मेरे लिए यह भी पर्याप्त नहीं है।

मेहर बाबा के चरित्र का थोड़ा-सा विश्लेषण करने से उनके विषय में मेरा मत बेहतर ढंग से समझा जा सकता है। मैं यह पहले ही कह चुका हूँ कि मैं अहमदनगर के पास हुई हमारी पहली बैठक में मेहर बाबा के शांत और सादगीपूर्ण स्वभाव से प्रभावित हुआ था। परंतु नासिक में रहने और वहाँ की घटनाओं को देखने के बाद मैं यह कह सकता हूँ कि मेहर बाबा का शांत स्वभाव दरअसल, उनके दुर्बल चरित्र का लक्षण है। उनकी सादगी, उनकी शारीरिक दुर्बलता को दर्शाती है। मेरा यह मानना है कि वह बहुत कमज़ोर व्यक्ति है, जिस पर दूसरे लोगों और उनकी परिस्थितियों का असर बहुत जल्दी हो जाता है। उनकी छोटी और पैनी ठुड्डी इस बात की पुष्टि करती है! इसके अतिरिक्त उनका स्वभाव अचानक बदल जाता है। वह अत्यंत भावुक हैं। नाटकबाजी के लिए उनका शौक़ दिखाई पड़ता है। शानदार कारनामे

दिखाने की उनकी चाहत भी इस बात का प्रमाण है कि उन्हें इस तरह के नाटक करने पसंद हैं। वह अपने से ज़्यादा, दूसरों के लिए जीने में यक़ीन रखते हैं। यद्यपि उनका यह दावा है कि उनका जन्म किसी गंभीर व बड़े काम के लिए हुआ है, तथापि जो लोग उनकी कार्यशैली में हास्य का पुट देखते हैं, उनकी भी कोई ग़लती नहीं है!

मेरा यह भी मानना है कि उस बूढ़ी मुसलमान महिला फ़क़ीर हज़रत बाबाजान ने मेहर बाबा के स्वभाव में कोई परिवर्तन नहीं किया, जिससे मेहरबाबा का दिमाग़ी संतुलन बिगड़ गया। मैं उस महिला के साथ हुई छोटी-सी भेंट के आधार पर यह कह सकता हूँ कि उस महिला में निस्संदेह कुछ अद्भुत शक्तियाँ थीं। मुझे नहीं पता कि हज़रत बाबाजान ने मेहर बाबा के जीवन में कैसे और क्यों प्रवेश किया। हम यह भी नहीं जानते कि उस फ़क़ीर ने मेहर को जिस मार्ग पर डाल दिया, उसका अंजाम क्या होगा। परंतु मुझे इतना पता है कि उस महिला फ़क़ीर में कुछ ऐसा करने की क्षमता अवश्य थी, जिसने मेहर बाबा को आश्चर्यचकित कर दिया था।

बाबाजान द्वारा मेहर बाबा को दिया चुंबन, अपने आप में कोई महत्त्व नहीं रखता परंतु वह चुंबन, हज़रत बाबाजान की मानसिक स्थिति और उनके आशीर्वाद का प्रतीक बन गया। उसके फलस्वरूप मेहर बाबा की जो मानसिक स्थिति हुई, वह निश्चित तौर पर उसके बाद के इतिहास में महत्त्व रखती है। मेहर बाबा ने मुझे इस घटना के संदर्भ में बताया था कि उनके दिमाग़ को तगड़ा झटका लगा और कुछ देर के लिए उसमें ज़बरदस्त कंपन होने होने लगी। मेहर बाबा के जीवन में वह घटना अचानक हो गई। उन्होंने पहले कोई प्रशिक्षण नहीं लिया था और वह इस तरह की दीक्षा के लिए उस समय तैयार नहीं थे। मेहर बाबा के एक शिष्य अब्दुल्ला ने मुझे बताया, 'मैं जवानी के दिनों में मेहर का मित्र हुआ करता था तो मैंने कभी उसका रुझान अध्यात्म या दर्शन की ओर नहीं देखा। उसकी रुचि हमेशा खेल-कूद और मौज-मस्ती में रहती थी। हमारे स्कूल में होने वाली वाद-विवाद प्रतियोगिता और अन्य गतिविधियों में भी मेहर बढ़-चढ़कर हिस्सा लेता था। आध्यात्मिकता में अचानक विकसित हुई उसकी रुचि से हम लोग भी बहुत हैरान थे।'

मुझे लगता है कि उत्साह से भरे मेहर के लिए वह अनुभव अप्रत्याशित और नया था। उससे मेहर का संतुलन बिगड़ गया। मेहर बाबा का मूर्खों जैसा व्यवहार इस बात की पुष्टि करता है। ऐसा नहीं लगता कि वह बिलकुल ठीक हो चुके हैं। मुझे नहीं लगता कि वह सामान्य मनुष्य की तरह व्यवहार करते हैं। धर्म, योग, ध्यान और अन्य गूढ़ बातों की अचानक अभिव्यक्ति से कुछ लोगों का मानसिक संतुलन बिगड़ जाता है। कुछ विशेष क़िस्म की दवाइयाँ लेने से भी ऐसा हो जाता है। मेरा मानना है कि मेहर बाबा उस उद्वेलित करने वाली घटना के प्रभाव से अभी तक उबर नहीं पाए हैं और कम आयु में उनके दिमाग़ पर हुए ज़बरदस्त प्रभाव के फलस्वरूप, उनका मानसिक संतुलन अब तक ठीक नहीं हो पाया है।

मुझे समय-समय पर उनके असाधारण व्यवहार का और कोई कारण नज़र नहीं आता।

एक ओर, मेहर बाबा में आध्यात्मिक व्यक्ति के सभी गुण जैसे प्रेम, सौम्यता, धार्मिक अंतर्प्रेरणा, इत्यादि मौजूद हैं। दूसरी ओर, उनमें मानसिक उन्माद के भी लक्षण दिखाई देते हैं। वह अपने बारे में हर बात को बढ़ा-चढ़ाकर कहते हैं। इस तरह की स्थिति धार्मिक उन्माद से ग्रस्त लोगों में देखने को मिलती है जिन्हें अचानक अस्थाई आनंद प्राप्त हो जाता है। वे ऐसा दिखाते हैं मानो उन्हें बहुत बड़ी उपलब्धि हो गई है। आध्यात्मिक महानता को लेकर इस तरह के झूठे दावे करना उनके लिए एक काम है। वे लोग नए संप्रदायों की स्थापना करते हैं या फिर कुछ अनूठे समूह बना लेते हैं और स्वयं उनके मुखिया बन जाते हैं। वे स्वयं को देवता स्वरूप बताते हैं और यह विश्वास जगाने का प्रयास करते हैं कि वे मानवजाति के उद्धार के लिए प्रकट हुए मसीहा या पैगंबर हैं।

भारत में ऐसे बहुत-से लोग हैं, जो योग द्वारा मिलने आह्लादित चेतना को प्राप्त तो करना चाहते हैं किंतु उनकी आवश्यक प्रशिक्षण और अनुशासन में रुचि नहीं होती। इसलिए वह हशीश और अफ़ीम जैसे नशे के आदी हो जाते हैं और उसके सेवन से परमानंद की नक़ल करने का प्रयास करते हैं। मैंने ऐसे नशेड़ियों को निकट से देखा है। इन सभी में यह अवगुण होता है कि ये लोग अपने जीवन के छोटी या बड़ी घटनाओं को बढ़ा-चढ़ाकर बताते हैं। वह झूठ भी इतनी दृढ़ता से बोलते हैं कि वह सत्य लगता है! ऐसा व्यक्ति मानसिक उन्माद के शिकार होकर पूरी तरह भ्रमित हो जाता है।

नशे का आदी व्यक्ति, यदि किसी स्त्री को अपनी ओर देखता हुआ पाता है तो वह अपने दिमाग़ में उस स्त्री के साथ प्रेम का पूरा प्रसंग तैयार कर लेता है। उसकी दुनिया अपने गौरवशाली स्वरूप के चारों ओर घूमने लगती है। वह दूसरों के समक्ष ऐसे ज़बरदस्त दावे पेश करता है और अपनी अद्भुत शक्तियों का इस तरह बखान करता है कि सामने वाला व्यक्ति को लगता है कि इसका अपनी इंद्रियों पर पूर्ण नियंत्रण है। दरअसल, उसकी यह हरकतें अचानक उठे उन्माद के कारण होती हैं।

इस तरह के दुर्भाग्यपूर्ण लोगों के जीवन और चरित्र को दर्शाने वाले असंतुलित गुण, मेहर बाबा के चरित्र में भी देखने को मिलते हैं। परंतु इसके बावजूद मेहर बाबा ऐसे किसी अनैतिक कार्यों में लिप्त नहीं हैं, जिनमें प्रायः इस तरह के लोग फँस जाते हैं। ऐसा शायद इसलिए है कि मेहर बाबा के स्वभाव की असामान्यता, नशे की आदत के कारण नहीं, बल्कि आध्यात्मिक अनुभव से पैदा हुई है। इस बात को यदि दोहराया जाए तो कह सकते हैं कि इस पारसी मसीहा में भी साधारण लोगों की तरह समस्त मानवीय दुर्बलताएँ हैं!

इस बात लेकर भी काफ़ी शोरगुल होता है कि मेहरबाबा अपनी चुप्पी कब तोड़ेंगे। यह सोचने का विषय है कि क्या ऐसा सचमुच होगा। परंतु इसमें कोई संदेह नहीं कि यदि मेहर बाबा कभी कुछ बोलते हैं, तो भी इसका विश्व पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा। शब्दों से चमत्कार

नहीं हुआ करते! मेहर बाबा द्वारा लापरवाह ढंग से की गई भविष्यवाणियाँ सच हो भी सकती हैं और नहीं भी! परंतु इससे अधिक महत्त्वपूर्ण बात यह है कि इस व्यक्ति ने स्वयं को ग़ैरभरोसेमंद सिद्ध कर दिया है। यह अपने वादे तोड़ देता है, इसकी भविष्यवाणियाँ झूठी होती हैं और इसका आचरण, स्वार्थी और अनियमित है। मेहर बाबा जो दूसरों को सिखाते हैं, वह स्वयं उसका अनुसरण करने में असफल रहे हैं। इस तरह का संदेश देने वाले व्यक्ति पर कोई विश्वास नहीं करता।

उनके कट्टर शिष्यों का क्या होगा? क्या आने वाले समय में इन लोगों का भ्रम दूर हो पाएगा? इस बात की संभावना कम लगती है। मेहर बाबा की कहानी, भारतीय विश्वास की एक सामान्य कथा है तथा यह भारतीय चरित्र के दोष को बहुत साफ़ ढंग से दर्शाती है। भारत की एक बड़ी समस्या यहाँ का धार्मिकता से ग्रस्त समुदाय है, जो विचारशील एवं वैज्ञानिक परंपरा में अप्रशिक्षित है। यह समुदाय भावनाओं को तर्क से, इतिहास को अनुश्रुतियों से तथा तथ्यों को कल्पना से अलग करके नहीं देख पाता। कुछ ऐसे उत्साही अनुयायियों को, जो निष्ठावान होने के साथ-साथ मूर्ख और कम अनुभवी होते हैं तथा अपने भीतर की शक्तियों का एहसास न करके दूसरों के साथ अपने भाग्य को जोड़कर देखना बुद्धिमानी समझते हैं, इकट्ठा करना बहुत आसान है।

मेरे पास न इतना धैर्य है और न ही समय कि मैं उन्हें यह सब समझा सकूँ। परंतु यह सत्य है कि मेहर बाबा ने अपने जीवन के प्रत्येक क़दम पर अनेक ग़लतियाँ की हैं। इसी तरह की ग़लतियाँ मैंने भी की हैं, परंतु वह स्वयं को दिव्य पैगंबर की तरह देखते हैं, जबकि मैं सामान्य मनुष्य की भाँति अपनी व्यक्तिगत सीमाओं से भली-भाँति परिचित हूँ। मेरा कहने का आशय सिर्फ़ इतना है कि मेहर बाबा के शिष्य इस बात को कभी स्वीकार नहीं करेंगे कि उनका गुरु ग़लतियाँ करता है। वह भोलेपन में यही मानते हैं कि उनके गुरु द्वारा कही हर बात के पीछे कोई गूढ़ और दिव्य उद्देश्य होता है। वह आँख बंद करके उनका अनुसरण करने में संतुष्ट हैं। ऐसा करना उनकी मजबूरी भी है क्योंकि वे जो कुछ कर रहे हैं, उन्हें वह स्वयं भी तर्कसंगत प्रतीत नहीं होता। मेहर बाबा के साथ मेरा अपना अनुभव उस मेरे झक्कीपन की भी पुष्टि करता है। इसी से मेरे भीतर का तर्कसंगत संदेहवाद भी दूर हुआ है और उसी ने इस देश में मेरी यात्रा के दौरान मेरा मार्गदर्शन किया है।

पूर्वी जगत में सर्वत्र इस बात के संकेत मिलते रहते हैं कि अब यहाँ कोई ऐसी घटना होने वाली है जो सैकड़ों वर्षों के इतिहास की सबसे बड़ी घटना होगी। यह भविष्यवाणी भारत के बहुत-से लोगों के बीच प्रचलित है। यह केवल भारत ही नहीं, बल्कि तिब्बत, चीन तथा अफ़्रीका के लोग भी मानते हैं। ये लोग मानते हैं कि वह बड़ी घटना कुछ ही समय में घटने वाली है। मेहर बाबा के लिए इससे बड़ी बात और क्या हो सकती है कि उनके जीवन में अचानक आया मानसिक बदलाव उनकी नियति की ओर संकेत कर रहा है? मेहर बाबा के

लिए इससे अच्छा क्या होगा कि उनकी यह बात सत्य होने वाली है कि वे दुखी संसार के बीच अपने आगमन की घोषणा करेंगे? उनके आज्ञाकारी शिष्यों के लिए भी इससे अधिक सौभाग्य की बात क्या होगी कि वे लोग अपने पैगंबर के आने का समाचार पूरे विश्व में फैलाएँगे? इसके बावजूद, जिस तरह के नाटकीय तरीक़ों का इस्तेमाल मेहरबाबा करते हैं, वह वास्तव में निंदनीय है। किसी भी धार्मिक गुरु को इनका उपयोग नहीं करना चाहिए। मुझे उम्मीद है कि आने वाले समय में शताब्दियों पुराने आध्यात्मिक अनुशासन को कोई इस तरह नहीं तोड़ेगा। मुझे नहीं पता कि स्वयं को संत कहने वाला यह व्यक्ति, अपने भविष्य में और क्या कुछ देखने वाला है परंतु मुझ जैसे लेखक के बजाय, संसार के मनोरंजन के लिए, इन सब खुलासों का होना ज़रूरी है।

मैं अब इस विषय पर सोचना बंद कर रहा हूँ। मुझे लगता है कि मेहर बाबा के माध्यम से अनेक श्रेष्ठ और अच्छी बातें कही जा चुकी हैं। मेहर बाबा जब कभी अपने धार्मिक प्रेरणादायक पद से नीचे उतरकर अपनी व्यक्तिगत महानता और निजी सफलताओं का गुणगान करेंगे तो वह अवसर उन्हें छोड़ देने के लिए उपयुक्त होगा क्योंकि ऐसे में, संसार का यह भावी नेता स्वयं ही मानवजाति को उसके मार्ग से भटकाने वाला साबित हो जाएगा!*

---

* वह आगे चलकर पश्चिम दिशा में अवश्य गए थे परंतु मेरे विषय में की गई उनकी भविष्यवाणी बिलकुल ग़लत सिद्ध हुई थी।

* मेहर बाबा का पाश्चात्य जगत में आगमन हुआ है। उनके आस-पास एक पाश्चात्य समुदाय एकत्रित होना भी आरंभ हो गया है। वह आज भी पहले जैसे शानदार बातें करते हैं। उन्होंने कई बार इंग्लैंड का दौरा किया है। फ़्रांस, स्पेन और तुर्की में उनके बहुत-से शिष्य बन गए हैं। उन्होंने पुरुषों और स्त्रियों के एक मिश्रित समूह के साथ अमेरिका की भी यात्रा की थी। वे जब हॉलीवुड आए थे, तो वहाँ पर भी उनका शाही-सत्कार किया गया था। मेरी पिक्फ़ोर्ड ने उन्हें अपने घर आमंत्रित किया था। तल्लूलाह बैंकहेड की भी उनमें रुचि हो गई थी और उस बीच हॉलीवुड के सबसे बड़े होटल में हज़ारों लोग उन्हें देखने और सुनने पहुँचे थे। अमेरिका में एक बहुत बड़े स्थान पर उनके मुख्यालय की स्थापना की गई थी। मेहर बाबा देश-विदेश की यात्राओं के दौरान मौन रहते थे। आख़िरकार, उनकी बदनामी शुरू हो गई!

अध्याय 15

अनूठी मुलाक़ात

मैं दूसरी बार फ़ुर्सत में, बिना निर्धारित लक्ष्य के पश्चिमी भारत में घूमने निकला हूँ। मैं धूल-भरे डिब्बों और बिना सीट वाली बैलगाड़ियों में घूमते-घूमते थक चुका हूँ और इसलिए मैंने अब एक पुरानी गाड़ी किराए पर ली है। मेरे साथ एक हिंदू व्यक्ति है, जो मेरे मित्र, वाहनचालक और सेवक, तीनों की भूमिका निभा रहा है।

हम तेज़ी से आगे बढ़ रहे हैं। वन्य क्षेत्रें से गुज़रते समय वाहनचालक रात्रि के समय रुक जाता है। यदि हम समय से गाँव तक नहीं पहुँच पाते तो सुबह होने तक मार्ग में ही ठहर जाते हैं। मेरा साथी रात-भर लकड़ियाँ जलाकर उसमें छोटी-छोटी टहनियाँ डालता रहता है। उसने मुझे बताया कि आग की लपटों से जंगली जानवर दूर रहेंगे। जंगल में चीते और तेंदुए घूमते हैं परंतु आग से उन्हें डर लगता है, इसलिए वह दूरी बनाए रखते हैं। परंतु सियारों के साथ यह बात नहीं है। हमें पहाड़ों के पास सियारों के हूँकने की आवाज़ आती है। वे हमारे काफ़ी निकट हैं। दिन के समय हम लोगों को कई बार आसमान में उड़ती चीलें और गिद्ध दिखाई पड़ते हैं।

एक दिन दोपहर के समय हमारी मुलाक़ात एक विचित्र युगल से होती है। वह सड़क किनारे बैठा है। उनमें एक व्यक्ति अधेड़ आयु का साधु है, जो छायादार वृक्ष के नीचे घुटने मोड़े बैठा है। दूसरा व्यक्ति की आयु कम है और वह शायद अधेड़ व्यक्ति का शिष्य है। अधेड़ के हाथ जुड़े हैं और उसकी आँखें ध्यान में आधी बंद हैं। वह बिलकुल स्थिर बैठा है। हम उसके पास से गुज़रते हैं तो भी वह हमारी ओर नहीं देखता, हालाँकि उसका युवा अनुयायी हमारी गाड़ी को देखता है। उस व्यक्ति के चेहरे पर एक आकर्षण है। मैं आगे चलकर रुकने

का निश्चय करता हूँ। मेरा साथी लौटकर पीछे जाता है और उनसे कुछ सवाल करता है। मैं उसे देख रहा हूँ। मेरा साथी युवा से काफ़ी देर बातचीत करता है।

वह लौटकर कुछ छोटी-मोटी बातों के अलावा मुझे बताता है कि वे दोनों सचमुच गुरु और शिष्य हैं। वृद्ध व्यक्ति का नाम चंडीदास है। उसके शिष्य के अनुसार वह एक योगी है, जिसके पास असाधारण शक्तियाँ हैं। वे लोग गाँव-गाँव घूम रहे हैं और उन्होंने काफ़ी दूरी तय कर ली है। वे लोग लगभग दो साल पहले अपने बंगाल स्थित घर से निकले थे।

मैं उन दोनों को अपने साथ गाड़ी में चलने को कहता हूँ। वे तत्काल इस प्रस्ताव को स्वीकार कर लेते हैं। वृद्ध व्यक्ति के चेहरे पर दया का भाव है और उसका युवा साथी हमारा आभारी दिख रहा है। इस तरह लगभग आधे घंटे बाद हम लोग एक गाँव पहुँचते हैं और रात्रि वहीं बताने का निश्चय करते हैं।

गाँव पहुँचते समय, हमें रास्ते में गाएँ चराते एक छोटे लड़के के अतिरिक्त कोई नज़र नहीं आया। दिन ढलने को है और हम लोग गाँव के कुएँ से अपनी प्यास बुझाते हैं। गाँव में लगभग पचास झोपड़ियाँ हैं। उनके ऊपर घास-फूस की छत है और दीवारें मिट्टी की हैं। मुझे वहाँ का वातावरण निराशाजनक महसूस हो रहा है। वहाँ रहने वाले कुछ लोग अपने घरों की छाया में बाहर बैठे हैं। एक बूढ़ी और दुर्बल काया वाली स्त्री हमें देखने लगती है फिर वह कुएँ से पानी लेती है और अपने घर लौट जाती है।

मेरा हिंदू साथी चाय बनाने के लिए कुछ चीज़ें एकत्रित करता है और फिर गाँव के मुखिया का घर खोजने के लिए चला जाता है। योगी और उसका आज्ञाकारी शिष्य, मिट्टी में बैठकर आराम कर रहे हैं। योगी को अंग्रेज़ी बिलकुल नहीं आती और मैंने गाड़ी में बैठते समय जान लिया था कि उसके शिष्य को भाषा का ज्ञान इतना कम है कि उसके साथ ठीक से बातचीत करना भी मुश्किल है। मैं कुछ देर प्रयास करने के बाद इस निष्कर्ष पर पहुँचा हूँ कि हमें शाम ढलने की प्रतीक्षा करनी चाहिए, ताकि मैं फिर तसल्ली से उनसे बातचीत कर सकूँ और अपने हिंदू दुभाषिये की सेवाएँ ले सकूँ।

इस बीच पुरुषों और स्त्रियों और बच्चों का एक छोटा समूह हमारे इर्द-गिर्द इकट्ठा हो गया है। इन लोगों को शायद यूरोपीय लोगों से संपर्क का कभी मौक़ा नहीं मिला होगा। मैंने पाया है कि ऐसे लोगों से बातचीत करना बहुत रोचक होता है क्योंकि वह लोग जीवन के प्रति सुलझे और साफ़-सुथरे दृष्टिकोण को प्रस्तुत करने में समर्थ होते हैं। गाँव के बच्चे, शुरू में थोड़ा शर्माते हैं लेकिन मैं कुछ पैसे देकर उनका विश्वास जीत लेता हूँ। वे मेरी अलार्म घड़ी को देखकर हैरान हैं।

इसी बीच एक स्त्री योगी के पास आती है। वह उसको झुककर प्रणाम करती है और पैर छूने के बाद अपनी एक अँगुली अपने माथे की ओर ले जाती है।

मेरा हिंदू सेवक, गाँव के मुखिया के साथ लौट आया है और बताता है कि चाय तैयार है।

उसने कॉलेज की पढ़ाई की है लेकिन फिर भी वह मेरा सेवक, वाहनचालक और दुभाषिया बनने को तैयार हो गया क्योंकि वह मेरे पाश्चात्य जगत के अनुभवों को जानना चाहता है। उसे उम्मीद है कि मैं किसी दिन उसे अपने साथ यूरोप ले जाऊँगा। मैं भी उसे अपना साथी मानता हूँ। मुझे लगता है कि वह बुद्धिमान है और चरित्र का भी साफ़ है, इसलिए वह मेरा मित्र बन सकता है।

इसी बीच एक व्यक्ति योगी और उसके शिष्य को अपने साथ अपने घर ले जाता है। निश्चित रूप से गाँव के लोग शहरी लोगों की अपेक्षा अधिक सुसंस्कृत और अतिथियों का सत्कार करने में आगे होते हैं। हम लोग गाँव के मुखिया के घर जा रहे हैं। सूर्य पहाड़ों के पीछे अस्त हो रहा है। हम लोग एक शानदार मकान के सामने रुकते हैं। वह निश्चित रूप से गाँव के मुखिया का ही मकान है।

'आपका यहाँ आना, हमारे लिए सौभाग्य की बात है,' वह सादगी भरे अंदाज़ में बोलता है।

चाय पीकर हम लोग कुछ देर आराम करते हैं। शाम की परछाइयाँ मैदानों में फैली हैं और मुझे गायों के घर लौटने की आवाज़ें भी सुनाई आ रही हैं। थोड़ी देर बाद मेरा अनुचर योगी से मिलकर, मुझसे उसकी मुलाक़ात का समय निश्चित करता है।

मैं चौकोर और नीची छत वाले कमरे में प्रवेश करता हूँ। अंदर बैठने के लिए लकड़ी का फ़र्नीचर नहीं है। आस-पास केवल मिट्टी के कुछ घड़े रखे हैं। दीवार में एक बांस अटका हुआ है, जो शायद कपड़े टाँगने के काम आता है। कमरे के एक कोने में तांबे का जग रखा है। एक कोने में पुराने दीपक से हल्का प्रकाश फैल रहा है। ग़रीब किसान के घर में बस इतनी ही सुविधाएँ उपलब्ध होती हैं!

योगी का शिष्य टूटी-फूटी अंग्रेज़ी में मेरा स्वागत करता है, लेकिन मुझे उसका गुरु नज़र नहीं आ रहा। योगी को किसान की बीमार माँ को आशीर्वाद देने के लिए बुलाया गया है। मैं उसके लौटने की प्रतीक्षा करता हूँ।

कुछ देर बाद बाहर गली में आवाज़ आती है। फिर मुझे घर के प्रवेश-द्वार पर एक ऊँची आकृति नज़र आती है। वह धीरे-से कमरे में प्रवेश करता है और मेरा अभिवादन करता है। वह कुछ बोलता है। मेरे साथी ने उसका अनुवाद किया है:

'आपका अभिवादन, साहब! ईश्वर आपकी रक्षा करें!'

मैं उसे बैठने के लिए सूती कपड़े का आसन देता हूँ परंतु वह मना कर देता है और मिट्टी में ही पैर मोड़ कर बैठ जाता है। हम लोग एक-दूसरे के सामने बैठे हैं। मैं उसे ध्यान से देख रहा हूँ। उसकी आयु लगभग पचास वर्ष है, हालाँकि उसके ठुड्डी पर उगी छोटी और सफ़ेद दाढ़ी को देखकर लगता है कि उसकी आयु अधिक होगी। उसके बाल उलझे हैं और उसकी गर्दन पर लटके हुए हैं। उसका चेहरा गंभीर है और वह कभी मुस्कराता नहीं है। इस बार भी

मुझे वही पहले वाली बात आकर्षित कर रही है। उसकी कोयले-सी काली आँखों में एक अजीब-सी चमक है। ये अलौकिक आँखें मुझे बहुत दिनों तक याद रहेंगी।

‘आप काफ़ी दूर से आए हैं?’ वह धीरे-से पूछता है।

मैं हामी भर देता हूँ।

‘महाशय गुरु के विषय में आपका क्या ख़याल है?’ वह अचानक पूछता है।

महाशय का नाम सुनकर मुझे बहुत आश्चर्य होता है। उसे कैसे पता कि मैं बंगाल से आया हूँ और वहाँ मेरी मुलाक़ात महाशय गुरु से हुई थी? मैं कुछ देर उसे आश्चर्य से देखता रहता हूँ।

‘उन्होंने सचमुच, मेरा दिल जीत लिया,’ मैं उत्तर देता हूँ। ‘लेकिन आप ऐसा क्यों पूछ रहे हैं?’

वह मेरे प्रश्न को नज़रअंदाज़ कर देता है। यह असहज चुप्पी का क्षण है। मैं संवाद को जारी रखने के उद्देश्य से कहता हूँ:

‘मैं दोबारा कोलकाता जाकर महाशय गुरु से अवश्य मिलूँगा। क्या वह आपको जानते हैं? क्या मैं आपका कोई संदेश उन तक पहुँचा दूँ?’

योगी सिर हिलाकर मना कर देता है।

‘आपकी मुलाक़ात अब महाशय गुरु से कभी नहीं होगी। उनकी मृत्यु का समय निकट है!’

मैं चुप हो जाता हूँ और फिर कुछ देर बाद कहता हूँ:

‘मेरी योगियों के जीवन और उनके विचारों में गहन रुचि है। क्या आप मुझे बता सकते हैं कि आप योगी कैसे बने और आपने क्या ज्ञान प्राप्त किया है?’

चंडीदास साक्षात्कार करने के मेरे प्रयास को प्रोत्साहन देने का इच्छुक नहीं है।

‘मनुष्य का अतीत, राख के ढेर से अधिक कुछ नहीं है,’ वह उत्तर देता है। ‘मुझे उस राख के ढेर में हाथ डालने के लिए मत कहिए। मुझे बीते हुए अनुभवों से कोई मतलब नहीं है। मैं न तो भविष्य में जीता हूँ और न ही अतीत में! मनुष्य की आत्मा के संदर्भ में, अतीत और भविष्य केवल परछाइयाँ मात्र हैं। यह भी एक तरह का ज्ञान है जो मैंने प्राप्त किया है।’

मैं इससे परेशान हूँ। योगी का कड़ा रुख मेरी शांति भंग कर रहा है।

‘लेकिन हम हमेशा समय की परिधि में रहते हैं। इसलिए हमें उसका हिसाब तो रखना ही होता है।’

‘समय?’ वह पूछता है। ‘क्या आप यक़ीन से कह सकते हैं ऐसी कोई चीज़ होती है?’

हमारी बातचीत रोचक होती जा रही है। क्या इस व्यक्ति के पास सचमुच ऐसी शक्तियाँ हैं

जिसके विषय में इसके शिष्य ने उल्लेख किया था? मैं ज़ोर देकर कहता हूँ: 'यदि समय नहीं होता, तो अतीत और भविष्य दोनों, यहीं हमारे सामने होते। परंतु हमारा अनुभव हमें इससे विपरीत बताता है।'

'तो? आप कहना चाहते हैं कि आपका अनुभव, संसार का अनुभव आपको यह बताता है!'

'निस्संदेह! क्या आप कहना चाहते हैं कि इस मामले में आपका अनुभव अलग है?'

'आपकी बात में थोड़ी सच्चाई है,' वह विचित्र ढंग से जवाब देता है।

'क्या मैं मान लूँ कि आप भविष्य देख सकते हैं?'

'मैं जीवन की सनातनता में विश्वास रखता हूँ,' चंडीदास उत्तर देता है। 'मैं आने वाले समय की घटनाओं को जानने का प्रयास नहीं करता।'

'परंतु आप दूसरों के लिए ऐसा कर सकते हैं?'

'अगर मैं चाहूँ - हाँ!'

'मैं इस बात को साफ़ कर लेना चाहता हूँ। क्या आप मुझे भविष्य में होने वाली घटनाओं के बारे में बता सकते हैं?'

'केवल आंशिक तौर पर। मनुष्य का जीवन इतने सटीक ढंग से नहीं चलता कि उसके विषय में संपूर्ण विवरण दिया जा सके।'

'तो क्या आप आंशिक रूप से मेरे भविष्य के बारे में कुछ बता सकते हैं?'

'आप वे बातें क्यों जानना चाहते हैं?'

मैं चुप हो जाता हूँ।

'ईश्वर ने भविष्य में होने वाली घटनाओं पर व्यर्थ ही पर्दा नहीं डाल रखा है,' वह कड़े स्वर में कहता है।

मैं क्या कहूँ? मुझे अचानक प्रेरणा महसूस होती है।

'मैं कुछ गंभीर समस्याओं से परेशान हूँ। मैं उन्हीं के बारे में ज्ञान प्राप्त करने इस देश में आया हूँ। अगर आप मुझे कुछ बता सकेंगे तो शायद मेरा मार्गदर्शन हो जाए।'

योगी अपनी चमचमाती काली आँखों से मेरी ओर देखता है। मैं उसके व्यक्तित्व से प्रभावित हूँ। वह बुद्धिमान नज़र आता है। वह इस छोटी-सी झोपड़ी में अपने पैर मोड़कर धर्माध्यक्ष की तरह बैठा है।

इस बीच मैंने पहली बार अपने सिर के ठीक ऊपर दीवार पर एक छिपकली बैठी देखी है। वह लगातार हमें देख रही है। उसका मुँह कुछ इस तरह खुला है मानो वह हमें देखकर हँस रही है।

चंडीदास उत्तर देता है: ‘मुझे बहुत अधिक तो प्राप्त नहीं हुआ है परंतु अगर आप मेरी बात मानना ही चाहते हैं तो मैं यह कहना चाहता हूँ कि आपकी यात्रा बेकार नहीं जाएगी। आपने भारत के जिस स्थान से यात्रा आरंभ की थी, आप वहीं वापस जाइए। अमावस्या से पहले आपकी इच्छा पूरी हो जाएगी।’

‘आप कहना चाहते हैं कि मैं मुंबई वापस चला जाऊँ?’

‘जी हाँ।’

मैं बहुत दुविधा में हूँ। उस अर्द्ध-पाश्चात्य शहर में मुझे क्या मिलेगा?

‘मुझे वहाँ ऐसा कुछ नहीं मिला जो इस खोज में मेरी कोई सहायता कर सके,’ मैं विरोध दर्ज करता हूँ।

चंडीदास मेरी ओर देखने लगता है।

‘आपका मार्ग वहीं पर है। जितनी जल्दी हो सके वहाँ पहुँच जाइए। समय बर्बाद मत कीजिए और कल ही मुंबई लौट जाइए।’

‘क्या आप मुझे बस इतना ही बता सकते हैं?’

‘आपको बताने के लिए तो और भी है, लेकिन मैंने उसे देखने की कोशिश नहीं की।’

वह फिर चुप हो जाता है। उसकी आँखें पानी की तरह स्थिर हो जाती हैं। कुछ देर बाद वह फिर से बोलता है:

‘आप भारत छोड़ देंगे और फिर से अपने देश लौट जाएँगे। हमारे देश को छोड़ते ही आपको कोई भयंकर रोग हो जाएगा। आपकी आत्मा, आपके थके हुए शरीर में परेशान है परंतु अभी उसे छोड़ने का समय नहीं आया है। इसके बाद आपको अपनी नियति में लिखा गुप्त कार्य नज़र आएगा और उसी की प्रेरणा से आप फिर से भारत आएँगे। इस तरह आप इस देश में तीसरी बार लौटेंगे। इस समय भी एक ऋषि आपकी प्रतीक्षा में हैं। आपका उनसे कोई प्राचीन संबंध है, इसलिए आप लौटकर यहीं आएँगे और हमारे बीच रहेंगे।’*

उसके बाद योगी चुप हो जाता है और उसकी पलकों में एक हल्का-सा कंपन होता है। वह मेरी ओर देखकर कहता है:

‘आप तो सबकुछ सुन चुके हैं। मेरे पास इससे अधिक कहने को कुछ नहीं है।’

हमारे बीच इसके बाद हुई बातचीत का कोई विशेष महत्त्व नहीं है। चंडीदास अपने विषय में अधिक बताने के लिए तैयार नहीं होता। मैं वहाँ से लौट जाता हूँ। मैं सोच रहा हूँ कि उसके कहे शब्दों को किस तरह स्वीकार करूँ, हालाँकि मुझे

इस बात का भी विश्वास है कि उसकी बातों में बहुत कुछ छिपा है। इस बीच एक मज़ेदार बात हुई। योगी के युवा शिष्य ने बातचीत के दौरान मुझसे अचानक पूछा:

‘क्या आपको इंग्लैंड के योगियों में इस तरह की चीज़ें देखने को नहीं मिलतीं?’

मैं अपनी मुस्कराहट छिपाने का प्रयास करता हूँ।

‘हमारे देश में कोई योगी नहीं रहता,’ मैं उत्तर देता हूँ।

शाम को सब लोग शांत और स्थिर बैठे रहे। परंतु जब योगी ने इस बात का संकेत दिया कि हमारी बातचीत समाप्त हो चुकी है तो घर का मालिक, जो शायद किसान है, हमारे पास आकर हमसे पूछता है क्या हम उसके साथ भोजन करना पसंद करेंगे। मैं उसे बताता हूँ कि हम अपने साथ भोजन लेकर चले हैं और वह गाड़ी में रखा है और हम गाँव के मुखिया के घर जाकर ही खाना खाएँगे क्योंकि उन्होंने हमसे अपने यहाँ रात बिताने का आग्रह किया है। किसान इस बात पर दुःख जताता है कि वह हमारा ठीक से सेवा-सत्कार नहीं कर पाया है। मैं उसे कहता हूँ कि हमने बहुत अच्छी तरह भोजन किया है और मैं उससे आग्रह करता हूँ कि वह किसी तरह की परेशानी न उठाए। परंतु वह अपने निश्चय पर अडिग है। मैं उसे निराश नहीं करना चाहता इसलिए उसका आग्रह स्वीकार कर लेता हूँ।

‘यह बहुत बुरी बात है कि कोई अतिथि मेरे घर आए और मैं उसे भोजन न करा सकूँ,’ यह कहते हुए वह मुझे छौंके हुए चावल देता है।

मैं खिड़की से बाहर देख रहा हूँ। चंद्रमा का मंद प्रकाश अंदर आ रहा है। उसे देखते हुए मैं गाँव के अशिक्षित किसानों के सीधे व सरल स्वभाव और उनकी दयालु प्रवृत्ति के विषय में सोच रहा हूँ। किसी कॉलेज की शिक्षा आदि शहरों में दिखनेवाले चारित्रिक पतन की पूर्ति नहीं कर सकती!

चंडीदास और उसके शिष्य से विदा लेने के बाद हम वहाँ से निकलते हैं। किसान लालटेन लेकर हमारे साथ चल पड़ता है। मैं उसे इशारे से कहता हूँ कि चिंता की कोई बात नहीं है। मैं अपने सेवक के साथ टार्च की रोशनी में चलते हुए अपने आवास पर पहुँच जाता हूँ। बंगाल के इस रहस्यमय योगी के विचारों के बीच, सियारों की आवाज़ तथा वहाँ के जंगली कुत्ते की अनूठी पुकार से मेरी आँखों से नींद ग़ायब हो चुकी है।



मैं चंडीदास की सलाह का कड़ाई से पालन करने की इच्छा न रखते हुए भी मुंबई लौटने की तैयारी करता हूँ। मैं मुंबई पहुँचकर मैं एक होटल में ठहर जाता हूँ। मैं स्वयं को थोड़ा बीमार महसूस कर रहा हूँ।

चारदीवारों की क़ैद में थके हुए दिमाग़ और बीमार शरीर के साथ मुझे पहली बार निराशा महसूस हो रही है। मुझे लग रहा है कि मैंने भारत को काफ़ी देख लिया है। मैंने देश में हज़ारों मील की दूरी तय कर ली है और कई बार बहुत बुरे हालातों में यात्राएँ की हैं। मुझे जिस

भारत की तलाश है, वह मुझे यूरोप के घरों में देखने को नहीं मिलेगा, जहाँ शराब पीना, भोजन करना, नाचना-गाना और मज़े उड़ाना ही जीवन का रूप है। भारतीय शहरों और वहाँ की यात्राओं से मुझे अपनी खोज में सहायता अवश्य मिली है, लेकिन मेरा स्वास्थ्य भी बिगड़ा है। शहर से दूर जंगलों और गाँव में रहकर वहाँ का अनुपयुक्त भोजन और पानी मेरे लिए बहुत ख़तरनाक साबित हुआ है। मेरा शरीर काफ़ी बीमार हो गया है।

मैं सोच रहा हूँ कि मुझे पूरी तरह टूट जाने में कितना समय लगेगा। मेरी आँखें नींद की कमी से भारी हो गई हैं। मैं महीनों से अधूरी नींद का शिकार हूँ। इसके अतिरिक्त यहाँ के विचित्र लोगों के बीच, मेरे स्नायु तंत्र पर भी बुरा असर पड़ा है। इसके अतिरिक्त, अपना भीतरी संतुलन बनाए रखना और खुले दिमाग़ से बातें सुनना और भारत के रहस्यमय क्षेत्रें के अपरिचित दायरों में घुसना, मेरी सेहत के लिए काफ़ी नुक़सानदेह साबित हुआ है।

मैंने इस बीच सच्चे साधुओं और उन मूर्खों के बीच फ़र्क़ करना सीख लिया है, जो अहंकारी महत्त्वाकांक्षाओं को दिव्य ज्ञान का नाम देते हैं। मैंने सच्चे धार्मिक संन्यासियों और पाखंडियों तथा काला जादू करने वालों और सच्चे योगियों के बीच भी फ़र्क़ करना सीखा है। मुझे इस कार्य को शीघ्र पूरा करना है क्योंकि मैं जीवन का इतना समय, केवल एक चीज़ को खोजते हुए नहीं बिता सकता।

मेरी शारीरिक और मानसिक स्थिति ख़राब है, किंतु मेरी आध्यात्मिक स्थिति बेहतर है। मैं असफल होने के कारण थोड़ा उदास और निराश हूँ। यह सच है कि मुझे इस बीच अनेक शानदार लोग मिले हैं और मेरी भेंट साधु प्रवृत्ति वाले लोगों से हुई है जो अद्भुत कारनामे कर सकते हैं। हालाँकि मुझे अभी तक वह आध्यात्मिक महामानव नहीं मिला है, मैं जिसकी तलाश में निकला था। वह गुरु, जो मेरे तार्किक और वैज्ञानिक मनोभाव के अनुकूल हो और जिसके साथ में ख़ुशी से जुड़ सकूँ।

बहुत-से उत्साही शिष्यों ने मुझे अपने-अपने गुरुओं के पास ले जाने के असफल प्रयास किए हैं परंतु मैं जानता हूँ कि जिस तरह एक युवा अपने पहले अनुभव को प्रेम का अंतिम मापदंड मान लेता है, उसी तरह ये भले और सीधे लोग भी अपने आरंभिक अनुभवों से इतने उत्साहित और प्रसन्न हो जाते हैं कि वे उसके आगे कुछ भी खोजने की चेष्टा नहीं करते। इसके अलावा मुझे किसी और व्यक्ति के सिद्धांतों को अपने भीतर इकट्ठा करने की इच्छा नहीं है। मैं एक जीवंत और व्यक्तिगत अनुभव की तलाश में हूँ, एक ऐसा आध्यात्मिक प्रकाश जो मेरा अपना हो, किसी अन्य का नहीं!

आख़िर, मैं सिर्फ़ सीधा-साधा और अनुत्तरदायी लेखक हूँ जो अपनी इच्छाओं को त्यागकर पूर्व जगत में भटक रहा है। ऐसे में, मैं किससे मिलने की आशा रख सकता हूँ? यह सोचकर मेरा हृदय अवसाद से घिर जाता है।

मैं थोड़ा चलने-फिरने लायक़ होने पर अपने एक पड़ोसी मित्र और सेना के कप्तान के

साथ होटल के टेबल पर बैठा हूँ। वह अपनी बीमार पत्नी और उसकी धीमी गति से सुधरती हालत की एक लंबी कथा मुझे सुनाता है। वह बताता है कि किस तरह उसकी छुट्टी रद्द कर दी गई। यह सब सुनकर मेरी दशा और बिगड़ रही है। बात ख़त्म करने के बाद हम लोग बाहर बरामदे में आ जाते हैं तो वह मुँह में एक लंबा सिगार डालकर कहता है:

'जीवन भी अजीब खेल है, है ना?'

'हाँ, सो तो है,' मैं बेमन से हामी भर देता हूँ।

आधे घंटे बाद, मैं टैक्सी में बैठकर निकल जाता हूँ। हम एक ऊँची इमारत के बाहर रुकते हैं। वह जहाज की कंपनी का दफ़्तर है। मैं अपने लिए एक टिकट ख़रीदता हूँ। मुझे इस बात का एहसास है कि भारत से अचानक इस तरह निकल जाना ही मेरे लिए अब एकमात्र संभव कार्य है।

मैं मुंबई के छोटे होटलों, गंदी दुकानों और दफ़्तरों को बेमन से देखते हुए अपने होटल के कमरे में लौट आता हूँ।

शाम हो गई है। होटल का वेटर मेज़ पर स्वादिष्ट कढ़ी रख कर जाता है, लेकिन मेरा भोजन करने का मन नहीं है। मैं बर्फ़ डालकर कुछ ठंडा पेय पी रहा हूँ। फिर मैं वहाँ से टैक्सी पकड़कर शहर से बाहर निकल जाता हूँ। कुछ देर के बाद मैं स्वयं को एक बड़े-से सिनेमाघर के सामने पाता हूँ। यह पाश्चात्य जगत द्वारा शहरी भारत को दिया एक उपहार है। सिनेमाघर के द्वार पर बत्तियाँ जल रही हैं। मैं वहाँ कुछ देर खड़ा होकर सिनेमाघर पर लगे रंगीन पोस्टरों को देखता रहता हूँ।

मुझे फ़िल्मों का शुरू से शौक़ रहा है और इसलिए आज रात मुझे बढ़िया अवसर लग रहा है। मुझे नहीं लगता कि मुझे संसार के किसी भी अन्य शहर में, एक रुपये में इतनी बढ़िया और शानदार सिनेमा की सीट मिल पाएगी।

मैं भीतर जाकर बैठ जाता हूँ। अमेरिकी जीवन के कुछ अंश, जो फ़िल्म में तब्दील कर दिए गए हैं, मेरे सामने सफ़ेद स्क्रीन पर चल रहे हैं। उनमें मुझे मूर्ख पत्नी और बेईमान पति नज़र आते हैं। मैं उन पर ध्यान केंद्रित करना चाहता हूँ लेकिन मुझे बहुत बोरियत हो रही है। मुझे इस बात पर भी बहुत आश्चर्य है कि फ़िल्मों के प्रति जो मेरा पहले रुझान था, वह अचानक समाप्त हो गया है। उन्माद, त्रासदी और हँसी-मज़ाक़ की कथाओं ने अब मेरे हृदय को अवसाद से भरने या मुझे हँसा पाने की शक्ति खो दी है!

फ़िल्म के आधा हो जाने पर मेरा ध्यान बिलकुल टूट जाता है। मेरे विचार फिर से अपनी उसी खोज की ओर चल पड़ते हैं। मुझे लग रहा है मानो मैं ईश्वर के बिना किसी तीर्थयात्रा पर निकला हूँ। मैं एक शहर से दूसरे शहर और एक गाँव से दूसरे गाँव, किसी ऐसे स्थान की तलाश में हूँ जहाँ मेरे दिमाग़ को शांति मिल सके लेकिन मुझे ऐसी कोई जगह अभी तक नहीं मिली है। मैं लोगों के चेहरों को ध्यान से देखता हूँ और आशा करता हूँ कि इनमें से कोई

चेहरा उस आध्यात्मिक महामानव का होगा, जो अन्य लोगों से अधिक विचारशील और उन्नत हो! मैं किस तरह दूसरे लोगों की गहरी और चमकदार आँखों में इस आशा से देखता रहता हूँ कि मुझे किसी दिन वे आँखें दिखाई देंगी, जिनमें मुझे संतुष्ट करने वाला रहस्यमय उत्तर मिलेगा! यह विचार आते ही मेरे दिमाग़ में तनाव पैदा हो जाता है। मेरे आसपास का वातावरण विद्युत की तरंगों से भर रहा है। मैं यह बात साफ़ तौर पर महसूस कर सकता हूँ कि मेरे भीतर सक्रिय मनोवैज्ञानिक परिवर्तन हो रहा है। अचानक मेरे दिमाग़ में एक आवाज़ गूँजती है और मेरा ध्यान उसकी ओर चला जाता है। वह मुझसे कह रही है:

'जीवन, जन्म से लेकर मृत्यु तक होने वाला नाटक है। अतीत के दृश्य कहाँ चले गए? क्या तुम उन्हें रोक पाए? वे दृश्य कहाँ हैं, जो अभी आने वाले हैं? क्या तुम उन्हें पकड़ सकते हो? उस सत्य सनातन को खोजने के बजाय, तुम यहाँ बैठे हो और ऐसी वस्तु पर अपना समय बर्बाद कर रहे हो जो सामान्य जीवन से भी अधिक भ्रामक है। यह एक पूरी तरह काल्पनिक कथा है। इसमें एक भ्रम के बाद दूसरा भ्रम पैदा हो जाता है।'

इसके बाद प्रेम और त्रासदी से भरी उस फ़िल्म में, मेरी रुचि बिलकुल समाप्त हो जाती है। मेरे लिए अब अपनी सीट पर और अधिक देर तक बैठे रहना संभव नहीं है। मैं तुरंत खड़ा होकर बाहर निकल जाता हूँ।

मैं चंद्रमा की रोशनी में सड़कों पर धीमी गति से बिना लक्ष्य के यूँ ही टहल रहा हूँ। मुझे सड़क के कोने पर एक भिखारी मिलता है। मैं जैसे ही उसके चेहरे की ओर देखता हूँ, मुझे डर लगने लगता है क्योंकि वह भयानक रोग का शिकार है। उस रोग के कारण उसके चेहरे की त्वचा जगह-जगह से उतर चुकी है। उसे देखकर मेरे मन में दया-भाव जाग्रत हो जाता है और मैं अपनी जेब के सारे पैसे उसके हाथ पर रख देता हूँ।

इसके बाद मैं समुद्र-तट पर चला जाता हूँ। वह ऐसा शांत और एकांत स्थान है, जहाँ व्यक्ति भीड़-भाड़ से दूर रहकर कुछ समय व्यतीत कर सकता है। उस शहर के ऊपर सितारों से भरी सुंदर छत को देखते हुए मुझे महसूस हो रहा है कि मैं किसी अप्रत्याशित संकट के निकट हूँ।



कुछ ही दिनों में मेरा जहाज अरब सागर के नीले पानी पर तैरता हुआ यूरोप की तरफ़ निकल जाएगा। मैं जहाज पर चढ़ने के बाद दर्शनशास्त्र को अलविदा कह दूँगा और पूर्वी जगत में चल रही अपनी खोज को भूल जाऊँगा। मैं उन परिकल्पित गुरुओं की खोज पर अब इससे अधिक समय, ऊर्जा और धन को व्यय करने के लिए तैयार नहीं हूँ।

परंतु उसके बावजूद मेरे दिमाग़ की आवाज़ मुझे परेशान कर रही है।

'मूर्ख!' वह तिरस्कारपूर्ण लहजे में मुझसे कहती है, 'तो तुम्हारे इतने वर्षों की जाँच-पड़ताल और अभिलाषा का यह नतीजा निकला है! क्या तुम भी दूसरे लोगों की तरह वह सब भूल जाओगे, जो तुमने सीखा है? तुम उन सब भावनाओं को अपने कठोर स्वार्थ और कामुकता में डुबा दोगे? परंतु ध्यान रहे! तुम्हारे जीवन का प्रशिक्षण, विकट गुरुओं के साथ हुआ है। अंतहीन विचारों ने तुम्हारे जीवन शैली पर से छद्मावरण खींच कर उतार दिया है। लगातार होने वाली गतिविधि ने तुम्हारे ऊपर चाबुक से वार किए हैं और आध्यात्मिक अकेलेपन ने तुम्हारी आत्मा को अलग-थलग कर दिया है। क्या तुम्हें लगता है कि ऐसे अनुभव के बाद, तुम उसके परिणामों से बच जाओगे? नहीं! ऐसा नहीं हो सकता, क्योंकि अब तुम्हारे पैरों में अदृश्य बेड़ियाँ पड़ चुकी हैं!'

मेरा मन लोलक की तरह एक छोर से दूसरे छोर तक भटक रहा है और मैं तारों से भरे आसमान को देख रहा हूँ। मैं उस निर्दयी मानसिक आवाज के विरुद्ध अपनी आवाज़ उठाना चाहता हूँ। मैं अपनी असफलता और असहायपन व्यक्त करना चाहता हूँ।

वह आवाज़ उत्तर देती है: 'क्या तुम्हें विश्वास है कि भारत में तुम जितने भी लोगों से मिले हो, उनमें से कोई भी तुम्हारा गुरु नहीं बन सकता?'

मेरे मस्तिष्क की आँखों के सामने से एक-एक चेहरे घूमने लगते हैं। उत्तर दिशा के लोग, दक्षिण दिशा के शांत लोग, पूर्वी दिशा में मिलने वाले भावुक और घबराए हुए चेहरे तथा पश्चिम के दृढ़ और मराठी चेहरे, कुछ महत्त्वपूर्ण चेहरे, कुछ मूर्ख चेहरे, बुद्धिमान और ख़तरनाक चेहरे, दुष्ट चेहरे। इस श्रृंखला में एक चेहरा बार-बार मेरी आँखों के सामने आ रहा है। वह बहुत ही शांत चेहरा है। यह दक्षिण के पर्वत पर रहने वाले महर्षि का चेहरा है। मैं उन्हें भूल नहीं पाया हूँ, बल्कि महर्षि का विचार एक बार फिर मेरे मन में सजीव हो उठा है। परंतु मेरी खोज के दौरान महर्षि के साथ मेरा संक्षिप्त आवास, उन सब अनुभवों, चेहरों और घटनाओं - जिनसे मेरी मुलाक़ात हुई है - के पीछे छिपा गया है।

मैं यह मानता हूँ कि महर्षि मेरे जीवन में चमचमाते सितारे की तरह आए थे। वे मेरे अंधकारपूर्ण ख़ालीपन में चमककर ओझल हो गए। मुझे भीतरी प्रश्न के उत्तर में यह स्वीकार करना पड़ेगा कि वही एकमात्र व्यक्ति हैं, जिन्होंने अन्य सब लोगों की अपेक्षा, मुझे सबसे अधिक प्रभावित किया है। परंतु वह महर्षि मुझसे दूर रहे और उन्होंने मेरी यूरोपीय मानसिकता से भी अजीब-सी दूरी बनाए रखी। मेरे भीतर की आवाज़ मुझसे फिर पूछ रही है: 'तुम यह कैसे कह सकते हो कि वह तुमसे दूर थे? तुम्हें जाने की जल्दी थी इसलिए तुम वहाँ अधिक समय नहीं रुके!'

'हाँ, मैं इस बात को स्वीकार करता हूँ परंतु मुझे अपने नियत कार्यक्रम पर आगे बढ़ना था। मैं और कर भी क्या सकता था?'

'तुम अभी एक काम कर सकते हो। उसके पास वापस जाओ।'

‘मैं उनके पास ज़बरदस्ती कैसे लौट सकता हूँ?’

‘तुम्हारी इस खोज में सफल होना, तुम्हारी व्यक्तिगत भावनाओं से अधिक महत्त्वपूर्ण है। महर्षि के पास वापस जाओ!’

‘वे भारत के दूसरे छोर पर रहते हैं और मैं अभी यात्रा आरंभ नहीं कर सकता क्योंकि मैं काफ़ी बीमार हूँ।’

‘इससे क्या फ़र्क़ पड़ता है? अगर तुम्हें गुरु की तलाश है तो तुम्हें यह क़ीमत चुकानी पड़ेगी।’

‘मुझे संदेह है कि मुझे अभी किसी गुरु की आवश्यकता है, क्योंकि मैं इतना थका हुआ हूँ कि मुझे किसी चीज़ की ज़रूरत महसूस नहीं हो रही है। इसके अतिरिक्त, मैंने जहाज पर अपने लिए एक सीट भी बुक कर ली है और मुझे अगले तीन दिन में यहाँ से निकलना है। अपनी योजना में परिवर्तन करने के लिए अब काफ़ी देर हो चुकी है।’

वह आवाज़ मानो मेरे पीछे चल रही है।

‘देर! तुम्हारे दिमाग़ को क्या हो गया है? तुम यह मानते हो कि अब तक तुम जितने भी लोगों से मिले हो, उन सब में ये सबसे अधिक प्रभावशाली थे। फिर भी तुम उनसे दूर भाग रहे हो। उनके पास लौट जाओ।’

मैं दुखी मन से अपनी ज़िद पर अड़ा हूँ। मेरा मस्तिष्क उत्तर दे रहा है, ‘हाँ!’ परंतु मेरा मन कहता है, ‘नहीं!’

मेरे भीतर की आवाज़ फिर अनुरोध करती है:

‘अपनी योजना को बदल लो। तुम्हें महर्षि के पास वापस जाना चाहिए।’

मेरे भीतर अचानक कुछ होता है। मैं उस आवाज़ के आदेश को तत्काल मानने के लिए तैयार हो जाता हूँ। मेरे भीतर की आवाज़ इतनी प्रबल है कि मेरे मन द्वारा किया विरोध तथा मेरे दुर्बल शरीर द्वारा किया विरोध काम नहीं आते। मैं उस आवाज़ के हाथों की कठपुतली बन जाता हूँ। महर्षि के पास से लौटने की तात्कालिकता के बीच मुझे महर्षि की आकर्षक आँखें बहुत स्पष्ट दिखाई दे रही हैं।

मैं अपनी भीतरी आवाज़ के साथ तर्क करना बंद कर देता हूँ क्योंकि मैं यह जानता हूँ कि मैं उसके हाथों असहाय हो गया हूँ। मुझे अब महर्षि के पास जाना ही होगा। यदि वह मुझे स्वीकार कर लेते हैं तो मैं उन्हें अपना गुरु मान लूँगा। मैं अपने जीवन को उनके हाथों में सौंप दूँगा। मेरा साँचा शायद तैयार हो चुका है। किसी अदृश्य चीज़ ने मुझे अपने अधीन कर लिया है, हालाँकि मैं नहीं जानता कि वह क्या है!

मैं होटल जाकर अपना चेहरा साफ़ करता हूँ और एक प्याला गर्म चाय पीता हूँ। उसे पीते समय मुझे लग रहा है कि मैं एक बदला हुआ इंसान हूँ। मुझे महसूस हो रहा है कि मेरे

दु:ख और संदेहों का भारी बोझ मेरे कंधों से उतर रहा है।

अगले दिन सुबह नाश्ता करने के लिए उतरते समय मेरे चेहरे पर मुस्कान है। मैं आज शायद मुंबई आने के बाद पहली बार मुस्कराया हूँ। मुझे देखकर सफ़ेद जैकेट, सुनहरे कमरबंद और सफ़ेद पतलून वाला लंबी दाढ़ी वाला मेरा सिख सेवक मुझे देखकर मुस्कराता है। वह मेरी कुर्सी के पीछे खड़े होकर बोलता है:

'महाशय, आपके लिए एक पत्र आया है।'

मैं चिट्ठी के लिफ़ाफ़े को देखता हूँ। उस पर दो बार पता बदलकर लिखा गया है। स्पष्ट है वह पत्र मेरे नए पतों पर मेरे पीछे-पीछे चलता आ रहा है। मैं कुर्सी पर बैठकर लिफ़ाफ़ा खोलता हूँ।

मुझे यह जानकर प्रसन्नता और आश्चर्य हो रहा है कि वह पत्र उसी पवित्र पर्वत की तलहटी में स्थित आश्रम से लिखा गया है। उसका लिखने वाला कभी किसी समय में विख्यात व्यक्ति था और मद्रास विधान परिषद का सदस्य था। बाद में, किसी घरेलू त्रासदी और दु:ख से परेशान होकर उसने सांसारिक जीवन त्याग दिया और वह महर्षि का शिष्य बन गया। वह उनसे मिलने कभी-कभी जाता है। मेरी उससे मुलाक़ात हुई थी और हम लोग कभी-कभी एक दूसरे को पत्र भी लिखते थे।

वह पत्र प्रेरक विचारों से भरा है। उसमें भी यही सुझाव है कि यदि मैं आश्रम आऊँ तो उसे अच्छा लगेगा। उस पत्र को पढ़ने के बाद मुझे उसका एक वाक्य याद है। उसमें लिखा है, 'यह आपका सौभाग्य है कि आपको एक सच्चे गुरु से मिलने का मौक़ा मिल रहा है!'

मैं उस पत्र के आगमन को महर्षि से मिलने के अपने निर्णय से संबंधित शुभ संकेत मान रहा हूँ। मैं नाश्ता करके वापस जहाज के द़तर पहुँचता हूँ और उन्हें सूचित करता हूँ कि मैं जहाज में नहीं जाऊँगा।

मैं शीघ्र ही मुंबई को अलविदा कहकर अपने नए पड़ाव की ओर निकल जाता हूँ। डक्कन की समतल भूमि पर सैकड़ों मील की यात्रा करने के बाद मैं अपने मार्ग पर बढ़ रहा हूँ। वहाँ की घनी घास और बीच में पड़ने वाले वृक्षों के बीच रेलगाड़ी तेज़ी से नहीं निकल पाती है। मुझे लग रहा है कि मैं अत्यंत महत्त्वपूर्ण अवसर की ओर तेज़ी से अग्रसर हो रहा हूँ। वह मेरा अब तक का सबसे रहस्यमय अनुभव होने वाला है। मैं खिड़की से बाहर देखते हुए इस विचार में डूबा हुआ हूँ कि मेरी मुलाक़ात महर्षि से, उस आध्यात्मिक महामानव से होने वाली है।

दूसरे दिन रेलगाड़ी मीलों का रास्ता तय करके शांत दक्षिणी परिदृश्य में प्रवेश करती है। मुझे बहुत अच्छा लग रहा है। शुष्क मैदानों को पीछे छोड़ते हुए मुझे मद्रास शहर की गर्म हवा अच्छी लग रही है। इसका अर्थ यह है कि मेरी यात्रा सफल रही और मुझे यात्रा की थकान भी महसूस नहीं हो रही है।

दक्षिण मराठा कंपनी के टर्मिनल को छोड़ने के बाद मुझे भीड़-भाड़ वाला शहर पार करना है ताकि मैं दक्षिण भारतीय रेलवे की लाइन तक पहुँच सकूँ। मुझे वहाँ से अगली गाड़ी लेनी है परंतु उसमें कुछ समय बाक़ी है। मैं उस समय का सदुपयोग करते हुए कुछ ज़रूरी सामान ख़रीदता हूँ। मैं उस भारतीय लेखक से भी मिलता हूँ, जिसने मुझे दक्षिण भारत के आध्यात्मिक गुरु परमपूज्य श्री शंकर से मिलवाया था।

वह स्नेहपूर्वक मेरा सत्कार करता है। मैं उसे बताता हूँ कि मैं महर्षि से मिलने जा रहा हूँ तो वह कहता है:

'अब मुझे बिलकुल आश्चर्य नहीं है। मुझे इसी बात की आशा थी।'

मैं उसकी बात सुनकर चकित हूँ और उससे पूछता हूँ:

'आप ऐसा क्यों कह रहे हैं?'

वह मुस्कराता है।

'मित्र, क्या तुम्हें याद नहीं हम किस तरह चेंगलपट्टु शहर में परमपूज्य से मिलकर अलग हुए थे? क्या तुमने देखा था कि उन्होंने मेरे कान में कुछ कहा था?'

'हाँ, आप कह रहे हैं तो मुझे वह बात याद आ रही है।'

उस लेखक के चेहरे पर अब भी मुस्कान है।

'मुझे परमपूज्य श्री शंकर ने यही कहा था कि तुम्हारा मित्र भारतवर्ष में घूमकर अनेक योगियों से मिलेगा और बहुत-से गुरुओं की बातचीत सुनेगा। अंत में, उसे महर्षि के पास ही लौटना है। उसके लिए महर्षि ही उपयुक्त गुरु हैं।'

यह सुनकर मैं बहुत प्रभावित हूँ। यह श्री शंकर की भविष्यवाणी करने की शक्ति को उजागर करती है। इससे भी अधिक यह इस बात की पुष्टि करती है कि मैं सही मार्ग पर आगे बढ़ रहा हूँ।

मेरी यात्राएँ कितनी विचित्र हैं, जिन्हें मेरे नक्षत्रों ने मेरे लिए लिखा है!

---

* समय ने उस योगी की भविष्यवाणी के पहले हिस्से की पुष्टि कर दी है।

अध्याय 16

जंगल के एक आश्रम में

हमारे जीवन में ऐसे अविस्मरणीय क्षण आते हैं, जो हमारे जीवन के पंचांग में सुनहरे अक्षरों में दर्ज हो जाते हैं। ऐसा ही एक क्षण मेरे सामने आ गया है और मैं महर्षि के कक्ष में प्रवेश करने वाला हूँ।

वह हमेशा की तरह अपने दीवान पर शानदार बाघ चर्म पर बैठे हैं। उनके पास मेज़ पर अगरबत्तियाँ जल रही हैं और सुगंधित धुआँ कक्ष में चारों ओर फैल रहा है। हमारी पहली मुलाक़ात की तरह, आज वे आध्यात्मिक ध्यान में डूबे हुए नहीं हैं। उनकी आँखें पूरी तरह खुली हैं और वे सजग हैं। वे मुझे देख रहे हैं। मैं झुककर उनका अभिवादन करता हूँ। मुझे देखते ही उनके चेहरे पर बड़ी-सी मुस्कान आ जाती है।

गुरुदेव से कुछ दूरी पर उनके शिष्य बैठे हैं। कक्ष का बाक़ी सारा स्थान ख़ाली है। उनमें से एक शिष्य हमेशा की तरह उनके सिर पर लगा पंखा चला रहा है।

मैं जानता हूँ कि मैं उनका शिष्य बनने आया हूँ और मेरे मन को तब तक चैन नहीं मिलेगा जब तक मैं महर्षि का निर्णय नहीं सुन लेता। यह सत्य है कि मैं यहाँ बहुत उम्मीद लेकर आया हूँ। मुझे मुंबई से बाहर जाने का निर्देश देकर यहाँ भेजा गया है। वह अत्यंत अलौकिक और कड़ा आदेश था। इसलिए मैं आरंभिक बातचीत के बाद सीधे और स्पष्ट रूप से अपना अनुरोध महर्षि के समक्ष रख देता हूँ।

वे मेरी ओर देखकर मुस्कराते हैं लेकिन वे बिलकुल चुप हैं।

मैं थोड़ा ज़ोर देकर अपना प्रश्न दोहराता हूँ।

एक लंबी चुप्पी के बाद वे आख़िर मेरे प्रश्न का उत्तर देते हैं। उन्होंने अपने दुभाषिये

अनुचर की सेवा लेना ज़रूरी नहीं समझा और वे मुझसे सीधे अंग्रेज़ी में ही बात कर रहे हैं।

'यह गुरु और शिशु की क्या बात चल रही है? यह केवल दृष्टिकोण का अंतर है। जिस व्यक्ति ने स्वयं को जान लिया, उसके लिए न कोई गुरु है और न शिष्य! ऐसा व्यक्ति सबको समान दृष्टि से देखता है।'

मैं उनकी इस शुरुआती झिड़की से थोड़ा घबरा गया हूँ। मैं अनेक बार अपने अनुरोध को कई तरह से दोहरा चुका हूँ परंतु महर्षि मेरी बात को नहीं मान रहे हैं। अंत में वह कहते हैं:

'तुम्हें अपना गुरु अपने भीतर तलाशना होगा। तुम्हें उसके शरीर को भी उसी तरह जानना होगा, जैसे वह स्वयं अपने शरीर को जानता है क्योंकि यह उसका सच्चा स्वरूप नहीं है।'

मुझे यह बात धीरे-धीरे समझ में आ रही है कि महर्षि मुझे सीधा व सकारात्मक उत्तर नहीं देंगे। मुझे वह उत्तर किसी अन्य तरीक़े से स्वयं खोजना होगा क्योंकि वह महर्षि के संकेतों में ही कहीं छिपा है। मैं उस विषय को वही छोड़ देता हूँ और फिर महर्षि से यात्रा संबंधी साधारण बातें करने लगता हूँ।

मैं दोपहर में रुककर उनके आश्रम में अपने आवास का प्रबंध कर रहा हूँ।



आगामी सप्ताह मुझे एक अनूठे जीवन की ओर ले जा रहे हैं। मेरे अधिकतर दिन महर्षि के कक्ष में ही व्यतीत होते हैं। मैं उनके ज्ञान के अंश ग्रहण कर रहा हूँ और उनके उत्तर में छिपे संकेत खोज रहा हूँ जिसके लिए मैं यहाँ आया हूँ। मेरी रातें हमेशा की तरह बीत रही हैं। मैं रात-भर फ़र्श पर लेटा रहता हूँ।

महर्षि का छोटा-सा आवास उनके आश्रम से लगभग तीन सौ फ़ीट की दूरी पर है। इसकी मोटी दीवारें, मिट्टी की बनी हैं परंतु वर्षा से बचाव के लिए छत पर मज़बूत टाइलें लगी हैं। चारों ओर घनी झाड़ियाँ हैं क्योंकि वह स्थान घने जंगल के बहुत नज़दीक है। वहाँ के ऊबड़-खाबड़ परिदृश्य में प्रकृति का वन्य और असभ्य रूप झलकता है। वहाँ चारों ओर कैक्टस के बड़े-बड़े झाड़ लगे हैं और इनके कांटे बड़ी एवं नुकीली सुइयों जैसे हैं। इनके आगे का जंगल छोटी झाड़ियों और वृक्षों से भरा हुआ है। उत्तर दिशा की ओर पर्वत श्रृंखला है और विशाल शिलाखंड ज़मीन पर बिखरे पड़े हैं। दक्षिण दिशा में एक शांत और आकर्षक तालाब है। उस तालाब के किनारे पर अनेक वृक्ष लगे हैं, जिनपर बहुत-से बंदर अपने परिवारों के साथ रहते हैं।

मेरा प्रत्येक दिन, पूर्ववर्ती दिन जैसा ही बीत रहा है। मैं जल्दी सुबह उठता हूँ और जंगल को धीरे-धीरे धूसर से हरे और फिर सुनहरे रंग में बदलते हुए देखता हूँ। इसके बाद मैं

निकटवर्ती तालाब में नहाने जाता हूँ। उसमें उतरने के बाद मुझे ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाना पड़ता है ताकि आसपास घूम रहे साँप मुझसे दूर रहें। उसके बाद, मैं हजामत बनाकर और तैयार होकर तीन कप बढ़िया, ताज़ा चाय पीता हूँ क्योंकि मुझे यहाँ बस, यही एक सुख मिल रहा है।

'मालिक, चाय का पानी तैयार है,' मेरा नौकर राजू मुझे बताता है। उसे अंग्रेज़ी भाषा बिलकुल नहीं आती थी परंतु मेरे सिखाने-पढ़ाने से वह कुछ सीख गया है। वह नौकर के रूप में अनमोल हीरा है क्योंकि वह मेरे कहने से कई बार शहर जाता है और मेरी बताई हुई चीज़ें और खाद्य सामग्री आदि खोजकर लाता है। वह महर्षि के कक्ष के बाहर चुपचाप खड़ा मेरी प्रतीक्षा करता है। उसे यह आशा रहती है कि मैं उसे किसी भी समय कुछ लाने का आदेश दे सकता हूँ। परंतु वह रसोइए के तौर पर पश्चिमी लोगों के स्वाद को अभी समझ नहीं पाया है। उसे मेरी खाने की पसंद बहुत अजीब लगती है। कुछ कष्टदायक प्रयोगों के बाद, मैंने अपने खान-पान के प्रबंध की ज़िम्मेदारी ख़ुद ले ली है। मैं केवल एक समय भोजन करता हूँ। इससे मेरी मेहनत बचती है। दिन में तीन बार बढ़िया चाय से मुझे बहुत आनंद और ऊर्जा प्राप्त होती है। राजू धूप में खड़ा मेरे चाय के शौक़ को आश्चर्य से देखता रहता है। तेज़ धूप में उसका शरीर चमकता है क्योंकि वह सही मायनों में भारत में सबसे पहले आए द्रविड़ों की संतान है।

नाश्ते के बाद मैं आश्रम चला जाता हूँ और वहाँ कुछ देर तक शानदार गुलाब के फूलों को देखता हूँ या फिर खजूर के वृक्षों के नीचे बैठ जाता हूँ। आश्रम के बगीचे में टहलना सचमुच एक सुखद अनुभव है। बाद में धूप तेज़ हो जाती है।

इसके बाद, मैं महर्षि के कक्ष में प्रवेश करता हूँ और वहाँ चुपचाप पैर मोड़कर बैठ जाता हूँ। मैं कुछ देर वहाँ पढ़ता या लिखता हूँ अथवा वहाँ बैठे एकाध लोगों से बातचीत करता हूँ या फिर महर्षि के साथ किसी विषय पर चर्चा करता हूँ अथवा कुछ समय के लिए ध्यान मग्न हो जाता हूँ। संध्या के समय प्रतिदिन ध्यान का अभ्यास किया जाता है। मैं कुछ भी करूँ, परंतु मैं उस स्थान के रहस्यमय वातावरण के प्रति हमेशा सजग रहता हूँ। मेरे मस्तिष्क में सदा शांतिदायक तरंगें उठती रहती हैं। मुझे वहाँ की ज़बरदस्त शांति अच्छी लगती है। कुछ समय ध्यान से देखने और लगातार विश्लेषण करने के बाद, मैं इस बात के प्रति पूरी तरह आश्वस्त हो चुका हूँ कि मैं और महर्षि एक-दूसरे की संगति में बैठकर परस्पर प्रभावित होते हैं। यह बात वैसे सूक्ष्म स्तर की है, परंतु यह बिलकुल निश्चित है!

मैं लगभग ग्यारह बजे अपनी कुटिया पर दोपहर के भोजन के लिए लौट आता हूँ। कुछ देर आराम करने के बाद सुबह वाला कार्यक्रम दोहराने के उद्देश्य से मैं फिर महर्षि के कक्ष में चला जाता हूँ। मैं ध्यान और बातचीत के बीच, कभी-कभी, बाहर टहलने या शहर के मंदिर में दर्शन के लिए चला जाता हूँ।

महर्षि कभी-कभी दोपहर का भोजन समाप्त करने के बाद अचानक मुझसे मिलने मेरे आवास पर आ जाते हैं। मैं उस अवसर का लाभ उठाकर उनसे कुछ प्रश्न करता हूँ। वे धैर्यपूर्वक और संक्षिप्त सूक्तियों में उत्तर देते हैं। उनके उत्तर इतने छोटे होते हैं कि बहुत कम ही, उनका कोई वाक्य पूरा बन पाता है। कभी वे मेरे किसी प्रश्न का उत्तर नहीं देते, अपितु बाहर वनों से ढँके पर्वत को देखने लगते हैं। काफ़ी समय बीत जाने के बाद उनकी आँखें स्थिर हो जाती हैं और वह बिलकुल शांत भाव से बैठे रहते हैं। मेरे लिए यह समझ पाना मुश्किल हो जाता है कि उनका ध्यान बाहर किसी अदृश्य काल्पनिक प्राणी पर है, अथवा वह अपने ही भीतर किसी बात पर विचार कर रहे हैं। मुझे पहले इस बात पर संदेह होता है कि उन्होंने मेरी बात सुनी भी या नहीं, परंतु वहाँ मैं उनके मौन को तोड़ने का बिलकुल इच्छुक नहीं हूँ। मेरे तार्किक मस्तिष्क से कहीं बड़ी एक शक्ति है, जो धीरे-धीरे मुझ पर हावी हो रही है।

इस अदृश्य शक्ति से मुझे यह बोध हो रहा है कि मेरे विचार, मेरे प्रश्नोत्तर किसी अनंत खेल का हिस्सा हैं। विचारों के उस खेल की कोई सीमा नहीं है। मेरे अपने भीतर अनिश्चितता का एक कुआँ है और मुझे उसी से सत्य का जल प्राप्त होगा। शायद यही अच्छा होगा कि मैं प्रश्न करना बंद कर दूँ और अपने आध्यात्मिक स्वभाव की अनंत संभावनाओं को समझने का प्रयत्न करूँ। मैं शांत रहकर प्रतीक्षा करना बेहतर समझता हूँ।

महर्षि लगभग आधा घंटा इसी तरह स्थिर भाव से सामने देखते रहते हैं। वे मानो मुझे भूल गए हैं, परंतु मैं पूरी तरह इस बात के प्रति सजग हूँ कि मेरे मन में उठा यह सुखद भाव, महर्षि के रहस्यमय और शानदार व्यक्तित्व के प्रभाव के अतिरिक्त और कुछ नहीं है!

एक बार महर्षि मुझसे मिलने आते हैं। उस समय मैं निराश बैठा हूँ। वह मुझे उस लक्ष्य के विषय में बताते हैं जिसकी प्रतीक्षा उस मार्ग पर चलने वाले मनुष्य को रहती है।

'परंतु महर्षि, इस मार्ग पर ढेर-सी कठिनाइयाँ है। मैं अपनी कमज़ोरियों को अच्छी तरह जानता हूँ।'

'ऐसा सोचना, अपने मार्ग में बाधा उत्पन्न करने का सबसे बढ़िया तरीक़ा है,' वह शांत भाव से उत्तर देते हैं। 'असफलता के भय के बोझ से मुक्त होना बहुत आवश्यक है!'

'पर क्या यह सही है?'

'यह सच नहीं है। मनुष्य की सबसे बड़ी भूल यही है कि वह स्वयं को कमज़ोर और निष्क्रिय समझता है। प्रत्येक व्यक्ति भीतर से बहुत मज़बूत है। उसकी आदतें, उसकी इच्छाएँ और उसके विचार वास्तव में कमज़ोर और निष्क्रिय होते हैं। वह व्यक्ति स्वयं ऐसा नहीं होता!'

महर्षि के शब्दों से मुझे ऊर्जा मिल रही है। वह मुझे प्रेरित करते हैं। किसी साधारण और दुर्बल व्यक्ति के मुँह से यही बात सुनकर शायद मैं इसे स्वीकार न करता और अपने मत पर

क़ायम रहता। अपने भीतर झाँकने से मुझे एहसास होता है कि महर्षि अपने महान और सच्चे आध्यात्मिक अनुभव के आधार पर यह बात कह रहे हैं। उनका उपदेश मुझे सैद्धांतिक या दर्शनवादी व्यक्ति का उद्देश्य नहीं लगता।

एक अन्य मौक़े पर जब हम पाश्चात्य जगत पर चर्चा कर रहे हैं, तो मैं कहता हूँ:

'आपके लिए इस वीरान एवं एकांत स्थान पर आध्यात्मिक शांति बनाए रखना बहुत आसान है।'

'आपको जब अपना लक्ष्य मिल जाता है और आप ईश्वर को जान लेते हैं तो लंदन के किसी आलीशान घर में अथवा किसी वन में एकांत और अकेले रहने में कोई अंतर नहीं होता,' महर्षि शांत भाव से उत्तर देते हैं।

एक और मौक़े पर मैं भारतीय लोगों द्वारा भौतिक विकास की उपेक्षा करने के लिए उनकी निंदा करता हूँ तो मुझे यह सुनकर बहुत आश्चर्य होता है कि महर्षि भी मेरी इस राय से सहमत हैं।

'यह सच है कि हम लोग पिछड़े हुए हैं, परंतु हमारी आवश्यकताएँ बहुत सीमित हैं। हमारे समाज को सुधार की आवश्यकता है किंतु हम लोग आपके यहाँ के लोगों की अपेक्षा बहुत कम चीज़ों से भी संतुष्ट रहते हैं। इसलिए पिछड़ा हुआ होने का अर्थ यह नहीं है कि हम लोग कम ख़ुश हैं।'



महर्षि को यह अनूठी शक्तियाँ और उससे भी अधिक अनूठा यह दृष्टिकोण कैसे मिला होगा? मैं धीरे-धीरे महर्षि के मुख से और फिर कुछ उनके शिष्यों से प्राप्त जानकारी के आधार पर महर्षि की जीवन-कथा को पूरा जानने का प्रयास कर रहा हूँ।

महर्षि का जन्म 1879 में दक्षिण भारत के एक प्रसिद्ध शहर मदुरै से लगभग 30 मील की दूरी पर स्थित एक गाँव में हुआ था। मदुरै में देश का सबसे बड़ा मंदिर भी है। महर्षि के पिता व्यवसाय से वकील थे और वह ब्राह्मण परिवार के थे। वह स्वभाव से बहुत दयालु थे और ग़रीबों में अक्सर कपड़े आदि बाँटा करते थे। उनके पुत्र को शिक्षा के लिए मदुरै भेज दिया गया। वहाँ उसने थोड़ी-बहुत अंग्रेज़ी सीख ली क्योंकि वहाँ का स्कूल कुछ अमेरिकी लोग चलाते थे।

शुरू में रमण को खेल-कूद का शौक़ था वह कुश्ती, मुक्केबाजी आदि करता था और ख़तरनाक नदियों में तैराकी भी करता था। उसका धार्मिक या दार्शनिक विषयों में विशेष रुझान नहीं था। उस समय उसके जीवन में केवल एक असाधारण बात थी और वह यह कि उसे नींद में चलने की आदत थी। वह बीमारी उसे इतनी अधिक थी कि जब उसके स्कूल के

साथियों को उसकी इस बीमारी के विषय में पता लग गया तो उन्होंने उसके साथ हँसी-मज़ाक़ करना और उसकी बीमारी का लाभ उठाना शुरू कर दिया। वे दिन के समय रमण की मुक्केबाज़ी से डरते थे किंतु रात में वह उसके कमरे में घुसकर उसे उठाकर मैदान में ले जाते और फिर वहाँ उसके साथ मार-पिटाई करके वापस उसे बिस्तर पर छोड़ जाते थे। रमण को रात के समय इसका पता नहीं चलता था और सुबह उठने पर उसे कुछ भी याद नहीं रहता था।

निद्रा की प्रवृत्ति को अच्छी तरह समझ चुके किसी मनोवैज्ञानिक के लिए इस बालक के असाधारण स्वभाव का अध्ययन करना आसान है। वह जान सकता है कि उस समय रमण को कुछ रहस्यमय शक्तियाँ भी प्राप्त थीं।

एक दिन रमण का कोई रिश्तेदार उससे मिलने मदुरै आया और उसने रमण के किसी प्रश्न के उत्तर में बताया कि वह हाल में, अरुणाचल के मंदिर से तीर्थयात्रा करके लौटा है। इस नाम ने रमण के मस्तिष्क में उत्तेजना पैदा कर दी। वह उस समय तो इस बात को समझ नहीं पाया किंतु बाद में, अरुणाचल के मंदिर का विचार सदा उसके दिमाग़ में रहने लगा। उसके लिए यही एकमात्र विषय सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण बन गया। परंतु वह स्वयं को यह नहीं समझा पाया कि भारतवर्ष में फैले अनेक महान मंदिरों की अपेक्षा उसके लिए अरुणाचल के मंदिर का ही इतना महत्त्व क्यों है।

वह अमेरिकी स्कूल में चुपचाप पढ़ाई करता रहा हालाँकि उसकी पढ़ाई में कोई विशेष रुचि नहीं थी। वह अपने काम में हमेशा अच्छा था। वह जैसे ही सत्रह वर्ष का हुआ, नियति ने अचानक उसके जीवन को अलग दिशा में मोड़ दिया।

रमण ने अचानक स्कूल छोड़ दिया और पढ़ाई भी छोड़ दी। ऐसा करने से पहले उसने अपने अध्यापकों अथवा रिश्तेदारों को कुछ नहीं बताया। उसके सांसारिक भविष्य की संभावनाओं पर काले बादल घिर आए, परंतु इस बदलाव का कारण क्या था?

रमण के लिए यही एक कारण पर्याप्त था, हालाँकि दूसरे लोग उसे समझ नहीं सके। लोगों को जीवन से बहुत कुछ सीखने को मिलता है परंतु जीवन ने उस युवा विद्यार्थी को अलग मार्ग पर डाल दिया और यह मार्ग उसके स्कूल के अध्यापकों द्वारा बताए मार्ग से बिलकुल भिन्न था। उसमें यह बदलाव अपनी पढ़ाई छोड़ने से लगभग छह सप्ताह पहले आया और फिर रमण अचानक मदुरै छोड़कर हमेशा के लिए ग़ायब हो गया।

वह एक दिन अपने कमरे में अकेला बैठा था कि तभी उसके दिमाग़ में मृत्यु का एक अजीब-सा भय समा गया, हालाँकि उस समय उसका स्वास्थ्य बिलकुल ठीक था। परंतु उसे ऐसा आभास होने लगा कि वह मरने वाला है। वह केवल मानसिक अनुभूति थी क्योंकि उस समय उसके मरने का ऊपरी तौर पर कोई कारण मौजूद नहीं था। परंतु यह धारणा उसके मन पर हावी हो गई और वह इस भावी घटना के लिए तैयारी करने लगा।

वह फ़र्श पर लेट गया और उसने अपने हाथ-पैर शव की भाँति सीधे कर लिए। उसने अपनी साँस भी रोक ली। इसके बाद उसने स्वयं से कहा, 'मेरा यह शरीर मर चुका है। इसे इसी तरह श्मशान भूमि ले जाया जाएगा और फिर जला दिया जाएगा। परंतु मेरे शरीर की मृत्यु के साथ क्या मेरी भी मृत्यु हो गई है? क्या मैं शरीर हूँ? यह शरीर शांत और अकड़ा हुआ है, परंतु मैं इस अवस्था के बावजूद, भीतर अपनी पूरी शक्ति को महसूस कर सकता हूँ।'

महर्षि ने इन्हीं शब्दों में उस विचित्र अनुभव को बयान किया। इसके बाद जो हुआ उसे बताना तो सरल है किंतु समझना बहुत मुश्किल है। इसके तुरंत बाद बालक रमण धीरे-धीरे चैतन्य गहन ध्यान में लीन हो गया। कुछ देर बाद वह आत्म-तत्व के साथ एकाकार हो गया। उसे स्पष्ट तौर पर यह समझ में आ गया कि शरीर एक अलग चीज़ है, जबकि आत्मा को मृत्यु स्पर्श भी नहीं कर सकती। मनुष्य की आत्मा ही वास्तविक है, किंतु वह उसके स्वभाव में इतनी अंदर रहती है कि उसने आज तक उस तत्त्व पर ध्यान ही नहीं दिया।

इस ज़बरदस्त अनुभव ने रमण को पूरी तरह बदल दिया। उसका पढ़ाई, खेल-कूद और मित्रों आदि से ध्यान पूरी तरह हट गया क्योंकि उसकी रुचि अब केवल अपनी आत्मा की सूक्ष्म चेतना तक सीमित थी, जिसे उसने अचानक खोज लिया था। उसके मन से मृत्यु का भय भी उसी रहस्यमय तरीक़े से ग़ायब हो गया जिस तरह वह प्रकट हुआ था। उसे अपने भीतर अद्भुत शांति एवं आध्यात्मिक शक्ति का अनुभव होने लगा। यह अनुभव फिर कभी उसके भीतर से नहीं गया। इससे पहले वह उन लड़कों से तुरंत बदला लेने की कोशिश करता, जो उसे परेशान करते थे, किंतु अब वह हर बात को शांत ढंग से सहन करने लगा। उसने अपने साथ होने वाले अत्याचार भी संपूर्ण विनम्रता के साथ स्वीकार किए। उसने अपनी पुरानी आदतें छोड़ दीं और वह यथासंभव अकेला रहने लगा। ऐसा करने से उसे अपनी इच्छा से ध्यान में डूबने का अवसर मिलता था और ऐसे ही मौक़े पर वह दिव्य चेतना में लीन हो जाता था।

रमण के स्वभाव में होने वाले परिवर्तन निस्संदेह, दूसरे लोगों ने भी देखे। एक दिन उसका बड़ा भाई रमण के कमरे में आया तो उसने देखा कि पढ़ाई करने के बजाय, रमण आँखें बंद करके ध्यान में लीन था। उसने ग़ुस्से में अपने स्कूल की कॉपी, क़िताबें कमरे में फैला रखी थीं। यह देखकर रमण का बड़ा भाई बहुत नाराज़ हुआ और उसे कटु शब्द कहे:

'तुम्हारे जैसे लड़के का यहाँ क्या काम है? अगर तुम योगी बनना चाहते हो तो फिर पढ़ क्यों रहे हो?'

रमण अपने भाई के कहे शब्दों से आहत हो गया। उसने उसके शब्दों में छिपे सत्य को जान लिया और चुपचाप उन पर अमल करने का फ़ैसला किया। रमण के पिता की मृत्यु हो चुकी थी और इसलिए वह जानता था कि उसके चाचा और अन्य भाई आदि उसकी माँ का

ख़याल कर लेंगे। सच में, उसकी वहाँ कोई ज़रूरत नहीं थी। उसके दिमाग़ में बार-बार वही नाम गूँज रहा था, जो उसने लगभग एक वर्ष पहले सुना था। वह केवल अरुणाचल के मंदिर तक पहुँचना चाहता था, परंतु वह उस जगह क्यों जाना चाहता था यह उसे ख़ुद नहीं पता था। उसके भीतर एक शक्ति उसे तत्काल वहाँ जाने के लिए प्रेरित कर रही थी। इस बारे में उसने कोई पूर्व योजना नहीं बनाई थी।

'मैं सचमुच इस स्थान से आकर्षित हो गया था,' महर्षि ने मुझे बताया। 'जो शक्ति तुम्हें मुंबई से यहाँ खींच कर लाई है, वही मुझे भी मदुरै से यहाँ लेकर आई थी।'

इस तरह युवा रमण अपने हृदय में उठे आकर्षण से प्रेरित होकर अपने मित्रों, परिवार, स्कूल और पढ़ाई सबको छोड़कर अरुणाचल आ गया। यहाँ उसने आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त किया। उसने जाने से पहले एक छोटा-सा पत्र लिखा जो आज भी उसके आश्रम में सुरक्षित है। तमिल में लिखे पत्र में लिखा गया था:

'मैं अपने परमपिता की तलाश में उन्हीं की आज्ञा से जा रहा हूँ। मैं सत्य की खोज में निकला हूँ, इसलिए किसी को इस बात का दुःख मनाने की आवश्यकता नहीं है। मुझे खोजने के लिए पैसे ख़र्च करने की भी ज़रूरत नहीं है।'

संसार के प्रति पूरी तरह अनजान रमण ने जेब में तीन रुपये लेकर अपनी यात्रा दक्षिण दिशा में आरंभ कर दी। रास्ते में हुए विचित्र घटनाएँ इस बात का प्रमाण हैं कि कोई रहस्यमय शक्ति रमण की सुरक्षा और उसका मार्गदर्शन कर रही थी। वह अपने गंतव्य तक पहुँचने के बाद बिलकुल अकेला और अजनबियों के बीच आ गया था। परंतु उसके मन में ज्ञान-प्राप्ति की प्रबल इच्छा थी। उसके मन में सांसारिक चीज़ों के प्रति तिरस्कार का भाव इतना तीव्र था कि वहाँ पहुँचते ही उसने अपने वस्त्र उतार दिए और वह लगभग निर्वस्त्र होकर मंदिर के निकट बैठकर ध्यान में लीन हो गया। एक पुजारी ने उसे वहाँ देखा और फटकार बताई। परंतु उससे कोई लाभ नहीं हुआ। दूसरे पुजारी भी परेशान होकर वहाँ आए और काफ़ी प्रयास करने के बाद उन्होंने युवा रमण को एक छोटा लंगोट पहनने के लिए राजी कर लिया। तबसे महर्षि रमण आजीवन केवल एक लंगोट पहने रहे।

रमण छह महीने तक स्थान बदल-बदल कर बैठता रहा, परंतु वह कहीं और नहीं गया। उसे पुजारी द्वारा जो भी चावल मिल जाते थे, वह उसी से गुज़ारा करता था। रमण दिनभर अपने ध्यान और आध्यात्मिक आनंद में इतना मग्न रहता था कि उसे अपने आस-पास होने वाली गतिविधियों का बिलकुल आभास नहीं था। एक बार कुछ मुसलमान लड़कों ने रमण के ऊपर मिट्टी फेंकी और वहाँ से भाग गए। परंतु रमण को न तो इस बात का पता लगा और न ही बाद में उसके मन में उन लड़कों के प्रति कोई क्षोभ उत्पन्न हुआ।

मंदिर में प्रतिदिन इतने श्रद्धालु दर्शन के लिए आते थे कि रमण के लिए एकांत में ध्यान लगा पाना असंभव हो गया। इसलिए उसने वह स्थान छोड़ दिया तथा वह गाँव से थोड़ी दूर

एक मैदान में शांत मंदिर में बैठकर साधना करने लगा। उस जगह रमण ने लगभग डेढ़ वर्ष बिताया। वहाँ उसे जो भी थोड़ा-बहुत भोजन मिल जाता था, उससे वह संतुष्ट रहता था।

इस दौरान रमण ने किसी से कोई बात नहीं की। वास्तव में वह लगभग तीन वर्ष तक पूरी तरह मौन रहा। रमण ने मौन-व्रत धारण नहीं किया था, परंतु उसे भीतर से यही प्रेरणा थी कि वह अपना सारा ध्यान और समस्त ऊर्जा आध्यात्मिक जीवन पर ही केंद्रित करे। उसने जब अपना आध्यात्मिक लक्ष्य प्राप्त कर लिया तो इस प्रकार की रोक-टोक की आवश्यकता नहीं रह गई। उसने फिर सामान्य ढंग से लोगों से बातचीत करना आरंभ कर दिया, हालाँकि महर्षि शुरू से ही मितभाषी प्रवृत्ति के व्यक्ति रहे हैं।

रमण ने अपनी पहचान को पूरी तरह गुप्त रखा, किंतु कुछ ऐसे संयोग हुए की उसकी माँ को लगभग दो वर्ष बाद जानकारी मिल गई वह अपने सबसे बड़े बेटे के साथ रमण से मिलने आई। उसने रोते-रोते रमण से घर वापस चलने का अनुरोध किया, परंतु रमण ने मना कर दिया। माँ के आँसू भी जब रमण को अपना निर्णय बदलने पर मजबूर नहीं कर सके तो उसकी माँ ने उसको फटकारना शुरू कर दिया। आख़िरकार, रमण ने एक काग़ज़ पर अपना उत्तर लिखा कि एक अदृश्य शक्ति सभी मनुष्यों की नियति को अपने अधीन रखती है और इसलिए कुछ भी करने पर उसकी नियति को बदल पाना संभव नहीं है। उसने अपनी माँ को स्थिति को स्वीकार करने और उस पर दुःख न मनाने का आग्रह किया। आख़िरकार, माँ को अपने पुत्र की बात माननी पड़ी।

इस घटना के बाद जब लोग उस युवा योगी को देखने के लिए बड़ी संख्या में वहाँ आने लगे तो उसका एकांत फिर भंग होने लगा। रमण को हार कर वह जगह भी छोड़नी पड़ी। वह अरुणाचल के पवित्र पर्वत पर एक गुफा में रहने लगा। रमण ने वहाँ अनेक वर्ष बिताए। उस पर्वत पर और भी कई गुफाएँ हैं और प्रत्येक गुफा में अनेक आध्यात्मिक योगी रहते हैं, परंतु जिस गुफा में रमण ने आश्रय लिया था, उसका विशेष महत्त्व था क्योंकि उसके अंदर एक बहुत पुराने और महान योगी का मक़बरा भी था।

हिंदुओं में मृत्यु के बाद शरीर की अंतिम क्रिया करना सामान्य परंपरा है, परंतु योगियों के मामले में ऐसा नहीं किया जाता। ऐसा माना जाता है कि आध्यात्मिक ज्ञान के चलते, योगियों की मृत्यु के हज़ारों वर्ष बाद भी, उनके शरीर में प्राण-वायु का प्रवाह बना रहता है और इसीलिए इतने वर्ष बीत जाने के बाद भी उनका मृत शरीर ख़राब नहीं होता। ऐसे मामलों में योगी के शरीर को नहला-धुलाकर और उस पर लेप लगाकर उसे किसी आसन की मुद्रा में बैठा दिया जाता है मानो वह गहन साधना में लीन हो। उसके बाद उस मक़बरे के प्रवेश-द्वार को विशाल पत्थर से बंद कर दिया जाता है। सामान्य तौर पर, इस तरह का स्थान तीर्थ का रूप धारण कर लेता है। योगियों के शरीर की अंत्येष्टि न करने का एक और कारण यह है कि ऐसा माना जाता है कि अनेक वर्षों की साधना से उनका शरीर इतना शुद्ध हो चुका होता है

कि उसे अग्नि में जलाकर फिर से शुद्ध करने की आवश्यकता नहीं होती!

यह बहुत रोचक है कि गुफाएँ सदा से योगियों और धार्मिक लोगों का मनपसंद आवास रही हैं। प्राचीन लोग उन्हें बहुत पवित्र मानते थे। पारसी धर्म के संस्थापक ज़रथ्रुष्ट ने भी गुफा में बैठकर ध्यान का अभ्यास किया था और मोहम्मद पैगंबर को भी उनके धार्मिक अनुभव गुफा में ही प्राप्त हुए थे। भारतीय योगियों को जब कोई अन्य उचित स्थान नहीं मिलता तो वह अपनी साधना और तपस्या के लिए गुफाओं को चुनते हैं। यहाँ उन्हें ख़राब मौसम के प्रहार से आश्रय मिल जाता है और वे तापमान में होने वाले अचानक परिवर्तन से भी बचे रहते हैं। वहाँ रोशनी और शोर दोनों ही कम होते हैं। इसके अतिरिक्त गुफा के सीमित वातावरण में साँस लेते रहने से भूख काफ़ी कम हो जाती है और इससे भी योगियों को साधना में काफ़ी सहायता मिलती है।

रमण ने पवित्र पर्वत की उस गुफा को शायद उसके सौंदर्य के कारण ही चुना होगा। उस गुफा के निकट खड़े होकर पूरा शहर सामने दिखाई पड़ता है और वहाँ का विशाल मंदिर भी साफ़ नज़र आता है। मैदान से काफ़ी आगे पर्वतों की एक लंबी श्रृंखला नज़र आती है, जो प्रकृति के मनोहारी चित्र को प्रस्तुत करती है।

बहरहाल, महर्षि रमण ने उसी गुफा में रहस्यमय साधनाएँ और ध्यान आदि करते हुए अनेक वर्ष बिताए। वह रूढ़िवादी संदर्भ में योगी नहीं थे क्योंकि उन्होंने योग की पद्धति का अध्ययन नहीं किया था और उन्होंने किसी गुरु से भी ज्ञान प्राप्त नहीं किया था। उन्होंने अपने भीतरी मार्ग का अनुसरण किया और उसी से उन्हें आत्मा का ज्ञान मिला था।

1905 में उस शहर में प्लेग महामारी फैल गई। ऐसा कहते हैं कि अरुणाचल के मंदिर में आए किसी श्रद्धालु द्वारा ही वह संक्रमण फैला था। उसके प्रभाव से वहाँ की जनसंख्या इतनी तेज़ी से समाप्त हुई कि लगभग सभी लोग वहाँ से भयभीत होकर सुरक्षित गाँवों और शहरों की ओर चले गए। वह स्थान इतना वीरान हो गया कि शेर और तेंदुए जंगल से बाहर निकलकर सड़कों पर खुलेआम घूमने लगे। शहर के रास्ते में पड़ने वाले मार्ग पर महर्षि रमण की भी गुफा थी। निश्चित रूप से वन्य पशु वहाँ से अनेक बार निकले होंगे, परंतु महर्षि ने फिर भी उस गुफा को नहीं छोड़ा। वे सदा की भाँति शांत और स्थिर भाव से वहीं रहते रहे।

इस बीच उस युवा तपस्वी को एक शिष्य मिल गया, जिसने स्वेच्छा से महर्षि के साथ रहकर और उनकी आवश्यकताओं और ज़रूरतों का ध्यान रखना आरंभ कर दिया। उस व्यक्ति की अब मृत्यु हो गई है, परंतु उसने अन्य शिष्यों को यह कथा सुनाई थी कि प्रत्येक रात एक बड़ा-सा बाघ महर्षि की गुफा में आता था और वह पूरी रात महर्षि रमण के हाथों को स्नेहपूर्वक चाटता था। महर्षि भी बाघ से बहुत प्रेम करते थे। वह पूरी रात वहीं बैठा रहता था और सुबह होने पर चला जाता था।

भारत में यह मत प्रचलित है कि जंगलों और पहाड़ों में रहने वाले योगी और फ़क़ीर,

जिन्होंने योग शक्तियाँ प्राप्त कर ली हैं, निर्भय होकर वनों में घूमते हैं। उन्हें वहाँ रहने वाले शेर, चीते और साँप जैसे वन्य-पशु कोई हानि नहीं पहुँचाते। रमण के विषय में एक और कथा प्रचलित है कि एक दिन वह अपने गुफा के बाहर दोपहर में बैठे थे तो अचानक एक बड़ा कोबरा साँप फन फैलाए आया और उनके सामने आकर बैठ गया। वह बहुत ख़तरनाक था, किंतु तपस्वी रमण बिलकुल नहीं हिले। मनुष्य और पशु, एक-दूसरे को काफ़ी देर आँखों में आँखें डालकर देखते रहे। आख़िरकार, साँप पीछे हट गया और महर्षि के बहुत नज़दीक होते हुए भी वह उन्हें बिना क्षति पहुँचाए चुपचाप लौट गया।

इस अनूठे युवक के कठोर व एकाकी जीवन का पहला चरण, आत्मा की खोज के उसके दृढ़ और स्थाई निर्णय पर आकर समाप्त हो गया। उसे अब अकेला रहने की आवश्यकता नहीं थी, फिर भी वह गुफा में अकेले रहता रहा। कुछ समय बाद, एक और प्रख्यात ब्राह्मण पंडित गणपति शास्त्री उसके जीवन में आए और उसे एक नया मोड़ दिया। पंडित जी, मंदिर के निकट अध्ययन और ध्यान आदि के उद्देश्य से आए थे। उन्हें पता लगा कि पर्वत के पास एक कम आयु का योगी रहता है, तो वह उत्सुकतावश उसे खोजते हुए वहाँ आ पहुँचे। उनकी मुलाक़ात जब रमण से हुई तो उस समय रमण सूर्य की ओर एकटक देख रहे थे। चमचमाते सूरज को सीधे आँख मिलाकर देखना, किसी तपस्वी के लिए असाधारण नहीं था और इसी अभ्यास को करते-करते सूरज अस्त हो जाता था। योगी पूरे दिन उसे देखते रहते थे। किसी योगी के लिए, जिसने इसे पहले कभी अनुभव नहीं किया, भारत में दोपहर के सूर्य की किरणों को देखना बहुत कठिन कार्य है। मुझे याद है मैं एक बार ग़लत समय पर एक पर्वत पर चढ़ने का प्रयास कर रहा था। उस समय दोपहर की तेज़ धूप थी। थोड़ी ही देर के बाद मेरा सिर चकराने लगा। सूर्य को कठोरतापूर्वक नज़र मिलाकर देखते रहना, युवा रमण के लिए सचमुच एक बहुत शानदार उपलब्धि थी!

पंडित गणपति शास्त्री ने अनेक वर्षों तक हिंदू धर्म और अध्यात्म से संबंधित प्रमुख पुस्तकों का अध्ययन किया था। उन्होंने पुस्तकों से आध्यात्मिक लाभ लेने के उद्देश्य से कठिन साधनाएँ भी की थीं। परंतु फिर भी उनका मन संदेहों और दुविधाओं से भरा था। उन्होंने एक दिन रमण से प्रश्न किया। रमण ने पंद्रह मिनट के बाद उत्तर दिया, जिसे सुनकर पंडित शास्त्री आश्चर्यचकित रह गए। इसके बाद, पंडित जी ने रमण से दार्शनिक और आध्यात्मिक समस्याओं पर और कई प्रश्न किए। रमण ने उन सबका निराकरण कर दिया। इसके फलस्वरूप पंडित जी, युवा योगी रमण के सामने नतमस्तक हो गए और उन्हें अपना गुरु मान लिया। पंडित जी के वेलूर शहर के पास अपने कई शिष्य थे। उन्होंने लौटकर उन सबको बताया कि उन्हें महर्षि रमण के दर्शन हुए और यह कि महर्षि रमण सचमुच एक उच्च स्तर के आध्यात्मिक योगी हैं। उनकी शिक्षा और ज्ञान इतना मौलिक है कि पंडितजी ने वह सब आजतक किसी अन्य पुस्तक में नहीं पढ़ा। इसके बाद से, लोगों ने रमण के नाम के साथ

'महर्षि' की उपाधि लगा दी और उन्हें इसी नाम से बुलाने लगे। हालाँकि वहाँ के सामान्य लोग उनके स्वभाव और चरित्र को जानने के बाद उन्हें ईश्वर की तरह पूजते थे, परंतु महर्षि को इस तरह की पूजा पसंद नहीं थी। मुझसे भी निजी तौर पर बात करते हुए, उनके बहुत-से शिष्यों और स्थानीय लोगों ने मुझे बताया कि रमण महर्षि, ईश्वर के अवतार स्वरूप हैं।

इसके बाद शिष्यों के एक छोटे समूह ने महर्षि के साथ रहना आरंभ कर दिया। उन्होंने पर्वत के पास ही लकड़ी का एक मकान बनाया और महर्षि को उसमें रहने के लिए प्रेरित किया। इस बीच रमण की माताजी कई बार उनसे मिलने आईं और उनसे घर वापस चलने का आग्रह किया किंतु रमण उनके साथ नहीं गए। रमण के बड़े भाई और अन्य रिश्तेदारों की मृत्यु के बाद, रमण की माँ महर्षि के पास आईं और उनसे अनुरोध किया कि वह उन्हें अपने साथ रहने दें। महर्षि ने इसके लिए हामी भर दी। रमण की माताजी ने उनके साथ छह वर्ष बताए और अपने ही पुत्र की निष्ठावान भक्त बन गईं। उन्हें अपने पुत्र के छोटे-से आश्रम में जिस तरह का सत्कार मिलता था, उसके बदले उन्होंने स्वेच्छा से अपना समय रसोइया बनकर बिताया।

उनकी मृत्यु के उपरांत, उनकी अस्थियों को उसी पर्वत के निकट मिट्टी में दबा दिया गया। महर्षि के कुछ शिष्यों ने उसके ऊपर एक छोटा स्मारक बना दिया। उनकी समाधि पर हमेशा दीपक जलाए एवं तरह-तरह की सुगंधित पुष्प चढ़ाए जाते हैं और उन्हें याद किया जाता है क्योंकि उन्होंने मानवजाति को एक महान तपस्वी दिया था!

समय के साथ महर्षि की ख्याति फैलने लगी। मंदिर आने वाले लगभग सभी श्रद्धालु घर लौटने से पूर्व महर्षि के दर्शन अवश्य करते थे। कुछ समय बाद महर्षि ने अपने शिष्यों के निरंतर अनुरोध पर पर्वत की तलहटी में एक विशाल और नए कक्ष को अपना आवास बनाना स्वीकार कर लिया था।

महर्षि ने कभी किसी से भोजन के अतिरिक्त कुछ नहीं माँगा। वे धन से सदा दूर रहे। इसके अतिरिक्त उनके पास जो कुछ था, वह स्वेच्छा से दूसरे लोगों ने दिया है। अपने जीवन के प्रारंभिक दिनों में जब वह एकाकी जीवन जीने का प्रयास कर रहे थे, तो उन्होंने अपने आस-पास मौन की अभेद्य दीवार खड़ी कर ली थी ताकि वह आध्यात्मिक शक्तियों के लिए साधना कर सकें। इस दौरान उन्होंने भिक्षापात्र लेकर गाँव में भिक्षा माँगने में संकोच नहीं किया। उन्हें जब भी भूख सताती थी तो वह पात्र लेकर खाने के लिए माँगने निकल पड़ते थे। गाँव में रहने वाली एक वृद्ध विधवा स्त्री को उन पर दया आ गई और वह नियमित रूप से उन्हें भोजन देने लगी। इस प्रकार, रमण द्वारा अपना सुविधाजनक घर त्यागने का निर्णय तर्कसंगत और सही सिद्ध हुआ। उन्हें अपनी शक्तियों से आश्रय और भोजन तो अवश्य मिल ही जाता है। उन्हें अनेक लोग उपहार भी देते हैं, परंतु वह अपने नियम के अनुसार उसे लौटा दिया करते हैं।

एकबार डाकुओं के एक गिरोह ने पैसा लूटने के उद्देश्य से महर्षि के आश्रम पर हमला किया था। परंतु उन्हें वहाँ थोड़े-से रुपयों के अतिरिक्त कुछ नहीं मिला तो वह बहुत निराश हुए। उन्हें इतना ग़ुस्सा आया कि उन्होंने महर्षि को डंडे से मारा और घायल कर दिया। परंतु महर्षि ने उनके हमले को धैर्यपूर्वक सहन किया और जाने से पहले, उनसे भोजन भी करने का आग्रह किया। महर्षि ने सचमुच उन्हें भोजन दिया! उनके मन में किसी के प्रति घृणा का भाव नहीं था। उनका मानना था कि डाकुओं ने यह कृत्य आध्यात्मिक अज्ञानता वश किया था। महर्षि ने उन्हें आसानी से भाग जाने दिया, किंतु एक वर्ष बाद ही समाचार मिला कि वे डाकू कहीं और अपराध करते हुए पकड़े गए और उन्हें कड़ी सज़ा दी गई थी।

बहुत-से पश्चिमवासी शायद सोचेंगे कि महर्षि का जीवन व्यर्थ गया। परंतु शायद यह अच्छी बात है कि हम में से कुछ लोग दुनिया से अलग जीते हैं और हमारी गतिविधियों को दूर से देखते रहते हैं। उन गतिविधियों को दूर से देखने वाले व्यक्ति को कभी-कभी हमसे अधिक दिखाई देता है और वह उस स्थिति को हमसे बेहतर ढंग से समझ पाता है। इसीलिए, जंगल में रहने संन्यासी, जिसने स्वयं पर नियंत्रण प्राप्त कर लिया है, उस सांसारिक मूर्ख से अधिक श्रेष्ठ है जो ज़रा-सी परिस्थिति से परेशान होकर इधर-उधर दौड़ने लगता है।



मुझे महर्षि की महानता के नित नए संकेत मिलते रहे हैं। महर्षि से मिलने अनेक तरह के लोग आते और मैंने कभी-कभी निम्न जाति के लोगों को भी परेशान अवस्था में वहाँ आकर महर्षि के चरणों में अपनी व्यथा व्यक्त करते देखा है। महर्षि किसी की बात का उत्तर नहीं देते थे क्योंकि मौन रहना उनकी आदत थी। आप दिनभर में महर्षि द्वारा बोले गए शब्दों को अँगुलियों पर गिन सकते हैं! महर्षि, बोलने की अपेक्षा परेशान व्यक्ति को चुपचाप देखते रहते हैं। धीरे-धीरे उसका रोना-चीख़ना बंद हो जाता है। वह दो घंटे बाद अधिक शांत और मज़बूत व्यक्ति बनकर लौटता है।

मैं देख चुका हूँ कि यह महर्षि द्वारा किसी परेशान व्यक्ति के उपचार का बहुत बढ़िया तरीक़ा है। यह एक रहस्यमय दूरसंवेदी पद्धति है, जिसे शायद आने वाले समय में विज्ञान समझ सकेगा।

एक सुसंस्कृत ब्राह्मण और विश्वविद्यालय में पढ़ा हुआ युवक, अपने प्रश्न लेकर महर्षि के पास आता है। कोई नहीं कह सकता कि महर्षि किसके साथ मौखिक रूप से संवाद करेंगे, क्योंकि वह बिना बोले भी अत्यंत प्रभावपूर्ण तरीक़े से अपनी बात कह देते थे। परंतु एक दिन वह संवाद के मूड में दिखे। उन्होंने मिलने वाले व्यक्ति के सामने अनेक तरह की संभावनाएँ प्रस्तुत की थीं।

महर्षि के कक्ष में बहुत-से मिलने वाले और उनके शिष्य बैठे थे। अचानक कोई यह समाचार लेकर आया कि शहर का एक कुख्यात अपराधी मर गया है। यह समाचार सुनकर कक्ष में बैठे लोग तुरंत उस व्यक्ति की बुरी आदतों और उसके द्वारा किए अपराधों पर बातचीत करने लगे। जब सारी चर्चा समाप्त हो गई तब महर्षि ने कहा:

'हाँ! पर वह बहुत साफ़-सुथरा था। वह दिन में दो या तीन बार नहाता था!'

एक किसान अपने परिवार के साथ सौ मील से अधिक यात्रा करके महर्षि के दर्शनों के लिए आया। वह बिलकुल अशिक्षित था और अपने कामकाज के अतिरिक्त उसे किसी बात की जानकारी नहीं थी। वह धार्मिक रीति-रिवाजों और पुराने अंधविश्वासों के अतिरिक्त कुछ नहीं जानता था। उसने किसी से सुना था कि पवित्र पर्वत के पास मनुष्य रूप में ईश्वर का निवास है। वह चुपचाप आकर महर्षि के सामने फ़र्श पर बैठ गया। उसे आशा थी कि इस यात्रा के फलस्वरूप उसकी स्थिति में परिवर्तन होगा और उसका भाग्य बदल जाएगा। उसके साथ उसकी पत्नी भी थी जो फ़र्श पर बैठी रही। उसने बैंगनी रंग के वस्त्र पहने थे। उसके पतले और मुलायम बालों में सुगंधित तेल लगा था। उसके साथ उसकी पुत्री भी थी। वह बहुत सुंदर थी और उसके चलने से पैरों की पाजेब बजती थी। उसने वहाँ की परंपरा के अनुसार कान के पीछे सफ़ेद फूल लगा रखा था।

उस किसान का परिवार कुछ घंटों तक बैठा रहा। उन लोगों ने कोई बात नहीं की और आदरपूर्वक महर्षि की ओर देखते रहे। यह स्पष्ट है कि महर्षि की उपस्थिति मात्र से उन्हें आध्यात्मिक आश्वासन और भावनात्मक सामर्थ्य मिला। इससे भी अधिक महत्त्वपूर्ण बात यह है कि महर्षि में उनकी आस्था अधिक दृढ़ हुई। महर्षि सभी जाति व संप्रदाय के लोगों को एक समान देखते थे। उनकी नज़र में ईसा मसीह और भगवान श्रीकृष्ण में कोई अंतर नहीं था।

मेरी बाईं ओर पचहत्तर वर्ष का एक वृद्ध व्यक्ति बैठा था। उसके मुँह में पान था और उसने हाथों में संस्कृत की एक पुस्तक पकड़ रखी थी। वह अपनी बड़ी-बड़ी आँखों से उसे पढ़ रहा था। वह एक ब्राह्मण है, जो कई साल पहले मद्रास के पास स्टेशन मास्टर था। वह साठ वर्ष की आयु पूरी करने के बाद, रेलवे से सेवानिवृत्त हो गया। कुछ ही समय बाद उसकी पत्नी की मृत्यु हो गई। उसने उस अवसर पर अपनी कुछ पुरानी आकांक्षाएँ पूर्ण करने का निश्चय किया। वह लगभग चौदह वर्ष तक साधु-संन्यासियों और योगियों के साथ तीर्थयात्राओं पर घूमकर ज्ञान प्राप्त करता रहा। वह पूरे भारतवर्ष में तीन बार घूम चुका है, परंतु उसे अब तक कोई योग्य गुरु नहीं मिला। उसने व्यक्तिगत तौर पर गुरु की खोज की। हम लोगों की मुलाक़ात हुई तो हमने अपने लिखे नोट्स की तुलना की। उसे तब अपनी असफलता पर दुःख हुआ। उसका झुर्रीदार ईमानदार चेहरा मुझे बहुत आकर्षक लगा। वह देखने में अधिक बुद्धिमान नहीं था, किंतु वह बहुत सीधा-सादा व्यक्ति था। मैं उससे आयु में

बहुत छोटा हूँ, इसलिए मुझे लगा कि मुझे उस वृद्ध व्यक्ति को अच्छी सलाह देनी चाहिए! मुझे यह जानकर बहुत आश्चर्य हुआ कि उसने मुझसे अपना गुरु बनने का अनुरोध किया! 'आपका गुरु दूर नहीं है,' मैंने महर्षि की ओर इशारा करते हुए कहा। उसे मेरी बात मानने में अधिक समय नहीं लगा और फिर वह महर्षि रमण का भक्त बन गया।

कक्ष में एक और व्यक्ति बैठा था। उसकी आँखों पर चश्मा था और उसने रेशमी वस्त्र पहने थे। वह देखने में धनवान लगता था। वह एक न्यायाधीश था, जिसने छुट्टियों में महर्षि से मिलने का विचार बनाया था। वह उनका अनुयायी और बड़ा प्रशंसक रहा। वह उनसे मिलने वर्ष में एक बार अवश्य आता था। वह सुसंस्कृत और अत्यधिक का पढ़ा-लिखा व्यक्ति, ग़रीब और अधनंगे तमिल लोगों के बीच बैठा रहता था। महर्षि के आश्रम में जाति की विसंगतियों से दूर एक अनोखी एकता देखने को मिलती थी। इसके कारण बड़े-बड़े राजकुमार और राजा, दूर-दूर से महर्षि से सलाह लेने और उनके दर्शन करने आते थे। यह इस बात का संकेत है कि व्यक्ति सच्चा ज्ञान प्राप्त करने के लिए सभी भेदभाव भूल सकता है।

कुछ देर बाद एक युवा स्त्री ने अपने सजे-धजे बच्चे को लेकर कक्ष में प्रवेश किया और महर्षि को प्रणाम किया। उसने जीवन की कुछ समस्याओं पर चर्चा की है और फिर चुपचाप महर्षि के सामने बैठ गई। उस स्त्री का उनके साथ बौद्धिक संवाद नहीं होता है। हिंदू स्त्रियों के लिए शिक्षा बड़ा आभूषण नहीं है। उस स्त्री को अपने प्रतिदिन के घरेलू कामकाज के अतिरिक्त अधिक चीज़ों का ज्ञान नहीं था परंतु उसे इस बात का आभास अवश्य था कि वह एक महान व्यक्ति के समक्ष बैठी है।

संध्या के समय कक्ष में सभी लोग मिलकर ध्यान का अभ्यास करते हैं। महर्षि स्वयं भी बीच-बीच में ध्यान में लीन हो जाते। वह इतने सहज भाव से ध्यान आरंभ करते थे कि किसी को उसका आभास भी नहीं होता था। इस दौरान वह बाहरी संसार से पूरी तरह कट जाते थे। महर्षि के शक्तिशाली सानिध्य में प्रतिदिन ध्यान का अभ्यास करते हुए मैंने सीख लिया है कि अपने विचारों को भीतरी केंद्र तक कैसे ले जाना है। अपना ध्यान भीतर केंद्रित किए बिना, महर्षि के साथ संपर्क साध पाना लगभग असंभव है। महर्षि आध्यात्मिक सूर्य के समान लगे, जिनके तेज़ से व्यक्ति का अंतर्मन प्रकाशित हो जाता है। मुझे बार-बार यह एहसास होता कि वह अनेक बार मेरे मस्तिष्क के साथ एकाकार हो जाते हैं। यही वे क्षण हैं जब मनुष्य को समझ में आता है कि महर्षि के शब्दों से अधिक उनके मौन का क्या महत्त्व है! महर्षि के समक्ष बैठकर अद्भुत शांति का आभास किसी को भी बिना श्रवण या दृश्य माध्यम के, अत्यंत सामर्थ्यवान तरीक़े से प्रभावित कर सकता है। बीच-बीच में कुछ ऐसे क्षण भी आते हैं जब मैं उनकी शक्ति को इतना अधिक महसूस कर सकता हूँ कि वह मुझे कोई भी आदेश दें तो मैं तत्काल उसे पूरा कर सकता हूँ। परंतु महर्षि ने कभी किसी को आज्ञा नहीं दी और न ही किसी को आदेशों में बाँधने का प्रयास किया। उन्होंने प्रत्येक व्यक्ति को पूर्ण स्वतंत्रता

प्रदान की। इस संदर्भ में, वह भारत में मौजूद अधिकांश गुरुओं और योगियों से पूरी तरह भिन्न दिखे।

महर्षि के साथ हुई पहली मुलाक़ात में मुझे उनके उत्तरों में अस्पष्टता महसूस हुई थी। मैंने अपने ध्यान को उसी दिशा में ले जाना आरंभ किया है। मैंने अपने भीतर देखना आरंभ कर दिया है।

मैं कौन हूँ?

क्या मैं मांस, रक्त और हड्डियों से बना शरीर हूँ?

क्या मैं मन, विचारों और भावनाओं से बना हूँ?

मनुष्य को आजतक इन प्रश्नों के सकारात्मक उत्तर मिलते रहे हैं। महर्षि ने मुझे इस बात के लिए चेताया था कि मैं इन्हें सत्य न मानूँ, परंतु उन्होंने मुझे इस विषय में कोई क्रमबद्ध ज्ञान नहीं दिया। उनके संदेश का सार यही है:

'स्वयं से "मैं कौन हूँ?" यह प्रश्न लगातार पूछते रहो। अपने व्यक्तित्व का विश्लेषण करते रहो। देखो, कि "मैं" विचार कहाँ से आरंभ होता है। लागातार ध्यान का अभ्यास करते रहो। अपने ध्यान को भीतर की ओर केंद्रित करो। एक दिन विचारों का चक्र धीमा हो जाएगा और फिर भीतर से अंतर्प्रेरणा उत्पन्न होगी। उस प्रेरणा का अनुसरण करो। अपने विचारों को रुक जाने दो और आख़िरकार, तुम्हें अपना लक्ष्य मिल जाएगा।'

मैं धीरे-धीरे अपने विचारों को रोकने के लिए संघर्ष कर रहा हूँ और अपने मस्तिष्क के भीतर उतरने की कोशिश भी कर रहा हूँ। महर्षि के सानिध्य में ध्यान और आत्मा का विश्लेषण करना आसान और अधिक प्रभावशाली हो रहा है। अपने लगातार किए जा रहे प्रयासों से मेरे भीतर आशा और विश्वास दृढ़ हो गया है और मुझे बेहतर मार्गदर्शन मिलने लगा है। मुझे बीच-बीच में काफ़ी लंबे समय तक इस बात का आभास रहता है कि महर्षि की अदृश्य शक्ति मेरी मानसिकता पर गहरा प्रभाव डाल रही है। उसके परिणामस्वरूप मैं प्रत्येक अभ्यास के साथ अपने मस्तिष्क की और अधिक गहराई में उतरता जा रहा हूँ।

प्रत्येक संध्याकाल को कक्ष धीरे-धीरे ख़ाली होने लगता है। महर्षि, उनके शिष्य और उनसे मिलने वाले लोग, रात्रि भोजन के लिए जाने लगते हैं। मुझे भोजन की चिंता नहीं है। मैं प्रायः अकेला रह जाता हूँ और उनके लौटने की प्रतीक्षा करता हूँ। हालाँकि आश्रम के भोजन में दही एक ऐसी चीज़ है जो मुझे आकर्षक और स्वादिष्ट लगती है। महर्षि को भी इस बात का पता है, इसलिए उन्होंने रसोइए को रोज़ रात को मुझे एक कप दही देने के लिए कह रखा है।

भोजन से लौटने के लगभग आधे घंटे बाद, आश्रम के सदस्य और महर्षि से मिलने आए लोग, कक्ष के फ़र्श पर सोने की तैयारी कर लेते हैं। महर्षि स्वयं दीवान पर सोते हैं। उनके

सोने से पहले उनका निष्ठावान सेवक तेल से उनके हाथ-पैरों की मालिश करता है।

मैं लालटेन लेकर कक्ष से बाहर निकल जाता हूँ और अकेला बाहर घूमता हूँ। बाहर बगीचे के फूलों, पेड़ों और वृक्षों के आस-पास असंख्य मक्खी-मच्छर हैं। मुझे जब कभी सामान्य समय से दो-तीन घंटे देर हो जाती है तो इन विचित्र कीट-पतंगों की रोशनी भी बंद हो जाती है। उनकी संख्या इतनी अधिक है कि उन घनी झाड़ियों में से निकलना मुश्किल हो जाता है। मुझे इस बात का भी ध्यान रखना है कि कहीं मेरा पैर, बिच्छू या साँप पर न पड़ जाए। कभी-कभी मेरे भीतर ध्यान की ऊर्जा का प्रवाह इतना तेज़ होता है कि मैं उसे रोक पाने में असमर्थ होता हूँ और न ही मेरी उसे रोकने की इच्छा होती है। इसलिए मैं उसी अवस्था में उस सँकरे रास्ते से निकलकर अपने घर की ओर चला जाता हूँ। मैं घर पहुँचकर दरवाज़ा बंद कर लेता हूँ और बिना शीशे वाली खिड़कियों पर मोटे परदे डाल लेता हूँ ताकि बाहर से कोई पशु भीतर न आ जाए। मैं सोने से पहले नारियल के घने वृक्षों को एक नज़र देख रहा हूँ। उनके ऊपर चंद्रमा की चाँदनी, अविरल बिखरी रहती है।

अध्याय 17

विस्मृत सत्य की स्मरणिका

एक दिन मुझे एक नवागंतुक दिखाई पड़ता है। वह महर्षि के कक्ष में प्रवेश करता है और उनके निकट बैठ जाता है। उसका रंग बहुत काला है परंतु उसका चेहरा उन्नत है। वह बिलकुल चुप है परंतु महर्षि उसे देखकर तत्काल मुस्करा देते हैं।

उसका व्यक्तित्व बहुत प्रभावशाली है। वह देखने में भगवान बुद्ध के समान ज्ञानवान और प्रबुद्धि लगता है। उसके चेहरे पर अद्भुत व असाधारण शांति नज़र आती है। हमारी नज़र मिलती है तो वह काफ़ी देर मुझे देखता रहता है। परंतु मैं असहज होकर अपनी दृष्टि हटा लेता हूँ। उसने दोपहर तक एक भी शब्द नहीं बोला है।

मेरी उस व्यक्ति से दूसरी मुलाक़ात अगले दिन होती है। उस दिन वह अप्रत्याशित ढंग से मुझसे मिलता है। मैं कक्ष से बाहर निकलकर अपने कुटिया में चाय बनाने जा रहा हूँ क्योंकि मेरा नौकर राजू शहर से कुछ सामान लेने के लिए गया है। मैं अपने घर का दरवाज़ा खोलकर भीतर प्रवेश करता हूँ। तभी कोई चीज़ फ़र्श पर सरकती हुई मुझसे कुछ इंच की दूरी पर रुक जाती है। वह एक साँप है जो मेरे कमरे में बैठा है। मैं बुरी तरह डर जाता हूँ। मुझे समझ नहीं आता कि मैं क्या करूँ। वह साँप मुझे देख रहा है। मुझे उसे देखकर डर लग रहा है। मेरी नसों में तनाव हो गया है। मेरा हृदय भय और घृणा से भर गया है परंतु मेरी आँखें साँप के सिर पर टिकी हैं। उसे अचानक इस तरह अपने सामने देखकर मैं हैरान हूँ। वह साँप भी मुझे अजीब ढंग से देख रहा है। उसने अपना फन उठा रखा है और उसकी ख़तरनाक आँखें मुझे लगातार घूर रही हैं।

आख़िरकार मैं स्वयं को संभालकर पीछे हट जाता हूँ। मैं एक मोटी छड़ से उसे मारने की

सोच रहा हूँ कि तभी मुझे वह नवागंतुक व्यक्ति अपनी ओर आता दिखाई पड़ता है। मैं उसे अचानक शांत हो जाता हूँ। वह पास आकर मेरी परिस्थिति को भाँपता है और फिर मेरे कमरे के भीतर चला जाता है। मैं उसे चिल्लाकर चेतावनी देता हूँ लेकिन वह मेरी बात पर ध्यान नहीं देता। मैं बहुत परेशान हूँ क्योंकि उसके पास कोई हथियार नहीं है और उसने अपने दोनों हाथ साँप की ओर उठा दिए हैं।

साँप बार-बार अपनी जीभ बाहर निकाल रहा है लेकिन वह उस व्यक्ति पर हमला नहीं करता है। उसी समय मेरे चिल्लाने से कुछ और लोग घरों से बाहर निकल आते हैं। उनके वहाँ पहुँचने से पहले, आगंतुक साँप के बहुत नज़दीक चला गया है। उसे देखकर साँप सिर झुका लेता है और अपनी पूँछ हिलाने लगता है!

वह अपने विषैले दाँत अंदर कर लेता लेता है और अन्य लोगों के पहुँचने से पहले ही वह हमारी आँखों के सामने से कुटिया से बाहर निकलकर जंगल में चला जाता है।

'यह छोटा कोबरा साँप है,' वहाँ आए लोगों में से एक कहता है। वह शहर का एक कपड़ा व्यापारी है और प्रायः महर्षि के दर्शन के लिए आता रहता है।

आगंतुक ने जिस तरह साँप का सामना किया, मैं उसे देखकर बहुत हैरान हूँ।

'यह योगी रमैया हैं,' व्यापारी मुझे बताता है। 'यह महर्षि के अत्यंत और पहुँचे हुए शिष्यों में से एक हैं। वह बहुत ही शानदार व्यक्ति हैं।'

योगी रमैया के साथ बात करना संभव नहीं है क्योंकि मुझे बताया गया है कि उन्होंने मौन व्रत धारण किया है। यह भी एक कारण है कि वह तेलुगु भाषी हैं। उन्हें अंग्रेज़ी का बहुत कम ज्ञान है और मुझे तेलुगु बिलकुल नहीं आती। मुझे यह भी पता लगा है कि वह एकांत में रहते हैं और किसी से बातचीत नहीं करते हैं। उनके लिए एक पत्थरों का छोटा-सा आवास बना है और वह अपना समय वहीं बिताते हैं। वह लगभग पिछले दस वर्षों से महर्षि के शिष्य हैं।

इसके कुछ ही समय बाद हम दोनों के बीच की दूरी समाप्त हो जाती है। मेरी मुलाक़ात उनसे तालाब पर होती है, जहाँ वे तांबे का घड़ा लेकर पानी लेने आए हैं। उनका रहस्यमय किंतु शांत और दयालु व्यक्तित्व मुझे आकर्षित कर रहा है। मेरे पास जेब में कैमरा है। मैं उनसे फ़ोटो लेने का अनुरोध करता हूँ। उन्हें कोई आपत्ति नहीं है और फिर फ़ोटो लेने के बाद वे मेरे साथ मेरी कुटिया पर चल पड़ते हैं। वहीं हमारी मुलाक़ात भूतपूर्व स्टेशन मास्टर से भी होती है। वह मेरे दरवाज़े के बाहर बैठा हमारी प्रतीक्षा कर रहा है।

उसी दौरान मुझे पता लगता है कि वह व्यक्ति तेलुगु और अंग्रेज़ी दोनों भाषाएँ जानता है। वह मेरे और योगी रमैया के बीच दुभाषिये का काम करने के लिए तैयार हो जाता है। योगी अधिक बात तो नहीं करते और उन्हें इंटरव्यू देना भी पसंद नहीं है, फिर भी मैं उनसे कुछ जानकारी प्राप्त करने में सफल हो जाता हूँ।

रमैया की आयु चालीस वर्ष से कम है। उनके पास नेल्लूर जिले में कुछ ज़मीन है। हालाँकि उन्होंने औपचारिक तौर पर गृह-त्याग नहीं किया है, उनका परिवार उनकी संपत्ति की देखभाल करता है ताकि वह योग और ध्यान को अधिक समय दे सकें। नेल्लूर में उनके अपने कुछ शिष्य हैं परंतु रमैया, वर्ष में एक बार महर्षि के पास आकर उनके साथ दो-तीन महीने बिताते रहे।

उन्होंने अपने युवाकाल में दक्षिण भारत का भ्रमण किया। उसी दौरान उन्होंने योगगुरु की भी तलाश की और अनेक गुरुओं के सानिध्य में अध्ययन किया। उनके पास अनेक शक्तियाँ भी हैं। वह बहुत आसानी से श्वास और ध्यान के अभ्यास कर लेते हैं। वह अनेक मामलों में अपने गुरुओं से भी आगे निकल गए हैं क्योंकि जिन बातों का उत्तर उन्हें गुरुओं से संतोषजनक ढंग से नहीं मिला, उनके उत्तर उन्होंने स्वयं अपने अनुभव से प्राप्त किए। वह अंत में महर्षि रमण के पास आए और वहाँ उन्हें बहुत-से उत्तर मिले। इससे उन्हें अपने मार्ग पर आगे बढ़ने की प्रेरणा और दिशा मिली।

योगी रमैया ने बताया कि वह दो महीने के लिए अपने निजी नौकर के साथ यहाँ रहने आए हैं। उन्हें यह देखकर अच्छा लग रहा है कि एक पश्चिमवासी, पूर्वी जगत के प्राचीन ज्ञान में इतनी रुचि ले रहा है। मैं योगी को एक रंगीन अंग्रेज़ी पत्रिका दिखाता हूँ वह उन चित्रें का बहुत बढ़िया स्पष्टीकरण देते हैं।

‘आपके पाश्चात्य जगत के बुद्धिमान लोग, जब मौजूदा इंजनों से ज़्यादा तेज़ चलने वाले इंजन बनाने की इच्छा छोड़ देंगे और अपने भीतर देखने का प्रयास करेंगे, तो शायद उन्हें सच्चा आनंद प्राप्त हो जाएगा। क्या आपको विश्वास है कि आपके यहाँ के लोगों को तेज़ वाहन का अविष्कार करने से अधिक संतोष मिलता है?’

वहाँ से जाने से पहले मैं उनसे उससे साँप वाली घटना के विषय में प्रश्न करता हूँ। वह मुस्कराकर अपना उत्तर काग़ज़ पर लिख देते हैं:

‘मुझे किस बात का डर है? मैं उस साँप के पास प्रेम भाव लेकर, मन में बिना भय और घृणा के गया था!’

मुझे लगता है कि योगी द्वारा कहे शब्दों में बहुत कुछ छिपा है। मैं बिना और कोई प्रश्न किए उन्हें अपने घर लौटने देता हूँ।

योगी रमैया से मिलने के कुछ सप्ताह के बाद, मैं उन्हें थोड़ा और बेहतर ढंग से जान पाया हूँ। हम लोग प्रायः मेरी कुटिया के बाहर या तालाब के किनारे अथवा उनके अपने आवास के निकट मिलते हैं। उनका दृष्टिकोण मेरे स्वभाव से काफ़ी मिलता है। उनकी बड़ी और काली आँखों की शांति मुझे आकर्षक लगती है। हम लोगों के बीच एक अजीब-सी मित्रता हो जाती है। वह एक दिन मेरे सिर को थपथपाकर मेरे हाथों को अपने हाथ में ले लेते हैं। हमारे बीच बातें कम होती हैं। इसके बावजूद मुझे लगता है कि मेरे और रमैया के बीच

एक संबंध स्थापित हो गया है, जिसे तोड़ा नहीं जा सकता। मैं समय-समय पर उनके साथ वन में टहलने जाता हूँ। हम लोग पहाड़ी रास्ते से होते हुए पथरीले मार्ग पर चलते रहते हैं। हम जहाँ भी जाते हैं, मैं उनके व्यक्तित्व की शांति और श्रेष्ठता की प्रशंसा किए बिना नहीं रह पाता।

जल्द ही, मुझे रमैया की असाधारण शक्ति का एक और प्रमाण देखने को मिलता है। मेरे पास किसी ने एक पत्र भेजा है। उसमें बुरी ख़बर आई है। मुझे पता लगा है कि मेरा आर्थिक ईंधन समाप्त होने वाला है और मैं अब अधिक समय भारत में नहीं रह सकूँगा। हालाँकि महर्षि के आश्रम में मुझे कुछ और समय रहने में कोई परेशानी नहीं होगी और वे लोग मुझे बिना किसी औपचारिकता के यहाँ रहने भी देंगे किंतु यह मेरे स्वभाव के विरुद्ध होगा। इसके अतिरिक्त, ऐसे कई कार्य हैं जो मुझे अपने कर्तव्य स्वरूप पूरा करने हैं और उन्हें वापस लौटकर, धन कमाकर ही पूरा किया जा सकता है।

यह समाचार मेरे मानसिक और आध्यात्मिक प्रशिक्षण की परीक्षा है। मेरी तैयारी इतनी बुरी है कि मैं बहुत ख़राब प्रदर्शन कर रहा हूँ और इसके लिए मुझे बहुत बुरा लग रहा है। मैं महर्षि के साथ कक्ष में बैठकर भी उनसे संपर्क स्थापित नहीं कर पा रहा हूँ। मैं अचानक बाहर निकल जाता हूँ और शेष दिन यूँ ही परेशान घूमता रहता हूँ। मुझे नियति के विषय में सोचकर बुरा लग रहा है, जो किसी की योजना को एक ही प्रहार में ध्वस्त कर सकती है।

मैं अपनी कुटिया में लौटता हूँ तो मेरा शरीर और दिमाग़ दोनों थके हुए हैं। मुझे लेटते ही गहरी नींद आ जाती है। तभी दरवाज़े पर हुई आवाज़ से मैं अचानक उठ बैठता हूँ। मेरी कुटिया का द्वार खुलता है। योगी रमैया को भीतर प्रवेश करता देख मुझे आश्चर्य हो रहा है।

मैं योगी रमैया के बैठने के बाद उनके सामने बैठ जाता हूँ। वह मुझे ग़ौर से देख रहे हैं। उनके आँखों में कुछ प्रश्न हैं। मैं ऐसे व्यक्ति के साथ अकेला बैठा हूँ, जो बोलता नहीं है और जिसे अंग्रेज़ी का एक भी शब्द नहीं आता। मेरा स्वभाव मुझे कुछ कहने के लिए प्रेरित कर रहा है। मैं जो भाषा बोलने वाला हूँ, उसका एक भी शब्द योगी नहीं समझ सकते, फिर भी मुझे उम्मीद है कि वह मेरी भावनाओं को अवश्य जान लेंगे! मैं अपनी परेशानी उनके सामने रखता हूँ और कहता हूँ कि किस तरह मेरे ऊपर अचानक संकट आ पड़ा है। मेरी वाणी और मुद्रा में मेरे भीतर की पराजय और दुःख के भाव साफ़ झलक रहे हैं।

रमैया शांति से मेरी बात सुनते हैं। मेरी बात समाप्त होने पर वह सहानुभूति पूर्वक सिर हिलाते हैं। वह कुछ देर के बाद उठकर कुछ संकेतों और मुद्राओं द्वारा मुझे अपने साथ बाहर चलने का संकेत करते हैं। हम लोग जंगल के रास्ते एक खुले स्थान पर पहुँच जाते हैं। दोपहर का सूरज बहुत तेज़ है। मैं लगभग आधे घंटे से उनके साथ चल रहा हूँ। हम लोग एक वटवृक्ष के नीचे बैठ जाते हैं। इससे मुझे तेज़ धूप से राहत मिली है। हम लोग कुछ देर आराम करके फिर आधे घंटे चलते हैं और एक तालाब के निकट पहुँच जाते हैं। रमैया उस मार्ग से काफ़ी

परिचित लगते हैं। हमारे पैर नर्म और रेतीली मिट्टी में धंस रहे हैं। हम लोग धीरे-धीरे चलते हुए पानी के पास पहुँच जाते हैं। पानी में बहुत-से कमल खिले हुए हैं।

योगी रमैया वृक्ष की छाया में बैठ जाते हैं। मैं भी उनके पास रेत में बैठ जाता हूँ। हमारे ऊपर ग्रंथाल के पेड़ हरी छतरी की तरह फैले हुए हैं। हम लोग वहाँ अकेले हैं। निर्जन परिदृश्य कई मीलों तक फैला हुआ है और फिर वहाँ से आगे जंगल शुरू हो जाता है।

योगी रमैया पैर मोड़कर और परंपरागत ध्यान मुद्रा में बैठ जाते हैं। वह मुझे संकेत से अपने नज़दीक आने का इशारा करते हैं। मैं उनके शांत चेहरे को देख रहा हूँ। उनकी आँखें पानी के समान स्थिर हैं। इसके बाद वह ध्यान में डूब जाते हैं।

समय धीमी गति से चल रहा है। रमैया बिना हिले-डुले स्थिर और शांत भाव से तालाब के निकट बैठे हैं। उनका शरीर प्राकृतिक परिदृश्य में किसी विशाल वृक्ष के समान स्थिर और शांत दिखाई पड़ रहा है। लगभग आधा घंटा बीत जाता है और वे यूँ ही वृक्ष के नीचे चुपचाप बैठे हैं। उनके चेहरे पर पहले से भी अधिक शांति है। उनकी स्थिर आँखें या तो सामने कहीं शून्य में देख रही हैं अथवा वे दूर किसी पर्वत श्रृंखला को देख रहे हैं। मैं नहीं जानता वे क्या देख रहे हैं।

मुझे जल्द ही अपने आसपास के एकांत वातावरण और अद्भुत शांति का एहसास होने लगा है। योगी के व्यक्तित्व की शांत तरंगें सौम्य निरंतरता के साथ मेरी आत्मा में प्रवेश कर रही हैं। मैं जिस शांति की तलाश में था, वह मुझे अब महसूस हो रही है। मैं अपनी व्यक्तिगत परेशानी से बाहर निकल रहा हूँ। योगी रमैया किसी रहस्यमय तरीक़े से मेरी सहायता कर रहे हैं। मुझे कोई संदेह नहीं कि वे ध्यान में इतने गहरे तक उतर चुके हैं कि मुझे उनकी श्वास चलने का भी एहसास नहीं हो रहा। उनकी इस गहन और ध्यानस्थ स्थिति का रहस्य क्या है? उनके भीतर से निकलने वाले परोपकारी प्रकाश का स्रोत क्या है?

शाम ढलने के साथ दोपहर की गर्मी कम हो रही है। तपती हुई रेत भी ठंडी होने लगी है। अस्त होते सूर्य की सुनहरी किरणें योगी रमैया के चेहरे पर पड़ रही हैं जिससे उनका स्थिर शरीर आभामंडल युक्त प्रतिमा की भाँति दमक रहा है। मैं उनके विषय में विचार करके भीतर उत्पन्न शांति का आनंद ले रहा हूँ। मुझे जैसे-जैसे अपनी दिव्य गहराइयों का एहसास हो रहा है, वैसे-वैसे रोज़मर्रा होने वाले परिवर्तनों और संयोगों के प्रति मेरा एहसास भी कम होने लगा है। मैं इस बात को स्पष्ट रूप से महसूस कर सकता हूँ कि यदि मनुष्य स्वयं अपने भीतर केंद्रित हो जाए, तो उसके लिए अपनी परेशानियों को शांत भाव से देखना आसान है। व्यक्ति के भीतर दिव्य सुरक्षा और अपरिवर्तनशीलता विद्यमान है और इसलिए बाहर की सांसारिक और अस्थाई सुख-सुविधाओं से चिपके रहना मूर्खता है। यही वजह है कि बुद्धिमान गैलीलियो ने अपने शिष्यों से यही कहा था कि उन्हें भविष्य की चिंता नहीं करनी चाहिए क्योंकि एक अन्य बड़ी एवं श्रेष्ठ शक्ति है जो उनके भविष्य की चिंता करती है। मैं भी अब

इस बात को देख सकता हूँ कि मनुष्य यदि यह स्वीकार कर ले और अपने भीतर के आत्मतत्व में विश्वास करे, तो वह जीवन की समस्याओं से बिना डरे या घबराए, सरलता से बाहर निकल सकता है। मुझे यह भी आभास हो रहा है कि मेरे बहुत निकट और मेरी अपनी पहुँच के भीतर, जीवन का वह मूल तत्व भी मौजूद है जिसके कारण मुझे भविष्य की चिंता करने की आवश्यकता नहीं है। इस तरह, मेरे मस्तिष्क पर पड़ा बोझ अचानक उस आध्यात्मिक वातावरण में बैठने से ग़ायब हो गया।

उस सुंदर अनुभव में बिताए समय का मुझे आभास नहीं है। मुझे यह भी नहीं पता कि अपने भीतर की दिव्यता और बाहरी इंद्रियों से स्वतंत्रता के रहस्य को कैसे समझाया जा सकता है। इसी अद्भुत और शानदार दृश्य के बीच शाम ढल जाती है। मुझे यह बात अच्छी तरह याद है कि उष्णकटिबंधीय स्थानों पर रात्रि का अंधकार तेज़ी से फैल जाता है, परंतु मुझे इसकी भी कोई चिंता नहीं है। मेरे लिए इतना पर्याप्त है कि योगी रमैया जैसा शानदार व्यक्ति मेरे पास बैठा है और वही मेरा मार्गदर्शन करेगा।

अंधकार पूरी तरह घिर चुका है। योगी रमैया धीमे-से मेरे हाथ को छूकर उठने का संकेत करते हैं। हम लोग एक-दूसरे का हाथ पकड़कर उस एकांत और निर्जन प्रांत से चलते हुए घर की ओर लौट जाते हैं। हमारे पास रोशनी का कोई साधन नहीं है और न ही हमें रास्ता दिख रहा है। हम लोग योगी रमैया की अद्भुत दृष्टि के सहारे ही आगे बढ़ रहे हैं। यदि कोई और अवसर होता तो शायद मुझे डर लगता क्योंकि रात्रि में जंगल से गुज़रते हुए मेरे साथ पहले कई बुरे अनुभव हो चुके हैं।

मुझे आस-पास वन्य पशुओं का आभास हो रहा है। बीच-बीच में जैकी नाम के एक कुत्ते की भी छवि मेरी आँखों के सामने आ जाती है, जो मेरे साथ टहलने निकलता है। उसकी गर्दन के पास दो निशान हैं, जो चीते के काटने से हो गए थे। उसका एक और भाई था जिसे दुर्भाग्य से उसी चीते ने पकड़ लिया था और फिर वह दोबारा कभी नहीं दिखाई दिया। हो सकता है, मुझे भी शिकार की तलाश में हरी आँखों वाला कोई भूखा चीता मिल जाए या मेरा पैर अंधेरे में कोबरा साँप पर पड़ जाए या फिर मैं भूल से किसी बड़े बिच्छू को स्पर्श कर बैठूँ, परंतु फिर मुझे तत्काल योगी की निर्भय उपस्थिति के बारे में सोचकर शर्मिंदगी महसूस होती है। मैं फिर से योगी रवैया के सुरक्षात्मक आभामंडल में शरण लेकर स्वयं को उनके भरोसे छोड़ देता हूँ।

भारत में शाम के समय, प्रकृति के परिदृश्य से भी अधिक अजीब वह स्वर है जो रात के समय सुनाई पड़ता है। एक सियार थोड़ी दूरी पर लगातार चिल्ला रहा है। मुझे शेर की गर्जना भी सुनाई पड़ रही है। हम लोग तालाब के निकट पहुँचते हैं तो हमें बहुत-से मेंढकों, छिपकलियों और चमगादड़ों की भी आवाज़ें सुनाई पड़ती हैं...

मैं सुबह उठता हूँ। मेरे सामने उजला संसार है और मेरा हृदय भी प्रसन्न है।



मैं अपने आसपास के सुंदर परिदृश्य और महर्षि के साथ हुए संवादों के विषय में लिखना चाहता हूँ परंतु अब इस वृत्तांत को समाप्त करने का समय आ गया है।

मैं बहुत ध्यान से महर्षि का अध्ययन कर रहा हूँ और धीरे-धीरे मुझे उनके भीतर एक बालक नज़र आ रहा है। उस समय आध्यात्मिक सत्य की खोज को उतना ही महत्त्व दिया जाता था जितना आज सोने की खदान की खोज को दिया जाता है। मैं यह जान गया हूँ कि मुझे दक्षिण भारत के इस शांत और निर्जन प्रदेश में भारत के आध्यात्मिक महामानवों में से एक के दर्शन करने का मौक़ा मिला है। इस संन्यासी की शांत आकृति मुझे इस देश के अन्य कई प्राचीन और महान विषयों से परिचित करवाती है। इनसे मिलकर यह आभास होता है कि महर्षि के व्यक्तित्व का सबसे शानदार अंश अब भी अछूता है। विवेक और ज्ञान से भरी इनकी अंतरात्मा व्यक्ति की पहुँच से बाहर है। वह कभी-कभी विचित्र ढंग से अलग हो जाते हैं और कई बार उनका दया और प्रेम भाव मुझे मानो किसी फ़ौलादी बंधन से बाँध देता है। मैं उनके व्यक्तित्व के अद्भुत गुण से बहुत प्रभावित हूँ। मैंने धीरे-धीरे उन्हें काफ़ी जान लिया है। सच कहा जाए तो वह बाहरी संपर्कों से पूरी तरह अछूते हैं। बहुत कम लोग उनके साथ आध्यात्मिक संपर्क बनाकर उनके बताए मार्ग पर चल पाने में सफल हो पाते हैं। मुझे वह इसलिए भी पसंद है क्योंकि वह बहुत सीधे और विनम्र हैं और उनके आसपास अद्भुत महानता का वातावरण सदा व्याप्त रहता है। वह किसी भी तरह लोगों को अपनी रहस्यमय शक्तियों या अपने ज्ञान द्वारा प्रभावित करने की चेष्टा नहीं करते। उनमें लेशमात्र भी दिखावा नहीं है। वह अपने जीवनकाल में उन्हें संत घोषित करने के किसी भी प्रयास का खुलकर विरोध करते हैं।

मुझे लगता है कि महर्षि जैसे लोगों की उपस्थिति से लोगों को दिव्य संदेश मिलता रहेगा, जो आसानी से सबको प्राप्त नहीं है। इसके अतिरिक्त मुझे यह लगता है कि मनुष्य को यह स्वीकार करना चाहिए कि ऐसे संत हमसे किसी विषय पर तर्क करने नहीं, अपितु हमें कुछ बताने के लिए प्रकट होते हैं। किसी भी तरह से देखें तो महर्षि की शिक्षा से मैं बहुत प्रभावित हूँ क्योंकि उनका व्यक्तिगत दृष्टिकोण और व्यवहारिक तरीक़ा यदि समझ में आ जाए तो वह अपने आप में बहुत वैज्ञानिक है। वह अलौकिक शक्ति या अंधविश्वास और धार्मिक आस्था पर बल नहीं देते। महर्षि के आसपास मौजूद आध्यात्मिक वातावरण और दर्शनशास्त्र से प्रेरित उनकी तार्किक आत्म-विवेचना ही उस पुराने मंदिर में मिल सकती है। उनके मुँह पर कभी “भगवान” शब्द भी नहीं आता। वह प्रतिभा के अंधकारपूर्ण एवं विवादास्पद क्षेत्र से भी दूर रहते हैं क्योंकि यही वह क्षेत्र है जहाँ अति-आशावादी यात्राओं की दुर्घटना होती है। वह लोगों के सामने केवल आत्म-विश्लेषण का सीधा-सा मार्ग रखते हैं जिसका प्राचीन या आधुनिक सिद्धांत और आस्था के बिना अभ्यास किया जा सकता है। इसी मार्ग पर चलकर

मनुष्य को सचमुच आत्मज्ञान प्राप्त होता है।

मैं स्वयं को जानने के लिए इसी मार्ग का अनुसरण कर रहा हूँ। मुझे बार-बार यह आभास होता है कि महर्षि मेरे मस्तिष्क के साथ संपर्क स्थापित करके मुझे बिना कुछ कहे संदेश देते रहते हैं। मेरे ऊपर आश्रम से वापस लौटने की काली छाया मंडराने लगी है, परंतु मैं फिर भी अपने आवास की अवधि को बढ़ाता जा रहा हूँ।

आख़िरकार मुझे ख़राब स्वास्थ्य के कारण इस यात्रा को समाप्त करके वापस लौटने का निर्णय लेना पड़ता है। यह भी सच है कि जिस शक्ति ने मुझे इस स्थान पर आने के लिए प्रेरित किया था, उसी ने मेरे थके शरीर और दिमाग़ को यहाँ की गर्म हवा को झेलने की शक्ति दी है। परंतु प्रकृति को अधिक समय तक पराजित नहीं किया जा सकता। मुझे अपने शारीरिक स्वास्थ्य के तेज़ी से बिगड़ने का आभास होने लगा है। मेरा जीवन अपने आध्यात्मिक चरम के निकट है किंतु यह भी एक अजीब विरोधाभास है कि शारीरिक स्वास्थ्य की दृष्टि से मैं बहुत निचले स्तर पर पहुँच गया हूँ! महर्षि से अपनी अंतिम मुलाक़ात से कुछ घंटे पूर्व मुझे शरीर में तेज़ कंपन हो रही है और असाधारण ढंग से पसीना आ रहा है। शायद मुझे तेज़ बुखार है।

मैं वहाँ के विशाल और महान मंदिर में घूमकर तेज़ी से घर वापस लौटता हूँ। मैं महर्षि के कक्ष में प्रवेश करता हूँ तो उनका ध्यान का समय लगभग आधा बीत चुका है। मैं चुपचाप भीतर जाता हूँ और ध्यान में बैठ जाता हूँ। कुछ क्षण के बाद मेरे विचार स्थिर होने लगते हैं। मुझे बंद आँखों से भीतर की चेतना का तीव्र आभास हो रहा है।

मुझे अपने मन-मस्तिष्क में महर्षि की छवि स्पष्ट नज़र आ रही है। उनके लगातार दोहराए गए निर्देशों के बाद, मैं उनके निराकार मानसिक चित्र को देखने का प्रयास कर रहा हूँ। वही उनकी वास्तविक और सच्ची प्रकृति है, उनकी आत्मा है। मुझे यह जानकर आश्चर्य हो रहा है कि मेरा प्रयास तुरंत ही सफल हो जाता है और उसके बाद वह चित्र अचानक मेरी आँखों से ओझल हो जाता है। मैं महर्षि की उपस्थिति को शक्तिशाली ढंग से महसूस कर सकता हूँ।

मेरे सभी प्रश्न जो ध्यान से पहले मेरे दिमाग़ में थे, समाप्त होने लगे हैं। मैंने कई बार अपनी शारीरिक, भावनात्मक और मानसिक उद्विग्नताओं के विषय में अपनी ही चेतना से प्रश्न किए परंतु आत्मतत्व की खोज से असंतुष्ट होकर मैंने वह सबकुछ छोड़ दिया है। इसके बाद मैंने समस्त चेतना और ध्यान को भीतर केंद्रित किया। यही वह परम क्षण है। शांति के इन्हीं क्षणों में मन अपने भीतर केंद्रित हो जाता है और व्यक्ति का परिचित संसार धुंधला होकर ओझल होने लगता है। ऐसे समय में, व्यक्ति कुछ देर के लिए शून्यता से भर उठता है। उसका दिमाग़ मानो बिलकुल ख़ाली हो जाता है। व्यक्ति को अपने ज्ञान को यथासंभव स्थिर रखना चाहिए। अपने सतही जीवन के स्वभाव को छोड़कर, मस्तिष्क को ध्यान के परमबिंदु

पर केंद्रित करना कितना मुश्किल है!

मैं आज रात्रि को चरम अवस्था तक इतनी आसानी से पहुँच गया हूँ। उस अवस्था में पहुँचने से पहले प्राय: जो विचार मेरे दिमाग़ में आते हैं वह आज बिलकुल नहीं आए हैं। मेरे भीतर नई और शक्तिशाली ऊर्जा का प्रवाह हो रहा है। वह बड़ी तेज़ गति से मुझे अपने भीतर खींच रही है। मेरी पहली बड़ी लड़ाई बिना परेशानी के समाप्त हो गई है। मुझे उच्च तनाव की अवस्था के बाद, अत्यंत सुखद और आनंदमय एहसास हो रहा है।

मैं अगले चरण में अपनी बुद्ध्र से दूर हो गया हूँ। परंतु मेरे भीतर की आवाज़ मुझे चेतावनी दे रही है कि यह केवल साधन मात्र है। मैं इन विचारों को विरक्त भाव से देख रहा हूँ। मैं अपनी सोचने की क्षमता से, जिसपर मुझे अब तक बहुत गर्व रहा है, छुटकारा चाहता हूँ क्योंकि मैं समझ चुका हूँ कि मैं अनजाने में इस सोच का बंधक बनकर जिया हूँ। मेरे भीतर अचानक बुद्ध्र से बाहर निकलकर और अपने सच्चे स्वरूप में रहने की इच्छा जाग्रत हो रही है। मैं विचारों से भी गहरे किसी अन्य स्थान में डुबकी लगाना चाहता हूँ। मैं देखना चाहता हूँ कि मस्तिष्क के बंधन से मुक्त होने पर कैसा लगता है। परंतु मुझे यह सब सचेत और जाग्रत अवस्था में करना है!

अपने ही मस्तिष्क की गतिविधि से अलग रहकर, उसे किसी अन्य व्यक्ति का मस्तिष्क समझना और उसकी हरकतों को देखना बहुत अजीब लगता है। अपने विचारों को उठते और फिर समाप्त होते देखना भी अजीब है, किंतु उससे भी अजीब यह एहसास है कि व्यक्ति, उन रहस्यों को भेदकर उनके भीतर प्रवेश करने वाला है जो अभी तक उसकी आत्मा के किसी अंदरूनी कोने में छुपे हुए थे। मैं स्वयं को कोलंबस जैसा महसूस कर रहा हूँ, जो किसी अनजाने देश में पहुँचने वाला है। मैं इस नियंत्रित प्रत्याशा से बहुत रोमांचित हूँ।

परंतु विचारों के पुराने बंधन से स्वयं को कैसे अलग किया जाए? मुझे याद है कि महर्षि ने सोचने की प्रक्रिया को ज़बरदस्ती रोकने का सुझाव कभी नहीं दिया। वह हमेशा से यही सलाह देते हैं, 'विचारों की उत्पत्ति के स्थान को खोजने का प्रयास करो, अपने वास्तविक स्वरूप को देखो और फिर विचारों की श्रृंखला स्वतः रुक जाएगी।' यह मानते हुए कि मुझे विचारों के उद्गम-स्थल का पता लग गया है, मैं इस शक्तिशाली सकारात्मक भाव को भी तिरोहित कर रहा हूँ जो मेरा ध्यान इस अवस्था तक लेकर आया है। मैं स्वयं को समर्पित कर रहा हूँ। यह सब करते हुए भी मैं उतना ही सजग हूँ जितना कोई पशु शिकारी साँप से सतर्क रहता है।

इस समाधि की दशा में मुझे महर्षि की भविष्यवाणी की सच्चाई का पता चल रहा है। विचारों की तरंगें स्वाभाविक रूप से थम रही हैं। तर्कबुद्धि का काम करना शून्यता में विलीन होने लगा है। मैं जिस विचित्र सनसनी को महसूस कर रहा था अब वह मुझे जकड़ने लगी है। समय थमता सा लग रहा है और मेरा तेज़ी से गहरा होता ध्यान अज्ञात में रमने लगा है। मैं

अपनी इंद्रियों से अब और न तो सुन पा रहा हूँ, न महसूस कर पा रहा हूँ और न ही कुछ याद कर पा रहा हूँ। मैं समझ रहा हूँ कि किसी भी क्षण मैं विषयों से परे खड़ा दिखूँगा, दुनिया के रहस्य की बाह्य सीमा को पार कर जाऊँगा...

अंततः यह होता है। बुझे हुए दीपक की लौ की तरह विचार ग़ायब हो चुके हैं। बुद्ध अपने वास्तविक आधार पर चली गई है, जो चेतना को बिना बाधा के काम करने दे रही है। मुझे लगता है कि जिस बात को लेकर कुछ समय से मैं संदेह कर रहा था और महर्षि ने जिसकी पूरे विश्वास के साथ पुष्टि की थी, वह यह थी कि मन का उत्कर्ष उत्कृष्ट स्रोत में होता है। दिमाग़ पूरी तरह निलंबित अवस्था में चला गया है, जैसे कि यह गहरी निद्रा में हो, तो भी यहाँ चेतना का ज़रा भी क्षरण नहीं हो रहा है। मैं पूरी तरह शांत और जागरूक बना रहता हूँ कि 'मैं कौन हूँ' और 'क्या हो रहा है।' तो भी मेरी जागरूकता की समझ, जो व्यक्तित्व के संकुचित दायरे से निकली थी, अब बेहद उदात्त और सर्वव्यापक हो चुकी है। आत्मबोध अब भी बना हुआ है पर यह बदला हुआ, प्रकाशमान आत्मबोध है। पहले वह जिस क्षुद्र व्यक्तित्व "मैं" का बोध था वह उससे कहीं कुछ गंभीर, कुछ दैवीय है जो कि चेतना में जग रहा है और "मेरा" बन रहा है। इसी के साथ पूर्ण स्वतंत्रता का आश्चर्यजनक बोध रहा है। करघे के शटल की भाँति हमेशा इधर से उधर चलायमान चित्त की वृत्ति गति के चंगुल से छूटकर स्वच्छंद हो रही है।

मैं स्वयं को चेतना युक्त जगत के दायरे से बाहर पा रहा हूँ। जो ग्रह मुझे आश्रय दे रहा है, ग़ायब हो रहा है। मैं एक प्रज्ज्वलित प्रकाश वाले समुद्र के बीच में हूँ। मुझे ऐसा महसूस हो रहा है कि यह प्रज्ज्वलित प्रकाश ही वह मूल पदार्थ है जिससे पिण्डों का, पदार्थ की पहली अवस्था का निर्माण हुआ था। यह अवर्णनीय अनंत अंतरिक्ष में फैला हुआ है और आश्चर्यजनक रूप से जीवंत है।

अंतरिक्ष में मंचित किए जा रहे इस रहस्यमय विश्व नाटक का अर्थ मेरे मन में बिजली की भाँति कौंध रहा है और मैं अपने अस्तित्व के मूल बिंदु पर आ पहुँचा हूँ। "मैं," नवीन "मैं" पवित्र आनंद की गोद में आराम कर रहा हूँ। मैं सूफियों के मयख़ाने में प्याला पी-पीकर मतवाला हो रहा हूँ। कल की कड़वी स्मृतियाँ और आगामी समय की व्यग्रता से पूर्ण चिंताएँ एकदम ग़ायब हो रही हैं। मैं दैवीय स्वतंत्रता और अवर्णनीय परमसुख हासिल कर चुका हूँ। मेरी बाँहों ने पूरी सृष्टि का पूर्ण सहानुभूति के साथ आलिंगन कर लिया है। मुझे गंभीर तौर पर समझ में आ रहा है कि यह केवल सबको क्षमा करना नहीं, बल्कि प्रेम करना है। मेरा हृदय आनंद से बल्लियों उछल रहा है।

अगले मुकाम से गुज़रने पर मैं कैसे इन अनुभवों को दर्ज कर सकूँगा, जो कि मेरे पेन से छुए जाने के लिहाज से बहुत संवेदनशील हैं? तो भी जिस स्वार्गिक सच्चाई का मुझे बोध हुआ है, उसे धरती की भाषा में समझाना होगा और ऐसे प्रयास निरर्थक नहीं जाएँगे।

इसलिए मैं चाहता हूँ कि मोटे तौर पर विस्तृत हैरतअंगेज प्राचीन दुनिया की, जो कि इंसानी मस्तिष्क से परे अगम्य और अगोचर रही है, कुछ यादें जगाई जाएँ।



- मनुष्य भव्य रूप से परस्पर संबंधित है। एक उच्च शक्ति ने मनुष्य की माँ से भी अधिक उसका पोषण किया है। वह ज्ञान प्राप्त होने पर इस बात को समझ सकता है।
- अपने अतीत के दिनों में एक बार, मनुष्य ने निष्ठावान रहने की शपथ ली थी और वह दिव्यता को धारण किए देवताओं के साथ रहता था। यदि आज संसार मनुष्य से कुछ माँग करता है और मनुष्य उसके समक्ष झुक जाता है, तो भी वे लोग, जो उस शपथ को भूले नहीं हैं, उसे उचित समय आने पर उसे वह शपथ याद दिलाएँगे।
- मनुष्य में कुछ है जो नष्ट नहीं हो सकता। वह अपने वास्तविक स्वरूप की उपेक्षा करता है किंतु इस उपेक्षा से उसकी दीप्तिमान महानता कम नहीं होती। यह हो सकता है कि वह इस बात को भूलकर ऐंद्रिक नींद में सो जाए, परंतु जिस दिन वह स्वरूप अपने हाथ बढ़ाकर उसका स्पर्श करेगा, उस दिन मनुष्य को याद आ जाएगा कि वह कौन है और तब वह अपनी आत्मा को पहचान लेगा।
- मनुष्य स्वयं को महत्त्वपूर्ण नहीं मानता क्योंकि वह अपने दिव्य रूप को भूल गया है। इसलिए वह अपने भीतर के आध्यात्मिक और प्रामाणिक स्वरूप में विश्वास नहीं करके, किसी अन्य मनुष्य के मत के पीछे भागता है। गूढ़ व्यक्ति सांसारिक परिदृश्य को नहीं देखता। उसकी अदम्य दृष्टि सदा अपने भीतर देखती है और उसकी रहस्यमय मुस्कान का रहस्य आत्मज्ञान है।
- जो अपने भीतर केवल असंतोष, कमज़ोरी, अंधकार और भय देखता है, उसे संदेह नहीं करना चाहिए। उसे अधिक समय तक और भीतर देखते रहना चाहिए। कुछ समय बाद चित्त शांत होने पर उसे धुंधले चिह्न तथा श्वास-समान संकेत मिलने लगेंगे। उसे उन संकेतों पर अच्छी तरह ध्यान देना चाहिए यों कि वही संकेत उच्च विचारों में बदलकर देवदूतों की तरह उसके मस्तिष्क की सीमारेखा से पार चले जाएँगे। यही विचार फिर आगे चलकर उस भीतरी आवाज़ के अग्रदूत बनेंगे, जो आत्मा के केंद्र में स्थित छिपे, गूढ़ तथा रहस्यमय जीव की आवाज़ है।
- प्रत्येक मनुष्य के भीतर दिव्यता मौजूद है, किंतु यदि वह उस दिव्यता की उपेक्षा करता है तो उसके लिए सत्य का आभास बंजर भूमि में पड़े बीज के समान होगा। प्रत्येक व्यक्ति इस दिव्य चेतना की परिधि के भीतर है; मनुष्य स्वयं इस परिधि से बाहर निकलता है। लोग जीवन के रहस्य और उसके अर्थ को जानने के लिए औपचारिक एवं मिथ्या पड़ताल करते हैं, जबकि वृक्ष की शाखा पर बैठे प्रत्येक पक्षी और अपनी माँ का हाथ थामकर चलते प्रत्येक बच्चे ने तक इस पहेली को सुलझा लिया है और इसका उत्तर उनके चेहरे पर लिखा होता है। हे मनुष्य! ये जीवन स्वयं तुम्हारे किसी भी विचार

से अधिक उन्नत और श्रेष्ठ है; इसके लाभकारी प्रयोजन में विश्वास रखो तथा अर्द्ध-अंतर्प्रेरणा के क्षणों में अपने हृदय में उठी आवाज़ के सूक्ष्म आदेशों का पालन करो।

- जो मनुष्य यह सोचता है कि वह अपनी अनियंत्रित इच्छाओं के अनुसार पूर्ण स्वच्छंदता से जी सकता है और फिर भी उसे इसका परिणाम नहीं भोगना पड़ेगा, उसने अपने जीवन को खोखले स्वप्न के साथ बाँध रखा है। अपने साथियों अथवा स्वयं के प्रति अपराध करने वाला व्यक्ति अपना दंड ख़ुद निर्धारित करता है। वह अपना पाप दूसरों से छिपा सकता है किंतु भगवान की सर्वव्यापी आँखें सबकुछ देख रही हैं। न्याय आज भी संसार में कठोरता से मौजूद है हालाँकि हमें वह कभी-कभी दिखाई नहीं पड़ता और वह हमेशा पत्थर के बने ठोस न्यायालयों में नहीं होता। पृथ्वी के दंड विधान से जो बच जाता है, वह ईश्वर द्वारा निर्धारित दंड से नहीं बच सकता। ऐसे व्यक्ति पर कठोर एवं निर्मम नियति का संकट हर पल बना रहता है।
- जिन्होंने दुःख की कड़वाहट झेली है और आँसुओं के दर्द को सहन किया है, वे जीवन के सत्य को स्वीकार करने के लिए लगभग तैयार हो जाते हैं। उन्हें कुछ और महसूस नहीं होता, तो भी वे सुख की क्षणभंगुरता को अवश्य समझते हैं। जो लोग सुख द्वारा भ्रमित नहीं होते, उन्हें दुःख के समय अधिक कष्ट नहीं होता। जीवन में सुख और दुःख दोनों आते हैं। इसलिए कोई भी मनुष्य, सदा गर्व और आडंबर से नहीं चल सकता। जो ऐसा करता है, उसकी यात्रा गंभीर विपत्ति में समाप्त होती है। अदृश्य दैवी शक्तियों की उपस्थिति में मनुष्य को सदा विनम्र रहना चाहिए क्योंकि दैव, अनेक वर्षों में प्राप्त किए हुए वैभव को कुछ ही दिनों में नष्ट भी कर सकते हैं। संसार की सब वस्तुओं की नियति इसी सुख और दुःख के चक्र में घूमती है और इस तथ्य की उपेक्षा करना बहुत बड़ी मूर्खता है।
- ब्रह्मांड में भी यदि हम देखें तो हर उपसौर के बाद अपसौर की स्थिति आती है। इसी तरह मनुष्य के जीवन में भी समृद्धि की बहुलता के बाद तंगी का उतार आ सकता है, उसका स्वास्थ्य चंचल मेहमान की तरह जा सकता है और प्रेम भी जीवन में आता-जाता रहता है। तथापि जब पीड़ा की लंबी रात का अंत होता है, तब ज्ञान का सूर्योदय होता है। इन बातों से यह सबक़ मिलता है कि मनुष्य को शांति एवं संतुष्टि की शरण लेनी होगी अन्यथा वह बार-बार हताशा और कष्ट के कुचक्र में फँसा रहेगा। इस संसार का ऐसा भाग्यशाली मनुष्य नहीं है, जिसे ईश्वर सबक़ देने वाले इन दो महान गुरुओं से बच जाने देगा।
- मनुष्य तभी सुरक्षित महसूस कर सकता है जब उसे यह एहसास हो जाए कि भव्यता के दीप्तिमान पंखों ने उसे अपने अंदर समेट रखा है। वह अज्ञानता में ही जीना चाहता है। उसके द्वारा किए गए सर्वोच्च आविष्कार उसके जीवन की सबसे बड़ी बाधा हैं और उसे भौतिक जगत की ओर खींचने वाली समस्त वस्तुएँ एक दिन उसके गाँठ बनकर प्रकट हो जाएँगी जिसे वह खोलने के लिए विवश होगा। वह अपने अतीत से बँधा है और अपने भीतर की दिव्यता के चलते उस बंधन को तोड़ नहीं सकता। उसे इस बात

से अनजान नहीं रहना चाहिए, अपितु स्वयं को सांसारिक बोझ से मुक्त करके उस श्रेष्ठ सत्ता को सौंप देना चाहिए। ऐसा करने पर मनुष्य को कभी निराश नहीं होना पड़ेगा। यदि मनुष्य शांति से जीना और निर्भीक आत्म-सम्मान के साथ मरना चाहता है तो उसे यही करना चाहिए।

- जिसने एक बार आत्मा के दर्शन कर लिए, वह फिर कभी किसी से घृणा नहीं कर सकता। घृणा से अधिक बड़ा कोई पाप नहीं है, विरासत में मिली रक्तरंजित भूमि से अधिक बुरा कोई दु:ख नहीं है और इस संहार का आरंभ करने वाले को यह वापस मिलता है, इससे अधिक निश्चित कोई तथ्य नहीं है। ईश्वर की निगाह से कोई बच नहीं सकता क्योंकि वे सबके कर्मों को मूक साक्षी बनकर देखते हैं। उनके चारों ओर पीड़ा से दुखी संसार है, जबकि शांति प्राप्त करना अत्यंत सहज है। दु:ख से परेशान और संशयों से संतप्त मनुष्य जीवन की अँधेरी गलियों में से अपना मार्ग ढूँढ़ता रहता है जबकि उसके सामने का मार्ग दिव्य प्रकाश से भरा है। मनुष्य जिस दिन दूसरे लोगों के चेहरों को दिन के साधारण प्रकाश में नहीं, बल्कि दिव्य संभावनाओं में रूपांतरित करने वाली रोशनी में देखना सीख जाएगा, जिस दिन उसे लोगों के हृदय में ईश्वर के दर्शन हो जाएँगे, उस दिन संसार से घृणा का अंत हो जाएगा।
- प्रकृति की भव्यता और कला का सौंदर्य, मनुष्य को स्वयं अपने होने का एहसास करवाते हैं। जहाँ मंदिर का पुजारी असफल हो जाता है, एक जाग्रत कलाकार उस भूले-बिसरे संदेश को लोगों तक पहुँचाता है। जो व्यक्ति सौंदर्य से परिपूर्ण दुर्लभ क्षणों को याद कर सकता है, वह दु:ख की घड़ी में अपनी स्मृति से प्रेरणा लेकर अपने भीतर स्थित देवालय में पहुँच सकता है। वहाँ उसे थोड़ी-सी शांति, ज़रा-सी हिम्मत और रोशनी की एक झलक मिल जाती है और उसे इस बात का विश्वास होता है कि वह जिस क्षण अपने वास्तविक स्वरूप को देख लेगा, तो उसे अनंत सहारा मिल जाएगा। विद्वान लोग, आधुनिक पुस्तकों और प्राचीन ग्रंथों के ढेर में छछूंदर की तरह घुसे रहते हैं परंतु उन्हें इन क़िताबों में इससे अधिक गूढ़ रहस्य और अधिक परम ज्ञान नहीं मिलेगा कि मनुष्य का अपना स्वरूप दिव्य है। समय के साथ मनुष्य की उदासीन इच्छाएँ क्षीण हो जाएँगी, किंतु उसकी अमर जीवन की आशा, सच्चे प्रेम की अभिलाषा तथा परम आनंद की आकांक्षा अवश्य पूर्ण होगी क्योंकि इनमें नियति की पूर्वकथित प्रवृत्तियाँ मौजूद हैं, जिन्हें किसी भी तरह टाला नहीं जा सकता।
- संसार, उच्च विचारों के लिए अपने प्राचीन पैगंबरों की ओर देखता है तथा महान नीतियों के लिए पुराने युगों के समक्ष नतमस्तक होता है। परंतु जब उसे अपनी भीतरी चमक का पता लगता है तो वह अभिभूत हो जाता है। सभी श्रेष्ठ विचार और भावनाएँ उसके सामने नतमस्तक हो जाती हैं। उसके मस्तिष्क की शांत निर्जनता में उन यहूदी एवं अरबी मनीषियों जितने ही पवित्र दृश्य उभरने लगते हैं, जिन्होंने मानव जाति को उसके दिव्य स्रोत के विषय में बताया था। इसी आभामंडलीय प्रकाश द्वारा भगवान बुद्ध ने निर्वाण को जाना और उसका समाचार लोगों तक पहुँचाया। इस बोध से उत्पन्न

व्यापक प्रेम के चलते ही मैरी मेग्दलीन ने अपना समस्त जीवन ईसा मसीह के चरणों में बिता दिया।

- ये सनातन सत्य मानव जाति के आरंभ के समय से मौजूद हैं और इतने प्राचीन होने के बावजूद इनकी भव्यता पर कभी धूल नहीं जम सकती। जो व्यक्ति इन्हें स्वीकार करने को तैयार हो, उसे इनपर बुद्ध के प्रयोग से संदेह नहीं करना चाहिए, अपितु इन्हें हृदय में आत्मसात कर लेने पर ही मनुष्य को इनसे दिव्य कार्यों को करने की प्रेरणा मिला सकती है।



मैं धीरे-धीरे दोबारा सामान्य जगत में लौट रहा हूँ। मुझे कोई शक्ति प्रेरित कर रही है, जिसका मैं विरोध नहीं कर सकता। मैं धीमी गति से अपने वातावरण से मैं लौट रहा हूँ। मैं स्वयं को महर्षि के कक्ष में बैठा पाता हूँ। कक्ष लगभग ख़ाली हो चुका है। मेरी दृष्टि आश्रम की घड़ी पर पड़ती है तो मुझे एहसास होता है कि इस समय आश्रमवासी शाम का भोजन कर रहे होंगे। मुझे बाईं ओर किसी के होने का एहसास होता है। यह वही पचहत्तर वर्षीय वृद्ध भूतपूर्व स्टेशन मास्टर है। वह मेरे नज़दीक बैठा है और मुझे दया भाव से देख रहा है।

'आप लगभग पिछले दो घंटे से ध्यान में लीन थे,' वह मुझे बताता है। उसके चेहरे पर वृद्धावस्था की लकीरें हैं किंतु साथ ही चेहरे पर आनंद भरी मुस्कान भी है।

मैं उसे उत्तर देने का प्रयास करता हूँ किंतु मुझे यह जानकर बहुत आश्चर्य है कि मेरी बोलने की शक्ति जा चुकी है। मैं लगभग पंद्रह मिनट तक चुप रहता हूँ। इस बीच वह वृद्ध व्यक्ति कुछ और बातें कहता है:

'इस दौरान महर्षि आपको बहुत ध्यान से देख रहे थे। मुझे विश्वास है कि उन्हीं के विचार आपका मार्गदर्शन कर रहे थे।'

महर्षि जैसे ही कक्ष में लौटते हैं, उनके शिष्य अपना-अपना स्थान ग्रहण कर लेते हैं। उसके बाद सब सोने चले जाते हैं। महर्षि दीवान पर बैठकर अपने पैर मोड़ लेते हैं। उनकी कोहनी दाईं जाँघ पर रखी है और वे एक हाथ से अपनी ठुड्डी थामे हुए हैं। उनकी दो अँगुलियाँ उनके गाल पर हैं। वह मुझे ध्यान से देख रहे हैं।

प्रतिदिन जैसा रात्रि को होता है, उनका अनुचर कक्ष के दीपक की लौ मंद करता है। मुझे एक बार फिर महर्षि की शांत आँखों में अनूठी चमक दिखाई पड़ती है। उनकी आँखें अर्द्ध-अंधकार में सितारों की तरह चमक रही हैं। मुझे ध्यान है कि मैंने भारत के ऋषियों की आँखों में ऐसी चमक कभी नहीं देखी।

महर्षि के पास रखी सुगंधित अगरबत्ती का धुआँ ऊपर उठ रहा है। मैं उनकी आँखें देख

रहा हूँ। वे उन्हें बहुत कम झपकाते हैं। इस बीच चालीस मिनट का समय बीत जाता है। मैंने उनसे कोई बात नहीं की और वे भी बिलकुल चुप बैठे हैं। हमारे बीच शब्दों का क्या काम है? हम लोग अब एक-दूसरे को बिना कहे अधिक समझने लगे हैं। हमारे बीच विस्मित कर देने वाला मौन व्याप्त है। हम इसी मौन के माध्यम से एक-दूसरे से सुंदर तारतम्य स्थापित कर रहे हैं। मैं दूरसंवेदी तकनीक द्वारा बिना कुछ कहे, महर्षि के संदेश को स्पष्ट ग्रहण कर सकता हूँ। अब जबकि मैंने जीवन के विषय में महर्षि का अद्भुत दृष्टिकोण देख और समझ लिया है, मेरा जीवन उनके व्यक्तित्व के साथ एकाकार हो गया है।



मुझे अगले दो दिनों तक बुखार रहता है। मैं किसी तरह उससे बचने का प्रयास करता हूँ।

बूढ़ा स्टेशन मास्टर दोपहर में मुझसे मिलने आता है।

'मित्र, हम लोगों के साथ तुम्हारा रुकना अब समाप्त हो गया है,' वह दुखी स्वर में कहता है। 'पर क्या तुम फिर यहाँ लौटोगे?'

'हाँ, अवश्य!' मैं पूरे विश्वास से उत्तर देता हूँ।

उसके चले जाने के बाद मैं द्वार पर खड़ा अरुणाचल पर्वत को देख रहा हूँ, जिसे लोग पवित्र लाल पर्वत के नाम से भी पुकारते हैं। वह मेरे अस्तित्व का रंगीन परिदृश्य बन चुका है। कोई भी कार्य करते हुए, चाहे भोजन करते या चलते, बोलता या ध्यान करते, जब भी मेरी नज़र ऊपर जाती है तो मुझे पर्वत की आकृति सामने स्पष्ट नज़र आती है। यह किसी भी स्थान से साफ़ दिखाई देता है। इसीलिए इस स्थान पर रहते हुए पर्वत को देखने से बच पाना संभव नहीं है। इससे भी अधिक महत्त्वपूर्ण इसका प्रभाव है, जो इसने मुझ पर छोड़ा है। मैं सोच रहा हूँ कि क्या इस विचित्र और एकाकी पर्वत शिखर ने मुझे अपनी ओर आकृष्ट कर लिया है। यहाँ ऐसा कहा जाता है कि यह भीतर से खोखला है और इसमें बहुत-से महान आध्यात्मिक लोग रहते हैं, जो लोगों को बाहरी आँखों से नज़र नहीं आते। मुझे इस बचकानी बात में विश्वास नहीं है। हालाँकि मैंने ऐसे अनेक और इससे अधिक आकर्षक पर्वत शिखर देखे हैं, किंतु यह पर्वत मुझे सचमुच बहुत आकृष्ट करता है। प्रकृति का यह पथरीला टुकड़ा, जो लाल रंग के अस्त-व्यस्त पत्थरों से भरा पड़ा है, सूर्य की रोशनी में मंद अग्नि के समान चमकता है। इसका व्यक्तित्व अत्यंत शक्तिशाली है और इसी कारण यह मेरे भीतर अद्भुत और स्पर्शनीय प्रभाव पैदा करता है।

शाम को सूर्यास्त के बाद मैं महर्षि के अतिरिक्त सबसे विदा लेता हूँ। मुझे इस बात का संतोष है कि अध्यात्म के मार्ग पर मैंने अपनी लड़ाई जीत ली है। चूँकि मैंने अपने तार्किक स्वभाव के साथ बिना समझौता किए यह लड़ाई जीती है, इसलिए मुझे और भी अधिक

ख़ुशी है। महर्षि मेरे साथ बाहर तक आते हैं तो मेरा संतोष अचानक ग़ायब हो जाता है। इस व्यक्ति ने मुझे अनूठे ढंग से जीत लिया है। मेरा मन महर्षि को छोड़कर जाने का बिलकुल नहीं है। उन्होंने मुझे अपनी आत्मा के साथ एक अदृश्य किंतु फ़ौलादी बंधन में बाँध लिया है। उन्होंने मेरी वास्तविकता से पहचान करवाई है, मुझे मुक्त किया है और किसी अन्य बंधन में बाँधा नहीं है। उन्होंने मेरी आध्यात्मिक वास्तविकता और चेतना से मेरा परिचय करवाया है तथा मुझ उदासीन पश्चिमवासी को जीवंत और आनंदमय अनुभव द्वारा परिवर्तित कर दिया है।

मैं अपनी विदाई को टाल रहा हूँ। मैं भीतर उठ रही गहन संवेदनाओं को व्यक्त करने में पूरी तरह असमर्थ हूँ। ऊपर नीले आकाश में असंख्य तारे टिमटिमा रहे हैं। उदय होता हुआ चंद्रमा, चाँदी की पतली चक्रनुमा लकीर जैसा दिख रहा है। शाम के समय उड़ने वाले जुगनुओं ने उद्यान को प्रकाशित कर दिया है। इन सबसे ऊपर, खजूर के ऊँचे वृक्षों की लहराती डालियाँ आकाश के काले छाया-चित्र पर अलग-से झूमती दिखाई पड़ रही हैं।

मेरा आत्म-रूपांतरण पूर्ण हो गया है किंतु समय का परिवर्तनशील चक्र मुझे इस स्थान पर अवश्य लेकर लौटेगा। मैं हाथ उठाकर महर्षि को प्रणाम करता हूँ और उनसे विदा लेता हूँ। महर्षि मेरी ओर देखकर मुस्कराते हैं किंतु वे बिलकुल चुप हैं।

मैं महर्षि को अंतिम बार देखता हूँ। मुझे लालटेन के मंद प्रकाश में चमकदार आँखों वाले उस अद्भुत व्यक्तित्व की एक अंतिम झलक मिलती है। मैं उनसे विदा लेता हूँ। वह अपना दायाँ हाथ उठाकर धीमे-से हिलाते हैं और हम लोग अलग हो जाते हैं। मैं बाहर प्रतीक्षा कर रही बैलगाड़ी में बैठ गया हूँ। बैलगाड़ी चालक अपनी चाबुक घुमाता है और उसके आज्ञाकारी बैल आश्रम से बाहर निकलकर उष्णकटिबंधीय रात्रि में मोगरे की सुगंध के बीच से पथरीले मार्ग पर आगे बढ़ चलते हैं।

। इति ।

अनुवादक की ओर से

अन्य विषयों से बिलकुल अलग, अध्यात्म ऐसा विषय है जिस पर लिखना सरल लगता है, किंतु क़लम उठाते ही व्यक्ति के भीतर भरा अज्ञान, उसके मार्ग की सबसे बड़ी बाधा बनकर खड़ा हो जाता है। साफ़ है, अध्यात्म पर विचार व्यक्त करने से पूर्व, लेखक को स्वयं अध्यात्म-पथ का राही बनना पड़ता है।

पॉल ब्रन्टन ने, जो बीसवीं शताब्दी के महानतम खोजियों में से एक थे, इस तथ्य को न सिर्फ़ समझा, अपितु उसे प्रत्यक्ष रूप से जिया। उन्होंने पूर्वी जगत के प्रकाश-स्तंभ कहलाने वाले भारत देश में छिपे ज्ञान और अध्यात्म के मोतियों की खोज की और पूरी दुनिया के समक्ष उजागर किया। उन्होंने इस अभियान के दौरान अध्यात्म के नाम पर ढोंग और जादू-टोना करने वालों की कलई भी खोली और दृढ़तापूर्वक अपने लक्ष्य की ओर बढ़ते गए। आख़िरकार, आस्था की जीत हुई और उन्हें भारत के अरुणाचल प्रांत में महर्षि रमण के दर्शन हुए। उनके सानिध्य में पॉल ब्रन्टन ने कुछ समय बिताया और मूल्यवान ज्ञान समेटा।

इस पुस्तक में लेखक ने ज़बरदस्त भाषा-शैली और अनूठी अभिव्यक्ति के माध्यम से संपूर्ण भारत की यात्रा और इस बीच हुए अनुभवों एवं विभिन्न लोगों से प्राप्त तरह-तरह के ज्ञान को क्रमबद्ध और अत्यंत प्रभावी ढंग से प्रस्तुत किया है।

मेरे लिए भी इस पुस्तक का अनुवाद करना किसी शानदार आध्यात्मिक यात्रा से कम नहीं था। मैं मंजुल पब्लिशिंग हाउस का आभारी हूँ कि वह इस तरह की पुस्तकों द्वारा भारत के ज्ञान और उसकी कीर्ति को आगे बढ़ाने का महत कार्य कर रहा है।

अनुवादक के बारे में

आशुतोष गर्ग का जन्म 1973 में दिल्ली में हुआ। इन्होंने एम.ए.(हिंदी), स्नातकोत्तर डिप्लोमा (अनुवाद, पत्रकारिता) तथा एम.बी.ए. किया है। लेखन-प्रतिभा अपने पिता डॉ. लक्ष्मी नारायण गर्ग से विरासत में मिली। स्कूल के दिनों में काव्य-लेखन से लेखन का सफ़र आरंभ किया और अब तक इनकी कई पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। आशुतोष अंग्रेज़ी व हिंदी दोनों भाषाओं पर समान रूप से अधिकार रखते हैं तथा अनुवाद के क्षेत्र में एक परिचित नाम हैं। इन्होंने लेखन व संपादन के क्षेत्र में भी सराहनीय कार्य किया है। शिक्षार्थी हिंदी प्रयोग कोश, द्विभाषी प्रशासनिक शब्द-प्रयोग कोश, एक सौ एक रोचक पहेलियाँ तथा मैं अल्बर्ट आइंस्टाइन बोल रहा हूँ इनकी मौलिक पुस्तकें हैं। इसके अतिरिक्त द्रौपदी की महाभारत, दशराजन्,श्री हनुमान लीला, श्री कृष्ण लीला तथा विश्वामित्र इनके प्रमुख अनुवाद हैं। समाचार-पत्र व पत्रिकाओं में नियमित रूप से लिखते हैं। आजकल रेल मंत्रलय में उप-निदेशक के पद पर कार्यरत हैं।